सत्यमेव जयते

रक्षा अनुसंधान भारती

अंतर्राष्ट्रीय
पोषक अनाज वर्ष
2023

समृद्ध परंपरा
संपूर्ण पोषण

अप्रैल-सितंबर 2023
17वाँ अंक

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय
रक्षा मंत्रालय

"हमें प्रयत्नपूर्वक हिंदुस्तान की सभी बोलियों व भाषाओं में जो उत्तम चीजें हैं, उन्हें हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाना चाहिए और यह प्रक्रिया अविरल चलती रहनी चाहिए।"

— नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री) —

साभार: राजभाषा भारती

रक्षा अनुसंधान भारती

वर्ष 2023, "सत्रहवां अंक"

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय
डीआरडीओ भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली –110011

रक्षा अनुसंधान भारती

वर्ष 2023 "सत्रहवां अंक"

मुख्य संरक्षक

डॉ. समिर वी कामत
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ

संरक्षक

श्री पुरूषोत्तम बेज
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (संसाधन एवं प्रबंधन)

डॉ. रविन्द्र सिंह
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

प्रधान संपादक

श्री चन्द्र प्रकाश मीणा
अपर निदेशक

श्री संजीव कुमार
संयुक्त निदेशक (रा. भा.)

संपादक

श्री सुजीत कुमार मेहता
सहायक निदेशक (रा. भा.)

आवरण पृष्ठ संकल्पना
श्री संजय कुमार
तकनीकी अधिकारी 'सी'
श्री अंकुर मैंदीरत्ता
तकनीकी अधिकारी 'बी'
जनसंपर्क निदेशालय

विशेष संपादन सहयोग
सुश्री प्रतिष्ठा मिश्रा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संपादन सहयोग
श्रीमती अरूणकमल, सहायक निदेशक (रा.भा.)
श्रीमती शैली गुप्ता, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
सुश्री स्वाति सिन्हा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री सचिन सांगवान, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री आनंद कुमार साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
सुश्री शिल्की सुमन, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री सतेन्द्र कुमार, डीईओ
श्रीमती पारूल शर्मा, डीईओ

एवं

समस्त राजभाषा परिवार

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं। उन पर संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
Government of India

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि **रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ)** द्वारा सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार के प्रयासों को जारी रखते हुए अपनी हिंदी गृह-पत्रिका **"रक्षा अनुसंधान भारती"** के सत्रहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा का दर्जा मिलने से पूर्व भी हिंदी को देश के कोने-कोने में जानने, समझने और बोलने वाले थे तभी तो हिंदी को राजभाषा बनाए जाने की मांग सर्वप्रथम दक्षिण भारत के सी. राजगोपालाचारी ने उठाई। भले ही देश के सभी लोग हिंदी न जानते हों, व्याकरण को भूला करते हों, अशुद्ध हिंदी बोलते हों परंतु बोलते फिर भी हिंदी ही हैं और उसी में अपने भाव व्यक्त करते एवं दूसरों की बात समझते हैं। हिंदी बोलने, पढ़ने, लिखने में असमर्थ अहिंदी भाषी प्रांतों के लोग हिंदी में टीवी, सीरियल, फिल्म, गीत, संगीत के दीवाने हैं। वास्तव में यह सर्वग्राह्यता ही हिंदी की एकता की परिचायक है।

मैं इस अवसर पर मुख्यालय के निदेशक सहित पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके इस प्रयास के लिए बधाई देता हूं और इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 08 अगस्त, 2023

समिर कामत
(डॉ समिर वी कामत)

रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली-110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Phone : 011-23011519, 23014350, फैक्स/Fax : 011-23018216, ई-मेल/E-mail : secydrdo@gov.in

पुरुषोत्तम बेज
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (आर. एण्ड एम.)

Purusottam Bej
Outstanding Scientist &
Director General (R & M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
अनुसंधान तथा विकास संगठन
101, डी आर डी ओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली–110 011, भारत

Government of India
Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
101, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi–110 011, India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि **रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ)** अपनी वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका **"रक्षा अनुसंधान भारती"** के सत्रहवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका का सफल प्रकाशन राजभाषा नियमों तथा निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन के प्रति कर्तव्यनिष्ठा को प्रदर्शित करता है।

सहज और सरल हिंदी की इस प्रकृति ने ही उसे इतना व्यापक रूप दिया है कि हिंदी देश के विशेष वर्ग या प्रांत के लोगों की ही भाषा न होकर कोटि-कोटि कंठों का स्वर और गले का हार है। हिंदी के सूत्र के सहारे कोई भी व्यक्ति देश के एक कोने से चलकर दूसरे कोने तक जाकर किसी भी जन से संवाद स्थापित कर सकता है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदारता एवं एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह राजभाषा हिंदी ही है।

मैं इस सफल प्रयास के लिए मुख्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी इस प्रकार के उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक अंक नियमित रूप से प्रकाशित होते रहेंगे।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 07 अगस्त, 2023

पुबेज

(पुरुषोत्तम बेज)

दूरभाष/Phone : (O) 011-23011860 • फैक्स/Fax : 011-23015395
ई-मेल/E-mail : dgrm.hqr@gov.in

डॉ. रविन्द्र सिंह
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक
Dr. Ravindra Singh
Outstanding Scientist & Director

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अ. स. प. सं./Do No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research & Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of DPARO&M
'ए' ब्लाक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23013248, 23007125
फैक्स/Fax: 23011133, 23013059

दिनांक/Dated: .....

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि **रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ)** विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका **"रक्षा अनुसंधान भारती"** के सत्रहवें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो अखंड भारत में एकता और प्रेम का मार्ग केवल हिंदी के माध्यम से ही ज्यादा सशक्त और प्रशस्त हो सकता है तभी तो बंगाल के सुधारक राजा राममोहन राय और केशवचंद्र सेन जैसे मनीषियों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए हिंदी को अपनाया। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने गुजराती होते हुए भी राष्ट्रीयता और समाज सुधार की अपनी भाव-धारा को हिंदी के द्वारा ही समूचे देश में फैलाया। उनके यह विचार वास्तव में हिंदी भाषा की व्यापकता का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

मैं पत्रिका के सफल प्रयास के लिए मुख्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी इस प्रकार के रूचिकर एवं ज्ञानवर्धक अंक नियमित रूप से प्रकाशित होते रहेंगे।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 07 अगस्त, 2023

(डॉ. रविन्द्र सिंह)

संजीव कुमार
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

Sanjeev Kumar
Joint Director (OL)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
संसदीय कार्य,
राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
234, डी आर डी ओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली–110011

Government of India
Ministry of Defence
Defence R&D Organisation
Directorate of Parliamentary Affairs,
Rajbhasha and Organisation & Methods
234, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi–110011

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि **रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ)** अपनी वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका **"रक्षा अनुसंधान भारती"** के सत्रहवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। भाषा ही वह माध्यम है जिससे कोई भी समाज अपनी विरासत, ज्ञान, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुंचाता है और एक दूसरे के साथ जुड़ता है। हमारा देश विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक विविधता से समृद्ध है।

राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्ति के साथ ही हिंदी के दायित्वों में भी वृद्धि हो गई है। हिंदी मात्र संवाद की भाषा नहीं है बल्कि देश के जन-मानस तक भारत सरकार की नीतियों, जन उपयोगी योजनाओं, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारियों को सुगमतापूर्वक पहुंचाने का सशक्त माध्यम भी है। हिंदी देश में साहित्य-सृजन एवं उद्योग व व्यवसाय की दृष्टि से एक समर्थ भाषा है। राजभाषा विभाग "रक्षा अनुसंधान भारती" पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकतम प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों की विभिन्न जानकारियों को सरल और सुबोधगम्य तरीके से पाठकों तक पहुंचा रहा है।

मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूं तथा पत्रिका के सत्रहवें अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 17 अगस्त, 2023

(संजीव कुमार)

Tele : (O) 011-23007635 • Fax : 011-23011133 • Mob : 8826421039

सुजीत कुमार मेहता
सहायक निदेशक (रा.भा.)

Sujit Kumar Mehta
Assistant Director (O.L.)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Defence, Government of India
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research & Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and Organization & Methods
'बी' ब्लाक, तृतीय तल, डी.आर.डी.ओ. भवन
'B' Block, Third Floor, DRDO Bhawan,
राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
Rajaji Marg, New Delhi-110011

संपादकीय

"रक्षा अनुसंधान भारती" के माध्यम से आप सभी प्रबुद्ध पाठकों के साथ संवाद का अवसर सदैव सुखद होता है। आपकी लोकप्रिय पत्रिका "रक्षा अनुसंधान भारती" का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। हर बार की तरह इस बार भी हमारा प्रयास यही रहा है कि अपने वैशिष्ट्य और वैविध्य में यह अंक अनूठा रहे और अपने सुरुचिपूर्ण पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतर सके। सशस्त्र बलों की परिकल्पना को डीआरडीओ ने संकल्पना में परिवर्तित किया जिसकी एक झलक इस कविता में स्पष्ट रूप से झलकती है।

तेजस, अर्जुन और आकाश
ने बढ़ाई गरिमा और विकास
तेजस और अर्जुन की शक्ति
ने दी देश को आयात से मुक्ति
कलाम की अग्नि से है देश सुरक्षित
ब्रह्मोस ने बनाया हमें सबसे विकसित
युद्ध और सुरक्षा में इनकी खोज
दे रहा देश को नई ओज

नवाचारों ने दिखाई राह
मिल गई दुश्मनों से पनाह
रक्षा और आत्मनिर्भरता
डीआरडीओ है इसको करता
राकेट लांचर और पिनाका
ने फहराया देश का पताका
मिशन इसका स्वदेशी
विजन है समावेशी

इंटरसेप्टर मिसाइलें और रडार
ने पहुंचाया इसे सागर पार
आर्टिफिशिल इंटेलिजेंस और ड्रोन
ने कर दिया विश्व को मौन
डीआरडीओ है देश की शान
इसने बनाया भारत महान

भाषाएँ सभ्यता की वाहक हुआ करती है। संवाद का माध्यम होने के अतिरिक्त एक सांस्कृतिक उपलब्धि के रूप में भी भाषाएँ अपना अस्तित्व रखती है। कहना अतिशयोक्ति न होगा कि ठीक नदियों की ही तरह भाषाओं के आस-पास भी सभ्यताएँ विकसित होती है जहाँ तक आम जन मानस में हमारी हिंदी की लोकप्रियता का प्रश्न है, इसका कोई एक कारण नहीं है हिंदी की महत्वपूर्ण विशेषता है इसका वैज्ञानिक और तर्कपूर्ण होना, अन्य भाषाओं के शब्दों को सहजता से अपने अंदर समाहित कर लेना और कई बार उन शब्दों के स्वरूप और उच्चारण आदि में अपने संस्कारों को इस तरह

आरोपित कर देना कि वह शब्द अपना पुराना रंग-ढंग त्याग कर ठेठ हिंदी का प्रतीत होने लगे। इसके अतिरिक्त हिंदी में विपुल साहित्य भी रचा गया है जो विश्व साहित्य में आज अपनी गरिमामयी विशिष्ट उपस्थिति रखता है। "रक्षा अनुसंधान भारती" के इस अंक में कविताएँ, कहानियाँ, समसामयिक विषयों के साथ ही मिलेट्स से संबंधित कुछ लेखों को भी शामिल किया गया है। वर्ष 2023 में अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष (International Year of Millets- IYM) मनाने के भारत के प्रस्ताव को वर्ष 2018 में खाद्य और कृषि संगठन (FAO) द्वारा अनुमोदित किया गया था तथा संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के रूप में घोषित किया है।

साथ ही दोस्तों पूरा देश चंद्रयान-3 की सफलता के जश्न में डूबा हुआ है। चंद्रयान-3 की यह सफलता कई मायनों में अहम है। इसरो के वैज्ञानिकों ने चंद्रमा की सतह पर चंद्रयान-3 के लैंडर विक्रम को लैंड कराने में सफलता हासिल कर इतिहास रच दिया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचनेवाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया है। किसी ने सही ही कहा है कि सच्चा संघर्ष एक न एक दिन जरूर सफल होता है। यदि जीवन में संघर्ष नहीं है तो सफलता भी नहीं है। इस बात को मैं एक कहानी के माध्यम से कहूं तो एक बार कि बात है एक बच्चे को अपने बगीचे में किसी टहनी से लटकता हुआ एक तितली का कोकून दिखाई पड़ा। उसने देखा कि एक तितली उस खोल से बाहर निकलने की बहुत कोशिश कर रही है, परंतु बहुत प्रयास करने के बाद भी वह उस छेद से नहीं निकल पा रही और फिर वह बिल्कुल शांत हो गई, मानो उसने अपने प्रयासों से हार मान ली हो। उस बच्चे ने निश्चय किया कि वह उस तितली की मदद करेगा। उसने एक कैंची उठाई और तितली के बाहर निकलने के रास्ते को, कोकून के मुख को काटकर इतना बड़ा कर दिया कि वह तितली आसानी से बाहर निकल सके और यही हुआ, वह तितली बिना किसी संघर्ष के आसानी से बाहर निकल आई, पर अब उसका शरीर सूज़ा हुआ था और पंख सूखे हुए थे। वह बच्चा अब तितली को यह सोचकर लगातार देखता रहा कि वह किसी भी वक्त अपने पंख फैलाकर उड़ने लगेगी, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि इसके विपरीत हुआ। वह तितली कभी उड़ नहीं पाई और उसने अपनी बाकी जिंदगी इधर-उधर घिसटते हुए बिताई।

दोस्तों, जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है! एक बात हमेशा याद रखिए, अपनी मंजिल का आधा रास्ता तय करने बाद पीछे ना देखे बल्कि पूरे जुनून और विश्वास के साथ शेष दूरी तय करे, बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुंच सकते हो!

रामधारी सिंह दिनकर जी कि यह कविता मनुष्य और चांद के बीच के संवाद की कल्पना है। जहां मनुष्य की व्याख्या संघर्षशील और निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने वाले प्राणी के रूप में की गई है। आज के मानव कल्पनाप्रिय नहीं बल्कि अपनी कल्पनाओं को वास्तविकता में परिवर्तित करने में विश्वास रखने वाले हैं। उनके पास बुद्धि ने विज्ञान का ऐसा वरदान दिया है कि अब मनुष्य केवल कल्पना करके ही प्रसन्न नहीं होता, अपितु अपनी कल्पनाओं को साकार भी करता है।

रात यों कहने लगा मुझसे गगन का चाँद,
आदमी भी क्या अनोखा जीव है!
उलझनें अपनी बनाकर आप ही फँसता,
और फिर बेचैन हो जगता, न सोता है।

जानता है तू कि मैं कितना पुराना हूँ?
मैं चुका हूँ देख मनु को जनमते-मरते
और लाखों बार तुझ-से पागलों को भी
चाँदनी में बैठ स्वप्नों पर सही करते।

आदमी का स्वप्न? है वह बुलबुला जल का
आज उठता और कल फिर फूट जाता है
किन्तु, फिर भी धन्य ठहरा आदमी ही तो?
बुलबुलों से खेलता, कविता बनाता है।

मैं न बोला किन्तु मेरी रागिनी बोली,
देख फिर से चाँद! मुझको जानता है तू?
स्वप्न मेरे बुलबुले हैं? है यही पानी?
आग को भी क्या नहीं पहचानता है तू?

मैं न वह जो स्वप्न पर केवल सही करते,
आग में उसको गला लोहा बनाता हूँ,
और उस पर नींव रखता हूँ नये घर की,
इस तरह दीवार फौलादी उठाता हूँ।

मनु नहीं, मनु-पुत्र है यह सामने, जिसकी
कल्पना की जीभ में भी धार होती है,
बाण ही होते विचारों के नहीं केवल,
स्वप्न के भी हाथ में तलवार होती है।

स्वर्ग के सम्राट को जाकर खबर कर दे
रोज ही आकाश चढ़ते जा रहे हैं वे,
रोकिये, जैसे बने इन स्वप्नवालों को,
स्वर्ग की ही ओर बढ़ते आ रहे हैं वे।

रक्षा अनुसंधान भारती का यह अंक आप सभी सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है तथा पत्रिका को और अधिक सारगर्भित और सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके मूल्यवान सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सुजीत

(सुजीत कुमार मेहता)

दूरभाष/Phone: 0011-23007902 फैक्स/Fax: 011-23011133, 011-23013059
ई-मेल/E-mail: sujitkumarmehta.hqr@gov.in द्रोणा/DRONA: skmehta@hqr.hqrdom

प्रस्तावना

श्रीअन्न (मिलेट्स) पौष्टिकता से भरपूर समृद्ध, सूखा सहिष्णु फसल है जो ज्यादातर भारत के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में उगाया जाता है । यह एक छोटे बीज वाली घास के प्रकार का होता है जो वनस्पति प्रजाति पोएसी "(Poaceae)" से संबंधित है । मिलेट एक समूह के छोटे बीज वाले घास के पौधों की एक श्रेणी है जिन्हें हजारों सालों से खेती किया जा रहा है और इंसानी पोषण और कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। श्रीअन्न कई प्रकार के होते हैं, जैसे कि पर्ल मिलेट, फिंगर मिलेट, फॉक्सटेल मिलेट, प्रोसो मिलेट, आदि।

श्रीअन्न के विभिन्न प्रकार हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:–

1. पर्ल मिलेट (Pearl Millet) – बाजरा
2. फिंगर मिलेट (Finger Millet) – रागी
3. फॉक्सटेल मिलेट (Foxtail Millet) – कांगनी कोदरू
4. प्रोसो मिलेट (Proso Millet) – चीनी मिलेट
5. कोदो मिलेट (Kodo Millet) – कोदू
6. बारगर मिलेट (Barnyard Millet) – सावाल
7. लिटल मिलेट (Little Millet) – कुटकी कोदरू
8. ब्रोमटी मिलेट (Browntop Millet) – समबा कोदरू

मिलेट पोषण में फाइबर, विटामिन (खासकर बी विटामिन), और खनिज (लोहा, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, और जिंक) के स्रोत के रूप में माने जाते हैं। वे जटिल कार्बोहाइड्रेट के अच्छे स्रोत प्रदान करते हैं, जिससे यह धीरे-धीरे ऊर्जा मुक्ति के लिए उपयुक्त होते हैं। मिलेट नेचुरली ग्लूटेन-फ्री होते हैं, जो ग्लूटेन संविशेषण या सेलिएक रोगियों के लिए फायदेमंद होता है। मिलेट को विभिन्न रसोईघरीय अनुप्रयोगों में इस्तेमाल किया जा सकता है। इन्हें पूरे अनाज के रूप में पकाया जा सकता है, ब्रेड, फ्लैटब्रेड, दलिया बनाने के लिए आटे के रूप में उपयोग किया जा सकता है, या सलाद, सूप और स्टू में मिला या जा सकता है। रसोई में विविधता की वजह से ये आहार में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

मिलेट फसलें कठिन और विविध कृषि-जलवायु स्थितियों में सहजीव और अनुकूल रूप से अनुकूलित हैं। इनमें कम पानी की आवश्यकता होती है और आमतौर पर गेहूँ और चावल जैसी मुख्य अनाज फसलों की तुलना में जल-महसूसी में अधिक प्रतिरोधी होते हैं। यह मजबूती उन्हें विशेष रूप से पानी की कमी या जलवायु अस्थिरता की चिंता के बावजूद एक मूल्यवान फसल विकल्प बनाती है।मिलेट की खेती आमतौर पर मुख्य अनाज फसलों जैसे गेहूँ और चावल की तुलना में पर्यावरण से मित्रवत होती है। उन्हें कम पानी और सिंथेटिक उर्वरक, कीटनाशकों जैसे इनपुट की कम आवश्यकता होती है, जिससे कृषि के पारिस्थितिकता के प्रति पर्यावरण की छाया कम हो सकती है। मिलेट कृषि जैव विविधता में योगदान करती है, जो खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। विभिन्न फसलों को कृषि प्रणालियों में शामिल करने से फसलों की पराजय, कीटों और बीमारियों के प्रति लचीलापन मिल सकता है, जिससे अधिक स्थिर खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकती है। मिलेट की खेती छोटे स्तर के किसानों के लिए जीविकोपाय संभावनाएं प्रदान कर सकती है, विशेष

रूप से उन क्षेत्रों में जिन्हें मिलेट की खेती के लिए उपयुक्त माना जाता है। मिलेट के स्वास्थ्य लाभों के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है:

मिलेट की पोषण संरचना से कई स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सकते हैं। इनकी उच्च फाइबर आवश्यकता की पूर्ति पाचन में सहायक होती है, रक्त शर्करा स्तर को नियंत्रित करने में मदद करती है और वजन प्रबंधन में योगदान कर सकती है। मिलेट में एंटीऑक्सिडेंट्स और कुछ फाइटोकेमिकल्स की मौजूदगी से अनुमानित रूप से हृदय रोग और कुछ प्रकार के कैंसर के खिलाफ संरक्षण के संभावित प्रभाव के साथ भी जोड़ा जा रहा है।

- **पौष्टिकता:** मिलेट पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, जैसे कि फाइबर, विटामिन (विशेषकर विटामिन बी) और खनिज (लोहा, मैग्नीशियम, फास्फोरस और जिंक)। ये पोषक तत्व अच्छे स्वास्थ्य की दिशा में सहायक होते हैं।

- **उचित वजन प्रबंधन:** मिलेट में उच्च फाइबर की मात्रा होती है, जो वजन प्रबंधन में मदद कर सकती है। यह भोजन के पाचन को सुधारने में भी मदद करता है।

- **ग्लूकोज नियंत्रण:** मिलेट का सेवन करने से रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित किया जा सकता है। इसका मतलब है कि डायबिटीज के मरीजों के लिए यह एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

- **हृदय स्वास्थ्य:** मिलेट में विशिष्ट प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट्स और फाइटोकेमिकल्स पाए जाते हैं, जिनका हृदय स्वास्थ्य संरक्षण करने में मदद की जा सकती है।

- **पाचन तंतु में मदद:** मिलेट में अच्छी मात्रा में फाइबर होने से पाचन सिस्टम को स्वस्थ रखने में मदद मिलती है, जिससे पाचन में सुधार होता है और अपच की समस्याओं को कम करता है।

- **मिलेट्स का पोषण संरक्षण:** मिलेट में गहरा रंग होने का कारण उनमें प्राकृतिक रूप से अच्छे पोषण संरक्षण की विशेषता होती है, जो स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करती है।

- **शारीरिक संरक्षण:** मिलेट के सेवन से शारीरिक संरक्षण बढ़ सकता है, क्योंकि ये अधिकांश आवश्यक खनिजों का अच्छा स्रोत होते हैं, जिनकी आवश्यकता शरीर को होती है।

- **कृषि और पर्यावरण स्थिरता:** मिलेट की खेती प्रदूषण कम करने में मदद कर सकती है, क्योंकि इनमें कम पानी और खाद की आवश्यकता होती है।

मिलेट की खेती को बढ़ावा देने से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल सकती है और ग्रामीण जीवन को सुधारा जा सकता है।मिलेट कई समुदायों के लिए हजारों सालों से मुख्य आहार रहे हैं, जो उनकी सांस्कृतिक और रसोईघरीय

परंपराओं का अभिन्न हिस्सा बनाते हैं। मिलेट के सेवन को बढ़ावा देने से ये सांस्कृतिक धरोहर बनाए रखने में मदद की जा सकती है। इन सभी कारणों से, श्री अन्न (मिलेट) का सेवन करके हम अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित और स्वस्थ बनाने में मदद कर सकते हैं।

श्रीअन्न, गेहूँ और चावल के बीच पोषण मूल्य की तुलना

पोषण तत्व (प्रति 100 ग्राम)	श्री अन्न	गेहूँ	चावल
कैलोरी	378	329	130
प्रोटीन	10.6	13.2	2.7
कार्बोहाइड्रेट	72.8	71.2	28.7
डाइटरी फाइबर	8.5	12.2	0.9
फैट	4.2	1.5	0.2
विटामिन C	1.7	0.4	0.4
विटामिन B1 (थायमिन)	0.42	0.41	0.07
विटामिन B2 (रिबोफ्लेविन)	0.18	0.05	0.03
विटामिन B3 (निकोटिनिक एसिड)	1.2	2.7	1.1
विटामिन B6	0.38	0.3	0.2
फोलेट	85	38	5
आयरन	3.9	3.9	0.6
कैल्शियम	8	34	3
मैग्नीशियम	114	138	25
फॉस्फोरस	285	288	115
पोटैशियम	195	363	115
जिंक	3.1	2.7	1.1

(साभार: रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला, मैसूर)

डॉ. मीनाक्षी जौली
संयुक्त सचिव
Dr. MEENAKSHI JOLLY
JOINT SECRETARY
Telefax : 23438130
E-mail : isol@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
राजभाषा विभाग
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
चतुर्थ तल, एन.डी.सी.सी.–II भवन
4th FLOOR, N.D.C.C.–II BHAWAN
जय सिंह रोड़, नई दिल्ली-110001
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

अ.शा.प.सं. 11014/08/2022-रा.भा.(प.)

दिनांक: सितम्बर, 2022

महोदय,

मुझे आपको यह सूचित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'रक्षा अनुसंधान भारती' को वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (गृह पत्रिका) के अंतर्गत 'क' क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है।

2. आपके मंत्रालय/विभाग द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका हिंदी के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय आपसे अपेक्षा करता है कि आप इसी प्रकार उत्कृष्ट गृह पत्रिका के प्रकाशन से दूसरे कार्यालयों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

3. हिंदी दिवस 2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन सूरत गुजरात में किया जा रहा है। दो दिवसीय इस भव्य आयोजन में मंचासीन अतिथियों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। आपसे विनम्र अनुरोध है कि पुरस्कार ग्रहण करने के लिए शीर्ष अधिकारी सहित दो अन्य अधिकारियों के नाम राजभाषा विभाग को patrika-ol@nic.in पर शीघ्र उपलब्ध करा दें।

4. मुझे विश्वास है कि आपके कुशल नेतृत्व में पत्रिका रक्षा अनुसंधान भारती इसी प्रकार अपने लक्ष्यों को प्राप्त करती रहेगी और राजभाषा के आगामी प्रयोग को सुनिश्चित कर आप अपना संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करते रहेंगे।

5. हार्दिक शुभकामनाएं।

सादर,

शुभेच्छु

मीनाक्षी जौली

(डॉ. मीनाक्षी जौली)

श्री सुजीत कुमार मेहता, सहायक निदेशक,
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय,
प्रथम तल, डीआरडीओ भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली–110011
दूरभाष: 9818687750 | **ईमेल:** skmehta1967@gmail.com

हिंदी गृह पत्रिका 'रक्षा अनुसंधान भारती' के सत्रहवें अंक के लिए समिति के सदस्यों की सूची

अध्यक्ष

श्रीमती आशा त्रिपाठी
वायुसेनाध्यक्ष के वैज्ञानिक सलाहकार

सदस्य

श्री चन्द्र प्रकाश मीणा
अपर निदेशक

श्री संजीव कुमार
संयुक्त निदेशक (रा. भा.)

श्रीमती हर्षा रानी
अवर सचिव डी (आर एंड डी)

श्रीमती अनुराधा पांडेय
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी चेस, हैदराबाद

सदस्य सचिव

श्री सुजीत कुमार मेहता
सहायक निदेशक (रा. भा.)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1.	राधेश्याम	नीना मिश्रा	23
2.	बांसुरी वाला	शशि शंकर सिन्हा	28
3.	नष्ट-नीड़	हर्षा रानी	30
4.	आस का मोती	सुषमा सिंह	31
5.	हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन	आशा त्रिपाठी	32
6.	जिंदगी... गम की गहराई	किरन	34
7.	स्वास्थ्य ही धन है	चन्द्र प्रकाश मीणा	35
8.	ज़िंदगी	योगेश राणा	36
9.	भारतीय संस्कृति की मूल धरोहर योगासन व प्राणायाम	संजीव कुमार	37
10.	जिंदगी यह भी	सुजोय दास	42
11.	सेंट्रल विस्टा	सुजीत कुमार मेहता	43
12.	शिकारियों की नई पड़ताल	अरुणकमल	45
13.	कैसे बने देश महान	राधिका चावला	47
14.	आपदा में अवसर	प्रतिष्ठा मिश्रा	48
15.	रक्षा कूटनीति और भारत के लिए इसका महत्वः रक्षा निर्यात के लिए बजट और रणनीति	दीपान्विता दास	50
16.	खेल का महत्व	आनंद कुमार	58
17.	पहाड़ों की गोद में पर्यटन-मसूरी	रविन्द्र सिंह नेगी	60

क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
18.	अभी आयी हूं... ऐ मां	अमित कुमार	61
19.	प्राचीन भारतीय विज्ञान का महत्व	दीपक लखचौरा	62
20.	राजस्थान की कला और संस्कृति	पप्पू राम मीणा	64
21.	जिन्दगी जी के देखो	रेनु गौतम	66
22.	काम और जीवन के बीच संतुलन	कृष्णा कुमार	68
23.	व्याकुल मन	हरि कृष्ण कुमार	69
24.	लड़का-लड़की एक समान	अविनाश कुमार	70
25.	चार उपदेश	अंजली कंवर	72
26.	पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण	प्रियांशु साहिल	73
27.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	कुन्दन कुमार झा	74
28.	क्वांटम प्रौद्योगिकी और भारत	गौरव कुमार	76
29.	पत्नी	भूपेन्द्र सिंह	78
30.	उम्मीद	पूजा कुमारी	79
31.	भारत की मिलेट क्रांति	गोपाल साह	80
32.	विश्व शांति एवं जन कल्याण	प्रेम किशोर भारती	81
33.	पहाड़ों की यात्रा	संदीप रावत	82
34.	बदलती दुनिया	पुष्पा जोशी	83
35.	स्पैरो (स्मार्ट परफॉरमेंस अप्रेजल रिपोर्ट रिकॉर्डिंग ऑनलाइन विंडो)	हर गोविंद एवं मोहम्मद दानिश	84
36.	ई कार्यालय	चंदा आनंद	89

क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
37.	शांत रहो सुखी रहो	मो. इशरत खान	93
38.	डॉ. धर्मवीर भारती	शैली गुप्ता	94
39.	महान वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकट रमन	अनूप कुमार	97
40.	नजरिये की सोच	रामनारायण महतो	99
41.	बाबा जोरावर सिंह एवं बाबा फतेह सिंह	राहुल कुमार महायच	100
42.	डर	प्रदीप कुमार	102
43.	परोपकार ही धर्म है	राज कुमार	103
44.	संविदा कर्मचारी	मंजीत	104
45.	राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान	महादेव पंडित	105
46.	आज़ादी के स्वप्न और हकीकत	रामशंकर चौरसिया	107
47.	भारत के पहले राष्ट्रपति: डॉ राजेंद्र प्रसाद	निर्देश कुमार	108
48.	केंद्रीय सिविल सेवाओं में 'पदोन्नति'	प्रवीण कुमार दास	110
49.	साइबर सुरक्षा	विनोद कुमार सिंह	114
50.	आज़ादी से अब तक टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भारत का विकास	धीरेन्द्र सिंह नेगी	120
51.	तकनीकी शिक्षा	विनोद कुमार	123
52.	नेटवर्किंग का परिचय	जगत सिंह	127
53.	विभागीय अभिलेख कक्ष (डिपार्टमेन्टल रिकार्ड रुम)	ललित कुमार	129
54.	राष्ट्रपति चुनाव	अशोक कुमार	136
55.	भारतीय मुद्रा का इतिहास: रुपये का विकास	अमित बंसल	139

क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
56.	ओ टी टी और सिनेमा का समाज पर प्रभाव	सुरेंद्र सिंह	142
57.	कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)	राजेन्द्र अटल	144
58.	हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2022 - एक रिपोर्ट	अरुण कुमार पंडा	146
59.	जेल गई ससुराल नहीं	हिमानी	149
60.	आज की युवा पीढ़ी	आनंद कुमार साव	150
61.	ज्योतिर्लिंग	अर्चना सिंह	152
62.	एकात्म मानववाद	अजय कुमार	155
63.	गांव बेचकर शहर खरीदा	देश राज मीणा	159
64.	रक्षा क्षेत्र में निजीकरण: सुरक्षा और विकास की दिशा में एक कदम	मोहित लाल	160
65.	अधूरे सपने	अभिषेक सेन	161
66.	ऊर्जा क्षेत्र में विकास: नई संभावनाओं की ओर	विशाल कुमार	162
67.	कॉलेज का आखिरी दिन	विकास कुमार	163
68.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता: भविष्य का मार्गदर्शन	अनुज मुदगिल	164
69.	भूकंप: प्राकृतिक प्रकोप की अद्वितीय ताकत	शमशेर सिंह	166
70.	संध्या की फरियाद	शुभाषीश श्रीवास्तव	167
71.	दिल्ली में बाढ़ की विभीषिका	राजकुमार	168
72.	महिला सशक्तिकरण: समर्थन की दिशा में एक कदम	कोमल कुमारी	169
73.	क्योंकि जीना इसी का नाम है	शिवानी वर्मा	170
74.	वृक्षों का महत्व	सुनील कुमार	172

क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
75.	मेहनत के फल का महत्व	सुमन जोशी	174
76.	विश्व हिंदी सम्मेलनः उद्देश्य एवं उपलब्धियां	सौरभ शुक्ला	176
77.	विश्व मौसम विज्ञान दिवस	सुरेश चंद	182
78.	प्रार्थना का प्रभाव	विकास शर्मा	183
79.	ग्लोबल वॉर्मिंग: एक उभरता हुआ संकट	प्रीति पंत	184
80.	राष्ट्रीय युवा दिवस	रमेश गौड़	185
81.	धरती का हरा सोना: वृक्ष	मनोज कुमार कटारिया	189
82.	आजादी का अमृत महोत्सवः हर घर तिरंगा अभियान	सुरेन्द्र पटेल	192
83.	नारी समाज का दर्पण	प्रियंका कुमारी	195
84.	हास्य व्यंग्य	सुखबीर सिंह	197
85.	पिता	प्रभात कुमार	198
86.	भारत में अंतर्राष्ट्रीय मिलेट उत्सव	राकेश कुमार	200
87.	रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ता डीआरडीओ	संजय कुमार	201
88.	आर्टिफिशयल इंटेलिजेंसः मानवता के विकास में एक क्रांतिकारी कदम	अंकुर मैंदीरत्ता	204
89.	राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन	मिट्ठू मेहता	206
90.	जीवन का 'लक्ष्य' प्राप्त करने का मार्ग	विजेन्द्र कुमार	208
91.	समय से अधिक सत्य मूल्यवान है	जयबीर	209
92.	पर्यावरण के लिए जीवन-शैली अभियान	स्वाति सिन्हा	213
93.	ग्रीनहाउस प्रभाव	राजेन्द्र सिंह	215

क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
94.	हमारी भारतीय विरासत का सम्मान	दीपक कुमार	218
95.	दुनिया के सात अजूबे	संजीव कुमार	219
96.	माँ और नवरात्रि	निशि श्रीवास्तव	223
97.	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का इतिहास	सतपाल	224
98.	बाजरा: सुपर फूड	वी पी सिंह	228
99.	क्वांटम कंप्यूटर: भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम	डॉ. राकेश कुमार साहू	232
100.	एआई और चैट जी पी टी: मानवता और प्रौद्योगिकी का अद्भूत मिश्रण	शिवम चौधरी	233
101.	भारत में समकालीन राजनीतिक प्रणाली: एक जटिल लोकतांत्रिक ढांचा	राजकुमार	234

राधेश्याम

नीना मिश्रा
मानव संसाधन विकास निदेशालय

हम सादिक़ नगर सरकारी कॉलोनी में रहते हैं। पदोन्नति हुए साल भर के ऊपर हो गया है आराम से ईस्ट किदवई नगर में टाइप फ़ोर क्वार्टर मिल सकता है। हमें इस टाइप थ्री क्वार्टर में रहते सात साल हो चुके हैं। घर भी काफ़ी पुराना है। सीढ़ी के दरवाज़े की लकड़ी तो हर बरसात में एक इंच बढ़ ही जाती होगी। एक बार तो मैंने यह गणित भी लगाई थी कि सात साल में एक फ़ीट लकड़ी तो फैली ही होगी। पर पानी की शिक़ायत कभी नहीं रही। चौबीस घंटे सप्लाई रहती है। इसीलिए बाथरूम एक होने के बाद भी परेशानी नहीं होती। हमारा घर कॉलोनी के प्रवेश द्वार पर ही है। हमारे ब्लॉक में बस दो ही क्वार्टर हैं। नीचे हॉर्टिकल्चर विभाग का दफ़्तर है और ऊपर हमारा घर। और घर के भी ऊपर है एक बड़ा सा बरगद का पेड़! जो उम्र में हमारे पिताजी से पाँच छः वर्ष बड़ा ही होगा!

घर के सामने कॉलोनी की संकरी सड़क है जो कॉलोनी को एक चौड़े मुख्य मार्ग से जोड़ती है। कोई पांच बरस पहले कॉलोनी में बनर्जी बाबू के बेटे की बिलकुल नयी स्विफ़्ट गाड़ी इसी रास्ते से चोरी हो गयी थी तभी से कॉलोनी की सड़क और मुख्य सड़क का संगम स्थल पीले पीले तीन-चार पुलिस बैरियर को एक दूसरे से मोटी लोहे की चेन से बाँध कर लगभग स्थायी रूप से बंद कर दिया गया है।इसको लेकर काफी समय तक हमारी कॉलोनी में दो दल बन गए थे। एक दल का मानना था कि इस बात की कोई गारंटी तो नहीं है कि सड़क बंद करने से चोरी नहीं होगी।चोर कोई दूसरा रास्ता ढूढ़ लेगा। दूसरे दल का कहना था कि सड़क बंद होने से सुरक्षा पर अच्छा असर पड़ेगा। इस दल में तीन प्रकार के निवासी थे। पहले वह जिनकी गाड़ियां या मोटरसाईकल वाकई नयी थीं। दूसरे वह लोग जिनके बच्चे बंद सड़क को खेल का मैदान समझ रात में न जाने कब तक फुटबॉल खेलते थे और तीसरे थे वह धार्मिक प्रवृत्ति के पुण्यजन जो नवरात्रि के आस पास उस बंद सड़क पर तिरपाल लगवा कर रतजगा आयोजित करते थे। हमारा परिवार दूसरे दल में आता था, इसलिए नहीं कि हमारी गाड़ी या बाइक नयी थी बल्कि इसलिए कि स्ट्रीट लाइट की तेज़ रोशनी में हमारे दोनों साहबजादे सड़क पर सात-आठ बजे तक फुटबॉल खेलते थे। फिर बनर्जी बाबू ने भी अपने बेटे का रिसेप्शन उसी बंद सड़क पर कर डाला। नीचे बिछवा दिया गया लाल कालीन और ऊपर खिंचवा दिया गया नीला और पीला शामियाना! श्रीमती जी का अनुमान था कि कम से कम चोरी की गयी गाड़ी का आधा नुकसान तो वसूल लिया होगा! रिसेप्शन के बाद से कॉलोनी में चल रहा शीतयुद्ध समाप्त हो गया। सब दल एकजुट हो गए।

छोटे घर में बड़ा होता हुआ परिवार अपने आप को काफ़ी समय तक सिकोड़ता है । हमारी जीवनशैली और हमारे क्वार्टर की लोकेशन का सात बरसों में अत्यंत घनिष्ठ सम्बन्ध हो चुका है। हम चारों को इस घर की लत लग चुकी है। जितने हम इस

घर में हैं उतना ही यह घर हममें है। कारण सबके लिए जुदा जुदा हैं किन्तु हम में से कोई भी घर को छोड़ना नहीं चाहता।

यदि पत्नी कभी भी घर में कोई नुक़्स बताती है, मैं कहता हूँ, "चलो शिफ़्ट कर लेते हैं! ईस्ट किदवई नगर कॉलोनी में फ्लैट नए और बड़े हैं।" "छोड़ो भी! तुम तो बात बात में घर शिफ्ट करने पर पहुँच जाते हो!मेरा और बच्चों का स्कूल कितना दूर हो जाएगा, कभी सोचा है!" हमारी श्रीमती जी एक पब्लिक स्कूल में संगीत अध्यापिका हैं, हमारे दोनों बेटे भी उसी स्कूल में छठीं और आठवीं कक्षा में पढ़ते हैं।इसी के चलते उनकी ट्यूशन फीस भी माफ़ है। नहीं तो दो बच्चों को इतने मंहगे स्कूल में पढ़ा पाना मेरे लिए संभव न था! सुबह छह पचास पर सड़क पार बस आती है। श्रीमती जी और बच्चे पौने सात पर भी घर से निकलें तो बस आने के पहले ही पहुँच जाते हैं। कई बार तो श्रीमती जी रसोई की खिड़की से आवाज़ दे कर बस वाले को दो तीन मिनट रोक भी लेती हैं। तो यह है पत्नी का कारण जिसने उसे इस घर से बाँध रखा है!

बेटे बड़े हो रहे हैं।बड़े को रात में पढ़ना होता है तो छोटे को सुबह जल्दी उठ कर संस्कृत के रूप याद करने की आदत है। "मुझे अलग कमरा चाहिए। गुड्डू मुझे रात में पढ़ने नहीं देता। बार बार लाइट बंद करता है!" बड़ा बेटा कई बार पत्नी से शिक़ायत करता। परन्तु जब भी मैं बड़े घर में चलने का प्रस्ताव रखता, सारे मनमुटाव भुला कर दोनों एक हो जाते। "हमें कहीं नहीं जाना। हम एक ही कमरे में रह लेंगे। आप समझते नहीं हमारे दोस्त छूट जाएंगे।" सच ही किशोरावस्था में मित्रता सबसे बड़ा धन होती है।छोटा घर और लंगोटिया यार बड़े घर और ढेर सारे दोस्तों से पलड़े में हमेशा भारी पड़ता है।

जब पत्नी और बच्चे सीढ़ियाँ उतर रहे होते हैं, हमारी कामवाली बाई गीता, सीढियाँ चढ़ रही होती है। आते ही वह अपने लिए चाय बनाती है।बिना पूछे मेरे सामने भी एक कप चाय ला कर रख देती है। अक़सर मैं अपनी चाय लेकर छत पर आ जाता हूँ।जुलाई की उमस वाली सुबह भी अगर हवा का एक कमज़ोर झोंका हमारे बरगद को छू भर भी ले तो उसकी हज़ारों पत्तियां ख़ुशी से झूम उठती हैं और चंद लम्हों के लिए ही सही हमारी छत पर कार्तिक की सुबह उतर आती है। चाय मुंडेर पर रख कर मैं छत से श्रीमती जी और बच्चों को बस में चढ़ते देखता हूँ। लगभग उसी समय हमारे घर के नीचे हॉर्टिकल्चर के दफ़्तर के सामने बरगद की सघन छाया में एक चौदह पंद्रह साल का लड़का बड़े सलीके से टाट बिछा रहा होता है। सात बजे के पहले पहले ही सब्ज़ी मंडी से फल और सब्ज़ी से लदा एक टेम्पो आता है।बरगद के सामने वाली सड़क पर पुलिस बैरियर है तो टेम्पो को कॉलोनी के दूसरे गेट से अंदर आना पड़ता है, पूरी कॉलोनी का चक्कर काट कर! और ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठा एक आदमी उतरता है। वह भी उन सब्ज़ियों की तरह बिलकुल तरोताज़ा दिखता है।

कॉलोनी वही रहती है पर परिदृश्य बदल जाता है।सुबह के चार घंटे मेरे घर के नीचे, बरगद की छाँव में सब्ज़ी और फल की अनूठी नुमाइश होती है। सब्ज़ियां बोरों से निकाल कर ज़मीन में बिछी टाट पर फैला दी जाती है। और वह आदमी एक किनारे पर अपनी तराज़ू के पास बैठ जाता है। पचपन-साठ की उम्र होगी उसकी। हरक़त से चुस्त और कद से औसत । रंग काले से थोड़ा हल्का। शायद मुँह पर चेचक के दाग भी होंगे।किन्तु जो उसको विशिष्टता प्रदान करती है वह हैं उसकी आँखें। वह दिन के उजाले में भी वैसे चमकती हैं जैसे रात में बिल्ली की आँखें। आँखें चमकने के साथ साथ मुस्कुराती भी हैं। उसकी बोली वाइट कॉलर एम.बी.ए. जैसी परिष्कृत नहीं किन्तु एक अपनापन लिए हुए है, जिसमें कृत्रिमता नहीं है और न ही माल बेचने की उत्कंठा!

पुलिस के बैरियर के इस पार हमारी कॉलोनी है। मुख्य मार्ग को पार कर बहुत ही बड़ा और हरा भरा पार्क! आस पास तीन चार किलोमीटर के दायरे से लोग इस पार्क में सुबह सैर करने आते हैं। और जो सैर करने आते हैं तो उनको टाट पर फैली सब्जियां और फल की नुमाइश दिख ही जाती है। और कुछ लोग सब्जियां खरीदते भी दिख जाते हैं। एक प्रतिस्पर्धा सी हो जाती है जिसमें अधिकारी भी होते हैं और व्यापारी भी डॉक्टर, इंजीनियर और टीचर भी। कुछ लोग जो सुबह जल्दी ही सैर को आते हैं वह सैर के बाद लौटते हुए सब्ज़ियां और फल खरीदने रुकते हैं। और कुछ गाडियाँ खड़ी करने के साथ ही पहले प्रदर्शिनी देखने आ जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि अगर यहाँ सब्ज़ियां चूक गईं तो सारे शहर में न मिलेंगी!

मैं बच्चों की स्कूल बस के ओझल होते ही छत पर पड़ी हुई एक पुरानी बेंत की कुर्सी पर बैठ जाता हूँ। सुबह का सात बज रहा होता है। इस छाया में बैठ कर कोयल और कौओं के एक दूसरे को काटते स्वरों के बीच गरम गरम अदरक की चाय पीने का आनंद ही कुछ और है। उस आनंद की पराकाष्ठा होती है जब रबरबैंड में लिपटा अख़बार चाय की आधी प्याली से ठीक छह इंच के फासले पर गिरता है। बिना नागा। अब बताईये एक मेरे जैसे सरकारी बाबू को और क्या चाहिए ?

तो साहब आज भी ऐसी ही एक सुबह है। मेरी चाय ख़त्म हो चुकी है। अख़बार में आज कुछ ख़ास नहीं है। लगता है मानों वही ख़बरें घुमा फ़िरा कर छाप दी गयी हैं। शनिवार का दिन है। छुट्टी है। मैं मन ही मन घर से निकलने के बहाने सोचते हुए मुंडेर के पास आकर नीचे झाँकने लगता हूँ। कल शुक्रवार को सब्ज़ी मंडी बंद रहती है अतः सब्जियों और फल की नुमाइश कल नहीं लगी थी। सो आज बहुत भीड़ है। "राम राम मेमसाहब! साहब दौरे पर गए हैं क्या?" वह आदमी गाड़ी से उतरती एक महिला से पूछता है। महिला बड़ी अफ़सर लग रही है। हंस कर जवाब देती है, "राम राम राधेश्याम जी! हाँ सही कहा आपने, साहब बाहर गए हैं!" "तभी तो मेरी हँसती खेलती पालक कुम्हला गयी! साहब तो आते ही दो गड्डी अलग करवा देते हैं!" "हम्म! बनानी तो मुझे पड़ती है ना!" भव्य सी दिखने वाली महिला मुस्कराते हुए पार्क की ओर चलने को होती है, तभी राधेश्याम बोल पड़ता है, "अरे मेमसाहब, आपके लिए आज तराई वाले ताज़े आलू लाया हूँ अपने हाथों से छांट कर! आलू से स्वादिष्ट और पौष्टिक तो कोई सब्ज़ी नहीं। जैसे भी बना लो बिलकुल सीधी सादी गऊ माता है!" आलू की गऊ माता से तुलना तो कालिदास और शेक्सपियर की कल्पना के भी परे होगा! शायद इसीलिए वह महिला अपनी हंसी ना रोक सकी। "अच्छा भाई, दो किलो तौल कर रखना, मैं लौटते समय ले लूँगी।" कहते हुए वह बैरियर पार कर गयी।

"अरे बेटा मेमसाहब के आलू बीच वाली साइज़ के छांट कर अलग करना।" लड़के को निर्देश देते हुए राधेश्याम फ़ोन पर बात करने लगता है, "हाँ डॉक्टर साहब, कहिए क्या भिजवाना है?" उसके लिखने के हिसाब से लग रहा था कि लंबा चौड़ा ऑर्डर है। आसपास के घरों में राधेश्याम सब्ज़ियाँ भिजवा भी देता है। पर मज़े की बात यह है कि हमारे यहाँ सब्जियाँ शायद ही कभी राधेश्याम की दुकान से आती हों! जब भी मैं कहता हूँ कि नीचे से सब्ज़ी मंगा लेते हैं, "हमें तो जाना नहीं, फोन भी नहीं करना! बस रीढ़ सीधी कर नीचे झांक कर बोलने भर है।" पत्नी तुरंत कहती है, "ये राधेश्याम बड़े बड़े लोगों से चिकनी चुपड़ी बातें कर के पाँच का सामान दस में बेच देता है। हमारी सब्ज़ी सफल बूथ से ही आएगी। कभी देखा है किसी अगल बगल वाले पड़ोसी को यहाँ आते? सब सफल बूथ जाते हैं।

जितनी देर में उसकी फ़ोन पर बात हुई उतनी देर में कम से कम चार पाँच खरीदार और आ गए। एक उसके तराज़ू के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया। राधेश्याम ने कलम और डायरी उसके हाथ पकड़ा दी। राधेश्याम सब्ज़ियाँ तौल कर पैसे

बताता जाता और वह आदमी लिखता जाता। अक़सर लिखने और जोड़ने का काम उसके ग्राहक ही करते हैं। वह मेरे ख़याल से कभी वापस जोड़ता भी नहीं। किसी का बिल दो सौ तो किसी का पाँच सौ। कोई तो हज़ार भी पार कर जाता है।

वैसे पत्नी कहती सही ही है। राधेश्याम के ज़्यादातर ख़रीदार उच्च वर्ग के ही होते हैं। लगभग सभी ग्राहक अब तो एक दूसरे से परिचित से हो चुके हैं। उनमें आपस में दुआ सलाम भी आम है। कई तो सैर के भी साथी बन गए हैं। सब्ज़ियां खरीदते खरीदते राजनीति पर बहस भी निकल पड़ती है। और अगर दो महिलाओं की बात चल पड़ी तो कई बार मैं छत पर बैठा खाना बनाने की विधियाँ भी सीख लेता हूँ। तो नेटवर्क कुछ ऐसा बन जाता जो एक ग्राहक को अन्य ग्राहकों से जोड़ देता है और सबको राधेश्याम से। कहीं न कहीं वह नेटवर्क कुर्सी पर अख़बार पढ़ते हुए या फिर कभी बालकनी से नीचे झाँकते हुए मुझको भी आलिंगित कर लेता है।

मैं सोच रहा हूँ कि गीता को बोल कर एक कप चाय और बनवाई जाए, तभी नीचे से आवाज़ आती है, "अरे सब्ज़ीवाले, टमाटर कैसे हैं?" मैंने इतने वर्षों में राधेश्याम के लिए सब्ज़ीवाले का सम्बोधन कभी नहीं सुना था, मैं अचंभित हो उन शख़्स को देखने लगता हूँ । एक गंभीर से दिखने वाले ऐनकधारी सज्जन ने ये सवाल किया है ।उम्र पचास के आस पास होगी। नाइके का ट्रैक सूट पहना है और कनपटी पर फ़ोन लगा हुआ है।शायद उधर से उनकी पत्नी की फ़रमाइश आ रही है।

राधेश्याम के लिए सब्ज़ीवाले का सम्बोधन सुनकर मेरे जैसे ही दो चार ख़रीदार ठिठक से गए । चौंक तो राधेश्याम भी गया पर ख़ुद को संभालते हुए बोला, "बहुत बढ़िया हैं साहब!हमारे टमाटर पढ़ें लिखे ख़ानदानी हैं! चिकने और चमकते हुए।" वह साहब चेहरे के गांभीर्य को बिना विचलित किए थोड़ा तुनक कर बोले, "अरे भाई मैं पूछ रहा हूँ कैसे लगाए टमाटर? और तुम बकवास कर रहे हो!औरतों से हँसी मज़ाक करते करते मालूम होता है कि तुम्हारी आदत बिगड़ गयी है।" मुंडेर पर रखे गमलों की वज़ह से नीचे से ऊपर दिखने की सम्भावना है । किन्तु मैं एक विशेष अतिथि जैसे ऊंचे दर्ज़े से सिनेमा देखने का आनंद ले रहा हूँ। काश एक कप गर्म चाय और दो ग्लूकोज़ बिस्किट भी होते।

"अरे साहब आप तो ख़्वामख़्वाह नाराज़ हो गए। चालीस रुपये का एक किलो है, बस!" राधेश्याम ने सकपकाते हुए कहा। उसकी शक्ल तो नहीं दिख रही थी पर उसके स्वर में घायल आत्माभिमान की आह थी और झुकी गर्दन शर्मसार होने का संकेत थी।

अटपटा सबको लगा पर बोला कोई नहीं। पर राधेश्याम की नियमित ग्राहिका डॉक्टर साहिबा स्वयं को ना रोक सकी। "माफ़ कीजिएगा मिस्टर, आपके बात करने का तरीका और बात दोनों ही आपत्तिजनक है!" उनका स्वर नरम है पर जो कहा वह गरम है। ऐनकधारी के चेहरे पर क्रोध के भाव स्पष्ट है।फ़ोन जेब में वापस रखते हुए उत्तेजित स्वर में बोला "क्या मतलब है आपका मैडम? आप बेकार बीच में आ रही हैं । मैं तो आपसे बात भी नहीं कर रहा।"

डॉक्टर साहिबा ने कंधे पर आ रहे अपने बाल पीछे झटकते हुए हाथ में ली हुई आलू की टोकरी लड़के के हाथ में पकड़ा दी। एक सिंहनी सी दहाड़ते हुए बोलीं,"पहले तो आप राधेश्याम जी को ऐ सब्ज़ीवाले कहकर बुला रहे हैं । इस आस पड़ोस में रहने वाला हर कोई राधेश्याम के नाम के साथ जी लगाकर बुलाता है। ऐ सब्जीवाले तो कोई भी नहीं कहता। माना

आप यहाँ नए हैं और नाम नहीं जानते तो भी किसी से बात करने का एक सलीका होता है। और वह बेचारा अगर थोड़ा हंस बोल कर काम करता है तो उसमें बुरा क्या है? आपने जिस तरह से बात की उससे न सिर्फ़ राधेश्याम का अपमान हुआ बल्कि किसी भी औरत को बेइज़्ज़त करने वाली बात है। क्या जो औरतें हंसी मज़ाक करतीं हैं तो वह ओछी हैं? क्या सभी औरतें हंसी मज़ाक करती हैं और सभी आदमी आप जैसे बुद्धिजीवी होते हैं जो मुस्कुराने को हेय दृष्टि से देखते हैं ? सही पूछा जाये तो ये 'सब्ज़ीवाला ' यहाँ बैठ कर तीन चार घंटों में बड़े बड़े अफ़सरों और व्यापारियों को बहुत कुछ सिखा जाता है।" फ़िर राधेश्याम की ओर मुख़ातिब हो कर बोलीं,"कितने हुए राधेश्याम जी?" उसको पैसे पकड़ा कर वह तेज़ क़दमों से अपनी गाड़ी की ओर चल दीं । बीन्स छांटते हुए गुप्ताजी के हाथ रुक गए। मिसेज़ सुकुल प्याज का भाव पूछते पूछते अटक गईं और डायरेक्टर साहब ने डॉक्टर साहिबा की बातों का नज़रों से मानों अनुमोदन कर दिया। ऐनकधारी सज्जन ने सोचा भी न होगा कि टमाटर इतने मंहगे होंगे।

"बेटा डायरेक्टर साहब के नींबू तौल और पालक भी उन्हीं के हैं। मैं जब तक साहब के टमाटर छांटता हूँ। " जो राधेश्याम कभी अपनी गद्दी से उठता न था वह बिजली की स्फूर्ति से उठा, ऐनकधारी साहब के हाथ से टोकरी पकड़ी और लाल लाल छाँट कर तराज़ू पर रख दिये। "साहब माफ़ करिएगा, शायद आपकी बात समझने में मुझ कमअक्ल से गलती हो गयी।" थैली में टमाटर डाल कर राधेश्याम ने अतिशीघ्रता से सज्जन की ओर बढ़ाते हुए धीरे से कहा, "चालीस रुपये साहब!" उन्होंने भी बिना कुछ चूँ चपड़ किए पैसे दिये और टमाटर ले कर अपनी गाड़ी की ओर बढ़ गए।

मैं देख रहा था कि उन चंद मिनटों में राधेश्याम और उन ऐनकधारी महाशय के बीच कुछ भी नहीं था। न डॉक्टर साहिबा, न कोई और ग्राहक, न मोबाइल की घंटी और न उसका आहत अभिमान! ऐनकधारी सज्जन के प्रस्थान करते ही राधेश्याम ने अपने लड़के से कहा, "बेटा अदरक वाली चाय बनवा कर ला!" और फ़िर डायरेक्टर साहब की ओर मुखातिब होते हुए बोला, "आप भी लेंगे साहब?" "नहीं सीताराम, मेरी तो मटर तौल दो!" डायरेक्टर साहब चुटकी लेते हुए शर्मा जी से बोले, "अगर आज डॉक्टर साहिबा न आ गईं होती तो राधेश्याम की तो बैंड बज जाने वाली थी!" शर्मा जी और डायरेक्टर साहब दोनों ठठा कर हंस पड़े।"क्यों, सही कहा न सीताराम?" डायरेक्टर साहब ने राधेश्याम की ओर देखते हुए पूछा। "सही कहा साहब। मेरे लिए तो डॉक्टर साहिबा आ गईं। पर सच कहूँ तो लगता है कि कोई काली बिल्ली साहब का रास्ता काट गयी होगी वरना दिल तो उनका भी टमाटर जैसा ही लगता है लाल, चिकना और पढ़ा लिखा।" राधेश्याम के चेहरे पर एक ठंडी मुस्कान थी और हाथ में अदरक की चाय की प्याली। सात सालों में आज पहली बार मालूम हुआ की इस नुमाइश में इतनी भीड़ क्यों होती है!

अब तक मुझे इस घर से बांधने वाला ये बरगद था। पर आज के बाद एक और कारण जुड़ गया–राधेश्याम जी की सब्जी! अब हमारी सब्जी भी राधेश्याम जी के यहाँ से आती हैं।

बांसुरी वाला

शशि शंकर सिन्हा
कार्मिक निदेशालय

सभी को पता है कि जिन्दगी कोई आइसक्रीम नहीं है जिसे पिघलने के पहले खा लिया जाए। नौकरी लगने से लेकर रिटायरमेंट भी अपने समय पर ही आती है। सुबह से इंतजार के बाद ही शाम और रात भी समय पर आती है।

रात में डिनर के बाद बच्चों के साथ इंडिया गेट अक्सर चले जाना मेरी आदत थी। सरकारी क्वार्टर नजदीक होने से ये कठिन भी नहीं था। उस दिन आठ बजे शाम को मैं अकेले ही इंडिया गेट पहुँच गया। वहाँ आइसक्रीम वाले के साथ एक बाँसुरीवाला भी खड़ा था जो पुराने फिल्मी गाने बहुत अच्छा बजा रहा था मैंने कुछ बाँसुरी के दाम उससे पूछे। उसने अनमने भाव से बाँसुरी दिखाते हुए कहा कि सारे के दाम पूछेंगे क्या एक दो खरीद भी लीजिए। मैंने भी थोड़े व्यंग्य से पूछा कि सारी बाँसुरी कितने की बेचोगे। बिना देर किए ही उसने बताया कि बाईस हजार दो सौ रुपये की। मैंने पूछ ही लिया कि इतने क्यों? उसका जवाब हतप्रभ करने वाला था।

वह दिल्ली टेक्निकल यूनिवर्सिटी के अंतिम सेमेस्टर का छात्र था उसे अपनी फीस भरने के लिए बस इतने रुपये की ही जरुरत थी। उसके अपने पुराने टेलीविजन को बेचने के बाद और सारे स्रोतों से मांगने के बाद भी बाईस हजार दो सौ रुपये कम पड़ गए थे। उसने यह भी बताया कि प्रतिदिन शाम को तीन घंटे इंडिया गेट पर बाँसुरी बेचकर वह तीन चार सौ रुपये कमा लेता है जिससे वह दिल्ली में अपना खर्च निकाल लेता है।

मैं भी बंधी बंधायी तनख्वाह वाला एक सरकारी अधिकारी था कोई पूँजीपति तो नहीं। इसलिए उसे इतने रुपये दूँ या नहीं यह असमंजस में था। आज के जमाने को देखकर कभी मुझे लगता कि इतने रुपये मैं कैसे दे दूँ। कहीं वह झूठ तो नहीं बोल रहा है। पर हृदय और बुद्धि के बीच द्वंद्व में मैंने हृदय की बात सुनी। अपने मोबाइल से मैंने उसके बैंक अकाउन्ट में बाईस हजार दो सौ रुपये उसी वक्त भेज दिए। उसने धन्यवाद भी नहीं कहा लेकिन उसकी मौन आँखें बहुत कुछ कह गई।

दूसरे दिन मैंने उसे फीस भरने की रसीद और कॉलेज के भरे हुए फार्म की कॉपी लेकर अपने क्वार्टर में बुलाया। और बोला कि जी स्केल की दो सुरीली बाँसुरी लाना मत भूलना।

उसने जब जाना कि वर्षों से मैं भी बाँसुरी बजाता हूँ तो मुझसे एक धुन बजाने का आग्रह करने लगा। मैंने झिझकते हुए कोई देख न ले- बगल में थोड़े अंधेरे में जाकर एक धुन बजाई। वह इतना खुश हुआ कि मुफ्त में एक बाँसुरी देने लगा। परन्तु मैंने अस्वीकार करते हुए दूसरी सुबह अपने घर पर ही उसे बुला लिया।

दूसरी सुबह वह अपने कॉलेज के फीस की रसीद और फार्म लेकर मेरे घर पहुँच गया। मुझे तसल्ली हो गई कि वह सच बोल रहा है। उसने बहुत ही भावुक होकर आभार जताया और कहा कि अभी फीस नहीं भरने पर वह परीक्षा अगले साल ही दे पाता या शायद घर के दबाव में पढ़ाई ही छोड़ देता। दस वर्ष गुजर गए। बात आई गई और मैं भी भूल सा गया।

रिटायरमेंट के बाद मुझे सरकारी बंगला खाली करना था। मैंने लोन लेकर दिल्ली में ही एक छोटा सा फ्लैट खरीदा था, जिसकी मासिक किश्त की रकम जमा करनी होती थी। उस दिन सुबह से ही चहल-पहल थी। पड़ोसियों से विदा लेना। ट्रक पर सामान रखवाना तथा सबसे फिर मिलने का वादा करना। मैं जानता था कि ईमानदार सरकारी अधिकारी चाहे जितने ऊंचे पद पर हो लेकिन वो कागजी शेर की तरह होते हैं जो दूसरों को डरा तो सकते हैं पर शेर की तरह कुछ खुद के लिए संचय नहीं कर पाते ।

मेरे निकटतम पड़ोसी मुझे ढाढस बंधा रहे थे कि रिटायर होना कोई हादसा नहीं है– ये तो सभी के साथ होना है। वो ये भी कह रहे थे कि पद रिटायरमेंट के बाद चला भी जाए तो क्या, सम्मान तो बचा रहता है। आप सभी साधारण लोगों की तरह नहीं हो जायेंगे। सेब बाजार में कितना भी सस्ता हो जाए पर उसका मूल्य आलू के बराबर नहीं होता।

इसी बीच कॉलोनी के गार्ड ने एक स्पीड पोस्ट का लिफाफा लाकर दिया। मैंने सोचा कि किसी शुभचिंतक का पत्र होगा जिसमें स्वास्थ्य पर ध्यान रखने और व्यस्त रहने की नसीहत होगी। परन्तु लिफाफा खोलते ही मैं दंग रह गया। दस हजार डॉलर के गिफ्ट चेक के साथ एक छोटा सा पत्र था। आदरणीय सर, अभी मैं अमेरिका के एक कंपनी में ऊंचे पद पर कार्यरत हूँ। दिल्ली टेक्निकल यूनिवर्सिटी से बी.टेक करने के बाद मैं कुछ दिन चेन्नई में नौकरी करने के बाद अमेरिका आ गया। आपने अपना सरकारी क्वार्टर बदल दिया। न तो मैं आपसे संपर्क कर सका और न ही इंडिया आ सका।

मैं माता-पिता की इकलौती संतान था। उनके गुजरने के बाद मेरा इंडिया आना नहीं हो पाया। आप जिस ड्राइक्लिनर्स में कपड़े धुलाते हैं उसके माध्यम से बड़ी मुश्किल से आपका पता मिल पाया है। मेरी कंपनी के एक स्टाफ ने ये पता लगाया है। फिर भी आपके बैंक का अकाउन्ट नम्बर नहीं मिल पाया है इसलिए ये छोटा सा गिफ्ट चेक भेज रहा हूं। विश्वास है कि आप इसे स्वीकार करके मुझे कृतज्ञ करेंगें ।

मैं आपके पैसे नहीं लौटा रहा हूं क्योंकि जिस वक्त पर आपने मेरी मदद की थी उस वक्त को मैं नहीं लौटा पाऊंगा। आप या तो इसे अपने नये फ्लैट के किश्तों में लगा दीजिएगा या मेरी मुंहबोली बहन (आपकी बेटी) जिससे मैं आजतक मिला नहीं हूं, उसके विवाह में खर्च कर दीजिएगा। आपका सस्नेह–इंडिया गेट का बांसुरी वाला।

नष्ट-नीड़

हर्षा रानी
अवर सचिव डी (आर एडं डी) का कार्यालय

मनीप्लांट की एक बड़ी सी पत्ती पर सफेद रंग के उतने ही बड़े फंगस का आक्रमण हुआ था। अभी दो दिन पहले तक तो सब ठीक था। तेज़ धूप से झुलसते पौधे आकाश से वृष्टि के आशीर्वाद की पहली सौगात पा कर तनिक हरिया गए थे। उस वृष्टि से मेरा मन भी भीगा हुआ था।

मैं रोज़ की तरह ऑफिस जाने से पहले अपने पौधों से मिलने छत पर गई थी, तभी अचानक रूई के गोले सा वो फंगस दिखा मुझे। सारी गर्मी गुड़हल के पौधों पर कब्जा किए सफेद मिलीबग को हटाते हुए मैं इतनी परेशान हो चुकी थी कि इस सफेदी में भी मुझे पौधे का कोई शत्रु ही दिखाई दिया। ऑफिस जाने के लिए देर हो रही थी। लगा कि जिस रफ़्तार से इसने पूरे पत्ते को कवर कर लिया है, कहीं दिन भर में ये अनाम शत्रु बाक़ी पत्तियों को भी अपनी गिरफ़्त में न ले ले। मैंने एक कैंची उठाई, पत्ते को डाली से अलग किया और ऑफिस चली गई।

संझा समय वापस आ कर रोज़ की तरह फिर से छत पर गई तो देखा कि सफ़ेद फंगस में लिपटा वो पत्ता भूलवश वहीं रह गया था। मैंने जैसे ही उसे फेंकने के लिए उठाया, मेरा जी धक से रह गया।

वो कोई रोगग्रस्त पत्ता नहीं था। अपनी बगिया में जिस पाहुने के आने के लिए मैं न जाने कितने दिनों से पलकें बिछाए हुए थी, ये उसी का बसेरा था जिसकी गृहस्थी बसने के पहले ही मैंने धराशायी कर दिया था।

ये एक नन्हीं दर्जिन चिड़िया का घर था। अपनी चोंच की सुई से हरे पत्तों को सिल कर घोंसला बनाने वाली चुलबुली फुर्तीली दर्जिन चिड़िया। मैं बहुत दिनों से राह देख रही थी कि कभी दर्जिन चिड़िया मेरे घर में अपना घर बनाएगी। और जब वो घर बना तो अज्ञानतावश ही सही, पर मेरे ही हाथों बिखर गया।

शंकु के आकार के उस घोंसले को दर्जिन ने अपनी चोंच की सुई बना कर रुई और रेशों के धागों से टांके लगा कर तैयार किया था। भीतर नन्हें तिनकों का गद्दा और घोंसले की बाहरी दीवार पर नर्म सफ़ेद रुई की सजावट थी, वही सजावट जिसे मैंने सुबह फंगस समझ लिया था। इतनी सलोनी बिनाई, इतना सधा हुआ क्राफ्ट वर्क.....इस घोंसले में दर्जिन अपनी गृहस्थी बसाती, अंडों से निकले सुकुमार शिशुओं की मीठी चीं-चीं से छत का ये कोना गुलज़ार होता। क्या पता उसने दिन में उसे तलाश भी किया हो अपने इस आशियाने को। ये भी हो सकता है कि उसे कोई ज़्यादा फ़र्क न पड़ा हो और उसने कोई और घर बनाना शुरू कर दिया हो।

लेकिन मुझे फ़र्क पड़ा था। शायद मैं कुछ ज़्यादा ही भावुक हूँ, इसीलिए। मैंने उदास मन से उस पत्ते को फिर से मनीप्लांट की डाली पर अटका दिया, ये जानते हुए भी कि अब इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। देखने में भले ही पहले जैसा सलोना हो, लेकिन डाल से टूटने के बाद तो वो पंछी के लिए नष्टप्राय ही है।

आंधी-तूफ़ान, बारिश और पेड़ गिरने से भी तो कई घोंसले टूट जाते हैं, नन्हें बच्चे दम तोड़ देते हैं। दूसरे जानवरों का भोजन बन जाते हैं। तब भी मुझे बहुत पीड़ा होती है। लेकिन ये पीर अलग है, पछतावे में घुली हुई। क्या बात सचमुच इतनी बड़ी है? एक मनुष्य के हाथों एक पंछी का नीड़ ही तो नष्ट हुआ है, बस।

और मैं नन्ही चिड़िया के इस नष्ट-नीड़ को निहारते हुए सोच रही हूँ, वो कौन से लोग होंगे जो दंगों में अपने ही जैसे मनुष्यों के घर जला देते होंगे।

आस का मोती

सुषमा सिंह
सामरिक प्रणाली एवं कार्यक्रम निदेशालय

आस का मोती है मेरा दिल,
तुमसे इसकी चाह फली है....।
मैंने तुमको बरसों चाहा,
फिर भी मैंने कुछ न पाया,
जीवन की इस कठिन राह पर,
तुमको हर-दम दूर ही पाया,
लेकिन मेरी आस का पंछी,
तुमसे कुछ भी कह न पाया,
आस का मोती है मेरा दिल
तुमसे इसकी चाह फली है....।
तुमने मुझको हँसना सिखाया,
मेरे दिल में प्यार जगाया,
मेरी आशाओं में रंग भरे ,
और डगर पर बढ़ना सिखाया,
लेकिन मेरा दिल तो हमेशा,
तुम्हारी चाह में भटकता आया,
आस का मोती है मेरा दिल
तुमसे इसकी चाह फली है....।
आशाओं के पंख लगाकर,
मेरे दिल में तुम आन समाए,
हवा बसंती बनकर तुम,
मेरे दिल पर तुम ही छाए,
लेकिन मेरे सूने दिल के,
मन-मन्दिर को कौन बसाए,
आस का मोती है मेरा दिल,
तुमसे इसकी चाह फली है...।

हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन

आशा त्रिपाठी
वायुसेनाध्यक्ष के वैज्ञानिक सलाहकार का कार्यालय

विज्ञान पहुँचाना हर जन-जन तक
स्वभाषा में उपलब्ध कराना।
यह विज्ञान धर्म, वैज्ञानिक कर्म,
विश्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण बताना।।

वैज्ञानिक लेखन से तात्पर्य विज्ञान के लिए लिखना है अर्थात तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विज्ञान, आयुर्विज्ञान इत्यादि के विषय में आम जन के लिए लिखना। जब भी हिंदी में विज्ञान लेखन की बात आती है तो यह कहा जाता है कि हिंदी आदि भारतीय भाषाओं में आधुनिक वैज्ञानिक विषयों को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य ही नहीं है, पर्याप्त शब्दावली नहीं है आदि-आदि। किंतु सत्य तो यह है कि हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं विज्ञान को अभिव्यक्त करने में पूर्ण समर्थ हैं, शब्दावली विद्यमान हमारी भाषाएं भी पर्याप्त विकसित हैं तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली को और अधिक समृद्ध बनाने का कार्य निरंतर प्रगति पर है। यह कार्य आज से नहीं बल्कि पिछले लगभग दो सौ वर्षों से हो रहा है। आज स्थिति यह है कि नए शब्दों को बनाने की उतनी आवश्यकता नहीं रही है जितनी कि अभी तक बनाए हुए शब्दों के प्रयोग की ।

हमें अब हर स्तर पर वैज्ञानिक लेखन प्रारंभ कर देना चाहिए। यह वैज्ञानिक लेखन भी हमें अनुवाद पर आश्रित ना रहकर, मौलिक रूप में करना चाहिए। हमारी कुछ संस्थाओं ने यह कार्य किया भी है जैसे- काशी नागरी प्रचारिणी सभा, गुरुकुल कांगड़ी आदि। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने सन् 1898 में ही पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत कर दी थी। सन् 1900 में गुरुकुल कांगड़ी ने विज्ञान विषय की शिक्षा का माध्यम हिंदी को बनाया। यह एक दिलचस्प तथ्य है कि उस समय के समकालीन लेखक जैसे द्विवेदीजी आदि ने भी हिंदी में विज्ञान लेखन किया। विज्ञान लेखन से अभिप्राय है- विज्ञान संबंधी ज्ञान को लिखित रूप में प्रस्तुत करना। हमारे देश में हिंदी से पूर्व संस्कृत भाषा प्रचलित थी, अतः ज्ञान-विज्ञान संबंधी समस्त प्राचीन साहित्य संस्कृत भाषा में उपलब्ध है। हमारे देश में हजारों की संख्या में विज्ञान लेखक हैं, किंतु स्थिति यह है कि विज्ञान विषयों की उच्च शिक्षा हम अपनी भारतीय भाषाओं में नहीं दे पा रहे हैं। इसका मुख्य कारण है :- वैज्ञानिक विषयों संबंधी पुस्तकों की अनुपलब्धता। ऐसी स्थिति में अनुवादित विज्ञान इतना क्लिष्ट लगता है कि विद्यार्थी सोचते हैं कि इससे तो अंग्रेजी में मौलिक ही पढ़ लिया जाए। निष्कर्ष यह निकलता है कि हिंदी मात्र विज्ञापन, बाजार और मनोरंजन की भाषा बनकर ही रह जाती है। वास्तविकता यह है कि माध्यमिक स्तर पर हिंदी में पढ़ाया जाने वाला विज्ञान उच्च शिक्षा के दौरान व्यर्थ हो जाता है क्योंकि तब शिक्षा का माध्यम परिवर्तित होता है। बीएससी/बीटेक/बीई इत्यादि का माध्यम

अंग्रेजी होने से देश के करोड़ों विद्यार्थियों को हीन भावना का शिकार होना पड़ता है, उनकी प्रगति की गति अवरुद्ध होती मानसिक प्रताड़ना की अनुभूति होती है, परिणामतः, विज्ञान में स्वतंत्र एवं मौलिक चिंतन विकसित नहीं हो पाता है।

शिक्षा के माध्यम के साथ ही, रोजगार में भी विज्ञान संबंधी कार्य, हिंदी या भारतीय भाषाओं में होने चाहिए। हमारे देश में पत्र-पत्रिकाओं में नियमित विज्ञान कॉलम नहीं होते और ना ही इसकी आवश्यकता महसूस की जाती है। इंटरनेट पर हिंदी में विज्ञान संबंधी जानकारी न के बराबर है। प्रोफेशनल वैज्ञानिक अपने शोध और आलेख अंग्रेजी में ही लिखते हैं। हिंदी में शोध पत्र लिखने के लिए अंग्रेजी के समकक्ष हिंदी में भी स्तरीय मंच उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। हमारे वे वैज्ञानिक जिनकी मातृभाषा हिंदी है, वे भी हिंदी में नहीं लिखते हैं। ऐसा शायद आदतवश है, समय की कमी के कारण है या फिर उन्हें इसकी कोई आवश्यकता ही अनुभव नहीं होती है। पेशेवर वैज्ञानिक अपने शोध पत्रों के प्रकाशन सहित अपना सारा काम अंग्रेजी में ही करते हैं। अंत में होता यह है कि इन पेशेवर वैज्ञानिकों में हिंदी में विज्ञान लेखन करने की क्षमता भी विकसित नहीं हो पाती है। आज स्थिति यह है कि हिंदी में विज्ञान लेखन अधिकांशतः जिनके द्वारा किया जा रहा है वे लोग पेशे से विज्ञान से जुड़े हुए ही नहीं हैं। वास्तविकता यह है कि हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषा और विज्ञान पढ़ने-लिखने वाले अत्यंत कम हैं, यही स्थिति रही तो इनकी संख्या अवश्य और कम होती जाएगी। अतः अधिक देर होने से पहले ही चेतना होगा तथा इस दिशा में योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना समय की आवश्यकता है। हमारे समाचार पत्र-पत्रिकाएं विज्ञान पर कम से कम एक कॉलम नियमित रूप से निकालें। आज शायद ही कोई वैज्ञानिक अपने कार्य को हिंदी में समझा पाए। भाषा का बहुत प्रभाव पड़ता है। शब्द मात्र एक ध्वनि नहीं है। प्रत्येक शब्द अपने साथ अपना एक संसार लेकर चलता है। उसका अपना इतिहास होता है। देश में अनेकों लोग अपनी-अपनी मातृ भाषाओं में विज्ञान लेखन कर रहे हैं।

विज्ञान लेखन: लक्ष्य वर्ग

हमारा लक्ष्य वर्ग कौन है? छात्र, वैज्ञानिक पाठ्य-पुस्तकें तथा वैज्ञानिक लेख लिखना। विज्ञान के विद्यार्थी बनिए। पुस्तकों का स्थाई महत्व होता है और वे वर्षों तक पढ़ी जाती हैं इसलिए विज्ञान के किसी भी विषय पर पुस्तक लिखिए। वैज्ञानिक खोजों, आविष्कारों पर लिखिए। हिंदी में विज्ञान लेखन का प्रारंभ 1884 और 1888 के बीच 'पीयूष प्रवाह' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित अंबिकादत्त व्यास की रचना 'आश्चर्यजनक वृतांत' से माना जाता है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक माइकल फराडे ने कहा था- 'हमें बच्चों के लिए लोकप्रिय विज्ञान के व्याख्यान देने चाहिए ताकि वे विज्ञान को अच्छी तरह समझ-बूझ सकें। उन्होंने ऐसे व्याख्यानों की परंपरा प्रारंभ की और अपना पहला व्याख्यान 'मोमबत्ती का रासायनिक इतिहास' विषय पर दिया। वे कठिन वैज्ञानिक विषयों पर भी बहुत ही सरल भाषा में भाषण देते थे।

विज्ञान लेखन: तत्काल करने योग्य कार्य

1. लेखकों को हिंदी में विज्ञान लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
2. वैज्ञानिकों को अपना कार्य मौलिक रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
3. वैज्ञानिकों को अपनी मातृभाषा में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
4. विज्ञान सरल एवं सहज भाषा में लिखा जाए। शीर्षक भ्रामक नहीं, स्पष्ट हो।
5. विज्ञान लेखक को विज्ञान की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए।

6. हमें बच्चों के लिए लोकप्रिय विज्ञान के व्याख्यान देने चाहिए।
7. वैज्ञानिक समाज को भी पहल करनी होगी। इंटरनेट और डिजिटल माध्यम से इस कार्य को बखूबी किया जा सकता है।
8. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का पर्याप्त प्रचार होना चाहिये।
9. पत्र-पत्रिकाओं में नियमित विज्ञान कॉलम होने चाहिये। वैज्ञानिक पत्रकार भर्ती किये जाने चाहिये।
10. इंटरनेट पर भी हिंदी में विज्ञान संबंधी अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध कराई जानी चाहिये।
11. हिंदी में शोध पत्र लिखने के लिए अंग्रेजी के समकक्ष हिंदी में भी स्तरीय मंच उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

पश्चिमी विज्ञान के पितामह कहे जाने वाले फ्रांसिस बेकन का 'ज्ञान ही शक्ति है'–कहकर उन्होंने ज्ञान-विज्ञान आधारित कहना था समाज के गठन पर जोर दिया था। बेकन का मानना था कि विज्ञान मनुष्य को जानलेवा श्रम और व्याधियों से बचाकर उसका मुक्तिदाता सिद्ध होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी में विज्ञान लेखन की काफी संभावनाएं हैं।

जिंदगी... गम की गहराई

किरन
आरटीआई प्रकोष्ठ

क्यों जिंदगी मुझे रुला देती है।
ना जाने क्यों, यूँ ही, बस यूँ ही सुला देती है।
सुबह उठकर भोर के सूरज सा चमक जाता हूँ।
घर से यूँ ही, न जाने क्यों, बस यूँ ही निकल जाता हूँ।
सूरज की तो मंजिल है, एक रास्ता है।
मेरी न कोई मंजिल है, न मेरा कोई रास्ता।
न मेरा कोई साथी है, न मेरा कोई कारवां।
दिनभर यूँ ही भटकता रहता हूँ मैं तन्हाईयों में।
एक अंजान से रास्ते पर, एक अंजान सी मंजिल की ओर।
डूबता जाता हूँ मैं, गम की गहराईयों में।
शाम ढले फिर लौट आता हूँ, चाँद सा।
करता हूँ इंतजार, तारों के टिमटिमाने का।
फिर सुबह सूरज के लौट आने का।

स्वास्थ्य ही धन है

चन्द्र प्रकाश मीणा
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

प्रस्तावना

मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उसकी सफलता और खुशियों की कुंजी है। इस लेख में हम स्वास्थ्य के महत्व पर चर्चा करेंगे और यह साबित करेंगे कि स्वास्थ्य ही वास्तव में धन होता है।

स्वास्थ्य का महत्व

स्वास्थ्य मानव जीवन का सबसे अमूल्य धन है। यदि हमारे पास समृद्धि और सुख-समृद्धि के बावजूद अच्छा स्वास्थ्य नहीं है, तो वे सब कुछ व्यर्थ हो जाते हैं। एक बीमार व्यक्ति के पास सभी धन और संपत्ति की अधिकता के बावजूद खुशी की कोई कीमत नहीं होती। स्वास्थ्य श्रेष्ठता के बिना जीवन अधूरा होता है।

सकारात्मक प्रभाव

अच्छे स्वास्थ्य का होना व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने में मदद करता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है जो किसी भी कठिनाई का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है। साथ ही, शारीरिक गतिविधियों में भाग लेने से आत्मा को शांति और सुख का अनुभव होता है।

उत्तम कार्यक्षमता

स्वस्थ व्यक्ति का मानसिकता और कार्यक्षमता स्तर अधिक होता है। वह अपने कार्यों में प्रफुल्लित होता है और सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने की क्षमता प्राप्त करता है। स्वास्थ्य के साथ सही मानसिकता और उच्च कार्यक्षमता व्यक्ति को आगे बढ़ने में मदद करते हैं।

रोगों से बचाव

आजकल की भागदौड़ और तनावभरी जिंदगी में अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गई है। सही आहार, नियमित व्यायाम, और स्वस्थ जीवनशैली से हम अनेक रोगों से बच सकते हैं। स्वास्थ्य रहित जीवनशैली वाले लोग अक्सर मोटापे, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग, और अन्य कई बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं।

नियमित चेकअप

नियमित चिकित्सा जांच स्वास्थ्य की देखभाल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें किसी भी संभावित बीमारी की पहचान और उसका समय पर इलाज करने का मौका देता है। नियमित चेकअप से निरंतर स्वास्थ्य मॉनिटरिंग होता रहता है और ऐसे अमूल्य योगदान करता है जो बाद में भारी खर्च और परेशानियों से बचाते हैं।

निष्कर्ष

इसलिए, हम कह सकते हैं कि स्वास्थ्य ही धन है। सफल और खुशहाल जीवन जीने के लिए अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यकता है। हमें अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल करनी चाहिए ताकि हम एक उच्च गुणवत्ता वाले जीवन का आनंद उठा सकें।

ज़िंदगी

योगेश राणा
सामरिक प्रणाली एवं कार्यक्रम निदेशालय

तुम उस दिन एक पल रुक कर जरा मुसकुराती,
बहार से सजी फूलों की डाली झुक जाती,
तुम नज़र उठाती, सर झुकाती, हया से शर्माती,
हवा तो क्या, ज़मीन भी चलना भूल जाती।
इंसान तो क्या फरिश्तों ने भी सर झुकाया होता,
जरा देर को चाँद भी ज़मीन पर उतर आया होता,
सूरज ने जलना छोड़, धूप की जगह,
चाँदनी ज़मीन पर बरसाई होती।
भवरे फूलों पर मंडराना भूल जाते,
कलियाँ फूल बन खिलना भूल जाती,
घृणा के पर्वतों पर बैठी सभ्यताएं,
कुछ लम्हें अपना गम भूल जाती।
तुम उस दिन एक पल रुककर जरा मुसकुराती,
बहार से सजी फूलों की डाली झुक जाती।

भारतीय संस्कृति की मूल धरोहर योगासन व प्राणायाम

संजीव कुमार
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

आज भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में योग को विशेष स्थान एवं महत्व प्रदान किया जा रहा है। भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है योग। आज के तनाव भरे जीवन में यदि कोई रोशनी की किरण है तो वह केवल योग व प्राणायाम है, जिससे आप स्वयं को निरोग रख सकते हैं। प्रतिदिन प्रातः मात्र एक घंटा योग किया जाए तो शेष 23 घंटे आप पूरी ऊर्जा व प्रसन्नता के साथ व्यतीत कर सकते हैं। आपने यह तो अक्सर सुना ही होगा कि "जब जागो तभी सवेरा" अर्थात् आप किसी भी आयु में योग प्रारंभ कर सकते हैं। यहां जागो से तात्पर्य है कि स्वास्थ्य के प्रति सजग होना और प्रतिदिन योग व प्राणायाम करना ।

प्राचीन भारतीय विद्या में योग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। भारत का प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद है जिसमें योग का उल्लेख है। उपनिषदों में भी योग और इसके अभ्यास की चर्चा है। साथ ही महाभारत में भी योग उपचार का उल्लेख है। धार्मिक ग्रंथ महाभारत में लिखा है– तापेन भव तप्तानाम् योगो हि परमौषधम्॥

जिसका अभिप्राय है कि अनेक सांसारिक दुखों और समस्याओं की योग एक महान सर्वरोगकरणी विद्या है।
योग की विभिन्न परिभाषाएं:–

- **वेदान्त के अनुसार:** जीवात्मा और परमात्मा का संपूर्ण रूप से मिलना योग है।
- देहात्म बुद्धि त्यागकर अर्थात् शरीर से ममत्व भाव हटाकर आत्मभाव उत्पन्न करना योग है।
- **सांख्य मतानुसार:** "युप्रकृत्योर्वियोगेअपि योग इत्यभिद्ययिते" पुरुष, प्रकृति का प्रथकत्व स्थापित कर दोनों का वियोग करके पुरुष के स्वरूप में स्थित होना योग है।
- **योग कर्मसु कौशलम्:** कर्म का कौशलरूप भी योग है ॥गीता॥
- प्राण और अपान के संयोग, चंद्र और सूर्य के मिलन को, शिव और शक्ति के एक्य को भी योग कहते हैं।

योग शास्त्र मतानुसार:–

- "सर्व चिंता परित्यक्तो निश्चिन्तो योग उच्यते।"
- प्रत्यभिज्ञान दर्शनानुसार: "शिव और आत्मा के अभेद ज्ञान का नाम ही योग है।"
- योग वशिष्ठ के अनुसार: "संसार सागर से पार होने की युक्ति को ही योग कहते हैं।"
- संपूर्णानंद (चिद विजास) ने लिखा है कि "आत्मसाक्षात्कार का एकमात्र उपाय योग है।"

- पंतजलि ने अपने योग-दर्शन के समाधि पाद के द्वितीय सूत्र में योग की परिभाषा को इस प्रकार दर्शाया है योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।

गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं:–

- तपस्विभयो अधिको योगी ज्ञानिभ्यो अपि मतो अधिकः। कर्मभ्यश्चाधिको योगी तस्मादयोगी भावार्जुन॥
- हे अर्जुन! तू योगी बन जा क्योंकि तपस्वियों, ज्ञानियों और सकाम कर्म में निरत् जन इन सभी में योगी श्रेष्ठ है।
- भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि– नात्यश्नतस्तु योगो अस्ति न चैकान्तमनश्नतः। न याति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैवचार्जुन॥
- युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु। युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥
- जो बहु भोजन करता है, उसका योग सिद्ध नहीं होता। जो निराहार रहता है, उसका भी योग सिद्ध नहीं होता। जो बहुत सोता है, उसका भी योग सिद्ध नहीं होता और ना ही उसका योग सिद्ध होता है जो बहुत जागता है।
- जो मनुष्य आहार-विहार में, दूसरे कर्मों में, सोने जागने में परिमित रहता है, उसका योग दुःख भंजन हो जाता है।

YOGA के चार वर्णों के आधार पर विचार करें तो हमें यह स्पष्ट नजर आएगा कि इन चार वर्णों को अलग-अलग करने पर क्या अर्थ निकलता है:–

- Yield योग व्यक्ति को कौन से परिणाम प्रदान करता है?
- Obtain योग से व्यक्ति को कौन सी नई उपलब्धियां प्राप्त होती है?
- Give up योग द्वारा व्यक्ति क्या-क्या छोड़ सकता है?
- Attains योग से व्यक्ति अंततः क्या प्राप्त करता है?
- Yield (योग व्यक्ति को कौन से परिणाम प्रदान करता है?)
- सांस के नियंत्रण को शारीरिक रूप से पुष्ट रखता है।

ध्यान मानसिक स्थिरता प्रदान करता है। संवेगात्मक संतुलन बनाने में सहायक होता है:–

- सुख- दुख में मान-अपमान की चिंता नहीं रह जाती।
- रोगों से मुक्ति दिलाना तथा व्यक्ति को आजीवन स्वस्थ रखना।
- मनोवैज्ञानिक रूप से अच्छा महसूस करना, जीवन प्रसन्नचित होना, समाज के साथ अच्छे से जुड़ना, कल्याणकारी कार्यों के साथ संतुष्टि का आभास होना॥
- सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, अहिंसा व जीवन के शाश्वत मूल्य हमारे जीवन को सदैव सुखमय बनाते हैं तथा इन्हीं के अनुपालन से हम आध्यात्मिकता के पथ पर अग्रसर होते हुए अंततः मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

Obtains (योग से व्यक्ति को कौन सी उपलब्धियां प्राप्त होती हैं?)

- उद्देश्यपूर्ण जीवन का निर्माण।
- जीवन की दिशा का निर्धारण।
- व्यक्ति में जागृति, चेतना व सजगता बनी रहती है।
- अहम् का परित्याग।

- शारीरिक व्याधियों से मुक्ति
- ध्यान से एकाग्रता बढ़ती है, जीवन में पारदर्शिता आती है।
- सकारात्मकता सदैव बनी रहती है।
- रचनात्मकता आती है।
- विरक्ति का भाव जागृत होना ।
- जीवन अनुशासित हो जाता है।
- जीवन व्यवस्थित हो जाता है।
- जीवन का सबसे बड़ा धन संतोष प्राप्त होता है और वह सुखी हो जाता है।
- जीवन में सहनशीलता का गुण निरंतर अभ्यास से विकसित हो जाता है।

Give up (योग द्वारा व्यक्ति क्या-क्या छोड़ सकता है?)

- व्यक्ति में बुरी आदतें, गलत प्रवृत्तियां, मादक पदार्थों का सेवन, विखंडित व्यक्तित्व के कारण उत्पन्न समस्याएं जो भी उसे नुकसान पहुंचाते हैं, वह उन सभी को छोड़ देता है।
- उसकी नकारात्मकता एवं विध्वंसात्मक सोच धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है और उसे अपने बारे में सम्यक ज्ञान होने लगता है।
- मायावी पदार्थों में आसक्ति, धन लोलुप्ता, मान-सम्मान की इच्छा, आवश्यकताओं की पूर्ति की चिंता आदि में धीरे-धीरे कमी आती है।
- अवांछित तथा गैर-तार्किक कार्यों तथा विचारों से, जिनसे स्वयं का अहित तो होता ही है तथा समाज का परिवेश भी बिगड़ता है, को वह छोड़ देता है। अतः योग करने से मन की निर्मलता बढ़ती है।

Attains (योग से व्यक्ति अंततः क्या प्राप्त करता है?)

- सर्वांगीण स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है, शरीर पुष्ट रहता है, मन शांत रहता है, सभी ओर से खुशियां मिलती हैं और आध्यात्म की प्राप्ति सहज हो पाती है।
- जीवन में कौशल का विकास होता है, जीवन गुणवत्तामय बनता है, अच्छे इंसान के गुणों का जन्म होता है, सर्वत्र श्रेष्ठता ही दिखाई देती है, हर परिवेश मोहक होता है, संपूर्णता की कामना होती है, जीवन प्रेम से परिपूर्ण होता है।
- चित्त प्रसन्न रहता है, हर प्राणी में जीवन दिखाई देता है, जीवन जीने का आनंद आता है, भावनाओं का आदान-प्रदान होता है।
- सभी नकारात्मकताओं व चिंताओं से मुक्ति मिलती है। आराम का अनुभव होता है। शांति की अद्भुत अनुभूति होती है, मन एवं हृदय शून्य में चले जाते हैं, उठा-पटक एवं द्वन्द्वों का अंत होता है, शारीरिक विकारों का विनाश होता है और व्यक्ति को शांति प्राप्त होती है।
- इन सबके साथ ही व्यक्ति अपने को सफल महसूस करता है और उसे जीतने का अहसास होता है, उसे अपनी आत्मा के सही मूल्य का ज्ञान होता है।

दरअसल योग की जितनी अधिक चर्चा की जाए, उतनी कम लगती है। अब हम आसनों की विधि एवं लाभों की चर्चा ना

करके सीधे इस महत्वपूर्ण बात पर आते हैं कि किस रोग में कौन सा आसन लाभप्रद है। योग करने की विधि एवं उनसे मिलने वाले लाभों को आप YouTube तथा Google पर भी देख सकते हैं।

किस रोग में कौन सा आसन व प्राणायाम करें?

- **दमा, श्वास संबंधी रोग (अस्थमा)**
  शीर्षासन, सर्वांगासन, भुजंगासन, शलभासन, धुनरासन, वीरासन, उष्ट्रासन, पश्चिमोत्तानासन, सुप्त वीरासन, नाड़ी शोधन प्राणायाम, सूर्य भेदन प्राणायाम, उड्डियानबंध, योग निद्रा ।
- **उच्च रक्तचाप (High BP)**
  पद्मासन, पश्चिमोत्तानासन, सिद्धासन, पवनमुक्तासन, नाड़ी -शोधन प्राणायाम (कुंभक न करें). शीतकारी, सीतली, चंद्रभेदन प्राणायाम, उज्जायी, योग निद्रा । शांत मन से बैठकर ईश्वर का ध्यान करें एवं हमेशा बगैर तेल मसाले के शाकाहारी भोजन ग्रहण करें।
- **निम्न रक्तचाप (Low BP)**
  सर्वांगासन, हलासन, कर्ण पीड़ासन, वीरासन, सूर्य नमस्कार, शशांकासन, नाड़ी शोधन प्राणायाम, भस्त्रिका, कपालभांति, सूर्य भेदन प्राणायाम तथा शवासन।
- **मधुमेह (डायबिटीज)**
  शीर्षासन, सूर्य नमस्कार, सर्वांगासन, महामुद्रा, पश्चिमोत्तानासन, उष्ट्रासन, सुप्त वज्रासन, भुजंगासन, गौमुखासन, हलासन, अर्द्ध मत्यस्येन्द्रासन, मंडुकासन, शलासन, नाड़ी शोधन प्राणायाम (बिना अंत कुंभक के)।
- **सिर दर्द**
  पद्मासन, शीर्षासन, हलासन, सर्वांगासन, पवनमुक्तासन, पश्चिमोत्तानासन, वज्रासन, माजरी आसन, नाड़ी शोधन प्राणायाम, अनुलोम-विलोम प्राणायाम, योग निद्रा।
- **आधाशीशी (माइग्रेन)**
  शीर्षासन, सर्वांगासन, पश्चिमोत्तानासन, पद्मासन में ध्यान लगाएं या सिद्धासन में ध्यान लगाएं, वीरासन, शवासन बिना कुंभक के, नाड़ी शोधन प्राणायाम, उद्गीथ प्राणायाम, योग निद्रा।
- **सीना/छाती रोग**
  सूर्य नमस्कार, शीर्षासन, सर्वांगासन, भुजंगासन, धनुरासन, पद्मासन, आकर्ण धनुरसान, पश्चिमोत्तानासन, अर्द्ध मत्स्येन्द्रासन, वकासन, बद्धकोणासन, चक्रासन, कपोतासन, नटराजासन, पीछे झुककर किए जाने वाले आसन, उज्जायी तथा नाड़ी शोधन प्राणायाम, योग-निद्रा।
- **हृदय में दर्द/विकार**
  शवासन, उज्जायी प्राणायाम बिना कुंभक के योग निद्रा, सुखासन में ध्यान या शवासन में ध्यान एवं नाड़ी शोधन प्राणायाम।
- **कमर दर्द**
  वे सभी आसन जिनकी क्रिया खड़े होकर पीछे की तरफ की जाती है एवं सुप्त वज्रासन, धनुरासन, भुजंगासन, अर्द्ध मत्स्येन्द्रासन, पर्वतासन, सर्वांगासन, शीर्षासन, चक्रासन, नाड़ी-शोधन प्राणायाम, कपाल-भांति।

- **गुर्दा रोग (किडनी)**
  सूर्य नमस्कार, सर्वांगासन, शीर्षासन एवं उसका समूह, हलासन, पश्चिमोत्तानासन, उष्ट्रासन, शलभासन, धनुरासन, अर्द्ध नौकासन, मत्स्येन्द्रासन, भुजंगासन, हनुमानासन, कपोतासन।
- **पेट दर्द (उदरशूल)**
  शीर्षासन, सर्वांगासन, हलासन, उत्तानासन, वीरासन, सुप्त वीरासन, वज्रासन एवं नौकासन (नाभि सरकी हो तो नाभि ठीक करने वाले आसन करें)।
- **संधिवात/जोड़ों का दर्द/मेरुदंडीय/स्कंधास्थि/गठिया**
  शीर्षासन तथा उसका समूह, सर्वांगासन, पद्मासन, सिद्धासन, वीरासन, गौमुखासन, उत्तानासन एवं पश्चिमोत्तानासन, पवनमुक्तासन समूह की क्रियाएं।

मोटापा दूर करने के लिए

ऊर्जाप्रदायक विशेष आसन एवं क्रियाएं, सूर्य नमस्कार, शीर्षासन तथा उसका समूह, सर्वागासन, हलासन, पवनमुक्तासन समूह की क्रियाएं, विपरीतकरणी मुद्रा एवं पेट से संबंधित रोग के सारे आसन आहार का विशेष ध्यान रखें।

उपरोक्त में वर्तमान विकृत हो चुकी जीवन शैली में आने वाले रोगों को ही सम्मिलित किया है। इसके अलावा भी भिन्न-भिन्न रोगों में भिन्न-भिन्न आसनों व प्राणायामों का सहारा लिया जाता है, जिनसे बिना दवा के आप कुछ ही दिनों के नियमित योगाभ्यास व प्राणायाम के अभ्यास के माध्यम से पूर्णतया स्वयं को स्वस्थ व निरोगी बना सकते हैं। दरअसल योग 90% प्रैक्टिकल तथा 10% थ्योरी है।

प्राणायाम

योग का जिक्र हो और प्राणायाम की चर्चा ना हो तो विषय पूर्णतया अधूरा रह जाएगा। वैसे भी योग कक्षा में आसनों के अभ्यास के उपरांत जब प्राणायाम कराए जाते हैं तो पहले यह वाक्य बोला जाता है कि आसनों की तुलना में प्राणायाम अधिक लाभकारी है। आसनों से केवल आपका शरीर लचकदार होता है, मोटापा दूर होता है तथा आसन करने के उपरांत ही हम पद्मासन में अधिक समय तक बैठकर प्राणायाम कर सकते हैं। प्राणायाम में पद्मासन में बैठने से हमारी रीढ़ सीधी रहती है तो उस अवस्था में अभ्यास के दौरान हम अधिकाधिक ऑक्सीजन का इनटेक करते हैं। हमारी इम्यूनिटी स्ट्रॉग होती है। कदाचित् इसी कारण मनु ने कहा है:– प्रणायामः परं तपः प्राणायाम से बढ़कर कोई तप नहीं है।

प्राणायाम दो शब्दों से मिलकर बना है प्राण आयाम प्राण का अर्थ है जीवन शक्ति प्राण एक ऐसी ऊर्जा है जो किसी न किसी स्तर पर सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है। प्राण ऊर्जा सभी जीवों में सूक्ष्म और सशक्त रूप से पाई जाती है। प्राण में निहित है ऊर्जा, औज, तेज वीर्य (शक्ति) और जीवनदायिनी शक्ति वही आयाम का अर्थ है विस्तार, फैलाव, विनियमन, अवरोध या नियंत्रण। अतः प्राणायाम का अर्थ हुआ प्राण अर्थात् श्वसन (जीवन शक्ति) का विस्तार, दीर्घाकरण और फिर उसका नियंत्रण।

पद्मासने स्थितो योगी नाडिदवारेण पूरितम्।
मारुतं धारयेद्यस्तु स मुक्तो ना अत्र संशय॥

अर्थ–पद्मासन में बैठकर जो योगी प्राणायाम करता है उसकी मुक्ति में कोई शंका नहीं होनी

प्राणायाम का उद्देश्य

प्राणायाम के कई उद्देश्य है उनमें से एक है संपूर्ण स्वास्थ्य देते हुए लंबी उम्र प्रदान करना। प्राणायाम द्वारा हम श्वास की गति को नियंत्रित कर सुखी हो सकते हैं। प्रकृति में भी देखते हैं कि जो पशु-पक्षी तेज गति से जल्दी-जल्दी श्वास-प्रश्वास करते हैं, उनकी उम्र कम होती है, निम्नलिखित तालिका से हम समझ सकते हैं:–

1. **कछुआ:** 1 मिनट में श्वास-प्रश्वास 4 से 5 बार उम्र लगभग 200 से 400 वर्ष
2. **सर्पः** 1 मिनट में श्वास-प्रश्वास 8 से 10 बार उम्र लगभग 120 से 150 वर्ष
3. **मनुष्यः** 1 मिनट में श्वास-प्रश्वास 15 से 16 बार उम्र लगभग 100 वर्ष
4. **घोड़ा:** 1 मिनट में श्वास-प्रश्वास 24 से 26 बार उम्र लगभग 40 वर्ष
5. **बिल्ली:** 1 मिनट में श्वास-प्रश्वास 30 बार उम्र लगभग 20 वर्ष
6. **कुत्ता:** 1 मिनट में श्वास-प्रश्वास 30 से 32 बार उम्र लगभग 14-15 वर्ष

इस प्रकार सिद्ध होता है कि श्वास की गति को नियंत्रित कर हम अपने बहुमूल्य जीवन को बढ़ा सकते हैं। साथ ही प्राणायाम से रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होता है।

जिंदगी यह भी

सुजोय दास
सामरिक प्रणाली एवं कार्यक्रम निदेशालय

जिंदगी हर लम्हा
जीने की कला सिखाती है।
जिसने इस कला को अपनाया
जिंदगी ने उसे गले लगाया॥

छोटी छोटी बातों में
जिंदगी की राहों में।
खुश रहो और मुस्कुराओ
प्यार मोहब्बत का संदेश फैलाओ॥

समय के रहते ही
अधूरे कार्य को करो पूरा।
वक्त का करो सम्मान
है यह सबसे बलवान॥

क्या रुठना क्या उदास होना
कल किसने देखा है।
अपने आज में खुश रहो
हर बात में खुश रहो॥

सेंट्रल विस्टा

सुजीत कुमार मेहता
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

"नए भारत" में मोदी सरकार की सेंट्रल विस्टा परियोजना का उद्देश्य लोगों को राजधानी में विशेष सुविधा प्रदान करना है। नई दिल्ली के सेंट्रल विस्टा की अनिवार्यताओं को ठीक करने का मतलब है इसमें सार्वजनिक क्षेत्र को कहीं अधिक बढ़ाते हुए सरकारी भवनों को आधुनिकता से जोड़ना।

नई दिल्ली के सेंट्रल विस्टा के पुनर्विकास के लिए मोदी सरकार द्वारा चुने गए वास्तुकार ने अपनी अवधारणा और दुनिया के अन्य विश्वसनीय सार्वजनिक स्थानों, विशेष रूप से वाशिंगटन डीसी में नेशनल मॉल और पेरिस के चैंप्स-एलिसीज़ की तुलना की है।

वह इन सहसंबंधों को प्रस्तुत कर उस प्रस्ताव को प्रदर्शित करता है जो सेंट्रल विस्टा पर वर्तमान सार्वजनिक संरचनाओं के बड़े हिस्से का पुनर्निर्माण कर उन्हें व्यापार के बड़े, समकालीन स्थानों के साथ प्रतिस्थापित करता है। यह शहर और देश दोनों के इस केंद्र बिंदु को "कुलीनता" में बदलने के प्रयास जैसा दिखता है।

इस पर बहस करते हुए, दुनिया भर में अधिकांश शहरी डिजाइनरों और वास्तुकारों के बीच आम तौर पर सहमति है कि नई दिल्ली का वर्तमान सेंट्रल विस्टा सकारात्मक रूप है और इसकी वर्तमान संरचना को निर्विवाद रूप से विश्व में प्रशंसा मिली है।

सभी भावी पीढ़ी द्वारा याद किए जाने का प्रयास मानवीय विशेषता है। सदियों और सभ्यताओं के शासकों ने इसी कारण से स्मारकों और वास्तव में शहरों का निर्माण किया है।

जाहिर तौर पर अंग्रेजों के लिए नई राजधानी, नई दिल्ली का निर्माण करने का यही कारण था, लेकिन उन्हें शायद यह नहीं पता था कि कुछ दशकों से भी कम समय में ब्रिटिश शासन समाप्त हो जाएगा। फिर भी, वे भारत में निर्माण के संदर्भ के प्रति जागरूक थे और पारंपरिक भारतीय वास्तुकला को अपने डिजाइन में शामिल करने और समामेलन करने के पक्ष में थे। यही कारण है कि इमारतों और राजधानी को देश द्वारा स्वीकार किया गया जिसे अंग्रेज़ पीछे छोड़ कर गए थे।

इस स्मारकीय प्रयास की मुख्य इमारतों में से एक भूतपूर्व काउंसिल हाउस है, जो अब संसद भवन है। संसद भवन का डिजाइन मध्य प्रदेश के मुरैना में चौसठ योगिनी मंदिर से प्रेरित है।

इस संरचना के विकास ने कई रोमांचक मोड़ देखे हैं । हर्बर्ट बेकर ने शुरुआत में तीन पंखों के साथ एक व्यवस्था का प्रस्ताव रखा। नए संसद भवन का वर्तमान प्रस्ताव इस प्रस्ताव पर आश्चर्यजनक वापसी है। हालांकि, लुटियंस ने, जैसा कि हो सकता है, बेकर की योजना का विरोध किया और बल्कि एक परिपत्र, कालीज़ीयम जैसी व्यवस्था का प्रस्ताव रखा जिसे हम आज देखते हैं।

संसद भवन की योजना एक सर्कल पर आधारित है जिसका बाहरी व्यास 174 मीटर है। तीन कक्ष लेजिस्लेटिव असेंबली, द चैंबर ऑफ प्रिंसेस एवं द काउंसिल ऑफ स्टेट के लिए बने थे। ये इस सर्क्युलर योजना के भीतर स्थित हैं, जिसमें इमारत के साथ 120-डिग्री अलगाव एक तकनीकी मारवेल है और इसमें भारतीय वास्तुकला के कई तत्व शामिल हैं। कक्षों को अच्छी तरह से डिजाइन किया गया था और यहां तक कि टाइलें इस तरह लगाई गयी थी कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हाउस में हर कोई किसी भी वक्ता को सुन सके। तब से संसद भवन में कई बदलाव और सुधार किए गए। बदलती आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए संसद पुस्तकालय के लिए एक भवन और संसदीय सौंध का विस्तार भी किया गया ।

आजादी के बाद, काउंसिल हाउस का नाम बदलकर पार्लियामेंट हाउस या संसद भवन कर दिया गया और तीन मुख्य कक्षों अर्थात् लेजिस्लेटिव असेंबली, चैंबर ऑफ प्रिंसेस और काउंसिल ऑफ स्टेटस को लोकसभा, राज्य सभा और पुस्तकालय के रूप में पुनर्निमित किया गया। सेंट्रल हॉल का उपयोग संयुक्त बैठकों के लिए किया जाता हैं । भारतीय संविधान के ड्राफ्टिंग के दौरान संसद भवन का सेंट्रल हॉल वह जीवित विरासत स्थल है जहां जवाहरलाल नेहरू की 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' और बी.आर. अम्बेडकर के 'ग्रामर ऑफ अनार्की' जैसे स्पीच पर गहन बहस और चर्चा हुई । समृद्ध रूप से अलंकृत पोर्टलों में प्रतिष्ठित सांसदों की कई पीढ़ियां गुजर रही हैं। कुछ प्रमुख राष्ट्रीय हस्तियां भी यहां प्रतिमाओं, मूर्तियों और चित्रों के रूप में अमर हैं।

एक नए संसद भवन का निर्माण होने से इस समृद्ध जीवित विरासत को सँजोये रखना संभव हो पाएगा । वर्तमान इमारतों की उम्र और गिरावट के कारण वास्तुशिल्प सुधार आवश्यक है। इस परियोजना को देश का गौरव कहा जा रहा है और भारत के लोगों के लिए यह गौरव का विषय है। यह एक ऐतिहासिक परियोजना है जिसे लोग पीढ़ी दर पीढ़ी याद रखेंगे। नई दिल्ली के सेंट्रल विस्टा के भव्य लक्ष्यों को सुधारने का मतलब सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार करना होगा। सरकारी क्षमताओं के इस विस्तार के माध्यम से, मौजूदा चारदीवारी का निर्माण और भारी समरूपता के साथ योजना बनाकर, नई सेंट्रल विस्टा योजनाएं लुटियंस के दृष्टिकोण को आगे बढ़ा रही है। कुल मिलाकर, सेंट्रल विस्टा विश्वव्यापी आकांक्षाओं के साथ एक आधारभूत लोकतंत्र की पुरानी नींव को दोगुना करता है।

शिकारियों की नई पड़ताल

अरुणकमल
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

शिकार.. कितना भयावह शब्द लगता है.. कितने-कितने चित्र आँखों के सामने आ जाते हैं.. किसी जीप सफारी से बंदूक लगाए किसी शेर या मासूम हिरण की तलाश में कोई शिकारी या नेशनल जिओग्राफिकल चैनल पर किसी शेर का किसी हिरण का पीछा करते हुए शिकार या किसी चूहे का पीछा करती कोई बिल्ली या किसी छोटे खतरनाक जानवर के हाथों कबूतर की मौत.. पता नहीं क्या-क्या। आंखों के सामने घूम गए इन चित्रों में प्रथम को छोड़कर बाकी सभी एक प्राकृतिक चक्र है.. जो आज भी होता है, लेकिन पहला उदाहरण शायद आज हमारे सामने कम आता है.. क्योंकि आजकल जानवरों या पक्षियों के शिकार पर कानूनी रूप से रोक लगा दी गई है। पहले हर राजा-महाराजा या फिर जमींदार साहब एक अच्छे शिकारी हुआ करते थे.. घर में तरह-तरह की बंदूकें हुआ करती थी और सभी एकनाली-दुनाली का बराबर रख-रखाव चलता था। उनके एक-एक पेंच-पुर्जों की ऐसी तेल मालिश होती थी जैसी किसी प्रसूति स्त्री या किसी नवजात बच्चे की भी कभी न हुई हो और फिर पूरे शानों-शौकत के साथ निकलती थी शिकारी जमात। उनके निकलते ही वृक्षों से पक्षी भी झुंड के झुंड उड़कर किसी सुरक्षित ठिकाने की तलाश में होते थे और उस समूह को ही निशाना बनाकर कई गोलियों की आवाज गूंज जाती थी और साथ ही कई-कई पक्षी दम तोड़कर जमीन पर गिर जाते थे, जिसे लूटने के लिए गाँव के लोग ऐसे भागते थे, जैसे बच्चे किसी कटी हुई पतंग को पकड़ने के लिए अपनी जान लगा देते हैं।

फिर कहाँ गई वह जमात.. वह मनोरंजन क्या सिर्फ एक मनोरंजन ही था। नहीं यह एक भाव है जो सभी में कमोबेश पाया जाता है और आज के जमाने में सुषुप्तावस्था में बना रहता है। घर-बाहर, रोड-रास्ते, स्कूल कॉलेज, अस्पताल-डिस्पेंसरी हर जगह आपको यह शिकारी दिख जाएंगे.. बस आप अपनी नजर की बारीकी को बनाए रखें। आप यह न सोचें कि आज के समय में कुछ गुंडे और उनके कुछ गुर्गे.. जो बात-बात पर होली-होली खेल रहे होते हैं.. वे ही शिकारी हैं। शिकारी हम सब हैं। कभी स्कूल-कॉलेजों में देखा है? कुछ बच्चों का एक बलिष्ठ समूह होता है.. जो हरदम किसी निरीह बच्चे की तलाश में रहता है कि कब उस पर विजय हासिल कर लिया जाए.. उनकी हँसी भी एक शिकारी हँसी ही होती है, जिससे हर शिकार घबरा जाए और वह निरीह उन शेरों को पहचानता है और हरसंभव कोशिश करता है कि वह किसी हिरणी की तरह पतली गली से छुपकर निकल जाए और इन शेरों की उस पर नजर न पड़े। किसी सड़क की ही बात ले लेते हैं। हर गाड़ी अपनी रफ्तार से जा रही होती है.. किसी गाड़ी को किसी गाड़ी से आगे निकलना होता है तो वह शांति से बिना हॉर्न बजाए समय और मौका देखकर निकल लेता है। लेकिन सभी ऐसे नहीं होते.. वह जानबूझकर अपने आगे वाले गाड़ीवाहक को हॉर्न बजा-बजाकर इतना परेशान करेंगे कि आगे वाला नर्म दिल का हो तो वह दाएँ-बाएँ कर अपनी गाड़ी रोक ही लेता है और उसे बाइज्जत आगे बढ़ जाने का मौका देता है। अगर वह शिकारी चला गया तो उसे लगता है कि

जान बच गई, जाने किस आफत में फँसने वाला था। लेकिन शिकार का मजा तब आता है जब सड़क पर दो फुंफकारने वाले शिकारी एक साथ मिल जाते हैं और फिर बराबरी की भिड़ंत हो जाती है। और फिर खून की होली में कोई शिकार बनता है और कोई शिकारी.. और वह शिकारी भी तब बच तो नहीं पाता है उसे किसी शिकारी पुलिस या शिकारी डॉक्टर के पास भेज दिया जाता है उसके शिकार की भूख मिटाने को या उसके गर्म खून में थोड़ी शीतलता भरने को।

मैं बचपन से ही थोड़ी नर्म तबीयत की थी.. शिकार, खून, घायल, बीमार, अस्पताल जैसे शब्द ही मुझे आधा बेहोश कर जाते थे। बचपन में हम सभी अपने-अपने घरों में सोने के समय मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी लगाया करते थे, लेकिन मच्छर भी इतने चालाक थे कि हमारे सभी प्रयासों को विफल बनाते हुए इधर-उधर से मच्छरदानी के अंदर घुस ही जाया करते थे और फिर रात भर संघर्ष भरा बीतता था। दीदी, जो मेरे साथ ही सोती थीं.. रात में बड़ी बेदर्दी से बंद आंखों से स्वयं को ही थप्पड़ चलाती रहती और अगर किसी थप्पड़ के समय अपने हाथ और गाल के बीच किसी मच्छर का एहसास पा जाती तो अपनी आँखें थोड़ी सी खोल मुस्कुरा कर कह देती.. 'गया'। लेकिन मुझे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं हो पाता अगर खून का एक कतरा भी मेरे हाथों में लग जाता.. चाहे वह खून किसी मच्छर का ही क्यों न हो। मैं अपनी नींद खराब कर रुआंसी होकर उठती.. मुट्ठियों में उस मच्छर को बड़ी नजाकत के साथ पकड़ती कि उसकी जान बिल्कुल न जाए और फिर धीरे से मच्छरदानी के बाहर अपनी मुट्ठी निकाल उसे जीवनदान दे देती। आज बैठे-बैठे मुझे ये सारी बातें इसलिए याद आ गई कि आज अपने ही घर में मैंने एक शिकारी को देखा है.. वह है हमारे घर की बाई। हर शाम हम जो ऑल आउट जलाकर ही अपना काम चला लिया करते थे.. लेकिन बिन्नी, जो स्वभाव से बहुत मीठी और घर के सभी सदस्यों का पूरा ध्यान रखने वाली है, वह इस ऑल आउट से बिल्कुल संतुष्ट नहीं होती। शाम का खाना बनाकर बाकायदा पूरी तैयारी के साथ हर आधे घंटे पर वह अपने हाथों में बंदूकनुमा रैकेट लिए हुए हर कमरे में बहुत बहादुरी के साथ प्रवेश करती है। मुख पर पूरी प्रसन्नता छाई होती है जैसे आज तो एक को भी छोड़ना नहीं है। घर के कोने-कोने, इस तरफ उस तरफ हर तरफ अपनी शिकारी नजरें साधते हुए वह पूरी चौकन्नी होकर इस तरह शिकार पर निकलती है कि मैं बस अपनी चोर नजरों से उसे देखती रह जाती हूं.. और रैकेट में मच्छरों के दाह संस्कार की प्रतिध्वनियों पर वह खूब खिल-खिलाकर हँसती है और अगर एक साथ कुछ ज्यादा मच्छर मिल गए अपनी हँसी के साथ अपनी खुशी भी साझा करती है .. 'दीदी आज तो दिवाली हो गई'। घर के सारे मच्छरों का शिकार कर और अपने घरवालों को सुरक्षित कर वह निश्चिंत बैठ जाती है। मुझे लगता है कि समय और आवश्यकताएं बदल गई हैं, तौर-तरीके बदल गए हैं.. लेकिन आदमी मूलतः वही है।

इन हँसी मजाक की बातों को छोड़ दें तो हर दिन हमें इन शिकारी प्रवृत्तियों या कहें जंगली प्रवृत्तियों के प्रमाण मिलते रहते हैं। मसलन आज के ही अखबार को देख लें तो तीन समाचारों पर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगी। पहला एक बहू ने अपने 86 वर्षीय सासुमाँ को रसोई घर में कुकर से मार-मार कर जान से मार डाला। कारण यह कि वह अपने दैनिक जीवन में सासुमाँ के माध्यम से आ रही परेशानियों से तंग आ चुकी थी। हम सभी को पता है कि जीवन-मृत्यु हममें से किसी के हाथ में नहीं है, वरना कौन माता अपने बच्चों पर बोझ बनकर उन्हें परेशान करने की इच्छा रखती होगी। लेकिन हम उन्हें अपने समय में से कुछ मिनट-घंटे देने को तैयार नहीं होते और यहाँ तक कि उनकी जान भी ले लेते हैं। दूसरी खबर हिला देने वाली थी जहाँ एक पिता ने संपत्ति के विवाद ने अपने बेटे को मार डाला और तीसरी खबर में एक बेटे ने अपनी माँ को मार डाला जो पिता की मृत्यु के बाद किसी अन्य पुरुष से विवाह की इच्छुक थी। कारण बहुत सारे

हो सकते हैं.. जिनका हमें सामना करना पड़ सकता है.. लेकिन ऐसे उदाहरण हमें दो-एक ही देखने को मिलते हैं। ऐसा हरगिज नहीं है कि इन्हीं दो-एक के सामने ऐसी मुसीबतें आती हैं.. शेष की जिंदगी में कोई समस्या नहीं होती। जिंदगी उतार-चढ़ाव का ही नाम है। हर परिवार में सुख-दुख लगा ही रहता है.. समस्याएँ आती जाती रहती हैं..लेकिन हम मानव हैं तो हमें मानवीय गुणों से युक्त होना चाहिए। ऐसा हरगिज नहीं होना चाहिए कि हम जंगल के जानवरों की तरह अपनी इन शिकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा दें। हम अपने मस्तिष्क को जिस दिशा में ले जाना चाहेंगे, वह उस ओर हमें खींचने को और प्रेरित करेगा। अत: दिशा का निर्णय हमें बहुत ही ठंडे दिमाग से सोच समझकर लेना चाहिए वरना मनुष्य और जानवर में कोई फर्क नहीं रह जाएगा और शिकारी बनकर आप खुद समस्याओं के शिकार बन जाएंगे। इसलिए समस्याओं से हार कर शिकार नहीं समस्याओं के सवार बनिए और शिकार नहीं समस्याओं पर वार करिए।

कैसे बने देश महान

राधिका चावला
सामरिक प्रणाली एवं कार्यक्रम निदेशालय

नहीं बन सकता हर नागरिक सैनिक,
नहीं हो सकता हर कोई किसान,
हर कोई निभाए यदि फर्ज़ अपना,
तभी बनता देश महान।
पिताजी न जाएँ काम पर,
माताएँ कर दें हड़ताल,
न उगे फसल खेतों में,
नालियाँ-सड़कें रहें गंदी,
व्यापार पड़ जाएं मंद,
कारखाने हो जाएँ बंद।
ऐसे राष्ट्र का क्या भविष्य, क्या जिक्र,
क्या कोई करे सम्मान।
परिश्रम ही असली देशभक्ति,
उद्यम से ही मिलती राष्ट्र को पहचान।
व्यर्थ निहारते हो दूसरों की सुनहरी पहल,
जो जागता समय रहते, बनते उसी के सुंदर महल,
अपनी उपयोगिता से ही व्यक्ति होता महान।
कभी निकम्मों का भी देखा कहीं सम्मान?
नहीं बन सकता हर नागरिक सैनिक,
नहीं हो सकता हर कोई किसान,
हर कोई निभाए यदि फर्ज़ अपना,
तभी बनता देश महान।

आपदा में अवसर

प्रतिष्ठा मिश्रा
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

हे सारथे ! द्रोण क्या देवेन्द्र भी आकर लड़ें।
है खेल, क्षत्रिय बालकों का व्यूह भेदन कर लड़ें।
मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत जानो मुझे।
देवेन्द्र से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा मानो मुझे।

अर्जुन की अनुपस्थिति, गुरू द्रोण द्वारा चक्रव्यूह की घोषणा, चारों पाण्डवों की असमर्थता, सेना में भय, संशय की स्थिति, व्यूह कौन तोड़ेगा? पाण्डवों पर आए इस संकट को एक अव्यस्क अर्जुन पुत्र अभिमन्यु ने एक अवसर के रूप में देखा। चक्रव्यूह की आधी विद्या का ज्ञान, मृत्यु की निश्चितता के बावजूद अभिमन्यु ने संकट को व्यर्थ न जाने दिया, बल्कि इस अवसर का लाभ उठाकर युगों-युगों तक स्वयं की कीर्ति निर्मित कर दी। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है, जहाँ बड़े संकट को अवसर के रूप में बदला गया। यद्यपि इस प्रयास में व्यक्ति का जीवन, मरण में बदल गया लेकिन व्यक्ति सदा के लिए अमर हो गया। दरअसल संकट तो मात्र देखने का नजरिया है जो व्यक्ति को अतीत में की गयी गलतियों को सुधारने का मौका देता है। यह व्यक्ति को अवसर देता है कि वह आवश्यक संशोधन कर बेहतर जीवन का निर्माण करे। जैसे कि सिकन्दर के आक्रमणों ने भारतीय उत्तर पश्चिम सीमा की कमजोरी उजागर की। आगे चलकर इस अवसर को समझते हुए चाणक्य ने चंद्रगुप्त के बल पर अखिल आर्यावर्त को जीतने का सपना पूरा किया।

वस्तुतः संकट व्यवस्था में विद्यमान कमजोरी को उजागर करता है, यह अवसर देता है कि व्यवस्था को मजबूत किया जाए। अमेरिकी गृहयुद्ध इसी संकट का उदाहरण है जहाँ गृहयुद्ध के संकट में अमेरिका ने अपनी अखण्डता सुनिश्चित की। ऐसा ही संकट भारतीय अर्थव्यवस्था पर आया था, परन्तु भारतीय नीति निर्माताओं ने उसे व्यर्थ नहीं जाने दिया बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के माध्यम से अर्थव्यवस्था को मजबूत किया। व्यापक रूप में देखें तो प्रलय (संकट), सृजन का पूर्वगामी है। रचनात्मकता के लिए विनाश की पृष्ठभूमि उत्तरदायी है। यह व्यक्ति की क्षमताओं को बढ़ाकर व्यक्ति को अनअपेक्षित लाभ देती है। प्रसव के दौरान माँ के जीवन पर आया संकट, वास्तव में एक प्रारंभ होता है एक कोमल, सुकुमार जीवन का। यह भी आवश्यक नहीं कि संकट सदैव भौतिक हो! महात्मा बुद्ध द्वारा वृद्ध, रोगी, मृत, सन्यासी को देखकर उनके मन में उपजा वैचारिक द्वन्द भी एक व्यक्तिगत संकट था। लेकिन बुद्ध ने इस संकट को व्यर्थ न जाने दिया बल्कि संकट को अपने अस्तित्व पर चिंतन का साधन समझा। जिसका परिणाम "'गौतम' से बुद्ध की यात्रा" के रूप में निकला। ऐसे संकट मानवीय भावों के उत्तेजक के रूप में सामने आते हैं। जो मानवीय कौशल, दक्षता, क्षमता को बढ़ाकर

मानव विकास का अवसर उपलब्ध कराते हैं। वस्तुतः ये संकट आपसी सहयोग की आवश्यकता रेखांकित कर जाते हैं। जैसे– हाल ही की कोविड महामारी मानव जाति पर सदी का सबसे बड़ा संकट रही, लेकिन हमने इस संकट को अवसर में भी बदला। स्वास्थ्य–तकनीकी क्षेत्र में व्यापक अनुसंधान, टीके का निर्माण इसी अवसर का उदाहरण है। ऐसा ही संकट माउन्टेन मैन मांझी के व्यक्तिगत जीवन में भी भावनात्मक रूप में आया। परन्तु अपने निश्चय के बल पर उन्होंने पहाड़ से रास्ता निकाला। लेकिन यहाँ ध्यान देने वाली बात है कि ऐसे संकटों का आवश्यक लाभ सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत दक्षता–कौशल आवश्यक है। संकट को अवसर में बदलने के लिए व्यक्ति में संघर्ष की क्षमता आवश्यक है। उसमें इस बात की आवश्यकता होती है कि समय आने पर व्यक्ति समाज, व्यवस्था अथवा इतिहास से दो-दो हाथ करने के लिए तैयार रहे।

वस्तुतः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक ओर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन दूसरी ओर द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी आक्रमण। ऐसी दशा में भी गाँधी का भारत छोड़ो आंदोलन, करो या मरो का नारा इसी संकट/व्यवस्था के विरुद्ध रणभेरी था। 2013 में उत्तराखण्ड की बाढ़ एक समस्या के रूप में उपजी, साथ ही यह सुधारों के लिए एक बिन्दु को रेखांकित कर गयी। ऐसा ही दूसरा उदाहरण चेनोबिल परमाणु संयंत्र लीक था, जिस संकट में नीति निर्माताओं ने ध्यान न देकर उसे व्यर्थ में जाने दिया। सुरक्षा उपायों की यह कमी 2011 फुकुशिमा परमाणु संयंत्र आपदा के रूप में निकली। वर्तमान में होने वाला जलवायु संकट भी इसी ओर दृष्टिपात करता है। यह मानवीय प्रयासों की कमी को दर्शाता है, साथ ही बेहतर कल के लिए वर्तमान में प्रयास की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

साररूप में दरअसल संकट केवल संकेत मात्र होता है जिसमें आवश्यक सुधार कर बेहतर भविष्य का निर्माण करना होता है। इस प्रक्रिया का पालन करने वाले इतिहास में अमिट स्याही से नाम लिखे जाने के पात्र होते हैं, वहीं संकट रूपी समय में अवसर का समय पर लाभ न उठाने वाले 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' के अनुरूप अपने कृत्यों पर पछतावा करते रहते हैं और इसके विपरीत चुनौतियों को स्वीकार करने वाले मनुष्य आपदा में भी अवसर की तलाश कर लेते हैं...

जब नाव जल में छोड़ दी
तूफ़ान में ही मोड़ दी
दे दी चुनौती सिंधु को
फिर धार क्या मँझधार क्या॥

कह मृत्यु को वरदान ही
मरना लिया जब ठान ही
जब आ गए रणभूमि में
फिर जीत क्या फिर हार क्या॥

जब छोड़ दी सुख की कामना
आरंभ कर दी साधना
संघर्ष पथ पर बढ़ चले
फिर फूल क्या अंगार क्या॥

संसार का पी पी गरल
जब कर लिया मन को सरल
भगवान शंकर हो गए
फिर राख क्या श्रृंगार क्या॥

रक्षा कूटनीति और भारत के लिए इसका महत्व: रक्षा निर्यात के लिए बजट और रणनीति

दीपान्विता दास
एकीकृत वित्तीय सलाहकार (अनु एवं वि.) का कार्यालय

संक्षेप

रक्षा कूटनीति, राष्ट्रों के बीच विश्वास और सहयोग राष्ट्रीय सुरक्षा हितों को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। हाल के वर्षों में, भारत वैश्विक रक्षा बाजार में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरकर आया है और रक्षा निकायविद्या को सुदृढ़ करने के लिए रणनीतिक रूप से स्थिति में है।

यह अवधारणा पत्र भारत की विदेश नीति में रक्षा कूटनीति के महत्व की जांच करती है, जिसमें रक्षा निर्यात को बढ़ावा देने के लिए बजटीय आवंटन और रणनीतियों की विशेषता शामिल है। इसमें भारत के प्रमुख वैश्विक शक्तियों और क्षैतिज पड़ोसियों के साथ बढ़ते साझेदारियों का भी विश्लेषण किया गया है। मुख्य ध्यान यहाँ पर भारत की अंतरराष्ट्रीय मान्यता को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक शांति को प्रोत्साहित करने के लक्ष्य के साथ उसके रणनीतिक साझेदारियों को मजबूत करने पर है।

परिचय

1. **रक्षा कूटनीति का संक्षिप्त अवलोकन**

   रक्षा कूटनीति विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू बनकर उभरी है, जो क्षेत्रीय और वैश्विक शांति और स्थिरता बनाए रखने में योगदान दे रही है। यह देशों के बीच गैर-जुझारू सैन्य गतिविधियों और सहयोग के उपयोग को संदर्भित करता है। इसमें आतंकवाद-रोधी, मानवीय सहायता, आपदा राहत प्रयासों और शांति स्थापना कार्यों पर सहयोग भी शामिल हो सकता है। विदेश नीति के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में, रक्षा कूटनीति का उद्देश्य रणनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करना, राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ाना और क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता को बढ़ावा देना है।

2. **भारत का वैश्विक रक्षा में महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उदय**

   हाल के वर्षों में, भारत वैश्विक रक्षा बाजार में एक आयातक और निर्यातक दोनों के रूप में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरा है। अपनी बढ़ती अर्थव्यवस्था, विशाल और कुशल कार्यबल और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक स्थिति के साथ, भारत अपनी रक्षा कूटनीति को मजबूत करने और क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय मामलों में अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए विशिष्ट स्थिति में है। देश अपने सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण, स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ सहयोग करने में निवेश

कर रहा है। दक्षिण एशिया में, विशेषकर चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसियों के साथ बढ़ते तनाव को देखते हुए, रक्षा कूटनीति भारत की विदेश नीति की आधारशिला बन गई है।

भारत की विदेश नीति में रक्षा कूटनीति का महत्व

1. राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ावा देना

रक्षा कूटनीति क्षेत्रीय और वैश्विक भागीदारों के साथ विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देकर भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान भू-राजनीतिक संदर्भ में, भारत को क्षेत्रीय विवाद, सीमा पार आतंकवाद और क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता सहित कई सुरक्षा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। संयुक्त सैन्य अभ्यास और संवाद जैसी रक्षा कूटनीति पहल, आपसी समझ बनाने और साझा सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए एक मंच बनाने में मदद कर सकती हैं। इसके अलावा, ये पहल भारत को मजबूत सैन्य-से-सैन्य संबंध विकसित करने में सक्षम बनाती हैं, जो इसकी रणनीतिक क्षमताओं को बढ़ा सकती है और भागीदार देशों के साथ अंतरसंचालनीयता को बढ़ावा दे सकती है। रक्षा कूटनीति में शामिल होकर, भारत खुफिया जानकारी साझा करने, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण के माध्यम से अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत कर सकता है, साथ ही क्षेत्र में एक मजबूत और स्थिर उपस्थिति का प्रतिस्थान प्रकट कर सकता है।

2. क्षेत्रीय और वैश्विक साझेदारी को मजबूती देना

भारत की रक्षा कूटनीति क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों के साथ मजबूत साझेदारियों के निर्माण के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करती है। अपने पड़ोस में और उससे परे देशों के साथ रक्षा सहयोग में शामिल होकर, भारत की रणनीतिक स्थिति को मजबूती देने तथा क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मामलों में अधिक प्रमुख भूमिका निभाने की क्षमता मिलती है। उदाहरण के लिए, चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) में भारत की भागीदारी और संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, इज़राइल और आसियान देशों के साथ बढ़ते रक्षा संबंध क्षेत्रीय शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए देश की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं। ये साझा सुरक्षा संकटों को समझने और उनका समाधान करने के लिए संसाधन, प्रौद्योगिकी, और खुफिया साझेदारी के अवसर प्रदान करने के साथ-साथ भारत के रणनीतिक प्रभाव को बढ़ावा देते हैं।

3. रक्षा निर्यात के माध्यम से आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना

भारत एक मजबूत घरेलू रक्षा उद्योग विकसित करने का प्रयास कर रहा है जो इसकी आवश्यकताओं और अंतर्राष्ट्रीय बाजार की जरूरतों दोनों की पूर्ति कर सके। नीति और नियामक सुधारों के साथ 'मेक इन इंडिया' पहल ने घरेलू रक्षा क्षेत्र के विकास के लिए अनुकूल माहौल तैयार किया है। रक्षा निर्यात न केवल राजस्व उत्पन्न करता है बल्कि रोजगार के अवसर भी पैदा करता है और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देता है। रक्षा कूटनीति में शामिल होकर, भारत नए बाजारों की पहचान कर सकता है, संयुक्त उत्पादन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए साझेदारी बना सकता है और वैश्विक रक्षा बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा सकता है। अपनी बढ़ती रक्षा क्षमताओं और रणनीतिक साझेदारियों का लाभ उठाकर, भारत खुद को एक प्रमुख रक्षा निर्यातक के रूप में स्थापित कर सकता है, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा और इसके समग्र विकास में योगदान बढ़ेगा।

भारत में रक्षा कूटनीति के लिए बजट

1. भारत के रक्षा बजट का अवलोकन

भारत का रक्षा बजट दुनिया में सबसे बड़े बजटों में से एक है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने और एक मजबूत सैन्य उपस्थिति बनाए रखने के लिए देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। रक्षा बजट में मुख्य रूप से कर्मियों के वेतन, पेंशन, उपकरण खरीद, अनुसंधान और विकास, बुनियादी ढांचे और रक्षा कूटनीति पहल के लिए आबंटन शामिल हैं। पिछले कुछ वर्षों में, भारत का रक्षा बजट लगातार बढ़ा है, जिसमें उसकी सैन्य क्षमताओं को आधुनिक बनाने, उभरते सुरक्षा परिदृश्य को संबोधित करने और अपनी रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

2. रक्षा कूटनीति पहलों के लिए संसाधन आबंटन

भारत के रक्षा बजट का अधिकांश भाग आधुनिकीकरण और क्षमता निर्माण की ओर आबंटित होता है। बजट का एक भाग रक्षा कूटनीति पहलों के लिए भी आबंटित होता है। ये आबंटन संयुक्त सैन्य अभ्यास, सैन्य-से-सैन्य विनिमय, प्रशिक्षण कार्यक्रम, और मानवीय सहायता और आपदा सहायता प्रयासों जैसी गतिविधियों का समर्थन करते हैं। रक्षा कूटनीति के लिए समर्पित संसाधन भारत को अपने अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों के साथ जुड़ने, ज्ञान और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और राष्ट्रों के बीच विश्वास और सहयोग बनाने में सक्षम बनाते हैं

3. आधुनिकीकरण, क्षमता निर्माण और कूटनीतिक जरूरतों को संतुलित करना

भारत की सेना के विशाल आकार और क्षेत्र में जटिल सुरक्षा माहौल को देखते हुए, उपकरणों को आधुनिक बनाने, कर्मियों को प्रशिक्षित करने तथा अनुसंधान और विकास में निवेश करने के लिए पर्याप्त संसाधन आबंटित करना महत्वपूर्ण है। साथ ही, भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि साझेदार देशों के साथ प्रभावी संबंध और उनके रणनीतिक उद्देश्यों का समर्थन करने के लिए उसकी रक्षा कूटनीति पहलों को पर्याप्त रूप से वित्त पोषित किया जाए। इस संतुलन को प्राप्त करने के लिए, भारत को रक्षा बजटिंग के लिए एक व्यापक और एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, यह सुनिश्चित करते हुए संसाधनों को फोकस के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से आबंटित किया जाए। इसमें स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियों में निवेश को प्राथमिकता देना, खरीद प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना और रक्षा खर्च की दक्षता बढ़ाना शामिल है। ऐसा करके, भारत यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसकी रक्षा कूटनीति पहलों को अच्छी तरह से समर्थन मिले और वह अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा, क्षेत्रीय साझेदारी और आर्थिक विकास को समग्र रूप से मजबूत करने में योगदान दे।

रक्षा निर्यात के लिए रणनीतियाँ

1. "मेक इन इंडिया" और रक्षा निर्यात को प्रोत्साहित करने में इसकी भूमिका

2014 में प्रारंभ की गई 'मेक इन इंडिया' पहल भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलने का उद्देश्य रखती है जिसके तहत घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित किया जाता है और विदेशी निवेश को आकर्षित किया जाता है। इस पहल का विशेष ध्यान रक्षा क्षेत्र पर है, जिसका उद्देश्य स्वायत्तता को प्रोत्साहित करना, आयात पर निर्भरता को कम करना, और रक्षा निर्यात को बढ़ावा देना है। इस पहल के माध्यम से, भारत ने प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया है, रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की सीमा बढ़ाई है और निजी क्षेत्र की भागीदारी के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया है।

- **स्वदेशी निर्माण क्षमताओं को बढ़ावा देना:** इस पहल से रक्षा विनिर्माण गलियारों और समूहों की स्थापना हुई है, जो रक्षा उपकरणों और प्रौद्योगिकियों के विकास और उत्पादन के लिए एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करता है।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** प्रोत्साहन की पेशकश और नियमों को आसान बनाकर, 'मेक इन इंडिया' ने रक्षा विनिर्माण में निजी क्षेत्र की भागीदारी को आकर्षित किया है, जिससे क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और नवाचार बढ़ रहा है।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और सहयोग को सुविधाजनक बनाना:** इस पहल ने अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ संयुक्त उद्यम, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और अनुसंधान सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया है, जिससे भारत के घरेलू रक्षा उद्योग को अधिक मजबूती मिली है और इसकी निर्यात क्षमता में वृद्धि हुई है।

2. रक्षा निर्यात नीति और विनियमन सुधार

भारत के रक्षा निर्यात को और बढ़ाने के लिए, सरकार ने कई नीति और विनियमन सुधार किए हैं। इनमें रक्षा निर्यात रणनीति की शुरूआत शामिल है, जो रक्षा उपकरणों और सेवाओं का अग्रणी निर्यातक बनने के लिए देश के दृष्टिकोण और रोडमैप की रूपरेखा तैयार करती है।

ये रणनीति स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने, निर्यात प्रक्रियाओ को सुव्यवस्थित करने और भारतीय रक्षा उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के महत्व पर जोर देती है।

इसके अलावा, सरकार ने रक्षा खरीद प्रक्रिया (डीपीपी) और रक्षा उत्पादन नीति (डीपीआरपी) में सुधार किए हैं ताकि रक्षा उत्पादों के निर्यात को सुविधाजनक बनाया जा सके। इन सुधारों का लक्ष्य निर्यात लाइसेंसिंग प्रक्रिया को सरल बनाना, अधिक पारदर्शिता प्रदान करना, और ब्यूरोक्रेटिक बाधाओं को कम करना है। इन नीति और विनियमन सुधारों को क्रियान्वित करके, भारत सरकार रक्षा उद्योग के विकास और रक्षा निर्यात के विस्तार के लिए एक सक्षम माहौल बनाने का प्रयास कर रही है।

3. नए बाजारों की खोज और मौजूदा साथियों के साथ सहयोग को बढ़ावा देना

रक्षा निर्यात को बढ़ाने के लिए, भारत नए बाजारों की खोज कर रहा है और अपने मौजूदा साथियों के साथ सहयोग को बढ़ा रहा है। इसमें शामिल है:–

- **बढ़ती रक्षा आवश्यकताओं वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना:** भारत, दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व और लैटिन अमेरिका में ऐसे देशों की ओर ध्यान केंद्रित कर रहा है, जिनमें क्षेत्रीय सुरक्षा से संबंधित आवश्यकताएँ बढ़ रही हैं।
- **रणनीतिक सहयोग का लाभ उठाना:** भारत संयुक्त उद्यमों, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा अनुसंधान और विकास पर सहयोग के माध्यम से रक्षा निर्यात को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और इज़राइल जैसी प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी से लाभान्वित हो रहा है।
- **अंतरराष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनी और मंचों में भाग लेना:** अंतर्राष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनियों और मंचों पर अपने स्वदेशी रक्षा उत्पादों का प्रदर्शन करके, भारत अपनी क्षमताओं के बारे में जागरूकता बढ़ा रहा है और संभावित खरीदारों को आकर्षित कर रहा है।

» **विशिष्ट समाधान और प्रतिस्पर्धात्मक मूल्य देना:** वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने के लिए, भारत अपने ग्राहकों की विशिष्ट आवश्यकताओं और बजट को पूरा करते हुए अनुकूलित रक्षा समाधान और प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

केस स्टडीज़: प्रमुख वैश्विक शक्तियों और क्षेत्रीय पड़ोसियों के साथ भारत की रक्षा कूटनीति

1. भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका रक्षा साझेदारी

भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका की रक्षा साझेदारी में पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। इस सहयोग ने क्षेत्रीय स्थिरता और साझा रणनीतिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया है। इस साझेदारी के प्रमुख पहलुओं में शामिल हैं:–

» **रक्षा समझौते:** लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA), कम्युनिकेशंस कम्पैटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट (COMCASA), और बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA) दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सैन्य सहयोग और अंतरसंचालनीयता की सुविधा प्रदान करते हैं।

» **संयुक्त सैन्य अभ्यास:** भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी सैन्य क्षमताओं और समन्वय में सुधार के लिए नियमित रूप से मालाबार जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यासों में भाग लेते हैं।

» **रक्षा व्यापार और प्रौद्योगिकी सहयोग:** दोनों देशों के बीच रक्षा व्यापार महत्वपूर्ण रहा है। भारत संयुक्त राज्य अमेरिका से कई रक्षा प्लेटफार्मों पर आयात करता है। रक्षा प्रौद्योगिकी और व्यापार पहल (डीटीटीआई) का उद्देश्य रक्षा उपकरणों के प्रौद्योगिकी सहयोग और सह-उत्पादन को और बढ़ाना है।

2. भारत-रूस रक्षा सहयोग

भारत और रूस रक्षा सहयोग में एक लंबा इतिहास साझा करते हैं, जो उनकी रणनीतिक साझेदारी का एक महत्वपूर्ण पहलू है।इस सहयोग के प्रमुख तत्वों में शामिल हैं:–

» **हथियार और उपकरण खरीद:** भारत ने रूस से विमान, पनडुब्बी और मिसाइल सिस्टम सहित विभिन्न रक्षा प्लेटफॉर्म खरीदे हैं।

» **संयुक्त उत्पादन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:** भारत और रूस ने कई संयुक्त उद्यमों और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर सहयोग किया है, जैसे ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली और सुखोई एस यू-30 एम के आई लड़ाकू विमान का लाइसेंस प्राप्त उत्पादन।

» **सैन्य अभ्यास:** दोनों देशों ने समन्वय और सैन्य क्षमताओं को बढ़ावा देने के लिए इंद्रा और अविन्द्रा जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित किए हैं।

3. भारत–इज़राइल रक्षा संबंध

भारत और इज़राइल ने तकनीकी सहयोग, आतंकवाद के खिलाफ सहयोग और सूचना साझा करने पर ध्यान केंद्रित करके मजबूत रक्षा साझेदारी विकसित की है। इस सहयोग के प्रमुख पहलुओं में शामिल हैं:–

» **रक्षा व्यापार:** भारत ने इज़राइली रक्षा उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण बाजार बनाया है, जिनमें अनमैन्ड एरियल व्हीकल्स (यूएवीएस), रडार प्रणालियाँ, और मिसाइल रक्षा प्रणालियाँ शामिल हैं।

- **संयुक्त अनुसंधान और विकास:** दोनों देश ने विभिन्न अनुसंधान और विकास परियोजनाओं पर सहयोग किया है, जैसे कि बराक 8 वायु रक्षा प्रणाली और उन्नत यूएवीएस की संयुक्त विकास प्रक्रिया।
- **आतंकवाद के खिलाफ सहयोग:** भारत और इज़राइल ने बॉर्डर सहयोग के साथ आतंकवाद के खिलाफ योजना बनाई है, जिसमें सूचना साझा करने, संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यासों, और सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान शामिल है।

4. संयुक्त सुरक्षा वार्ता (क्वाड) में भारत की भूमिका

संयुक्त सुरक्षा वार्ता (क्वाड) भारत, संयुक्त राज्य, जापान, और ऑस्ट्रेलिया के सहयोग से गठित एक अनौपचारिक रणनीतिक मंच है। क्वाड का लक्ष्य सामूहिक सुरक्षा चुनौतियों का पता करना और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देते हुए एक मुक्त, खुला और समावेशी इंडो-पैसिफिक क्षेत्र को प्रोत्साहित करना है। क्वाड में भारत की भागीदारी क्षेत्रीय स्थिरता की पुष्टि करती है और सुरक्षा मुद्दों पर समर्थ साथियों के साथ मिलकर काम करने की इच्छा को दिखाती है।

5. आसियान और दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ भारत का रक्षा सहयोग

भारत क्षेत्रीय रक्षा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अपने आसियान और दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। इन बहुआयामी रक्षा कूटनीति पहलों के माध्यम से, भारत अपने आसियान और दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने, सामान्य सुरक्षा चिंताओं को दूर करने, क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने और क्षेत्र में अपने रणनीतिक प्रभाव को बढ़ाने में कामयाब रहा है। इसमें यह भी शामिल है:-

- **द्विपक्षीय रक्षा सहयोग:** भारत ने जापान, सिंगापुर, वियतनाम और श्रीलंका जैसे देशों के साथ द्विपक्षीय रक्षा संबंध स्थापित किए हैं, जिसमें संयुक्त सैन्य अभ्यास, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पहल शामिल है।
- **क्षेत्रीय मंच:** भारत आम सुरक्षा चुनौतियों से निपटने और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए शंघाई सहयोग संगठन और हिंद महासागर रिम एसोसिएशन जैसे क्षेत्रीय मंचों में भाग लेता है।
- **I2U2 जैसी पहल:** प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, भारत ने समुद्री डोमेन जागरूकता बढ़ाने और क्षेत्रीय भागीदारों के बीच सूचना साझा करने की सुविधा के लिए हिंद महासागर सूचना संलयन केंद्र (I2U2) जैसी पहल शुरू की है।
- **क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण:** भारत पड़ोसी देशों के सैन्य कर्मियों के लिए क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है, आतंकवाद विरोधी, आपदा प्रबंधन और शांति स्थापना अभियानों जैसे क्षेत्रों में अपनी विशेषज्ञता और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करता है।
- **मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) प्रयास:** भारत ने क्षेत्र में एचएडीआर मिशनों में सक्रिय रूप से भाग लिया है, प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित देशों को समय पर सहायता प्रदान की है, जैसे कि 2015 में नेपाल भूकंप और 2017 में बांग्लादेश में चक्रवात मोरा।
- **रक्षा उपकरण निर्यात:** भारत अपने क्षेत्रीय पड़ोसियों को तेजी से रक्षा उपकरण निर्यात कर रहा है, जैसे मालदीव और मॉरीशस को गश्ती नौकाएँ, श्रीलंका को रडार सिस्टम और म्यांमार को सैन्य वाहन।

भारत की रक्षा कूटनीति को मजबूत करने में चुनौतियाँ और अवसर

1. तकनीकी अंतर को संबोधित करना

उन्नत देशों की तुलना में भारत को अपने रक्षा क्षेत्र में तकनीकी अंतर को पाटने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। यह अंतर भारत की शक्ति प्रदर्शित करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव डालने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है। इस चुनौती से निपटने के अवसरों में शामिल हैं:–

- **अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देना:** घरेलू अनुसंधान और विकास पहलों और संस्थानों में निवेश करने से भारत को अत्याधुनिक रक्षा तकनीक विकसित करने में मदद मिल सकती है।
- **सहयोग और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:** साझेदार देशों के साथ संयुक्त उद्यम और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में शामिल होने से भारत को उन्नत प्रौद्योगिकियों तक पहुंचने और अपनी स्वदेशी क्षमताओं में सुधार करने में मदद मिल सकती है।
- **विदेशी निवेश आकर्षित करना:** रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को प्रोत्साहित करने से उन्नत प्रौद्योगिकियों और पूंजी तक पहुंच प्रदान की जा सकती है, जिससे घरेलू उत्पादन क्षमताओं में वृद्धि होगी।

2. रक्षा सौदों में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना

रक्षा सौदों में पारदर्शिता और जवाबदेही जनता का विश्वास बनाए रखने और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है। इस चुनौती से निपटने के लिए, भारत यह कर सकता है:–

- **कठोर खरीद नीतियों को लागू करें:** पारदर्शी खरीद नीतियों की स्थापना और उनका पालन करने से रक्षा सौदों में अनियमितताओं को कम करने में मदद मिल सकती है।
- **निरीक्षण तंत्र को मजबूत करें:** नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) और केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) जैसे स्वतंत्र निरीक्षण निकायों की भूमिका बढ़ाने से रक्षा सौदों में जवाबदेही सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है।
- **प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करें:** घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय आपूर्तिकर्ताओं के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने से अधिक पारदर्शी खरीद माहौल बन सकता है और भारत को रक्षा सौदों में सर्वोत्तम मूल्य प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

3. क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता का प्रबंधन करना और रिश्तों को संतुलित करना

भारत के रक्षा कूटनीति प्रयासों को क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता की जटिलताओं से निपटना होगा और विभिन्न देशों के साथ अपने संबंधों के बीच एक नाजुक संतुलन बनाए रखना होगा। इस चुनौती से निपटने के लिए, भारत यह कर सकता है:–

- **बहु-स्तरीय रणनीति अपनाएं:** कई साझेदारों के साथ जुड़ने और गुट-निरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाने से भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने और क्षेत्रीय संघर्षों में फंसने से बचने में मदद मिल सकती है।
- **क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाएँ:** क्षेत्रीय पड़ोसियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने से विश्वास बनाने, स्थिरता को बढ़ावा देने और एक सहयोगी सुरक्षा वातावरण बनाने में मदद मिल सकती है।
- **प्रतिद्वंद्वी देशों के साथ संवाद बनाए रखें:** प्रतिद्वंद्वी देशों के साथ संचार के खुले चैनल बनाए रखने से तनाव को कम करने और गलतफहमी को रोकने में मदद मिल सकती है।

इन चुनौतियों का समाधान करके और अवसरों का लाभ उठाकर, भारत अपनी रक्षा कूटनीति को मजबूत कर सकता है, अपने रणनीतिक प्रभाव को बढ़ा सकता है और क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा में योगदान दे सकता है।

निष्कर्ष

1. प्रमुख निष्कर्षों का पुनर्पूंजीकरण

भारत की रक्षा कूटनीति उसके रणनीतिक हितों को आगे बढ़ाने और क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यहां भारत की रक्षा कूटनीति का विश्लेषण निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्षों पर प्रकाश डालता है:–

- रक्षा कूटनीति भारत को रणनीतिक साझेदारी बनाने, सैन्य क्षमताओं को बढ़ाने और क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देने की अनुमति देती है।
- भारत ने आसियान और दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हुए, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और इज़राइल जैसी प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ सफलतापूर्वक मजबूत रक्षा संबंध बनाए हैं।
- भारत सरकार ने रक्षा कूटनीति पहल के लिए संसाधन आवंटित किए हैं और नीतिगत सुधारों और मेक इन इंडिया पहल के माध्यम से अपने रक्षा निर्यात को बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है।
- चुनौतियों के बावजूद, जैसे तकनीकी अंतर को संबोधित करना, रक्षा सौदों में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना और क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता का प्रबंधन करना, भारत के पास अपनी रक्षा कूटनीति को मजबूत करने के महत्वपूर्ण अवसर हैं।

2. भारत की रक्षा कूटनीति के लिए आगे का रास्ता

भारत की रक्षा कूटनीति को और बढ़ाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:–

- **घरेलू क्षमताओं को मजबूत करना:** भारत को अपने घरेलू रक्षा क्षेत्र में निवेश जारी रखना चाहिए, अनुसंधान और विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, विदेशी निवेश आकर्षित करना चाहिए और स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए।
- **साझेदारियों में विविधता लाएँ:** भारत को अपने निकटवर्ती पड़ोस के भीतर और बाहर, व्यापक श्रेणी के देशों के साथ जुड़कर अपनी रक्षा साझेदारियों में विविधता लानी चाहिए।
- **क्षेत्रीय सुरक्षा तंत्र को बढ़ाएं:** भारत क्षेत्रीय मंचों और संवादों को शुरू करने और उनमें भाग लेने, विश्वास को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय अभिनेताओं के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करके क्षेत्रीय सुरक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- **चुनौतियों का सक्रिय रूप से समाधान करें:** भारत को सक्रिय रूप से तकनीकी अंतर को संबोधित करना चाहिए, रक्षा सौदों में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना चाहिए और बहु-स्तरीय रणनीति और खुली बातचीत के माध्यम से क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता का प्रबंधन करना चाहिए।

इन उपायों को अपनाकर भारत अपनी रक्षा कूटनीति को मजबूत कर सकता है, अपने रणनीतिक प्रभाव को बढ़ा सकता है और अधिक स्थिर और सुरक्षित क्षेत्रीय और वैश्विक वातावरण की स्थापना में योगदान दे सकता है।

खेल का महत्व

आनंद कुमार
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

खेल बहुत ही अच्छी शारीरिक गतिविधि है जो तनाव और चिन्ता से मुक्ति प्रदान करता है। यह खिलाड़ियों के लिए अच्छा भविष्य और पेशेवर जीवन का क्षेत्र प्रदान करता है। यह खिलाड़ियों को उनके आवश्यक नाम, प्रसिद्धि और धन देने की क्षमता रखता है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि, व्यक्तिगत लाभ के साथ ही पेशेवर लाभ के लिए भी खेल सकते हैं। दोनों ही तरीकों से, यह हमारे शरीर, मस्तिष्क और आत्मा को लाभ पहुँचाता है। यदि हम कुछ पलों के लिए इतिहास की ओर देखें या किसी सफल व्यक्ति के जीवन पर प्रकाश डालें तो हम देखते हैं कि, नाम, प्रसिद्धि और धन आसानी से नहीं आते हैं। इसके लिए लगन, नियमितता, धैर्य और सबसे अधिक महत्वपूर्ण कुछ शारीरिक क्रियाओं अर्थात् स्वस्थ जीवन और सफलता के लिए एक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है। नियमित शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है। किसी भी व्यक्ति की सफलता मानसिक और शारीरिक ऊर्जा पर निर्भर करती है। इतिहास बताता है कि केवल वर्चस्व (प्रसिद्धि) ही राष्ट्र या व्यक्ति पर शासन करने की शक्ति है।

शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है, जो बहुत लाभदायक है। बहुत से देशों में खेलों को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है, क्योंकि वे एक व्यक्ति के जीवन में खेल के वास्तविक लाभ और व्यक्तिगत व पेशेवर जीवन में इसकी आवश्यकता को जानते हैं। किसी धावक (एथिलीट) या पेशेवर खिलाड़ी के लिए शारीरिक गतिविधियाँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। यह उनके और उनके जीवन के लिए बहुत मायने रखती है। खेल खिलाड़ियों के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत अच्छा अवसर रखता है। कुछ देशों में, कुछ अवसरों, कार्यक्रमों और त्योहारों के आयोजन पर खेल गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, उदाहरण के लिए; प्राचीन यूनान के ओलम्पियाड को सम्मान प्रदर्शित करने के लिए ओलम्पिक खेलों का आयोजन किया जाता है।

खेल सभी के व्यस्त जीवन में विशेष रुप से विद्यार्थियों के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ तक कि, पूरे दिन में से, कम से कम थोड़े से समय के लिए सभी को खेलों में सक्रिय रुप से भाग लेना चाहिए। खेल बहुत ही आवश्यक है क्योंकि, खेलों में नियमित रुप से शामिल होने वाले व्यक्ति में यह शारीरिक और मानसिक तंदुरुस्ती लाता है। जिन व्यक्तियों की व्यस्त दिनचर्या होती है, वे बहुत ही आसानी व शीघ्रता से थक जाते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि, सुकून और आराम का जीवन जीने के लिए हम सभी को स्वस्थ मस्तिष्क और स्वस्थ शरीर की आवश्यकता होती है।

कुछ लोग अपने शरीर और मस्तिष्क की तंदुरुस्ती, आनंद आदि के लिए नियमित रुप से खेलते हैं हालांकि, कुछ अपने

जीवन में बहुमूल्य दर्जा पाने के लिए खेलते हैं। कोई भी निजी और पेशेवर जीवन में इसके मूल्य को अनदेखा नहीं कर सकता है। पहले ओलम्पिक खेल 1896 में एथेंस में आयोजित हुए थे, जो अब नियमित रुप से हर चार साल बाद विभिन्न देशों में आयोजित होते हैं। इसमें इनडोर और आउटडोर दोनों प्रकार के खेल शामिल होते हैं, जिसमें विभिन्न देशों के खिलाड़ी भाग लेते हैं। कुछ आउटडोर या मैदान में खेले जाने वाले खेल फुटबॉल, हॉकी, वालीबॉल, बेसबॉल, क्रिकेट, टेनिस, खो-खो, कबड्डी आदि है, जिन्हें खेलने के लिए मैदान की आवश्यकता होती है। इनडोर खेल कैरम, ताश खेलना, शतरंज, टेबिल टेनिस, पहेली, आदि हैं, जो घर में बिना किसी मैदान के खेले जा सकते हैं। कुछ खेल इनडोर और आउटडोर दोनों होते हैं जैसे बैडमिंटन और टेबिल टेनिस खेल हमारे लिए बहुत ही लाभदायक हैं क्योंकि वे हमें समयबद्धता, धैर्य, अनुशासन, समूह में कार्य करना और लगन सिखाते हैं। खेलना हमें, आत्मविश्वास के स्तर का निर्माण करना और सुधार करना सिखाता है। यदि हम खेल का नियमित अभ्यास करें, तो हम अधिक सक्रिय और स्वस्थ रह सकते हैं। खेल गतिविधियों में शामिल होना, हमें बहुत से रोगों से सुरक्षित करने में मदद करता है; जैसे– गठिया, मोटापा, हृदय की समस्याओं, मधुमेह, आदि। यह हमें जीवन में अधिक अनुशासित, धैर्यवान, समयबद्ध और विनम्र बनाता है। यह हमें जीवन में सभी कमजोरियों को हटाकर आगे बढ़ना सिखाता है। यह हमें बहादुर बनाता है, और चिड़चिड़ेपन व गुस्से को हटाकर खुशी का अहसास देता है। यह हमें शारीरिक रुप से तंदुरुस्त और मानसिक आराम प्रदान करता है, जिससे कि हम सभी समस्याओं से आसानी से निपट सकें।

नाम, प्रसिद्धि, और पैसा प्राप्त करने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। इसी तरह से, स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क प्राप्त करने के लिए, सभी को किसी भी प्रकार की शारीरिक गतिविधि में अवश्य शामिल होना चाहिए, जिसके लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है। खेल गतिविधियों में शामिल होना एक व्यक्ति के लिए बहुत से तरीकों से लाभदायक होता है। यह न केवल शारीरिक ताकत प्रदान करता है बल्कि, यह मानसिक शक्ति को भी बढ़ाता है। बाहर खेले जाने वाले खेल फुटबॉल, क्रिकेट, वॉलीबॉल, हॉकी, दौड़ आदि शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक तंदुरुस्ती को सुधारने में मदद करते हैं। यद्यपि, कुछ घर के अन्दर खेले जाने वाले खेल जैसे; दिमागी खेल, शतरंज, सुडोकु आदि हमारी मानसिक शक्ति और मन को एकाग्र करने की क्षमता के स्तर को बढ़ाते हैं।

पहाड़ों की गोद में पर्यटन–मसूरी

रविन्द्र सिंह नेगी
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

उत्तराखण्ड में पर्यटन और तीर्थाटन आय का प्रमुख स्रोत है और यहाँ की अर्थव्यवस्था के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक है। उत्तराखण्ड में भारत के कुछ सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं जैसे नैनीताल, मसूरी, देहरादून, कौसानी इत्यादि। इसके अतिरिक्त यहाँ कुछ प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान भी हैं जैसे फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान,राजाजी राष्ट्रीय अभयारण्य,नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान इत्यादि। यह सब स्थल भी देश-विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उत्तराखण्ड को देव भूमि के नाम से भी जाना जाता है। इसका कारण है कि यहाँ वैदिक संस्कृति के कुछ अति महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थान हैं। उत्तराखण्ड के लगभग हर कोने में किसी ना किसी देवता या देवी का मन्दिर है। इस राज्य में भारत के सबसे प्रमुख धार्मिक नगरों में से एक हरिद्वार में प्रति वर्ष लाखों पर्यटक आते हैं। हरिद्वार के निकट स्थित ऋषिकेश भारत में योग का एक प्रमुख स्थल है और जो हरिद्वार के साथ मिलकर एक पवित्र हिन्दू तीर्थ स्थल है।

इसके अतिरिक्त छोटा चारधाम भी इसी राज्य में स्थित है: केदारनाथ, गंगोत्री, बद्रीनाथ, यमुनोत्री तथा दूनागिरी। इन धामों की यात्रा के लिए भी प्रति वर्ष लाखों लोग देशभर से आते हैं। यहाँ मुख्य रूप से कुमाउनी या गढ़वाली लोग ही रहते हैं, यहाँ की आम भाषा भी कुमाउनी (पहाड़ी) ही है। यहाँ अनेकों त्योहार मनाये जाते हैं फसल को काटने और लगाने के उपलक्ष्य में भी त्योहार मनाये जाते हैं। यहाँ के लोग मुख्य रूप से खेती बाड़ी ही करते हैं। यहाँ हम बात कर रहे हैं पहाड़ों की रानी कही जाने वाली मसूरी की। दिल्ली से लगभग ढाई सौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित मसूरी दिल्ली-एनसीआर के लोगों के लिए सबसे पसंदीदा जगहों में से एक है। इसका कारण है कि वीकेंड पर यहां आराम से पहुंचा जा सकता है। समुद्र तट से सात हजार फुट की ऊंचाई पर बसा मसूरी शहर कई मामलों में निराला है। यहां किसी भी समय बारिश का मौसम बन जाता है। मसूरी के एक ओर से गंगा नजर आती है तो दूसरी ओर से यमुना नदी। मसूरी शहर 1822 से बसना शुरू हुआ और आज तक लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यूं तो पूरे साल यहां का मौसम सुहाना रहता है लेकिन अप्रैल से जून और सितंबर से नवंबर के बीच आने वालों को और भी अच्छा मौसम मिलता है।

यहां का मॉल रोड घूमने और खरीदारी करने के लिए अच्छी जगह है। मॉल रोड आने वाले सैलानी यहां की गन हिल पहाड़ी देखने के लिए जरूर जाते हैं। लगभग 20 मिनट में पहाड़ी की चोटी पर पहुंचा जा सकता है। रोप-वे द्वारा 400 मीटर की चढ़ाई चढ़ने की व्यवस्था भी है। यहां से हिमालय पर्वत श्रृंखला के बंदेरपंच, श्रीकंठ, पीठवाड़ा व गंगोत्री के बेहतरीन नजारे देखे जा सकते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व 1947 में लोगों को विद्रोह करने से रोकने के उद्देश्य से फायर करने के लिए इस पहाड़ी पर एक गन लगाई गई थी। तभी से इसका नाम गन हिल पड़ गया।

मसूरी से 15 किलो मीटर की दूरी पर यमुनोत्री रोड पर कैंप्टी फॉल्स स्थित है। ऊंची पहाड़ियों से घिरा एक झरना है। मसूरी आने वाले सैलानी इस झरने को देखने के लिए जरूर आते हैं। म्यूनिसिपल गार्डन भी देखने लायक है। यहां एक छोटी सी कृत्रिम झील का निर्माण कराया गया है। विभिन्न प्रकार के फूलों से सुसज्जित गार्डन लोगों के आकर्षण का केंद्र बना रहता है। बच्चों के साथ जा रहे हैं तो यहां के कंपनी बाग जरूर जाइएगा। यहां पर बच्चों के मनोरंजन के बहुत से साधन हैं। कृत्रिम सांड की पीठ पर बैठकर बच्चे खूब खुश होते हैं। नाग देवता का मंदिर लोगों की आस्था का केंद्र बना हुआ है। मसूरी से छ: किलो मीटर की दूरी पर स्थित इस मंदिर में हमेशा पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। यहां से दून वैली और मसूरी का नजारा देखना बेहद अच्छा लगता है। सुबह-शाम घूमने के लिए निकलने वालों के लिए कैमल बैक रोड पसंदीदा स्थान है। मसूरी आने वाले सैलानी यहां शाम के समय छिपता हुआ सूरज यानी 'सनसेट' देखने के लिए जरूर आते हैं।

मसूरी आने वालों के लिए ठहरने की कोई समस्या नहीं होती । यहां कदम-कदम पर होटल और गेस्ट हाउस स्थित है। लोगों के बजट और पसंद के हिसाब से ठहरने की जगह मिल जाती है। अगर गर्मी की छुट्टियों में आप मसूरी जाने का मन बना रहे हैं तो अभी से तैयारी शुरू कर दें।

अभी आयी हूं... ऐ मां

अमित कुमार
सामरिक प्रणाली एवं कार्यक्रम निदेशालय

अभी आयी हूँ... ऐ माँ
तेरे सीने से निकल के
अपनी मीठी सी नींदों से जग के
आँख मीचे नौ महीनों से
अभी आयी हूँ... ऐ माँ

अब मैं रोऊंगी, तू हँसाएगी
मैं खेलूँगी, तू खिलाएगी
मुझे पग-पग चलना तू ही सिखाएगी
अभी आयी हूँ... ऐ माँ

अपना दु:ख छोड़कर मुझ पर प्यार लुटाएगी
धूप में भी मेरी छाँव बन जाएगी
खुद भूखी रहकर भी मुझको दूध पिलाएगी
मैं अभी आयी हूँ... ऐ माँ

अब बस तू हिम्मत देना, जोश दिखाऊँगी
अपने नाम से तेरी जग में पहचान कराऊँगी
धरा पर तेरा शीश गर्व से उठाऊँगी
अभी आयी हूँ...
मैं अभी आयी हूँ... ऐ माँ

प्राचीन भारतीय विज्ञान का महत्व

दीपक लखचौरा
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 2040 तक भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होगा, जहां किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित शिक्षार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी। यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है तथा भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए, 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक भारतीय सभ्यता में विज्ञान और तकनीक पारंपरिक रूप से शामिल रहें हैं। साधु-संतों की भूमि होने के साथ साथ प्राचीन भारत विद्वानों और वैज्ञानिकों का भी घर था। भारत दुनिया को गिनती सिखाने से लेकर दुनिया की सर्वोत्तम स्टील बना कर, सदियों पहले से विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सक्रिय योगदान दे रहा है। प्राचीन समय में भारतीयों ने कितनी ही प्रमेय और तकनीकों की खोज की थी, जिनसे आधुनिक विज्ञान और तकनीक को आधार मिल सका। यद्यपि यह एक सुविदित तथ्य है कि प्राचीन भारतीयों ने धर्म और दर्शन में ही विशेष रुचि ली तथापि इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि व्यवहारिक विज्ञान में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी । विज्ञान के कुछ क्षेत्रों जैसे गणित, ज्योतिष, धातु विज्ञान आदि के क्षेत्र में भारतीयों ने जो आविष्कार किये तथा सफलता प्राप्त की, वह इस प्रकार है:–

चिकित्सा

भारतीय चिकित्सा पद्धति के विषय में सर्वप्रथम लिखित ज्ञान 'अथर्ववेद' में मिलता है। अथर्ववेद के 'भैषज्य सूत्र' में विविध रोगों के उपचार की जानकारी दी गई है। सामान्य चिकित्सा और मानसिक चिकित्सा के विषयों पर इसमें विस्तृत विवरण मिलता है। 'सुश्रुत संहिता', 'चरकसंहिता' प्राचीन भारत के चिकित्सा शास्त्र के प्रामाणिक और विश्वविख्यात ग्रंथ हैं। 'सुश्रुत संहिता' में 8 प्रकार की शल्य चिकित्सा का वर्णन है। मनुष्यों की चिकित्सा के साथ ही पशु चिकित्सा का विज्ञान भी भारत में प्राचीन समय से ही विकसित था। घोड़ों, हाथियों, गाय-बैलों की चिकित्सा से संबंधित अनेक प्रयोग उपलब्ध हैं। 'शालिहोत्र' नामक पशु चिकित्सक के हय आयुर्वेद', 'अश्व लक्षण शास्त्र' तथा 'अश्व प्रशंसा' नाम के ग्रंथ उपलब्ध हैं। इनमें घोड़ों के रोगों और उनके उपचार के लिए औषधियों का विवरण है।

रसायन विज्ञान

ऋषि कणाद ने छठी शताब्दी ई.पू. में ही इस बात को सिद्ध कर दिया था कि विश्व का हर पदार्थ परमाणुओं से मिलकर बना है। कणाद का परमाणु सिद्धांत विश्व में सबसे पहले आया हुआ परमाणु सिद्धांत है। धातु विज्ञान में भारत की दक्षता

उच्च कोटि की थी। 326 ईस्वी पूर्व में पोरस ने 30 पौंड वजन का भारतीय इस्पात सिकंदर को भेंट में दिया था। दिल्ली के महरौली इलाके में खड़ा लौह स्तंभ 1700 वर्षों से गर्मी और वर्षा प्रभाव के बावजूद भी जंगरहित बना हुआ है। यह भारत के उत्कृष्ट लौह कर्म का नमूना है। इसके अतिरिक्त, ओडिशा के कोणार्क मंदिर तेरहवीं शताब्दी में निर्मित लगभग 90 टन भार का लौह स्तंभ भी आज तक जंगरहित है।

गणित

यजुर्वेद में 10 ख़रब तक की संख्याओं का वर्णन है। वर्तमान विश्व में सर्वाधिक प्रचलित संख्या की दाशमिक पद्धति (0 से 9) का आविष्कार भारत में हुआ। जैन ग्रन्थ अनुयोगद्वार में सर्वप्रथम असंख्य (इन्फिनिटी) का वर्णन प्राप्त होता है। वेदांग साहित्यों में ज्यामिति का वर्णन है। वराहमिहिर कृत 'सूर्य सिद्धांत' (छठी शताब्दी) में त्रिकोणमिति का विवरण है। ब्रह्मगुप्त ने भी त्रिकोणमिति पर प्रर्याप्त जानकारी प्रदान की तथा उन्होंने एक ज्यामितीय सारणी का निर्माण भी किया। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, श्रीधराचार्य आदि प्रसिद्ध गणितज्ञों ने बीजगणित में भी बड़ी दक्षता प्राप्त की थी। बीजगणित के क्षेत्र में सबसे बड़ी उपलब्धि ब्रह्मगुप्त द्वारा वर्ग समीकरण का हल प्रस्तुत करना था।

खगोल शास्त्र

भारतीय खगोल विज्ञान का उद्भव वेदों से माना जाता है। वेदांग साहित्य में ज्योतिष का प्रयोग खगोल विज्ञान के सिद्धांतो पर ही आधारित था। प्रसिद्ध जर्मन खगोल वैज्ञानिक कोपरनिकस से भारतीय वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने पृथ्वी की गोल आकृति और इसके अपनी धुरी पर चक्कर लगाने के सिद्धांत बता दिया था। सर आइजैक न्यूटन के पूर्व ही ब्रह्मगुप्त ने पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत की पुष्टि कर दी थी।

ज्यामिति

वैदिक काल में आर्य यज्ञ की वेदियों को बनाने के लिए ज्यामिति के ज्ञान का उपयोग करते थे। जिसका वर्णन वेदांग में भी है। आर्यभट्ट ने वृत्त की परिधि और व्यास के अनुपात "पाई" का मान 3.1416 स्थापित किया।

अभियंत्रण तथा वास्तुकला

सिंधु घाटी सभ्यता से ही भारत वास्तुशास्त्र के क्षेत्र में अग्रणी था। सिंधु की नगरीय व्यवस्था वर्तमान नगरों के लिए एक प्रेरणा है। महाजनपद काल तथा मौर्य काल के दौरान हुए भवन, स्तम्भ, गुफा निर्माण, चैत्य निर्माण भारत की उन्नत वास्तुकला का उदाहरण है। भारत में मूर्ति, मंदिरों की एक उन्नत श्रृंखला है। पहाड़ काट कर बनाया गया कैलाशनाथ मंदिर अभियांत्रिकी का एक उन्नत नमूना है।

प्राचीन काल में आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, नागार्जुन, चरक, सुश्रुत, बौधायन जैसे महान वैज्ञानिक रहे हैं। निस्संदेह प्राचीन भारत गणित, चिकित्सा, भौतिक विज्ञान, जैसे क्षेत्रों में वराहमिहिर, आर्यभट्ट, नागार्जुन जैसे वैज्ञानिकों की उपस्थिति में तकनीकी रूप से उन्नत था। सिंधु घाटी के समकालीन सभ्यताओं में सिंधु जैसी वैज्ञानिकता नहीं है। इसके साथ ही प्राचीन काल में भारत लगभग तकनीकी तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर विश्वगुरु के रूप में सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्वकर्ता था।

राजस्थान की कला और संस्कृति

पप्पू राम मीणा
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

राजस्थान, भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक है। यहां की संस्कृति दुनिया भर में मशहूर है। राजस्थान की संस्कृति विभिन्न समुदायों और शासकों का योगदान है। आज भी जब कभी राजस्थान का नाम लिया जाता है तो हमारी आखों के आगे थार रेगिस्तान, ऊंट की सवारी, घूमर और कालबेलिया नृत्य और रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधान आते हैं। यह राज्य अपने सभ्य स्वभाव और शालीन मेहमाननवाज़ी के लिए जाना जाता है चाहे स्वदेशी हो या विदेशी, यहां की संस्कृति तो किसी का भी मन चुटकियों में मोह लेगी। आखिर किसका मन नहीं करेगा रात के वक्त रेगिस्तान में आग जलाकर कालबेलिया नृत्य देखने का। जिन्होंने राजस्थान की संस्कृति का अनुभव किया है वो बहुत खुश नसीब हैं। लेकिन जो इससे अंजान हैं उन्हें हम बताएंगे इस शाही शहर की सरल लेकिन आकर्षक संस्कृति के बारे में कुछ ऐसी दिलचस्प बातें जिन्हें जानने के बाद यहां आने से खुद को रोक नहीं पाएंगे।

प्रागैतिहासिक काल से प्रारंभ होता है जो कि आज से ईसा पूर्व 3000 से 1000 के बीच माना जाता है, जब सिंधु घाटी सभ्यता अस्तित्व में थी। 12वीं सदी तक राजस्थान के ज्यादातर भाग पर गुर्जरों का आधिपत्य रहा है। गुजरात तथा राजस्थान के अधिकांश भाग को गुर्जरों से रक्षित राज्य के नाम से जाना जाता था।गुर्जर आदिवासियों ने 300 सालों तक पूरे उत्तरी-भारत को अरब के लोगों से बचाया था। बाद में जब राजपूतों ने इस राज्य के विविध भागों पर अपना आधिपत्य जमा लिया तो यह क्षेत्र ब्रिटिशकाल में राजपूताना के नाम से जाना जाने लगा। उसके बाद 12वीं शताब्दी में मेवाड़ पर गहलोतों ने शासन किया। मेवाड़ के अलावा जो अन्य प्रमुख रियासतें थी, उनमें – भरतपुर, जयपुर, बूँदी, मारवाड़, कोटा, और अलवर है। इन सभी रियासतों ने 1818 में अंग्रजों की संधि स्वीकार कर ली जिसमें राजाओं के हितों की रक्षा की बात की गयी थी लेकिन आम जनता इससे सहमत नहीं थी। सन् 1935 में ब्रिटिश शासन वाले भारत में प्रांतीय स्वायत्तता लागू होने के बाद राज्य में नागरिक स्वतंत्रता तथा राजनीतिक अधिकारों के लिए आंदोलन तेज़ हो गया। परिणामस्वरूप 1948 में इन बिखरी हुई रियासतों को एक करने की कोशिश शुरू हुई, जो 1956 में राज्य में पुनर्गठन क़ानून लागू होने पर ख़त्म हुई। सन् 1948 में मतस्य संघ हुई, उसके बाद बाकी रियासतें भी इसमें शामिल हो गयी। सन् 1949 आते आते बीकानेर, जयपुर, जोधपुर और जैसलमेर जैसी बड़ी रियासतें इसमें शामिल हो गयी थीं। बाद में 1958 में अजमेर, आबू रोड तालुका और सुनेल टप्पा के विलय के बाद सम्पूर्ण राजस्थान राज्य अस्तित्व में आया।

जहां बात सभ्यता और सुंदरता को एक ही साथ जोड़ने की हो तो राजस्थानी कपड़ों के आगे कुछ नहीं टिकता। महिलाओं के लिए पारंपरिक राजस्थानी कपड़े काफी सभ्य, सुंदर और आरामदायक होते हैं। यहां की महिलाएं पारंपरिक घाघरा, चोली और ओढ़नी (दुपट्टा) पहनती हैं। महिलाओं के ये कपड़े चटक रंग के होते हैं, जिनमें गोटा (बॉर्डर) लगा होता है। अपने से बड़ों

के सामने और बाहरी लोगों के आगे महिलाएं घूंघट निकाल कर रखती हैं। इस तरह से वो उस व्यक्ति को अपने से सम्मान देती हैं। तो वहीं पुरुष धोती कुर्ता या कुर्ता पजामा पहनना पसंद करते हैं। इसके अलावा, कुछ पुरुष सिर पर बंधेज के प्रिंट वाली सूती कपड़े की पगड़ी भी पहनते हैं। उनके लिए पगड़ी सिर्फ सिर ढकने वली एक टोपी नहीं होती, बल्कि इज़्ज़त भी होती है। कपड़ों के बाद अब बात करते हैं राजस्थानी आभूषणों की जो ना सिर्फ राजस्थान में बल्कि अब पूरे विश्व में मशहूर हो रहे हैं। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि आभूषण केवल महिलाएं ही पहनती हैं। राजस्थान में आपको बहुत से पुरुष गले में सोने की चेन, हाथ में भारी सी चूड़ी और एक कान में सोने की बाली या लौंग पहने हुए मिल जाते हैं। इधर महिलाओं के आभूषण लोक प्रसिद्ध हैं। राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध और महिलाओं द्वारा सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला आभूषण है, बोरला। बोरला एक प्रकार का मांग टीका होता है जो दिखने में किसी लट्टू जैसा दिखता है। ये राजस्थान के पारंपरिक आभूषणों में से एक है। इसके अलावा महिलाएं कमर बंद, बाजू बंद और लाख और सीप के कंगन भी पहनती हैं।

जहां बात राजस्थानी नृत्य की आती है सबसे पहले नाम आता है घूमर का। हां वही घूमर डांस जो एक फिल्म में भी किया गया था। लेकिन हकीकत में घूमर डांस करना काफी कठिन होता है जो ज्यादातर यहां की महिलाएं ही निपुणता से कर पाती हैं। ये नृत्य देखने में भले ही आसान लगे लेकिन करने के लिए पैरों में बहुत ताकत चाहिए होती है। इसके अलावा राजस्थान का दूसरा मशहूर लोक नृत्य है कालबेलिया नृत्य। पारंपरिक रूप से ये राजस्थान के बंजारों द्वारा किया जाता है। कालबेलिया नृत्य आम लोगों द्वारा नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें लोगों के मनोरंजन के लिए कई खतरनाक करतब भी किए जाते हैं जैसे, कीलों पर खड़े होकर नाचना, आंखों से ब्लेड उठाना और एक उंगली पर थाल घुमाना। इन सब करतबों के लिए महीनों के अभ्यास की ज़रूरत होती है। खाने का शौकीन तो हर कोई होता है और अगर आपने राजस्थान आकर यहां का पारंपरिक खाना नहीं खाया तो ये बहुत अफसोस की बात होगी। राजस्थान का दाल, बाटी और चूरमा तो देश के कोने-कोने में मशहूर है। दाल के साथ घी में डूबी गर्मागर्म बाटी और मीठे के तौर पर घी वाला गर्मागर्म चूरमा, सोचकर ही मुंह में पानी आने लगता है। वैसे तो ये आपको आपके शहर में भी मिल जाएगा लेकिन यकीनन यहां जैसी बात और कहीं नहीं होगी। त्योहार तो हर राज्य, हर शहर और हर धर्म के अच्छे होते हैं। लेकिन राजस्थान के कुछ मशहूर त्योहार, जैसे डेजर्ट महोत्सव: जैसलमेर में होने वाला डेजर्ट महोत्सव जहां अतरंगी मुकाबले आयोजित किए जाते हैं। यहां पुरुषों के बीच मूंछों का मुकाबला होता है और ऊंटों के खेल दिखाए और खेले जाते हैं। ये महोत्सव फरवरी में आयोजित किया जाता है।

राजस्थान का मशहूर त्योहार ऊंट मेला: राजस्थान के बीकानेर में आयोजित होने वाला ऊंट मेला हर साल रेगिस्तान के जहाज़ माने जाने वाले, ऊंट के सम्मान में लगता है। इस मेले में ऊंटों को किसी दुल्हन की तरह सजाया जाता है। इसके अलावा सभी ऊंटों के बीच दौड़ लगवाई जाती है। लोगों के मनोरंजन के लिए मेले में राजस्थानी गीत भी चलाए जाते हैं। मेले के अंत में आतिशबाजियों से पूरे आसमान को रौशन किया जाता है। बीकानेर में आयोजित होने वाला ये ऊंट मेला हर साल जनवरी में आयोजित किया जाता है।

राजस्थान का मशहूर त्योहार पुष्कर मेला: पुष्कर मेला जो हर साल आयोजित किया जाता है और जिसमें तीन लाख से भी ज्यादा लोग और लगभग बीस हज़ार ऊंट, घोड़े, हाथ से बनी तरह-तरह की चीज़ें और घर सजाने की बहुत सी चीज़ों से भरी दुकानें देखने को मिलेगी। पुष्कर मेला हर साल नवंबर के महीने में पुष्कर में लगता है।

जिन्दगी जी के देखो

रेनू गौतम
सैन्य संबंध निदेशालय

सुबह के अलार्म में आधे घण्टे का हेर-फेर
कितना ही भगा लो खुद को, पर हो ही जाती है देर।
घड़ी का समय आगे रखने से वक्त धीरे नहीं चलेगा
खुद को धोखा देकर, जीवन में सुख नहीं मिलेगा।
अरे, दिन के 24 घण्टे बीतने ही हैं, बीत ही जाएंगे
तो क्यों रो के बिताओ, हम तो हँस के बिताएंगे।

मैं कहती हूँ,
रोज़ भगाती हुई जिन्दगी को एक बार भगा के तो देखो
मूर्ख बनाती हुई जिन्दगी को एक बार मूर्ख बना के तो देखो।
ये वक्त भागता ही रहेगा, ये वक्त भगाता भी रहेगा,
अपने लिए कभी-कभी वक्त चुरा के तो देखो।
अब आप पूछोगे कि, रेनू जी, वक्त कैसे चुराएँ।
ये कुछ नुस्खे हैं आजमाने को, कहो तो हम बतलाएँ।

वो हम कहते हैं ना, कि काश ऐसा होता, काश वैसा होता
तो मत बढ़ाओ अपने जीवन में ढेर सारे काश।
काश कभी-कभी तो ले के देखो, खुद से खुद के लिए अवकाश
जी हाँ, लिखो अपने नाम एक अर्जी
और माँग लो खुद के लिए अवकाश।
अपना कोई मनपसंद गीत ज़ोर-ज़ोर से गाओ,
और जब भी मौका मिले, पैरों को जरूर थिरकाओ।
खुल के जी लो हर पल,
अपने सब्र को न आजमाओ,
कल की फिक्र में तुम अपने आज को क्यूं गँवाओ।

क्योंकि,
आज जो अपनों के संग बिताया, वही वक्त अपना है
और दोस्तों, हंस के जो पल जी लिया, वही सच्चा सपना है।
यादें ऐसी समेटो, अपने कल के लिए कि
जब भी मुड़ के देखो, तो मुस्कुरा कर कह सको,
वाह! यारा, हम जी भर के जिए।

याद रखना दोस्तों,
माना कि जिन्दगी में दर्द कम नहीं होता,
पर संयम से बड़ा कोई मरहम नहीं होता।
क्योंकि जीवन जीने के लिए, वक्त कभी कम नहीं होता।
गलती हमारी ही है कि
हम जीना ही देर से शुरू करते हैं वरना,
जिन्दगी जी के देखो मेरे भाई
जिन्दगी में सुकून कहीं कम नहीं होता

जी हाँ,
जिन्दगी में सुकून कहीं कम नहीं होता।
99 के फेर में, 98 भी खो बैठोगे
केबीसी का खेल उलझन है।
जीवन की आपा-धापी में, इतना उलझ गए
न दिन को चैन है और न, रात को सुकून है।
गौर से देखो तो, जो कम लगता है तुम्हें
किसी के लिए तो वो, आज भी स्वप्न है।
जीवन के रंगमंच का पर्दा, जाने कब गिर जाएगा
आज में जी ले रे भाई, कल तो एक भ्रम है।

काम और जीवन के बीच संतुलन

कृष्णा कुमार
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

आज की तेजी से भागती दुनिया में काम और जीवन के बीच संतुलन प्राप्त करना तेजी से महत्वपूर्ण हो गया है। कार्यस्थल में सफल होने के लिए निरंतर दबाव और व्यक्तिगत जीवन की निरंतर मांगों के साथ, दोनों के बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। हालांकि, एक स्वस्थ और पूर्ण जीवन शैली को बनाए रखने के लिए काम और जीवन के बीच संतुलन खोजना आवश्यक है।

कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने में पहला कदम किसी के जीवन में प्राथमिकताओं की पहचान करना है। यह स्थापित करना महत्वपूर्ण है कि हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है और हमें सबसे अधिक संतुष्टि किसमें मिलती है। हमें काम पर अपने स्वास्थ्य, परिवार और व्यक्तिगत हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए, और गैर-आवश्यक कार्य प्रतिबद्धताओं को ना कहना सीखना चाहिए।

दूसरा, काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच सीमाएं निर्धारित करना आवश्यक है। यह एक निर्धारित कार्य सारणी स्थापित करके और उस पर टिके रहकर हासिल किया जा सकता है। काम के घंटों के बाद काम को घर ले जाने या काम से संबंधित गतिविधियों में शामिल होने से बचना महत्वपूर्ण है। यह काम और व्यक्तिगत समय को अलग-अलग करने में मदद कर सकता है।

तीसरा, हर किसी को समय को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना आना चाहिए। यह एक सारणी बनाकर, कार्यों को प्राथमिकता देकर और आवश्यक होने पर जिम्मेदारियों को सौंपकर प्राप्त किया जा सकता है। मल्टीटास्किंग से बचना आवश्यक है, जो अनुत्पादक हो सकता है और बर्नआउट का कारण बन सकता है।

चौथा, किसी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ख्याल रखना महत्वपूर्ण है। नियमित व्यायाम, स्वस्थ आहार और पर्याप्त नींद स्वस्थ जीवन शैली को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। विश्राम और आत्म-देखभाल के लिए समय निकालना भी महत्वपूर्ण है, जैसे कि किताब पढ़ना, ध्यान करना या छुट्टी लेना।

अंत में, किसी को भी सहकर्मियों, पर्यवेक्षकों और परिवार के सदस्यों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करना सीखना चाहिए। यह गलतफहमी और संघर्षों से बचने और सहायक काम और घर का माहौल बनाने में मदद कर सकता है। किसी की

जरूरतों और सीमाओं को स्पष्ट रूप से समझना और सम्मानपूर्वक संवाद करना महत्वपूर्ण है। एक स्वस्थ और पूर्ण जीवन शैली को बनाए रखने के लिए काम और जीवन के बीच संतुलन प्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए प्राथमिकताएं निर्धारित करने, सीमाएं स्थापित करने, समय को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने, किसी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल करने और दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने की आवश्यकता होती है। इन रणनीतियों के साथ, कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करना और एक खुश और स्वस्थ जीवन का आनंद लेना संभव है।

व्याकुल मन

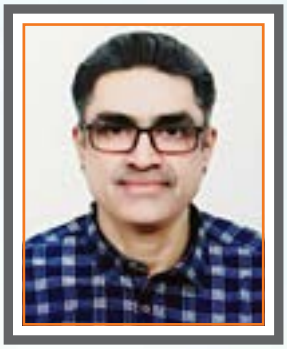

हरि कृष्ण कुमार
सतर्कता एवं सुरक्षा निदेशालय

मेरे व्याकुल मन में तुम
रंग प्रीत का भर जाओ।
इस जीवन के अन्धकार को
रात चाँदनी कर जाओ
मेरे दिल की धड़कन में तुम
अपनी साँसें भर जाओ।
मेरे व्याकुल मन में तुम
रंग प्रीत का भर जाओ।
होली के हैं रंग हजार
मेरे मन में है सूनापन
इस दिल के सूनेपन में तुम
प्यार का सागर भर जाओ।
मेरे व्याकुल मन में तुम
रंग प्रीत का भर जाओ।
ठोकर मैंने खाई हर पल
मंजिल तक मैं पहुँच न पाया
मेरे जीवन-साथी बन तुम
जीवन में खुशियाँ भर जाओ।
मेरे व्याकुल मन में तुम
रंग प्रीत का भर जाओ।
झील सी हैं आँखें तुम्हारी
सागर सा है हृदय विशाल
मेरी जीवन-ज्योति बन तुम
सीप में मोती बन जाओ।
मेरे व्याकुल मन में तुम
रंग प्रीत का भर जाओ।
जन्म-जन्म का साथ हमारा
मेरे दिल में प्यार तुम्हारा
आवाज दे रहा आस का पंक्षी
अब तुम मुझसे दूर न जाओ।
मेरे व्याकुल मन में तुम
रंग प्रीत का भर जाओ।
इस जीवन के अन्धकार को
रात चाँदनी कर जाओ
मेरे दिल की धड़कन में तुम
अपनी साँसें भर जाओ।

लड़का–लड़की एक समान

अविनाश कुमार
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

स्त्री और पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। जीवन की गाड़ी सुचारू रूप से चलती रहे इसके लिए दोनों पहियों अर्थात् स्त्री-पुरुष दोनों का बराबर का सहयोग और सामंजस्य ज़रूरी है। यदि इनमें एक भी छोटा या बड़ा हुआ तो गाड़ी सुचारू रूप से नहीं चल सकेगी। इसी तरह समाज और देश की उन्नति के लिए पुरुषों की नहीं नारियों के योगदान की भी उतनी आवश्यकता है। नारी अपना योगदान उचित रूप में दे सके इसके लिए उसे बराबरी का स्थान मिलना चाहिए तथा यह ज़रूरी है कि समाज लड़के और लड़की में कोई भेद न करे।

स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता है। यद्यपि दोनों की शारीरिक रचना में काफ़ी अंतर है फिर भी जहाँ तक मानवीय गुणों की बात है, वहाँ नारी में ही अधिक मानवीय गुण मिलते हैं। पुरुष जो स्वभाव से पुरुष होता है, उसमें त्याग, दया, ममता सहनशीलता जैसे मानवीय गुण नारी की अपेक्षा बहुत की कम होते हैं। नर जहाँ क्रोध का अवतार माना जाता है वहीं नारी वात्सल्य और प्रेम की जीती-जागती मूर्ति होती है। इस संबंध में मैथिली शरण गुप्त ने ठीक ही कहा है –

एक नहीं दो-दो मात्राएँ नर से भारी नारी।

प्राचीन काल में नर और नारी को समान अधिकार प्राप्त थे। वैदिक काल में स्त्रियों द्वारा वेद मंत्रों, ऋचाओं, श्लोकों की रचना का उल्लेख मिलता है। भारती, विज्जा, अपाला, गार्गी ऐसी ही विदुषी स्त्रियाँ थीं, जिन्होंने पुरुषों के साथ शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया। उस काल में नारी को सहधर्मिणी, गृहलक्ष्मी और अर्धांगिनी जैसे शब्दों से विभूषित किया जाता था। समाज में नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

मध्यकाल तक आते-आते नारी की स्थिति में गिरावट आने लगी। मुसलमानों के आक्रमण के कारण नारी को चार दीवारी में कैद होना पड़ा। मुगलकाल में नारियों का सम्मान और भी छिन गया। वह पर्दे में रहने को विवश कर दी गई। इस काल में उसे पुरुषों की दासी बनने को विवश किया गया। उसकी शिक्षा-दीक्षा पर रोक लगाकर उसे चूल्हे-चौके तक सीमित कर दिया गया। पुरुषों की दासता और बच्चों का पालन-पोषण यही नारी के हिस्से में रह गया। नारी को अवगुणों का भंडार समझ लिया गया। तुलसी जैसे महाकवि ने भी न जाने क्या देखकर लिखा

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥

अंग्रेजों के शासन के समय तक नारी की स्थिति में सुधार की बात उठने लगे। सावित्रीबाई फुले जैसी महिलाएँ आगे आईं और नारी शिक्षा की दिशा में कदम बढ़ाया। इसी समय राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी आदि ने सती प्रथा बंद करवाने, संपत्ति में अधिकार दिलाने, सामाजिक सम्मान दिलाने, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि की दिशा में ठोस कदम उठाए, क्योंकि इन लोगों ने नारी की पीड़ा को समझा। जयशंकार प्रसाद ने नारियों की स्थिति देखकर लिखा –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में पीयूष स्रोत-सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में॥

एक अन्य स्थान पर लिखा गया है –

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

समाज में जैसे-जैसे पुरुषों की सोच में बदलाव आया, नारी की स्थिति में बदलाव आता गया। कुछ समय पूर्व तक कन्याओं को माता-पिता और समाज पर बोझ समझा जाता था। वह भ्रूण (कन्या) हत्या के द्वारा अजन्मी कन्याओं के बोझ से छुटकारा पा लेता था। यह स्थिति सामाजिक समानता और लिंगानुपात के लिए खतरनाक होती जा रही थी, पर सरकारी प्रयास और पुरुषों की सोच में बदलाव के कारण अब स्थिति बदल गई है। लोग अब लड़कियों को बोझ नहीं समझते हैं। पहले जहाँ लड़कों के जन्म पर खुशी मनाई जाती थी वहीं अब लड़की का जन्मदिन भी धूमधाम से मनाया जाने लगा है। हमारे संविधान में भी स्त्री-पुरुष को समानता का दर्जा दिया गया है, पर अभी भी समाज को अपनी सोच में उदारता लाने की ज़रूरत है।

घर-परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति की कल्पना नारी के योगदान के बिना सोचना हवा-हवाई बातें रह जाएँगी। अब समाज को पुरुष प्रधान सोच में बदलाव लाते हुए महिलाओं को बराबरी का सम्मान देना चाहिए। इसके लिए **'लड़का-लड़की एक समान'** की सोच पैदा कर इसे व्यवहार में लाने की शुरुआत कर देनी चाहिए।

चार उपदेश

अंजली कंवर
योजना एवं समन्वय निदेशालय

किसी राजा ने एक उद्यान लगवाया। एक छोटी सी चिड़िया उद्यान से रोज फल खा जाया करती थी। माली बहुत परेशान था। एक दिन वह चिड़िया पकड़ में आ गई। चिड़िया को अपने पकड़े जाने का बहुत अफसोस था। वह बहुत बुद्धिमान थी, उसने अपना धैर्य नहीं खोया और राजा के कोप से बचने के उपाय सोचने लगी।

चिड़िया ने राजा से कहा-मैंने नि:संदेह आपके बाग में फल खाने का गलत कार्य किया है, मुझे अवश्य प्राणदंड मिलना चाहिए, परंतु इससे पहले मैं आपको चार ज्ञान की बातें बताना चाहती हूं जिसे मैंने अपने पूर्वजों से सुनी थी। क्या आप मेरी ज्ञान की चार बातें सुनना चाहतें हैं।

हां सुनाओ, पर आज तुम्हे प्राणदंड अवश्य मिलेगा। ठीक है राजन मेरी पहली बात है – यदि एक बार शत्रु हाथ में आ जाए तो उसे छोड़ना नहीं चाहिए। दूसरी बात है – असंभव बात पर बिना सोचे समझे विश्वास नहीं करना चाहिए। तीसरी बात है – कभी बीती हुई बातों को सोचकर दुखी नहीं होना चाहिए। बहुत सुंदर है तुम्हारी बातें, अब चौथी बात कहो, राजा ने कहा।

चौथी बात सबसे कीमती है, पर उसे मैं कैद में रह कर नहीं बता सकती। मुझे आजाद कर दो, तब चौथी बात बता दूंगी, तब फिर कैद कर लेना। राजा ने चिड़िया को आज़ाद कर दिया। चिड़िया उड़कर पेड़ पर जा बैठी उसने कहा राजा, अब मेरी चौथी और अंतिम बात सुनो। मेरे पेट में इतना बड़ा हीरा है कि उससे पूरे संसार को वर्षों तक भोजन कराया जा सकता है। पर अब पछताने से क्या फायदा, मैं आपके हाथ कैसे आ सकती हूं। आप तो बहुत मूर्ख निकले।

चिड़िया के उड़ जाने पर राजा को अफसोस नहीं था, उसे हीरे के लिए फिक्र व अफसोस था। चिड़िया पुनः बोली हे मंदबुद्धि राजा तुम्हें दिए गए मेरे उपदेश व्यर्थ गए। यदि तुमने मेरी पहली बात पर गौर किया होता तो इस समय मैं आज़ाद न होती। यदि दूसरी बात पर गौर किया होता तो – मेरे पेट में हीरा है, तुम्हें विश्वास न होता। मेरी तीसरी बात पर भी गौर नहीं किया अन्यथा हीरे के लिए इतने दुखी नहीं होते और अब अंतिम बात सुनो – कोई बात सुन लेने से कोई लाभ नहीं होता, जब तक उस पर अमल न किया जाए। यह कह कर चिड़िया उड़ गई।

पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण

प्रियांशु साहिल
सतर्कता एवं सुरक्षा निदेशालय

जिस पर्यावरण में हम रहते हैं, वह बड़ी तेजी से दूषित हो रहा है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने पर्यावरण की देखरेख और सरंक्षण सही तरीके से करें। हमारे देश में तो पर्यावरण संरक्षण की परम्परा प्राचीन काल से ही रही है। हमारे पूर्वजों ने विभिन्न वन्य जीवों को देवी देवताओं की सवारी मानकर और विभिन्न वृक्षों में देवी देवताओं का निवास मानकर उनका संरक्षण किया है।

पर्यावरण संरक्षण मानव और पर्यावरण के बीच सम्बन्धों को सुधारने की एक प्रक्रिया है। जिसके दो उद्देश्य हैं। पहला, उन मानवीय क्रिया कलापों का प्रबन्धन जिनकी वजह से पर्यावरण को क्षति पहुँचती है। दूसरा, मानव की जीवन शैली को पर्यावरण की प्राकृतिक व्यवस्था के अनुरूप आचरणपरक बनाना, जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता बनी रहे। इसके लिये हम कुछ उपाय व्यवहार में ला सकते हैं:–

- कारखाने से हवा में मिलने वाले, जल में और भूमि के अन्दर फेके जाने वाले अपशिष्ट पद्धार्थों का उचित निस्तारण।
- विषैले और खतरनाक अपशिष्ट पदार्थों के निपटान के लिए कड़े कानूनों का प्रावधान।
- संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग हेतु जनजागरण।
- कृषि में रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग को कम करना।
- वन प्रबन्धन के द्वारा वनों के क्षेत्र में वृद्धि।
- विकास योजनाओं को शुरू करने से पहले पर्यावरण पर उनके प्रभाव का आंकलन करके।

एक बात अवश्य कहना चाहूँगा, आप सम्पूर्ण दुनिया को तो नहीं बदल सकते है पर हाँ आप अपने व्यवहार में परिवर्तन करना चाहते है तो आपको कोई नहीं रोक सकता है और दुनिया के बदलाव की कहानी यहीं से शुरू होती है। आज हर व्यक्ति एक संकल्प ले कि वो जहाँ है उसी स्थान पर एक पौधा अवश्य लगायेगें। यही सभी मानव जाति की तरफ से अपने इस अनोखे ग्रह को दिया गया खूबसूरत तोहफा होगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

कुन्दन कुमार झा
महानिदेशक (आर एंड एम) का कार्यालय

परिचय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जो कंप्यूटर के इंसानों की तरह व्यवहार करने की धारणा पर आधारित है। इसके जनक जॉन मैकार्थी माने जाते है। यह मशीनों को सोचने, समझने,सीखने, समस्या हल करने और निर्णय लेने जैसी संज्ञानात्मक कार्यों को करने की क्षमता को सूचित करता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर शोध की शुरूआत 1950 के दशक में हुई थी। इसका अर्थ होता है- कृत्रिम तरीके से विकसित बौद्धिक क्षमता। इसके जरिये कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर संचालित करने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क कार्य करता है। ए.आई पूर्णत: प्रतिक्रियात्मक, सीमित स्मृति, मस्तिष्क सिद्धांत एवं आत्म –चेतन जैसी अवधारणाओं पर कार्य करता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर 7-सूत्री रणनीति

सबसे पहले अक्टूबर 2017 में केन्द्र सरकार ने 7-सूत्री रणनीति तैयार की थी, जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल करने के लिए भारत की सामरिक योजना का आधार तैयार करेगी। इनमें प्रमुख है–

- मानव-मशीन की बातचीत के लिए विकासशील विधियाँ बनाना।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और आर एंड डी के साथ एक सक्षम कार्यबल का निर्माण करना।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नैतिक, कानूनी और सामाजिक निहितार्थों को समझना तथा उन पर काम करना।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टेक्नोलॉजी को मानक मानकर और बेंचमार्क के माध्यम से मापन का मूल्यांकन करना।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लाभ

- नीति आयोग के अनुमान के अनुसार ए.आई को अपनाने एवं बढ़ावा देने से वर्ष 2035 तक भारत की जीडीपी में लगभग हजारों बिलियन डॉलर की वृद्धि के साथ ही और वर्ष 2035 तक भारत की वार्षिक वृद्धि के साथ ही और वर्ष 2035 तक भारत की वार्षिक वृद्धि दर को 1.3 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावना है।
- कृषि में अनुप्रयोग से यह किसानों की आय तथा कृषि उत्पादकता बढ़ाने और अपव्यय को कम करने में योगदान कर सकता है।
- ए.आई गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक लोगों की पहुँच को बढ़ा सकता है। इसकी मदद से शिक्षा की गुणवत्ता में

सुधार किया जा सकता है एवं शिक्षा तक लोगों की पहुँच को बढ़ाया जा सकता है। इसकी सहायता से प्रशासन में दक्षता को बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त व्यापार एवं वाणिज्य में इसका लाभ सिद्ध है।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के टास्क फोर्स के रूप में वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया है। इसके मिशन के रूप में निम्नलिखित कार्य किये जा रहे है–

- एआई तकनीकी की तैनाती में तेजी लाने के लिए नीति और कानूनी ढाँचे का निर्माण।
- एआई का अनुप्रयोग कर आर्थिक लाभ प्राप्त करना।
- विशिष्ट उद्योग, अनुसंधान कार्यक्रम और सरकार हेतु पाँच वर्षीय अनुशंसाएँ।

विज़न

आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी प्रक्रियाओं में एआई को अपनाना ताकि भारत को एआई – युक्त अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने का लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता मिले।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विगत कई दशकों से चर्चा के केंद्र में रहा एक ज्वलंत विषय है। वैज्ञानिक इसके अच्छे और बुरे परिणामों को लेकर समय-समय पर विचार-विमर्श करते रहते है। आज दुनिया तकनीक के माध्यम से तेजी से बदल रही है। विकास को गति देने और लोगों को बेहतर सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण और भूमंडलीकरण ने जहाँ विकास की गति को तेज़ किया है, वहीं इसने कई नई समस्याओं को भी जन्म दिया है, जिनका समाधान करने के लिये नित नए उपाय अपनाये जाते हैं। जहाँ वैज्ञानिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनेकानेक लाभ गिनाते है, वहीं वे यह भी मानते हैं कि इसके आने से सबसे बड़ा नुकसान मनुष्यों को ही होगा, क्योंकि उनका काम मशीनों से लिया जाएगा, जो स्वयं ही निर्णय लेने लगेंगी और यदि उन पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो वे मानव सभ्यता के लिए हानिकारक हो सकती है। ऐसे में इनके इस्तेमाल से पहले लाभ और हानि दोनों को संतुलित करने की आवश्यकता होगी।

क्वांटम प्रौद्योगिकी और भारत

गौरव कुमार
वित्त एवं सामग्री प्रबंधन निदेशालय

संदर्भ

हाल के वर्षों में वैश्विक क्वांटम उद्योग ने अविश्वसनीय प्रगति की है और सरकारों एवं निजी क्षेत्र दोनों ही इसमें भारी निवेश किया गया है। अमेरिका, फ्राँस, जर्मनी, चीन एवं रूस जैसे देश पिछले एक दशक से क्वांटम प्रौद्योगिकी में संसाधनों एवं मानव पूंजी का निवेश कर रहे हैं, लेकिन भारत अब तक पीछे ही रहा है और इस अंतराल को दूर करने तथा इस क्षेत्र में प्रमुखता हासिल करने के लिए उसे विशेष प्रयास और श्रम करना होगा।

यद्यपि क्वांटम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत ने अधिक प्रगति नहीं की है, इस प्रकार बिना विलंब किये इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ने की जरूरत है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नत देशों से बराबरी कर सकने की भारत की इच्छा "राष्ट्रीय क्वांटम प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयोग मिशन" की घोषणा के रूप में प्रकट हुई है।

परिचय

क्वांटम प्रौद्योगिकी क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतो पर आधारित है जिसे 20वीं शताब्दी के आरंभ में परमाणु एवं मूल तत्वों के स्तर पर प्रकृति के वर्णन के लिए विकसित किया गया था।

- इस क्रांतिकारी प्रौद्योगिकी के पहले चरण ने भौतिक जगत की समझ की नींव प्रदान की और लेज़र और सेमीकंडक्टर ट्रांजिस्टर जैसे सर्वगत आविष्कारों को जन्म दिया।
- दूसरी क्रांति वर्तमान में जारी है जो क्वांटम यांत्रिकी के गुणों को कंप्यूटिंग के क्षेत्र में प्रवेश कराने का लक्ष्य रखती हैं।

भारत में क्वांटम प्रौद्योगिकी एक ऐसा क्षेत्र रहा है जो दीर्घकालिक अनुसंधान एवं विकास पर अत्यधिक केंद्रित है।

वर्तमान में अनुसंधानकर्ताओं, औद्योगिकी पेशेवरों, शिक्षाविदों और उद्यमियों की एक सीमित संख्या ही इस क्षेत्र में सक्रिय है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और जैसे बड़े प्रौद्योगिकी निगमों के पास क्वांटम कंप्यूटिग के लिए समर्पित कार्यक्रम है। इसी तरह QNu Labs, BosonQ और Qulabs.ai जैसी कई भारतीय स्टार्टअप कंपनियाँ भी क्रिप्टोग्राफी, कंप्यूटिग तथा साइबर सुरक्षा के लिए क्वांटम आधारित एप्लिकेशन विकसित करने की दिशा में उल्लेखनीय काम कर रही है।

भारत की अन्य संबंधित पहलें

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने क्वांटम-सक्षम विज्ञान और प्रौद्योगिकी नामक एक कार्यक्रम का अनावरण किया।
- देश में क्वांटम उद्योग को सशक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय क्वांटम प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयोग मिशन की घोषणा की।
- क्वांटम कम्युनिकेशन लैब का भी उद्घाटन किया गया।

संबद्ध चुनौतियाँ

- सुरक्षा संबंधी मुद्दे– क्वांटम कंप्यूटिगं का संचार और कंप्यूटर को सुरक्षित करने वाले क्रिप्टोग्राफिक एन्क्रिप्शन पर एक विघटनकारी प्रभाव पड़ सकता है।
- प्रौद्योगिकी संबंधी मुद्दे- क्वांटम सुपरपोजिशन के गुणों का अत्यधिक नियंत्रित तरीके से दोहन कर सकने में भी चुनौती निहित है।
- इसके साथ ही उनका उपयोग कर सकने के लिए सामग्री, डिजाइन और इंजीनियरिंग के सावधानीपूर्वक चयन की आवश्यकता होती है।
- इसके अतिरिक्त, सैद्धांतिक स्तर पर क्वांटम कंप्यूटरों के लिये एल्गोरिदम और एप्लीकेशन के सृजन की चुनौती मौजूद है।

आगे की राह

- **उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना–** अकादमिक संस्थानों के साथ-साथ सरकारी अनुसंधान संस्थानों में क्वांटम विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर समर्पित उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना पर प्राथमिक ध्यान दिया जाना चाहिए।
- **केंद्र राज्य समन्वय–** राज्य सरकारें निकट भविष्य में सेमीकंडक्टर फैब्स स्थापित करने में अभिन्न भूमिका निभा सकती है।
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी–** क्वांटम प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोगों को विकसित करने में संलग्न स्टार्टअप्स तथा बिग टेक निगमों की शक्ति का उपयोग किया जाना चाहिए।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग–** क्वांटम प्रौद्योगिकी संबंधी परियोजनाओं पर संयुक्त प्रयास के लिए अमेरिका, आॅस्ट्रेलिया, कनाडा, युके एवं अन्य देशों के साथ क्वांटम प्रौद्योगिकी समझौते पर भारत के लिये आधार का कार्य कर सकते है।

निष्कर्ष

भारत सरकार ने देश में एक राष्ट्रीय मिशन आरंभ करने की अपनी योजना के माध्यम से क्वांटम प्रौद्योगिकियों के महत्व को स्वीकार करते हुए पहला कदम आगे बढ़ा दिया है। हालाँकि, अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में और निजी क्षेत्र एवं अकादमिक क्षेत्र से सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अभी बहुत कुछ जाने की आवश्यकता है, जिसके लिये द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय भागीदारी का लाभ उठाया जा सकता है।

पत्नी

भूपेंद्र सिंह
कार्मिक निदेशालय

पत्नी नामक प्राणी भारत सहित पूरे विश्व में बहुतायत में पाई जाती है। प्राचीन समय में यह अक्सर घर में और भोजनशाला में पाई जाती थी लेकिन अब शॉपिंग मॉल, सिनेमा थिएटर, रेस्त्रां और अन्य सामाजिक जगहों पर इन्हें आसानी से विचरण करते हुए देखा जा सकता है।

भारत में इन्हें भाग्यवान, लक्ष्मी तथा धर्मपत्नी आदि के नामों से भी जाना जाता है। अधिक बोलना, अति व्यय करना इस प्रजाति के प्रमुख लक्षण हैं। हालांकि इस प्रजाति पर अनादिकाल से अब तक कोई समग्र अध्ययन नहीं किया गया है लेकिन सामान्यत: इनके निम्न प्रकार होते हैं–

1. **सुशील पत्नी**– यह प्रजाति अब लुप्त हो चुकी है। इस प्रजाति की पत्नियां सुशील, आज्ञाकारी और सहनशील होती थी तथा सिर्फ गृहकार्यों में दक्ष हो घर में निवास करती थी।
2. **आक्रमक पत्नी**– यह प्रजाति भारत समेत पूरे विश्व में अधिकता से पाई जाती है। इन्हें जोर-जोर से बोलना व अकारण झगड़ा करना अतिप्रिय होता है। इनकी विशेषता कर्कश स्वर में चीखना, आक्रमक शैली में धमकाना और समय आने पर तेज प्रहार होता है।
3. **झगड़ालू पत्नी**– यह प्रजाति भी अब भारत सहित पूरे विश्व में सामान्य रूप से पाई जाती है। इन्हें भी जोर से बोलना, कलह करना और झगड़ा करना अति प्रिय होता है। इनके प्रमुख हथियार भयंकर रूदन, अत्यधिक तीव्र स्वर में चिल्लाना और बात बात पर धमकी देकर अपने घरवालों को बुलाना होता है। भारतीय उपमहाद्वीप में इस प्राणी का सबसे बड़ा शत्रु स्वजाति के सास और ननद नामक समान रूप खतरनाक प्राणी होते हैं जिनसे इनका सामना होता रहता है।
4. **खर्चीली पत्नी**– भारत जैसे गरीब देश में इस काल में यह प्रजाति प्रमुखता से बढ़ी है। पति नामक प्राणी की आर्थिक प्रगति के साथ-साथ इनका विकास होता जा रहा है। इनका मुख्य आहार पति का बैंक अकाउंट, क्रेडिट कार्ड होता है, साथ ही आए दिन अतिव्यय करना, बिना विचारे खर्च करना, बिना जरूरी गहने, कपड़े, जूते और एसेसरीज खरीदना इनकी प्रमुख विशेषता होती है। इन्हें अक्सर शॉपिंग मॉल में देखा जा सकता है। यह प्रजाति पति नामक प्राणी को भी थैलियां ढ़ोने और पैसे देने के लिए साथ में रखती हैं।

पत्नी प्रजाति के विकासक्रम में क्रमश:– यह प्रजाति तीसरे चरण में आती हैं। विवाह पश्चात इस प्राणी को अक्सर आईने के सामने देखा जा सकता है। इन्हें भोजनशाला में जाना और भोजन बनाने संबंधी कार्य अत्यंत नापसंद होते हैं और मजबूर किए जाने पर यह प्रजाति आक्रमक हो सकती है।

प्यार की मूरत हो तुम
मेरे घर की शान हो तुम
तुम से ही है मेरा घर संसार
मेरी प्रिय पत्नी हो तुम।
तुमने ही तो घर को स्वर्ग बनाया
आंगन में तुलसी को सजाया
इस मकान को घर बनाके
तूने इसको मंदिर की तरह सजाया।
इस घर तू अपना मान
देती हो सबको सम्मान

बड़े छोटे का आदर तुम करती
इस घर को तुम हो संभालती।
कोई आपदा का अहसास ना होने देती
सबके मन को तुम भली भांति जानती
रहती है कोई कठिनाई किसी को
इसका हल तुम झट से निकालती।
सबको स्वादिष्ट भोजन खिलाती हो तुम
सबकी बातों का ख्याल रखती हो तुम
छोटी छोटी बातों का रखती हो तुम ध्यान
मेरी प्रिय पत्नी हो तुम।

वैधानिक चेतावनी– पति नामक मूक और निरीह प्राणी के लिए यह प्रजाति बेहद खतरनाक और आक्रमक होती है। इन्हें साड़ी, उपहार, महंगे आभूषण, मोबाइल फोन इत्यादि से कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

फिर भी दोस्तों जिस तरह हमारे जीवन में सूरज का बहुत अधिक महत्व है उसी तरह पति के जीवन में भी पत्नी का बहुत अधिक महत्व है जैसे एक दीपक जलकर अपने प्रकाश से अंधकार को दूर करता है, ठीक उसी तरह एक पत्नी भी अपने पति का हर कदम पर हर सुख-दुख में साथ देकर अपना धर्म निभाती है । इसीलिए एक पति और पत्नी का रिश्ता बहुत खास होता है।

उम्मीद

पूजा कुमारी
आरटीआई प्रकोष्ठ

पहले ही बता देना जो मन में आए कुछ तुम्हारे,
जिंदगी की इस उधेड़बुन में जो हम न पढ़ पाए कभी जज्बात तुम्हारे...
थोड़ी कोशिश कर के तुम्हीं वो बात जता देना कभी एहसास हो कि एक गांठ पड़ने वाली है,
वो भ्रम मिटा देंगे हमें यकीन है पर बिना बात किये ही कोई अपने कदम आगे न बढ़ा देना...
मन की उलझन को निर्णायक मत होने देना,
रुक जाना और पहले ही बता देना....

भारत की मिलेट क्रांति

गोपाल साह
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

भारत का पारंपरिक फूड मिलेट्स आज राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हो रहा है। पीएम मोदी जी इसी साल ग्लोबल मिलेट्स कान्फ्रेस का उद्घाटन किया गया है। मोदी जी के मिलेट्स को 'श्री अन्न' बताया है, जिसका अर्थ पवित्र अन्न होता है। मिलेट्स एक ऐसा अनाज है, जो शरीर के कई पोषक तत्वों की कमी को पूरा करता हैं। भारत की मिलेट्स फसलों में बाजरा, ज्वार, सांवा, वरीगा आदि शामिल है। ये अनाज मानव शरीर को पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्त्व प्रदान करते हैं। मिलेट्स ग्लूटेन फ्री होता है और इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, विटामिन, फाइबर, फॉस्फोरस, विटामिन-सी, विटामिन-डी और बी-कॉम्प्लेक्स होता है।

मिलेट्स के प्रकार

मिलेट्स में आने वाले अनाज दो तरह के होते हैं, इन्हें इनके आकार के हिसाब से दो भागों में बांटा गया है पहला बड़े दाने वाले मिलेट्स और दूसरा छोटे दाने वाले मिलेट्स। बड़े दानों वाले मिलेट्स में ज्वार और बाजरा शामिल है। वहीं दूसरी ओर छोटे दानों वाले मिलेट्स में रागी, कोदो, सांवा, कुटकी शामिल है। लेकिन इन अनाजों को आज गेहूं और चावल ने पीछे छोड़ दिया है। हमारे पूर्वजों द्वारा अधिकतर इन्हीं अनाजों का सेवन किया जाता था, जिसके कारण वह हमेशा स्वस्थ रहते थे। इन अनाजों की महत्वता देखते हुए इन्हें दोबारा से भारतीय थाली में लाने की कोशिश की जा रही है। भारत सरकार द्वारा भी लोगों से इन अनाजों को उपयोग करने के लिए कहा जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष

भारत सरकार द्वारा मिलेट्स अनाज के उत्पादन और उपयोग पर काफी जोर दिया जा रहा है भारत सरकार के आग्रह पर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने भी वर्ष 2023 को इंटरनेशनल मिलेट्स ईयर घोषित किया है। मिलेट्स अनाज न केवल खाने वालों के लिए बल्कि उगाने वालों के लिए फायदेमंद होते हैं। इन अनाजों को किसानों का मित्र कहा जाता है, क्योंकि यह अनाज कम परिश्रम और कम लागत में उगाए जा सकते हैं। इसके अलावा यह अनाज बाकी अनाजों की तरह जलवायु परिवर्तन से प्रभावित नहीं होते।

मिलेट्स का महत्त्व

पहले हमारे पूर्वजों द्वारा खाने के लिए मुख्य रूप से ज्वार, बाजरे का इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन धीरे-धीरे जैसे समय बदलता गया लोगों द्वारा ज्वार बाजरे के बदले गेहूं और चावल का इस्तेमाल खाने के लिए किया जाने लगा। गेहूं

और चावल भी एक पौष्टिक अनाज है, लेकिन ज्वार, बाजरा के मुकाबले इन अनाजों की कोई कीमत नहीं है। 60 की दशक के बाद से मिले का उत्पादन और उपयोग काफी कम हुआ है। मिलेट्स के उत्पादन की कमी होने का कारण हरित क्रांति को भी माना जाता है, क्योंकि 1960 में हरित क्रांति के बाद से भारत के परंपरागत भोजन को हटाकर गेहूं चावल और मैदे को बढ़ावा दिया जाने लगा था।

निष्कर्ष

कोरोना जैसी महामारी के बाद से लोगों में स्वास्थ्य के प्रति काफी जागरूकता बढ़ गई है। अब इंसानों द्वारा अपने परंपरागत भोजन को अपनाया जा रहा है। वे उस भोजन का इस्तेमाल कर रहे हैं, जो प्राचीन काल से इस्तेमाल किया जा रहा है। मोटे अनाज को अब व्यक्ति इम्यूनिटी बूस्टर के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं, और इसे सुपर फूड के नाम से भी जाना जाता है। मिलेट्स एकमात्र ऐसा अनाज होता है, जो आपको एक ही तरह के खाने में कई तरह के विटामिन जैसे कि कैल्शियम, जिंक, आयरन, मैग्नीशियम, पोटेशियम, फाइबर, विटामिन-बी, कैरोटीन प्रदान करता है।

विश्व शांति एवं जन कल्याण

प्रेम किशोर भारती
आरटीआई प्रकोष्ठ

वैज्ञानिक प्रयोग की सफलता ने मनुष्य की बुद्धि का अपूर्व विकास कर दिया है । द्वितीय महायुद्ध में एटम बम की शक्ति ने कुछ क्षणों में ही जापान की अजेय शक्ति को पराजित कर दिया। इस शक्ति की युद्धकालीन सफलता ने अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस आदि सभी देशों को ऐसे शस्त्रों के निर्माण की प्रेरणा दी कि सभी भयंकर और सर्वविनाशकारी शस्त्र बनाने लगे। अब सेना को पराजित करने तथा शत्रु देश पर पैदल सेना द्वारा आक्रमण करने के लिए शस्त्र निर्माण के स्थान पर देश के विनाश करने की दिशा में शस्त्र बनने लगे हैं। इन हथियारों का प्रयोग होने पर शत्रु देशों की अधिकांश जनता और संपत्ति थोड़े समय में ही नष्ट की जा सकेगी। चूँकि इसे शस्त्र प्रायः सभी स्वतंत्र देशों के संग्रहालयों में कुछ–न–कुछ आ गये है। अतः युद्ध की स्थिति में उनका प्रयोग भी अनिवार्य हो जायेगा, जिससे बड़ी संख्या प्रभावित हो सकती है। इसलिए निशस्त्रीकरण की योजनाएं बन रही है। शस्त्रों के निर्माण की जो प्रक्रिया अपनाई गई, उसी के कारण आज इतने उन्नत शस्त्र बन गए है, जिनके प्रयोग से व्यापक विनाश आसान दिखाई पड़ता है। अब भी परीक्षणों की रोकथाम तथा बने शस्त्रों का प्रयोग रोकने के मार्ग खोजें जा रहे है । इन प्रयासों के मूल में एक भयंकर आतंक और विश्व विनाश का भय कार्य कर रहा है।

पहाड़ों की यात्रा

संदीप रावत
कार्मिक निदेशालय

हम सब अपने जीवनकाल में अनेक यात्राएँ करते है, यात्राएँ धार्मिक, व्यापारिक एवं मनोरंजन आदि के लिए की जाती है। यात्राओं का सुखद अनुभव हमें एहसास दिलाता है जब हम मैदानों की गर्मी को छोड़ पहाड़ों की ठण्डी हवा में जाते हैं। पहाड़ों के लिए कहा जाता है? "दूरतः पर्वताः रम्या", अर्थात् दूर से पहाड बड़े सुन्दर लगते हैं।

शहर की भीड़-भाड़ से दूर हमने भी इस बार उत्तराखण्ड राज्य अलमोड़ा जिले में स्थित अपने ग्राम (गाँव) जाने का कार्यक्रम बनाया। गाँव की याद आपके दिलो-दिमाग में एक विशेष स्थान रखती है और जब आपका पहाड़ों पर गांव होता है तो खुशी दोगुनी हो जाती है। शहर में रहते-रहते हम अपने गाँव को याद किया करते है परन्तु शहरी जीवन में इतने व्यस्त हो जाते है की तीन-चार साल में एक बार ही मुश्किल से गाँव में जा पाते हैं। पहाड़ों का सफर चुनौतीपूर्ण होता है। यहाँ पर केवल बस या कार के माध्यम से पहुंचा जा सकता है, अपने दिल में गाँव की यादें लिए हम निकल पड़े गाँव की ओर, हम दिल्ली से गाजियाबाद, हापुड़, मुरादाबाद, काशिपुर होते हुए रामनगर पहुंचे। यात्रा के दौरान हमने एक नई ऊर्जा का संचार महसूस किया। मन में प्रसन्नता का भाव बार-बार आ रहा था। परिवार के साथ सफर का मजा दोगुना हो जाता है। हमने रामनगर में थोड़ा विश्राम किया। रामनगर उत्तराखण्ड में थोड़ा विश्राम किया। रामनगर के नैनीताल जिले में आता है। यहां से पहाड़िया आरम्भ होती है। रामनगर में स्थित जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान साल भर सैलानियों का आकर्षण केन्द्र बना रहता है। यहाँ पर हाथी, हिरण, बाघ आदि जानवर देखे जा सकते है। हमारी मंजिल अभी दूर थी तो हम चल पड़े पहाड़ों की ओर।

पहाड़ों पर प्राकृतिक सौन्दर्य आपको मन्त्रमुग्ध कर देता है, यहाँ पर खान-पान, रहन-सहन बहुत ही सरल होता है। पहाड़ों पर नजारों ने मेरे मन को मोहित कर दिया। यहां की शुद्ध हवा जैसे मानो भीतर नए प्राण भर दिए हो पहाड़ी के रमणीय दृश्यों को देखकर मन रोमांचित हो रहा था। घने जंगल, ऊंचे-ऊंचे पहाड़, संकीर्ण मोटर मार्ग एक अद्भुत दृश्य दिखा रहे थे। मैदानी भाग की भीषण गर्मी से दूर पहाड़ों की ठण्डी-ठण्डी हवा से आनन्द की अनुभूति हो रही थी। ऐसा आनन्द प्राप्त हो रहा था कि जिसे शब्दों में बताना नामुमकिन है। एक आध्यात्मिक ऊर्जा होती है पहाड़ों में जो वहाँ जाकर ही अहसूस होती है। आँखों के सामने हिमालय पर्वत श्रृंखला को देखकर मन रोमांचित हो उठा। मैंने मन ही मन परमात्मा का धन्यवाद किया कि उत्तराखण्ड राज्य में मेरा गाँव है। उत्तराखण्ड देवभूमी है, जहाँ पर देवताओं का वास है। मेरा मन आनंदित हो उठा प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था। जैसे ही हम अपने गाँव के नजदीक पहुँचे हमारी आँखो से खुशी के आँसू भर आए। मैंने निर्णय लिया कि साल में कम से कम हम एक बार अपने गाँव जरूर जाएंगे। पहाड़ों पर जीवन संघर्ष से भरा

होता है। पहाड़ों पर सड़कें टेढ़ी-मेढ़ी होती है परन्तु लोग सीधे होते है, पहाड़ों पर सूर्योदय और सूर्यास्त के नजारे अद्भुत होते हैं एक आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव होता है जो शब्दों में बताया नहीं जा सकता, पहाड़ों पर यात्रा के दौरान गर्म कपड़े अपने साथ जरूर रखें। यहाँ पर एक ही दिन में धूप और वर्षा दोनों हो जाती है। पहाड़ों से हम मजबूती से खड़ा रहना सीख सकते हैं, पहाड़ों पर वन सम्पदा और प्राकृतिक सौन्दर्य के अद्भुत नजारे देखकर मेरे बच्चों ने भी खूब मस्ती की, उनके उत्साह के सामने हम अपनी यात्रा की थकान को भूल गए। हम सभी को पहाड़ों की यात्रा करनी चाहिए। पहाड़ों की दिनचर्या तथा जीवन शहरों की अपेक्षा अधिक कठिन होता है। पहाड़ों पर सब कुछ है परन्तु छोटी-छोटी सुविधाओं के लिए संघर्ष करना पड़ता है। प्रायः ऐसा कहा जाता है कि पहाड़ पर समस्याएँ भी पहाड़ जैसी होती है। मेरी यात्रा का अनुभव भी सुखद रहा, मानसिक शांति के लिए पहाड़ों पर जाना चाहिए। यहाँ की जलवायु, प्राकृतिक सौन्दर्य और यात्रा के दौरान होने वाली घटनाएँ एक विस्मयकारी स्मृति के रूप में आजीवन आपके साथ रहती है।

बदलती दुनिया

पुष्पा जोशी
आरटीआई प्रकोष्ठ

कपड़े हो गए छोटे
लाज कहाँ से आए।
रोटी हो गई ब्रेड
ताकत कहाँ से आए।

फूल हो गए प्लास्टिक के
खुशबू कहाँ से आए।
चेहरा हो गया मेकअप का
रूप कहाँ से आए।

शिक्षक हो गए ट्यूशन के
विद्या कहाँ से आए।
भोजन हो गए होटल के
तंदुरूस्ती कहाँ से आए।

प्रोग्राम हो गए केबल के
संस्कार कहाँ से आए।
आदमी हो गए पैसे के
दया कहाँ से आए।

धंधे हो गए हायफाय
बरकत कहाँ से आए।
ताले हो गए पासवर्ड
सेफ्टी कहाँ से आए।

भक्त हो गए स्वार्थी
भगवान कहाँ से आए।
रिश्तेदार हो गए व्हाट्सऐप पे
मिलने कहाँ से आए।

स्पैरो (स्मार्ट परफॉरमेन्स एप्रेजल रिपोर्ट रिकॉर्डिंग ऑनलाइन विंडो)

हरगोविंद एवं मोहम्मद दानिश
कार्मिक निदेशालय

इलैक्ट्रॉनिक वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट (स्पैरो) विस्तृत कार्य-मूल्यांकन डॉसियर आधारित ऑनलाइन प्रणाली है। इस प्रणाली का उद्देश्य अधिकारियों को कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट इस तरह से ऑनलाइन भरने में सहायता प्रदान करना है जिससे वह न केवल प्रयोक्ता के लिए सुविधा हो बल्कि वे इसे समझ सके। रिपोर्ट भरने और प्रस्तुत करने की प्रक्रिया के कार्य-पदानुक्रम में मौजूद विभिन्न स्तरों वाले अधिकारियों के लिए भी यही सुविधा उपलब्ध होगी। ऐसी आशा की जाती है कि इससे पूरी तरह से भरी हुई कार्य मूल्यांकन रिपोर्टों के प्रस्तुतिकरण में होने वाले विलंब को कम किया जा सकेगा।

कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट भरने की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरणों का अनुसरण किया जाता है।

वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट के प्रबंधन के लिए प्रत्येक प्रयोगशाला में एक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट अभिरक्षक (custodian) प्रयोगशाला में स्पैरो नोडल अफसर नामित किया गया है।

1. संबंधित प्रयोगशाला/विभाग का कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट अभिरक्षक प्रत्येक अधिकारी को रिक्त कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट फॉर्म भेजता है।
2. वह अधिकारी कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट भरकर अपने रिपोर्टिंग अधिकारी को प्रस्तुत करता है।
3. कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट, रिपोर्टिंग अधिकारी से पुनरीक्षण अधिकारी तक और फिर स्वीकारकर्ता अधिकारी तक जाती है, ऐसा करते हुए अनिवार्यतः सी आर सेक्शन के लिए एक पर्ची मार्क की जाती है।

इस प्रणाली में स्थिति की जांच की व्यवस्था की गई है ताकि अधिकारी को यह पता रहे कि उसकी कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट कहां लंबित है या उसके पास कौन सी रिपोर्ट लंबित है।

स्पैरो की मुख्य विशेषताएं

- **फॉर्म आईडी–** फॉर्म आईडी एक ही होती है और इसे फॉर्म के सृजन के दौरान जनरेट किया जाता है।
- **कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट आईडी–** यह कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट की एकल आईडी होती है।
- **सर्च मापदंड–** नाम, तारीख इत्यादि विभिन्न पैरामीटरों के आधार पर सर्च करने के लिए।
- प्रारूप (ड्राफ्ट) कार्यमूल्यांकन रिपोर्ट को ड्राफ्ट के रूप में Save करने और बाद में उस पर कार्य करने के लिए।
- **कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट के प्रवाह–**

4. **मानकः** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट की मानक प्रवाह पर ग्रेडिंग

5. **अभ्यावेदनः** असहमति की दशा में अधिकारी अभ्यावेदन प्रस्तुत कर सकता है।

- **विलंब–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट के प्रस्तुतिकरण में होने वाले विलंब में कमी।
- **संप्रेषण–** उपयुक्त चरणों पर मोबाइल तथा ईमेल पर समय से एलर्ट जारी करना।
- **सुरक्षा–** प्रस्तुतिकरण केवल डिजिटल रूप से साइनिंग के पश्चात ही संभव है।
- **लंबित होना–** प्रत्येक चरण पर ट्रैकिंग
- **संरक्षा–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्टों के गुम होने/क्षतिग्रस्त होने की कोई संभावना नहीं।
- स्पैरो पोर्टल (https:sparoow-drdo.eoffice.gov.in) का इस्तेमाल करने के लिए nic/gov डोमेन ईमेल आईडी अनिवार्य है।

कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट का कार्यप्रवाह अभिमुखी संचलन

अधिकारियों को कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट के आरंभन से पहले कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट प्रबंधक द्वार किए जाने वाले आरंभिक कार्य

- अधिकारी के लिए कार्य प्रवाह उत्पन्न किया जाता है।
- जिन अधिकारियों के कार्यप्रवाह (वर्कफ्लो) सृजित किए जाते हैं, उनकी कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट जनरेट कर उन्हें भेजी जाती है।
- कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट के हर संचलन पर प्रबंधक को एक ईमेल प्राप्त होती है।
- प्रबंधक स्वीकृत कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट को बंद करता है और उसे नोडल अफसर को भेजता है।

स्पैरो प्रक्रिया

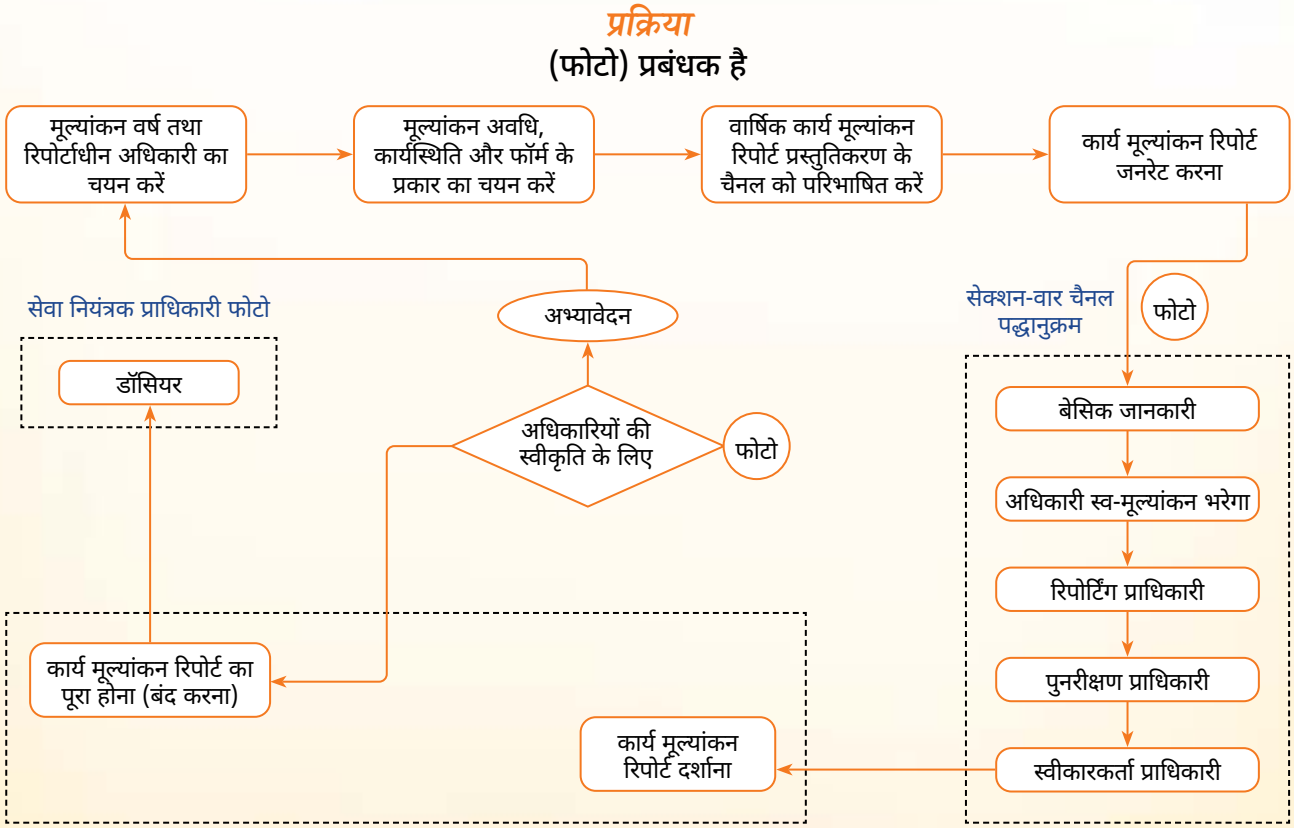

मानक प्रक्रिया

- **अधिकारी–** अधिकारी कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट भरता है और उसे रिपोर्टिंग प्राधिकारी को भेजता है।
- **प्रबंधक–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट रिपोर्टिंग प्राधिकारी को भेजता है।
- **रिपोर्टिंग प्राधिकारी–** भरी गई कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट को देखता है, उसे ग्रेड देता है और पुनरीक्षण अधिकारी के भेजता है।
- **पुनरीक्षण प्राधिकारी–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट को देखता है, उसे ग्रेड देता है और स्वीकारकर्ता प्राधिकारी को भेजता है।
- **स्वीकारकर्ता प्राधिकारी–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट को देखता है, उसकी ग्रेडिंग को अंतिम रूप देता है और प्रबंधक (Custodian) को भेजता है।
- **प्रबंधक–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट अधिकारी को भेजता है
- **अधिकारी–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट स्वीकार करता है और उसे प्रबंधक को भेजता है।
- **कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट पर कार्रवाई बंद की जाती है और ईओ कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट सीसीए को भेजता है।**

अभ्यावेदन

- यदि अधिकारी अभ्यावेदन बोर्ड को अभ्यावेदन प्रस्तुत करना चाहता है तो वह अपना अनुरोध अभिरक्षक को भेजता है।
- **अभिरक्षक–** अनुरोध अभ्यावेदन बोर्ड को भेजता है।
- अभ्यावेदन बोर्ड (रिपोर्टिंग, पुनरीक्षण तथा स्वीकारकर्ता प्राधिकारी, यदि स्वीकारकर्ता प्राधिकारी चाहे, तो ग्रेड को बदला जाता है अथवा उस पर टिप्पणी करने हुए उसे अभिरक्षक को भेजा जाता है।
- **अभिरक्षक–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट अधिकारी को भेजता है
- **अधिकारी–** कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट को स्वीकार करता है और उसे अभिरक्षक को भेजता है।
- **कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट पर कार्रवाई बंद की जाती है तथा ईओ कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट सीसीए को भेजता है।**

स्पैरो के संबंध में बार-बार पूछे जाने वाले प्रश्न

स्पैरो का इस्तेमाल कैसे करें?

स्पैरो का इस्तेमान लिंकः https://sparrow-drdo.edffice.gov.in के जरिए किया जा सकता है।

स्पैरो के लिए username क्या होगा?

Username drdo.in email ID (उदाहरणार्थ gaurave@hqr.drdo.in होगा

स्पैरो के लिए पासवर्ड क्या होगा?

- वैसा ही जैसा drdo.in पर ईमेल आईडी के लिए है।
- drdo.in लॉग इन परिचय का प्रयोग करते हुए एक बार सिस्टम में लॉग इन करने के बाद inbox में दिए गए APAR लिंग से वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट पर पहुंचा जा सकता है।

डिजिटल हस्ताक्षर कैसे करें?

डिजिटल हस्ताक्षर आधार आधारित e.hastakshar की सहायता से किए जा सकते हैं। 16 अंकों वाला आधार नंबर डालें जिससे एक OTP प्राप्त होगा। पूरा होने पर वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट e-hastakshar का प्रयोग करते हुए आरंभन अधिकारी (10) को भेजें। DSC विकल्प का प्रयोग न करें। डिजिटल हस्ताक्षर करते हुए यदि कोई त्रुटि नोटिस की जाती है तो समस्या के समाधान के लिए त्रुटि कोड (error code) गूगल में ढूंढ़ा जा सकता है। उदाहरणार्थ error code का अर्थ है कि मोबाइल नम्बर आधार के साथ जुड़ा हुआ नहीं है।

वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट अभिरक्षकों (APAR Custodians) के लिए

वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट (APAR) जनरेट करने की क्या प्रक्रिया है?

वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट के केन्द्रीय अभिरक्षक, सिस्टम में लॉग इन करने के उपरांत विंडो के बांयी ओर दिए गए मेन्यू में वर्कफ्लो टैब (workflow tab) पर जाएं। तत्पश्चात उसे वर्कफ्लो निर्मित करना होगा। इस निर्माण के दौरान मूल्यांकन वर्ष के तौर पर 2019-20 चुनें, स्थिति (status) का चयन करते समय कार्यरत (working) अथवा अनारंभन प्रमाणपत्र (Non-initiation certificate), जैसा भी मामला हो, चुनें। वर्कफ्लो का निर्माण करने के बाद एक ही बार में सभी APAR का चयन करके एक साथ कई APAR जनरेट की जा सकती हैं। इन APAR पर डिजिटल रूप से हस्ताक्षर करने के लिए APAR अभिरक्षक e-hastakshar (आधार समर्थित का प्रयोग कर सकता है।

आरंभन अधिकारी/पुनरीक्षण अधिकारी/स्वीकारकर्ता अधिकारी का चयन कैसे करें?

1. यदि आरंभन अधिकारी/पुनरीक्षण अधिकारी/स्वीकारकर्ता अधिकारी एक ही प्रयोगशाला से हैं तो dropdown से चयन करें।
2. यदि आरंभन अधिकारी/पुनरीक्षण अधिकारी/स्वीकारकर्ता अधिकारी प्रयोगशाला से बाहर के हैं तो आवर्धक ग्लास आइकन को क्लिक करके चयन करें। आइकन को दबाकर नई विंडो ओपनिंग से डीआरडीओ के किसी भी कर्मचारी को सेलेक्ट किया जा सकता है।

वर्कफ्लो को सेव (सुरक्षित) कैसे किया जाता है?

वर्कफ्लो को अंत में Save बटन दबाकर सेव किया जाता है। save & next को दबाकर अभ्यावेदन चैनल का भी निर्माण करना होगा जो प्रत्येक APAR के लिए वांछनीय नहीं होगा।

जब सही परिचयात्मक जानकरी डालने के वाबजूद कोई प्रयोक्ता लॉगइन नहीं कर पाता है, तो क्या करें?

LDAP प्रमाणन समस्याओं के समाधान के लिए DIT&CS से पासवर्ड reset करवाया जा सकता है।

प्रतिनियुक्ति/उच्च शिक्षा के लिए वैज्ञानिकों की वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट कैसे जनरेट करें?

ऐसे वैज्ञानिक जो अभी प्रतिनियुक्ति पर हैं अथवा उच्चतर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, पहले की ही तरह APAR की हार्ड कॉपी का प्रयोग करेंगे। तत्पश्चात् उसे APAR अभिरक्षक द्वारा साइट पर अपलोड किया जाएगा।

डीआरडीओ से इतर यूनिटों में तैनात वैज्ञानिकों की वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट कैसे भरी जाएंगी?

डीआरडीओ से इतर यूनिटों में तैनात वैज्ञानिक पहले की ही भांति रिपोर्ट हार्ड कॉपी में भरेंगे और प्रस्तुत करेंगे। उनकी वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट मुख्यालय द्वारा SPARROW पर अपलोड की जाएंगी।

वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट के संचलन के दौरान क्या मैं उसे ट्रैक कर सकता हूं?

जी हां, APAR ट्रैकिंग विकल्प की सहायता से आप अपनी कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट का पता लगा सकते हैं।

प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात् APAR को कहां देखा जा सकता है?

APAR बंद होने के पश्चात् इसे मूल्यांकनकर्ता और APAR अभिरक्षक द्वारा मुख्यालय में देखा सकता है।

APAR में दी गई ग्रेडिंग के विरूद्ध अभ्यावेदन के प्रावधान क्या हैं?

यदि कोई मूल्यांकनकर्ता उसे दिए गए अंकों से सहमत नहीं है तो वह अभ्यावेदन के प्रावधान का प्रयोग कर सकता है जिसमें नोडल अफसर द्वारा अभ्यावेदन के लिए वर्कफ्लों का निर्माण किया जाएगा जिसका समाधान तदनुसार किया जाएगा। तथापि, अभ्यावेदन के बाद भी कार्रवाई का कोई प्रावधान चूंकि SPARROW में नहीं है, अतः उसके लिए मूल्यांकनकर्ता को परंपरागत तरीकों का इस्तेमाल करना होगा।

सेवानिवृत्त हो रहे कर्मचारियों के लिए SPARROW में क्या व्यवस्था है?

सेवानिवृत्त हो रहे कर्मचारियों के मामले में APAR उनकी सेवानिवृत्ति से पहले ही जनरेट और भरी जाएगी।

जिस अफसर के पास APAR लंबित है, उसे स्मरण कराने की कोई प्रक्रिया है?

जिन अफसरों के पास APAR निर्दिष्ट समय के बाद भी लंबित हैं, उन्हें ऑटो अलर्ट भेजने के प्रावधान इस एप्लीकेशन में किए गए हैं।

ई-कार्यालय

चंदा आनंद
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

दुनिया भर में कोविड-19 के प्रकोप ने सरकारों/उद्योगों को अपने कार्य करने के तरीके को अलग प्रकार से करने और बदलने के लिए मजबूर किया। कार्यालय में शारीरिक रूप से उपस्थित होना कम महत्वपूर्ण हो गया था और ऐसे में वर्क फ्रॉम होम का महत्व स्वयं ही बढ़ गया। वर्क फ्रॉम होम की इस आवश्यकता ने कार्यबल को डिजिटल रूप में परिवर्तित किया और इसने एक अभूतपूर्व गति से कार्य संबंधी परिवेश को विकसित किया। महामारी के प्रकोप के बाद से टेलीकंप्यूटिंग को बड़े स्तर पर अपनाना कार्य करने की शैली का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया।

ई-कार्यालय सरकार के राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस कार्यक्रम के तहत एक मिशन मोड प्रोजेक्ट (एमएमपी) है। यह परियोजना 2008 में सरकारी कार्यालय को 5 साल की अवधि के भीतर कागज रहित (पेपरलेस) कार्यालय में बदलने की उम्मीद के साथ शुरू की गई थी। यह कार्य शैली राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) द्वारा विकसित की गई है और इसका उद्देश्य अधिक कुशल, प्रभावी और पारदर्शी, अंतर-सरकारी और अंतरा-सरकारी लेनदेन और प्रक्रियाओं की शुरुआत करना है।

ई-कार्यालय एक ऐसा अनुप्रयोग है जिसे आधुनिक सरकार की जरूरतों के अनुरूप डिजाइन किया गया है और इसे आने वाली सरकारों के लिए एक उपकरण के रूप में माना गया है। यह कर्मचारियों के लिए व्यक्तिगत, भूमिका आधारित, आंतरिक जानकारी तक सुरक्षित पहुंच के लिए एक मंच प्रदान करता है जो ब्राउज़र के माध्यम से उपलब्ध है। इसमें कर्मचारियों को उनकी आवश्यकताओं और आकस्मिकताओं के आधार पर सेवाओं और लेनदेन की इलेक्ट्रॉनिक सूचनाएं प्राप्त होती हैं।

ई-कार्यालय के लाभ

1. पारदर्शिता को बढ़ाना
2. जवाबदेही को बढ़ाना
3. डाटा की सुरक्षा और डाटा के पूर्णता (शुद्धता) का आश्वासन देना
4. निरर्थक प्रक्रियाओं से कर्मचारियों की ऊर्जा और समय को बचाकर नवाचार को बढ़ावा देना
5. सरकारी कार्य पद्धति और नैतिकता को बदलना

ई-कार्यालय कार्यान्वयन के लिए पूर्वापेक्षाएँ

क) ई-कार्यालय अनुप्रयोग को लागू करना

- केंद्र सरकार के परिपालन के लिए, इसका कार्यान्वयन राष्ट्रीय डेटा केंद्र पर किया जाता है।
- राज्य परिपालन के लिए, राज्य डाटा सेंटर (एसडीसी) में हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर प्रावधान ई-कार्यालय परिनियोजन दिशानिर्देशों के अनुसार किया जाना है।
- निकनेट/एनकेएन/स्वान संयोजकता उन सभी स्थानों पर मौजूद होनी चाहिए जहां ई-कार्यालय लागू किया जाएगा।

ख) कौशल सेट

- सभी ई-कार्यालय उपयोगकर्ताओं को कंप्यूटर और इंटरनेट ब्राउजिंग का बुनियादी ज्ञान होना आवश्यक है।

ग) अतिरिक्त पूर्व-आवश्यकताएं

- भारत सरकार/एनआईसी ईमेल आईडी– ई-कार्यालय उत्पाद में लॉगिन करने के लिए, सभी उपयोगकर्ताओं के पास भारत सरकार/एनआईसी ईमेल आईडी होना चाहिए
- डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाण पत्र (डीएससी)– इलैक्ट्रॉनिक फाइलों में नोटिंग और ड्राफ्ट पर हस्ताक्षर करने के लिए, सभी ई-कार्यालय उपयोगकर्ताओं के पास डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र (डीएससी) होना चाहिए।

ई-कार्यालय कार्यान्वयन के लिए आधारभूत पूर्व-आवश्यकताएं

क) कार्यस्थल/डेस्कटॉप/क्लाइंट

- ई-कार्यालय के प्रत्येक उपयोगकर्ता के पास एक स्वतंत्र कार्यस्थल/डेस्कटॉप/क्लाइंट होना आवश्यक है। कार्यस्थल/डेस्कटॉप/क्लाइंट के लिए अनुशंसित आवश्यकताएं इस प्रकार हैं:–

  प्रोसेसर: 2GHz और इससे अधिक | **रैम:** 2GB और उससे अधिक

  यूएसबी 2.0 नियंत्रक (डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र के लिए)

ख) नेटवर्क

- प्रत्येक उपयोगकर्ता/प्रत्येक डेस्कटॉप को लैन कनेक्टिविटी प्रदान की जानी चाहिए।
- विफलता के लिए विभाग में एकाधिक नेटवर्क लिंक सुनिश्चित करें।
- बैंडविड्थ उपयोग 60% से अधिक नहीं होना चाहिए।
- प्रणाली के सुचारू उपयोग के लिए, विभाग को 2000 उपयोगकर्ताओं के लिए 34 एमबीपीएस की न्यूनतम समर्थित बैंडविड्थ सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

ग) स्कैनर्स

- उपयोगकर्ता को उस विशेष स्कैनर का उपयोग करने वाले सभी उपयोगकर्ताओं हेतु स्कैनर के लिए कार्य अवधि में प्रतिदिन आने वाली प्राप्तियों की मात्रा का विश्लेषण करने की आवश्यकता होगी।

घ) सॉफ्टवेयर

- ऑपरेटिंग सिस्टम–विंडोज 7 या इसके बाद के संस्करण, लाईनैक्स 6 या इसके बाद के संस्करण, उबंतु 11 या इसके बाद के संस्करण।
- ब्राउज़र- इंटरनेट एक्सप्लोरर (10.0 और उससे अधिक), फायरफॉक्स (27.0 और उससे अधिक)
- एडोब रीडर 10 और इससे ऊपर
- एंटी-वायरस (कोई भी एंटीवायरस)

ई कार्यालय उत्पाद सूट

ई कार्यालय उत्पाद सूट–संक्षिप्त विवरण

1. **फाइल प्रबंधन प्रणाली (ई-फाइल)**– फाइलों और प्राप्तियों के प्रसंस्करण को स्वचालित करता है। इसमें फाइलों का निर्माण (इलेक्ट्रॉनिक और भौतिक दोनों तरह की फाइलें), वर्कफ़्लो में फाइलों के आवागमन, फाइलों का पता लगाना और उनका प्रबंधन शामिल है।

2. **ज्ञान प्रबंधन प्रणाली (केएमएस)**– अधिनियम, नीतियों और दिशानिर्देशों जैसे विभिन्न दस्तावेजों के केंद्रीकृत संग्रहण के रूप में कार्य करती है।
3. आंतरिक सहयोग और संदेश के लिए सहयोग और संदेश सेवा **(सीएएमएस)**।
4. **लीव प्रबंधन प्रणाली (ईलीव)**– छुट्टी के आवेदन और अनुमोदन प्रक्रिया को स्वचालित करता है।
5. **यात्रा प्रबंधन प्रणाली (ई-टूर)**– कर्मचारी के यात्रा कार्यक्रमों को स्वचालित करता है।
6. **कार्मिक सूचना प्रबंधन प्रणाली (पीआईएमएस)**– कर्मचारी रिकॉर्ड का प्रबंधन करती है और पीआईएमएस का आउटपुट ई-सर्विस बुक है।
7. भारत सरकार के लोकायुक्त अधिनियम-2013 के अनुसार संपत्ति और देयता घोषणा की इलेक्ट्रॉनिक फाइलिंग के लिए **संपत्ति वापसी सूचना प्रणाली प्रबंधन (पीआरआईएसएम)**।
8. प्रस्तुत करने के परिभाषित चैनल के अनुसार प्रदर्शन मूल्यांकन रिपोर्ट (पीएआर) की इलेक्ट्रॉनिक फाइलिंग के लिए **स्मार्ट प्रदर्शन मूल्यांकन रिपोर्ट रिकॉर्डिंग ऑनलाइन विंडो (स्पैरो)** आवेदन।

अपनी कार्य-अवधि के दौरान ई-कार्यालय अनुप्रयोग को विभिन्न **कार्यान्वयन चुनौतियों** का सामना करना पड़ता है, इन्हें मुख्य रूप से इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है:–

क्रम सं.	चुनौतियां	संभावित समाधान
1.	**परिवर्तन के लिए प्रतिरोध:** » इसे सुचारू रूप से लागू करने की प्रक्रिया में सबसे बड़ी बाधा के रूप में देखा गया है क्योंकि संगठन के प्रयोगकर्ता इस पर विश्वास और कुछ नया स्वीकार करने के डर के कारण आंशिक रूप से काम करने के पारंपरिक तरीके को बदलने के लिए अनिच्छुक हैं।	इस चुनौती का समाधान विभाग में अच्छे प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों की सराहना (नैतिक रूप से और मौद्रिक रूप से) कर्मचारियों की नैतिक वृद्धि के साथ कार्यान्वयन के लिए एक योजनाबद्ध दृष्टिकोण है और वास्तविक जीवन के उदाहरणों को स्थापित करके उपस्थित कर्मचारियों (एसओ, डीलिंग हैंड, क्लर्क) को प्रेरित करना है कि कैसे यह अनुप्रयोग संगठन की उत्पादकता में सुधार कर रहा है और साथ ही कर्मचारियों के लिए दैनिक डेस्क के काम के घंटे को काफी कम कर रहा है।
2.	**आवश्यक अवसंरचना/नेटवर्क बैंडविड्थ:** » यह विभिन्न सरकारी संगठनों में एक और व्यावहारिक मुद्दा है जहां कर्मचारियों के पास नगण्य रखरखाव (नियमित पीसी-सफाई गतिविधि) के साथ उचित क्लाइंट-मशीन नहीं है, जिनमें से कुछ पुराने कंप्यूटर सिस्टम का उपयोग कर रहे हैं। » नेटवर्क बैंड की चौड़ाई/नेटवर्क कॉन्फिगरेशन के मुद्दे धीमेपन का कारण बन सकते हैं और कभी-कभी सेवा में व्यवधान भी पैदा कर सकते हैं।	उपयोगकर्ता-विभागों द्वारा अपने आईटी-सेल के माध्यम से इसका ध्यान रखा जा सकता है जो सभी उपलब्ध वर्कस्टेशनों के लिए साप्ताहिक/पाक्षिक पीसी-सफाई गतिविधि निर्धारित कर सकता है। एक संक्रमण रणनीति तय की जा सकती है जिसके माध्यम से सभी पुरानी मशीनों को समयबद्ध तरीके से नए कंप्यूटर-सिस्टम से बदल दिया जाता है।
3.	**केंद्रीय रजिस्ट्री इकाई (सीआरयू) का सुदृढ़ीकरण:** » यह विभिन्न सरकारी संगठनों में एक और व्यावहारिक मुद्दा है जहां सीआरयू में प्रतिनियुक्त कर्मचारियों को कंप्यूटर, ईमेल और इंटरनेट ब्राउज़िंग का बुनियादी ज्ञान नहीं है।	इस चुनौती को दूर करने के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उपयोगकर्ता विभाग को सीआरयू में उन कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति करनी चाहिए जिन्हें कंप्यूटर और इंटरनेट ब्राउज़िंग का बुनियादी ज्ञान है। इसके अलावा, उपयोगकर्ता विभाग इन कर्मचारियों को सीआरयू में डीएके के संचालन के लिए दिशानिर्देशों का सेट भी प्रदान कर सकता है।
4.	**तकनीकी चुनौतियां:** » जैसे-जैसे पूरा वातावरण बदल रहा है (ओएस, ब्राउजर, जावा प्लेटफॉर्म, विक्रेताओं से एपीआई के संदर्भ में हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, इस विकास की गति को बनाए रखना बहुत बड़ा काम है।	इस चुनौती का समाधान संगठन का आईटी विभाग कर सकता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार की तकनीकी प्रगतियों ने कार्यालय के अर्थ और अवधारणा को पूरी तरह से बदल दिया है। अब, कार्यालय एक विशेष स्थान तक ही सीमित नहीं है। यद्यपि यह एक विशेष स्थान और भवन में स्थित होते हैं, लेकिन जब आप कार्यालय में नहीं होते, हवाई जहाज या यात्रा पर होते हैं तब भी यह आपके साथ ही होता है। इसने कार्यालय में काम करने के घंटों में नए आयाम जोड़े हैं, आप जितने घंटे चाहें काम कर सकते हैं और कार्यालय में न रहते हुए भी कार्य करने की क्षमता रखते हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि "मोबाइल ऑफिस", "होम ऑफिस" या आसान शब्दों में **ई-ऑफिस** हमारे कार्यालयी जीवन का एक महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग बनता जा रहा है।

शांत रहो सुखी रहो

मो. इशरत खान
आरटीआई प्रकोष्ठ

क्या हम बिना क्रोध किये, शांत रह सकते हैं? भले ही बात क्रोध करने की हो, पर अपने को शांत रखना ही योग है। इस महायोग की प्रवृत्ति हम स्वयं पैदा कर सकते हैं। महत्वपूर्ण है कि हम एकांत में बैठें– आस्था रखें कि हाँ मुझे शांत रहना है। मुझे किसी भी परिस्थिति में, उत्तेजित नहीं होना है– और मैं ऐसा कर सकता हूँ। अतः एकाग्रचित होकर दृढ़ संकल्पशक्ति द्वारा शांत रहने का मार्ग अपनाने पर, हमारी दुनिया बदल जायेगी और जीवन अधिक आनंदमय लगेगा। हमारे चेहरे पर नई चमक, कार्य में नया उत्साह, हृदय में निर्मलता एवं शीतलता का स्वयं अनुभव होने लगेगा। बिना श्रम के, बिना किसी खर्च के और किसी उपचार के बिना ही पाचन क्रिया स्वतः ठीक होने पर, छोटे-मोटे रोग दूर भाग जायेगें। खीजना, गुस्सा करना, चीखना-चिल्लाना और बड़बड़ाते रहना, हमारे मन के गुब्बार को ही परिलक्षित करतें हैं। इनसे हमारी पहचान पर धब्बा लग जाता है और हमारे ओजस्वी चेहरे पर चिंता की रेखाएं उभर आती हैं। अगर हम कुछ समय निकाल कर, पूर्ण समर्पण के साथ शांत रहने की आदत डालें तो निश्चय ही सफलता हमारे कदम चूमेगी। शांत रहने की प्रक्रिया में, यदि हम रात्रि को शयनकक्ष में जाने से पूर्व, अपनी व्यक्तिगत दैनन्दिनी (डायरी) में दिन भर की वे घटनाएं लिखते रहें जब हम शांत नहीं रह सके। कुछ दिनों बाद वही दैनन्दिनी पढ़ने पर आप अपनी तब की कमजोरी पर स्वयं हँस पड़ेंगें। कितनी छोटी बातों पर हम क्रोध करने लगते हैं। आओ गुस्सा व उत्तेजना को फेंक दे और शांत रहें।

डॉ. धर्मवीर भारती

शैली गुप्ता
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

कुछ लोग सब कुछ करके भी किसी एक विधा में सिद्धहस्त नहीं हो पाते तो कोई-कोई बस एक ही विधा साध पाते हैं या सिर्फ एक रचना से नाम कमा लेते हैं। पर वे लोग विरले होते हैं, जिनका सबकुछ उत्कृष्ट हो, हर कृति नई बुलंदियों को छूकर आए। डॉ. धर्मवीर भारती का नाम ऐसे ही लोगों में शामिल है। जहां से भी देखो उनके साहित्यिक कद की ऊंचाई एक समान ही दिखती है। यह हैरत की बात है कि खुद धर्मवीर भारती अपनी जिस रचना 'गुनाहों के देवता' को 'कलात्मक रुप से अपरिपक्व' मानते रहे, वही बरसों तक हिंदी की पांच सबसे अधिक बिकने वाली किताबों में शुमार होती रही है.. धर्मवीर भारती सफल संपादक थे, कवि थे, सिद्धहस्त उपन्यासकार और ख्यातिलब्ध साहित्यकार भी थे। संपादक के रूप में तो वे अपने जैसे अकेले माने जा सकते है।

वे आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख, कवि, नाटककार और सामाजिक विचार थे। वे एक समय की प्रख्यात साप्ताहिक पत्रिका धर्मयुग के प्रधान संपादक भी थे। डॉ. धर्मवीर भारती को 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनका उपन्यास 'गुनाहों का देवता' सदाबहार रचना मानी जाती है। 'सूरज का सातवां घोड़ा' को कहानी कहने का अनुपम प्रयोग माना जाता है, जिस पर श्याम बेनेगल ने इसी नाम की फिल्म बनायी। अंधा युग उनका प्रसिद्ध नाटक है। इब्राहिम अलकाजी, राम गोपाल बजाज, अरविन्द गौड़ रतन थियम, एम के रैना, मोहन महर्षि और कई अन्य भारती रंगमंच निर्देशकों ने इसका मंचन किया है।

डॉ. धर्मवीर भारती की पारिवारिक पृष्ठभूमि

डॉ. धर्मवीर भारती जी की बहन डॉ. वीरबाला अपने एक लेख "यादें भईयाजी की" में उन्हें याद करते हुए लिखती हैं –

तीर्थों में श्रेष्ठ प्रयागराज और प्रयागराज में श्रेष्ठ मुनि अत्रि और अनुसूया का आश्रम। उसी आश्रम का नाम कालांतर में बदलते-बदलते अतरसुइया हो गया। यह इलाहाबाद का प्राचीनतम मोहल्ला है। आश्रम स्थल की धुंधली हुई प्रसिद्धि को किसी पंडा वंश ने जीवित रखा है। संकरी गलियों में स्थित आश्रम से पहले संकरे चौराहे पर दक्षिण पश्चिम वाले कोने पर पत्थर के चबूतरे वाला एक तिमंजिला मकान है जिसमें हम दोनों भाई बहन धर्मवीर (1925) और वीरबाला (1930) का जन्म हुआ। पिता श्री चिंरजीलाल वर्मा सिविल इंजीनियर थे। जिन्होंने अंग्रेजों के शासन काल में बनारस के आसपास सारनाथ आदि स्थानों का विकास कार्य कराया। किन्तु दृढ़ राष्ट्रवादी विचार धारा के कारण अंग्रेज चीफ इंजीनियर से मतभेद के कारण त्यागपत्र दे दिया। माता श्रीमती चंदा देवी की आर्यसमाज के प्रति जुनून की हद तक कार्यनिष्ठा थी। उन्होंने वैश्याओं के विवाह करवाए और समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाया। आर्य समाज के आदर्श कन्या पाठशाला

नाम से विद्यालय खोला जो अभी भी किसी ट्रस्ट के अंतर्गत किसी अन्य नाम से कल्याणी देवी मौहल्ले में चल रहा हैं।

शिक्षा-दीक्षा

स्कूली शिक्षा डी.ए.वी हाई स्कूल में हुई उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। प्रथम श्रेणी में एम.ए. करने के बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध-प्रबंध लिखकर उन्होंने पी.एच.डी प्राप्त की। घर और स्कूल से प्राप्त आर्यसमाजी संस्कार, इलाहाबाद और विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश भर में होने वाली राजनैतिक हलचले, बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट इन से उनमें विशद अध्ययन और यात्रा अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है:

जानने की प्रक्रिया में होने और जीने की प्रक्रिया में जानने वाला मिजाज़ जिन लोगों का है उनमें मैं अपने को पाता हूं। (ठेले पर हिमालय)

शोध कार्य और अन्य रचनाओं का निर्माण

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में 'सिद्ध साहित्य' पर शोध कार्य चल रहा था। साथ ही साथ उस समय कई कवितायें लिखी गई, जो बाद में 'ठंडा लोहा' नामक पुस्तक के रूप में छपी। और उन्हीं दिनों 'गुनाहों का देवता' उपन्यास लिखा। साम्यवाद से मोहभंग के बाद 'प्रगतिवाद: एक समीक्षा' नामक पुस्तक लिखी। कुछ अंतराल बाद ही 'सूरज का सातवां घोड़ा' जैसा अनोखा उपन्यास भी लिखा।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक

शोधकार्य पूरा करने के बाद उनकी उसी विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति हो गई। देखते ही देखते बहुत लोकप्रिय अध्यापक के रूप में उनकी प्रशंसा होने लगी। उसी दौरान 'नदी प्यासी थी' नामक 'एकांकी नाटक संग्रह' और 'चांद और टूटे हुए लोग' नाम से कहानी संग्रह छपे। ठेले पर हिमालय नाम से ललित रचनाओं का संग्रह छपा और शोध प्रबंध सिद्ध साहित्य भी छप गया। मौलिक लेखन की गति बड़ी तेजी से बढ़ रही थी। साथ ही अध्ययन भी पूरी मेहनत से किया जाता रहा।

मुम्बई और संपादन

इसी बीच 1954 में लेखन का काम अबाध चल रहा था। 'सात गीत वर्ष', 'अंधायुग', 'कनुप्रिया' और 'देशांतर' प्रकाशित हो चुके थे। कुछ ही समय बाद बम्बई से एक प्रस्ताव धर्मयुग के संपादन का आया। संपादन की ललक ने प्रस्ताव पर विचार किया और विश्वविद्यालय से एक वर्ष की छुट्टी लेकर 1960 में बम्बई चले आये। धर्मयुग के संपादन में नए क्षितिज नज़र आने लगे।

डॉ. धर्मवीर भारती ने धर्मयुग के अपने संपादन काल में सिर्फ नई प्रतिभाओं को ही नहीं गढ़ा, बल्कि हर एक विषय को अपनी पत्रिका के सांचे में ढाला– धर्म, राजनीति, साहित्य, फिल्म, कला... कोई भी विषय उनसे अछूता नहीं था। वे यहां तक ही सिमटे नहीं रह गए थे। घरेलू स्त्रियों और बच्चों के लिए भी धर्मयुग में बहुत कुछ था। मतलब यह कि धर्मयुग में उस वक्त परिवार के हर सदस्य के लिए कुछ न कुछ होता था। कुल मिलाकर यह संपूर्ण और स्तरीय पत्रिका थी जो तब

ज्यादा चलन में रहे संयुक्त परिवारों को खूब भाती थी। इसकी अकूत प्रसिद्धि और भारती जी के काल में कुछ हजार से बढ़कर इसकी प्रसार संख्या का लाखों में पहुंचने का सबब भी यही था।

कार्टून जैसी विरल विधा को भी उन्होंने इतना सम्मान दिया कि 25 वर्षों तक धर्मयुग में लगातार छपने के बाद आबिद सूरती द्वारा रचा गया कार्टून 'ढब्बू जी' अमर हो गया और तो और आबिद जी की प्रसिद्धि भी कार्टूनिस्ट के रूप में ही चल निकली, जबकि वे व्यंग्यकार, कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार सब थे। यह उदाहरण बताता है कि किस तरह तब धर्मयुग साहित्य की विधाओं और साथ ही रचनाकारों को स्थापित कर रही थी।

भारती जी की तीन कृतियां जो समय के बैरूप्य को पढ़ती हैं, उसे नए सिरे से जांचती, और प्रश्नों की तरह पेश करती हैं, वे हैं – 'सूरज का सातवां घोड़ा', 'अंधा युग' और 'कनुप्रिया'। 'गुनाहों के देवता' के सरल बहाव के ठीक विपरीत सूरज का सातवां घोड़ा कहानी कहने के नए शिल्प गढ़ती हुई, कहानी और उपन्यास के शिल्प में कुछ अनुपम प्रयोग करती है। यहां सात स्वतंत्र कथाएं हैं, जो कहीं न कहीं एक दूसरे में मिलती हैं, वैसे ही जैसे नदियां समुद्र में जाकर मिलती है। इसके पात्र एक कहानी से दूसरी कहानी में बेरोक – टोक आते-जाते मिल जाएंगे। इन तीनों रचनाओं में एक तुकबंदी है, एक तीखापन और चहुंओर दिखने वाला अन्धकार है।

डॉ. धर्मवीर भारती के अंतिम वर्ष

धर्मयुग को पत्रकारिता की आकाश छूती ऊंचाइयों तक पहुंचा कर सत्ताईस वर्षों तक लगातार पूरी एकाग्रता के साथ काम करने के उपरांत 1987 में उन्होंने अवकाश ग्रहण कर लिया। 1989 में वे हृदय रोग से गंभीर रूप से बीमार हो गए। बम्बई अस्पताल में भारती जी डॉ. बोर्जेस के अथक प्रयासों और गहन चिकित्सा के बाद बच तो गए किंतु स्वास्थ्य फिर कभी पूरी तरह सुधरा नहीं। कई प्रकार के तनावों को झेलते हुए सत्ताईस बरस की रात और दिन की बेइंतिहा दिमागी मेहनत से शरीर काफी अशक्त हो चुका था। वे केवल अद्भुत इच्छा शक्ति के साथ काम करते रहे थे। स्वतंत्रता के बाद देश के साहित्य को नई दिशा देने का कार्य डॉ. धर्मवीर भारती ने अपनी पत्रिका धर्मयुग के संपादन के माध्यम से किया। धर्मयुग के माध्यम से उन्होंने अनेक साहित्यकारों, उपन्यासकारों तथा रचनाकारों को प्रोत्साहित किया, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद देश के नए प्रगतिशील साहित्य के निर्माण करने में अपना योगदान दिया। स्वयं डॉ. धर्मवीर द्वारा लिखित बहुत सा साहित्य देशभक्ति के रंग में रंगा हुआ है। उनके द्वारा लिखित ब्रह्मपुत्र की मोर्चेबंदी एक ऐसी ही कहानी है, जिसमें उन्होंने बांग्लादेश की ओर से लड़ रहे उन वीर भारतीय सैनिकों का वर्णन किया है, जिन के पास तकनीकी रूप से अच्छे हथियार न होते हुए भी युद्ध के मोर्चे पर लड़ते रहे। अंधा युग के माध्यम से डॉ. धर्मवीर भारती ने महाभारत कालीन युद्ध की स्थितियों के वर्णन के माध्यम से देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति को उकेरा है। अंततः 4 सितंबर 1997 को नींद में ही मृत्यु को वरण कर लिया और इस तरह साहित्य की सभी विधाओं में अनंत ऊंचाईयां छूने के बाद महान साहित्यकार का अस्त हो गया। किंतु अपनी रचनाओं में वे हम सभी के बीच अमर हो गए। डॉ. धर्मवीर भारती के निधन के साथ एक ऐसे प्रख्यात साहित्यकार का अंत हो गया, जो अपने पीछे गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा और अंधा युग जैसे सर्वोत्कृष्ट क्लासिकल उपन्यास छोड़ गया। हमारी पिछली पीढ़ी में शायद बहुत कम लोग होंगे, जिन्होंने धर्मयुग, गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा न पढ़ा हो।

महान वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकट रमन

अनूप कुमार
एकीकृत वित्तीय सलाहकार (अनु. एवं वि.) का कार्यालय

प्रकाश के प्रकीर्णन और रमन प्रभाव की खोज के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाले भौतिक वैज्ञानिक सर सी वी रमन आधुनिक भारत के एक महान वैज्ञानिक थे। वेंकट आधुनिक युग के पहले ऐसे भारतीय वैज्ञानिक थे जिन्होंने विज्ञान के संसार में भारत को बहुत ख्याति दिलाई। हम सब प्राचीन भारत में विज्ञान की उपलब्धियाँ जैसे–शून्य और दशमलव प्रणाली की खोज, पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने, तथा आयुर्वेद के फार्मूले इत्यादि के बारे में जानते हैं मगर उस समय पूर्णरूप से प्रयोगात्मक लिहाज़ से कोई विशेष प्रगति नहीं हुई थी। भारत सरकार ने विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' दिया। साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी उन्हें प्रतिष्ठित 'लेनिन शांति पुरस्कार' से सम्मानित किया। भारत में विज्ञान को नई ऊंचाईयां प्रदान करने में उनका बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने स्वाधीन भारत में विज्ञान के अध्ययन और शोध को जबरदस्त प्रोत्साहन दिया।

प्रारंभिक जीवन

चंद्रशेखर वेंकट रमन का जन्म तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली शहर में 7 नवम्बर 1888 को हुआ था। उनके पिता का नाम चंद्रशेखर अय्यर व माता का नाम पार्वती अम्मा था। वे अपने माता-पिता के दूसरे नंबर की संतान थे। उनके पिता चंद्रशेखर अय्यर ए.वी नरसिम्हाराव महाविद्यालय, विशाखापत्तनम, आधुनिक आंध्र प्रदेश में भौतिक विज्ञान और गणित के प्रवक्ता थे। उनके पिता को पढ़ने का बहुत शौक था। इसलिए उन्होंने अपने घर में ही एक छोटी-सी लाइब्रेरी बना रखा थी। इसी कारण रमन का विज्ञान और अंग्रेज़ी साहित्य की पुस्तकों से परिचय बहुत छोटी उम्र में ही हो गया था। संगीत के प्रति उनका लगाव भी छोटी आयु से आरम्भ हुआ और आगे चलकर उनकी वैज्ञानिक खोजों का विषय बना। उनके पिता एक कुशल वीणा वादक थे जिन्हें वो घंटों वीणा बजाते हुए देखते रहते थे। इस प्रकार बालक रमन को प्रारंभ से ही बेहतर शैक्षिक वातावरण प्राप्त हुआ।

शिक्षा

छोटी उम्र में ही रमन विशाखापत्तनम चले गए। वहां उन्होंने सेंट अलोय्सिअस एंग्लो-इंडियन हाई स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। रमन अपनी कक्षा के बहुत ही प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे और उन्हें समय-समय पर पुरस्कार और छात्रवृत्तियाँ मिलती रहीं। उन्होंने अपनी मैट्रिकुलेशन की परीक्षा 11 साल में उतीर्ण की और एफ.ए की परीक्षा (आज के +2/इंटरमीडिएट के समकक्ष) मात्र 13 साल के उम्र में छात्रवृत्ति के साथ पास की। वर्ष 1902 में उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज मद्रास में दाखिला लिया। उनके पिता यहाँ भौतिक विज्ञान और गणित के प्रवक्ता के तौर पर कार्यरत थे। वर्ष 1904 में उन्होंने बी.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रथम स्थान के साथ उन्होंने भौतिक विज्ञान में 'गोल्ड मेडल' प्राप्त किया। इसके बाद उन्होंने 'प्रेसीडेंसी

कॉलेज' से ही एम.ए. में प्रवेश लिया और मुख्य विषय के रूप में भौतिक शास्त्र को चुना। एम.ए. के दौरान रमन कक्षा में कम ही जाते और कॉलेज की प्रयोगशाला में कुछ प्रयोग और खोजें करते रहते। उनके प्रोफेसर उनकी प्रतिभा को भली-भांति समझते थे इसलिए उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक पढ़ने देते थे। प्रोफ़ेसर आर.एल. जॉन्स ने उन्हें अपने शोध और प्रयोगों के परिणामों को शोध पत्र' के रूप में लिखकर लन्दन से प्रकाशित होने वाली फ़िलॉसफ़िकल पत्रिका' में भेजने की सलाह दी। उनका यह शोध पत्र सन् 1906 में पत्रिका के नवम्बर अंक में प्रकाशित हुआ। उस समय वह केवल 18 वर्ष के थे। वर्ष 1907 में उन्होंने उच्च विशिष्टता के साथ एम.ए की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

कैरियर

रमन के अध्यापकों ने उनके पिता को सलाह दी कि वह उनको उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेज दें परन्तु खराब स्वास्थ्य के कारण वह उच्च शिक्षा के लिए विदेश नहीं जा सके। अब उनके पास कोई विकल्प नहीं था इसलिए वो ब्रिटिश सरकार द्वारा आयोजित एक प्रतियोगी परीक्षा में बैठे। इस परीक्षा में रमन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और सरकार के वित्तीय विभाग में अफ़सर नियुक्त हो गये। रमन कोलकाता में सहायक महालेखापाल के पद पर नियुक्त हुए और अपने घर में ही एक छोटी-सी प्रयोगशाला बनाई। जो कुछ भी उन्हें दिलचस्प लगता उसके वैज्ञानिक तथ्यों के अनुसंधान में वह लग जाते। कोलकाता में उन्होंने 'इण्डियन एसोसिएशन फॉर कल्टिवेशन ऑफ साइंस' के प्रयोगशाला में अपना अनुसंधान जारी रखा। हर सुबह वो दफ्तर जाने से पहले परिषद की प्रयोगशाला में पहुँच जाते और दफ्तर के बाद शाम पाँच बजे फिर प्रयोगशाला पहुँच जाते और रात दस बजे तक वहाँ काम करते। वो रविवार को भी सारा दिन प्रयोगशाला में गुजारते और अपने प्रयोगों में व्यस्त रहते। रमन ने वर्ष 1917 में सरकारी नौकरी छोड़ दी और 'इण्डियन एसोसिएशन फॉर कल्टिवेशन ऑफ साइंस' के अंतर्गत भौतिक शास्त्र में पालित चेयर स्वीकार कर ली। सन् 1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के प्राध्यापक के तौर पर उनकी नियुक्ति हुई। 'ऑप्टिक्स के क्षेत्र में उनके योगदान के लिये वर्ष 1924 में रमन को लन्दन की 'रॉयल सोसाइटी' का सदस्य बनाया गया और यह किसी भी वैज्ञानिक के लिये बहुत सम्मान की बात थी।

'रमन इफ़ेक्ट' की खोज 28 फरवरी 1928 को हुई। रमन ने इसकी घोषणा अगले ही दिन विदेशी प्रेस में कर दी। प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पत्रिका 'नेचर' ने उसे प्रकाशित किया। उन्होंने 16 मार्च, 1928 को अपनी नयी खोज के ऊपर बैंगलोर स्थित साउथ इंडियन साइन्स एसोसिएशन में भाषण दिया। इसके बाद धीरे-धीरे विश्व की सभी प्रयोगशालाओं में 'रमन इफेक्ट' पर अन्वेषण होने लगा। वेंकट रमन ने वर्ष 1929 में भारतीय विज्ञान कांग्रेस की अध्यक्षता भी की। वर्ष 1930 में प्रकाश के प्रकीर्णन और रमण प्रभाव की खोज के लिए उन्हें भौतिकी के क्षेत्र में प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वर्ष 1934 में रमन को बेंगलुरु स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान का निदेशक बनाया गया। उन्होंने स्टील की स्पेक्ट्रम प्रकृति, स्टील डाइनेमिक्स के बुनियादी मुद्दे, हीरे की संरचना और गुणों और अनेक रंगदीप्त पदार्थो के प्रकाशीय आचरण पर भी शोध किया। उन्होंने ही पहली बार तबले और मृदंग के संनादी (हार्मोनिक) की प्रकृति की खोज की थी। वर्ष 1948 में वो इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस (आईआईएस) से सेवानिवृत्त हुए। इसके पश्चात उन्होंने बेंगलुरू में रमन रिसर्च इंस्टीटयूट की स्थापना की।

पुरस्कार और सम्मान

चंद्रशेखर वेंकट रमन को विज्ञान के क्षेत्र में योगदान के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

- वर्ष 1924 में रमन को लन्दन की 'रॉयल सोसाइटी'का सदस्य बनाया गया।
- रमन प्रभाव की खोज 28 फरवरी 1928 को हुई थी। इस महान खोज की याद में 28 फ़रवरी का दिन भारत में हर वर्ष 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- वर्ष 1929 में भारतीय विज्ञान कांग्रेस की अध्यक्षता की।
- वर्ष 1929 में नाइटहुड की उपाधि दी गई।
- वर्ष 1930 में प्रकाश के प्रकीर्णन और रमण प्रभाव की खोज के लिए उन्हें भौतिकी के क्षेत्र में प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार मिला।
- वर्ष 1954 में भारत रत्न से सम्मानित।
- वर्ष 1957 में लेनिन शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

निजी जीवन

रमन का विवाह 6 मई 1907 को लोकसुन्दरी अम्मल से हुआ। उनके दो पुत्र थे– चंद्रशेखर और राधाकृष्णन। उनका स्वर्गवास 21 नवम्बर 1970 को बैंगलोर में हो गया। उस समय उनकी आयु 82 साल थी।

नजरिये की सोच

रामनारायण महतो
आरटीआई प्रकोष्ठ

एक बार एक बूढ़ा बाप अपने 25 साल के जवान बेटे के साथ ट्रेन में जब सफर कर रहा था तभी उसका जवान बेटा खिड़की के बाहर देख कर उत्साह से बोलता है, पापा देखो जरा सारे पेड़ पीछे की तरफ भाग रहे हैं, हाँ बेटा बूढ़ा बाप मुस्कुरा कर बोलता है। उनके सामने बैठे एक युवक- युवती को यह बात बहुत अजीब लगती है और तभी पापा देखो बादल कैसे हमारे साथ-साथ चल रहे हैं। और इस बार बूढ़े बाप को मुस्कुराता देख उस युवक-युवती से रहा नहीं गया। उन्होंने कहा आप अपने बेटे को किसी अच्छे डॉक्टर को क्यों नहीं दिखाते और बाप ने बोला सच बताऊं? हम लोग बस आज ही अस्पताल से वापिस आ रहे हैं। तो क्या इसका इलाज मुमकिन नहीं? युवक-युवती ने कहा फिर पिता ने कहा कि बुरा मत मानियेगा पर जिंदगी में कभी-भी किसी को इतनी जल्दी आंकना नहीं चाहिये। मेरा बेटा बचपन से ही देख नहीं सकता था और आज ही उसकी आंखों का ऑपरेशन करवा कर हम वापिस आ रहे हैं।

बाबा जोरावर सिंह एवं बाबा फतेह सिंह

राहुल कुमार महायच
कार्मिक निदेशालय

गुरु गोविंद सिंह जी के चार पुत्रों का बलिदान विश्व इतिहास की सबसे दुखद: और दिल दहला देने वाली घटना है। यह घटना एक ओर जहां मानवीय क्रूरता की घिनौनी तस्वीर प्रस्तुत करती है, वहीं दूसरी ओर यह साहिबज़ादों में अन्याय एवं अत्याचार के लिए लड़ने की भावना तथा सनातन एवं खालसा के लोकाचार को भी प्रदर्शित करती है। गुरु गोविंद सिंह जी के दो सबसे बड़े पुत्र, बाबा अजित सिंह एवं बाबा जुझार सिंह, चमकौर के युद्ध में बलिदान हुये। छ: वर्ष के बाबा फतेह सिंह एवं नौ वर्ष के बाबा जोरावर सिंह, 26 दिसंबर (13 पोह नानकशाही) के उस सर्द दिन को अपने सर्वोच्च बलिदान से विश्व को गौरान्वित कराते है। हिंदी के प्रसिद्ध लेखक मैथिलीशरण गुप्त इस बलिदान इस प्रकार लिखते है:

जिस कुल जाति राष्ट्र के बच्चे दे सकते है यों बलिदान
उस का वर्तमान कुछ भी हो, भविष्य है महा-महान॥

आनंदपुर साहिब का घेराव

1704 ईस्वी में आनंदपुर साहिब को मुगलों ने घेर लिया था। धीरे-धीरे घेराबंदी बढ़ती गई, ना तो शत्रु किले के अंदर जा पा रहा था तथा गुरुजी का भी बाहर से संपर्क कठिन कर रखा था। तब मुगलों ने गुरुजी के साथ एक समझौता किया कि यदि गुरुजी आनंदपुर साहिब छोड़ देंगे तो उन्हें बेरोकटोक जाने दिया जाएगा। इस संबंध में मुगल आक्रांता औरंगज़ेब द्वारा एक लिखित कसम भी गुरुजी को भिजवाया गया था। इस कसम का उल्लेख गुरुजी द्वारा लिखित जफरनामा में भी किया गया है। जैसे ही गुरुजी अपने परिवार एवं दल के साथ किला छोड़कर बाहर निकलते हैं, मुगल आक्रांता औरंगज़ेब चरित्र के अनुसार अपनी कसम तोड़ते है तथा उसकी सेना गुरुजी का पीछा करती है। सरसा नदी के पास भयंकर युद्ध छिड़ जाता है तथा गुरुजी के दो छोटे पुत्र छ: वर्ष के बाबा फतेह सिंह, नौ वर्ष के बाबा जोरावर सिंह तथा माता गुजरी बाकी कारवां से अलग हो गए।

जब भाग्य चुनौती देता है

लगातार हो रही बारिश से उफनती हुई सरसा नदी तथा अनैतिक मुगल घात ऐसा प्रतीत होता है मानो दोनों ने इस जघन्य पाप में हाथ मिला लिया हो। दोनों पोते अपनी दादी माँ के साथ जंगल में भटक रहे थे, तब उनकी मुलाक़ात गुरुजी के रसोइये गंगू से हुई, गंगू उन्हें मोरिंडा के पास सरहरी गाँव में अपने घर ले गया। वहां जाकर गंगू का मन बेईमान हो गया तथा मुगलिया सल्तनत से ईनाम के लालच में मोरिंडा में स्थित मुगलिया सिपाहियों को गुरुजी की माताजी एवं दोनों छोटे पुत्रों का भेद दे दिया। एक विश्वसनीय का विश्वासघात भी इस त्रासदी को और गहरा तथा अधिक दर्दनाक बनाता है। दिसंबर

की उन सर्द रातों में उन्हें सरहिंद के किले के उस ठंडे उच्चे बुर्ज (मीनार) में रखा गया। विश्व के इतिहास में शायद ही किसी को इतने कठिन समय का सामना करना पड़ा हो। मुगलों के भय, आतंक एवं क्रूरता के बावजूद भाई मोती राम मेहरा से अपने प्राणों को संकट में डालकर इन तीनों निडर एवं निर्भीक योद्धाओं की पानी एवं गरम दूध से सेवा की। नतीजतन, भाई मोती राम मेहरा एवं उनके परिवार को बाद में मुगलिया आदेश द्वारा कोहलू में मौत के घाट उतार दिया गया। अगले दिन दोनों भाइयों कों सरहिंद के मुगल कमांडर वज़ीर खान **बाबा जोरावर सिंह एवं बाबा फतेह सिंह** के समक्ष अदालत में पेश किया गया जहां उन मासूमों पर दीन-ए-मोहम्मद (इस्लाम) स्वीकार करने का दबाव डाला गया तथा उन्हें यह झूठ बोला गया कि *"तुम्हारे पिता को भी मार दिया गया है, अब तुम कहां जाओगे, इसलिए इस्लाम कुबूल लो"*। परंतु गुरु के ये सिंह अपने धर्म पर इतने दृढ़ थे कि उन्होंने अपने धर्म को त्यागने के प्रस्ताव को साहसपूर्वक ठुकरा दिया।

सर्वोच्च बलिदान

दोनों साहिबज़ादों के दीन-ए-मोहम्मद को कुबूलने से इंकार पर, सरहिंद का काज़ी उन दो मासूमों की दीवार के भीतर जीवित चुनवाने का आदेश दिया। बच्चों को दीवार में चुनवाने जैसे घृणित कार्य के लिए जब कोई भी मिस्त्री तैयार नहीं हुआ तब सरहिंद की जेल में बंद दो अपराधियों (साशाल बेग तथा बाशाल बेग) इस घृणित पाप को करने के लिए इस शर्त पर तैयार हुये कि उनकी सज़ा माफ कर उन्हें मुक्त कर दिया जाएगा। दोनों साहिबज़ादों को 26 दिसंबर के दिन दीवार में चुनवाने का आदेश हुआ। धीरे- धीरे दीवार बनती जा रही थी तथा दोनों बच्चे "वाहे गुरु – वाहे गुरु" का जप किये जा रहे थे। बताया जाता है कि जैसे ही दीवार कन्धों तक पहुंची तो गिर गई एवं फूल जैसे बच्चे बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गए। तब वज़ीर खान तथा काज़ी के आदेश पर साशाल बेग तथा बाशाल बेग ने दोनों साहिबज़ादों के गले जिबाह कर उस दृढ़ता से ताने हुये शीश को शरीर से अलग कर दिया। साहिबज़ादों ने अन्याय, अत्याचार तथा मज़हबी कट्टरता के विरुद्ध अपने प्राणों कि आहुति देकर अपने कुल तथा धर्म के नाम का यश दसों दिशाओं में फैलाया।

छोटे साहिबज़ादों के अंतिम शब्द इस प्रकार थे:-

फते सिंघ सुनि उत्तर दीना। धर्म पितामे जोण रखि लीना।
शुभ जस ते जग पूरन कीना। तीन लोक महि शाका चीना॥
हम तुम को तिम ही बनि आवै। सिर दिहु तुरकनि मूल गवावैण॥
हिन्दू धर्म जाग है फेर। तन सभि नाशवंत ही हेरि॥

अर्थ: फतेह सिंह ने अपने भाई जोरावर सिंह को उत्तर दिया "जैसे पितामह (गुरु तेग बहादुर) जी ने अपना धर्म रख कर शुभ यश से इस जगत का कार्य पूर्ण किया था और तीनों लोकों में इस शहीदी को जाना गया था हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। हम अपने शीश देकर तुर्कों की जड़े उखाड़ देंगे और हिन्दू धर्म को फिर से जागृत करेंगे क्योंकि शरीर तो वैसे ही नश्वर है"

दीवान टोडरमल की भूमिका

छोटे साहिबज़ादों का बलिदान इस बात का स्मरण करता है कि उन्होंने एक बहुत बड़े उद्देश्य कि पूर्ति के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। दोनों छोटे साहिबज़ादों ने अपने दादा गुरु (तेग बहादुर जी) के समान अदम्य साहस की खबर सुनकर माता गूजरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये। इस्लामिक कट्टरता तथा मजहबी क्रूरता इतने चरम तथा अहंकार में थी कि इन

बलिदानियों को उपर्युक्त अंतिम सम्मान भी न मिल सके, इसके लिए दाह संस्कार के लिए आवश्यक भूमि भी उपलब्ध न हो सके, ऐसी शर्तें रखी कि "ज़मीन पर जितनी स्वर्ण मुद्रायें खड़ी रख दी जाएगी उतनी ही भूमि तीनों बलिदानियों के दाह संस्कार हेतु दी जाएगी।" इस अत्यंत कठिन समय में धर्मरक्षक दीवान टोडरमल ने अपनी सारी संपत्ति, धन-दौलत बेचकर भी तीनों बलिदानियों के दाह संस्कार के लिए ज़मीन खरीदी तथा उनको ससम्मान अंतिम विदाई दी। विश्व के इतिहास में आज तक भी कोई ज़मीन का टुकड़ा इतना महंगा नहीं खरीदा गया होगा। गुरुद्वारा श्री ज्योति स्वरूप साहिब आज यहां सज़ा हुआ है।

अपने धर्म, स्वाभिमान, सम्मान, कुल के गौरव, दादी माँ की धर्म शिक्षा के लिए तथा इस्लामिक कट्टरता एवं क्रूरता के विरुद्ध जो सर्वोच्च बलिदान गुरु गोविंद सिंह जी के पिता, माता तथा चारों साहिबज़ादों ने दिया वह सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

डर

प्रदीप कुमार
कार्मिक निदेशालय

कौन कहता है कि डरना मना है श्रीमान, डर की भी अपनी अदा और मूल्य है।
गौर कीजिए कहीं आजादी का सिद्धांत ही झूठा न लगने लगे।
न हो डर अगर प्रशासन का, तो अपराधों में वृद्धि स्वाभाविक है,
और न हो डर अगर नियमों का, तो सड़कों पर अराजकता स्वाभाविक है।
ना हो डर अगर मुखिया का, तो परिवार बिखरना स्वाभाविक है।
और ना हो डर अगर अध्यापक का, तो बच्चों का भटकना स्वाभाविक है।
ना हो डर अगर पिछड़ने का, तो असफलताओं का बढ़ना स्वाभाविक है,
और न हो डर अगर अपने कर्मों का, तो पापों का बढ़ना स्वाभाविक है।
ना हो डर अगर अपने पतन का, तो अभिमानी बनना स्वाभाविक है,
और न हो डर अगर मान- सम्मान का, तो व्यभिचारी बनना स्वाभाविक है।
न हो डर अगर किसी के रूठने का, तो कुछ भी कह जाना स्वाभाविक है,
(शादी–शुदा लोग) और कुछ भी कह जाने से, रिश्तों में दरार आना स्वाभाविक है।
अत: गुजारिश है आपसे, कि थोड़ा मेरी भी सुनो और उस पर अमल करो,
थोड़ा सा डरो, थोड़ा सा डरो, थोड़ा सा तो जरूर डरो।

परोपकार ही धर्म है

राज कुमार
कम तीव्रता संघर्ष निदेशालय

एक महात्मा जी मन्दिर में रोजाना भक्ति की कथाएं सुनाते थे। उनका अंदाज बड़ा सुंदर था, वाणी में तेज़ था इसलिए उनका प्रवचन सुनने के लिए लोगों की बड़ी भीड़ जमा हो जाती थी। धीरे-धीरे उनकी यह ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। एक सेठ जी ने भी उनकी ख्याति के चर्चे सुने। वे दान-धर्म-प्रवचन में बहुत रूचि रखते थे, इसलिए वे भी उस मन्दिर में महात्मा जी का प्रवचन सुनने के लिए पहुंचे, लेकिन जाने से पूर्व उन्होंने अपना वेश बदल लिया, मैले-कुचैले वस्त्र पहन लिए जैसे कोई बहुत गरीब आदमी हो। इस तरह दिन बीतते गए और वे प्रतिदिन मन्दिर में आकर एक कोने में बैठ जाते, प्रवचन सुनते और चुपचाप वापिस चले जाते। एक बार की बात है कि प्रवचन में आने वाला एक व्यक्ति कई दिनों बाद मन्दिर में आया। महात्मा जी के पूछने पर उसने बताया कि उसका घर जलकर राख हो गया है। वह उसी को फिर से बनाने की कोशिश में लगा हुआ था लेकिन किसी से कोई मदद नहीं मिल पाई, इसलिए आजकल वह एक बेघर का जीवन जी रहा है। अब उसके पास रहने को कोई घर नहीं है। महात्मा जी ने सबसे कहा– ईश्वर आपकी परीक्षा लेना चाहते हैं कि क्या आप अपने साथी की सहायता करेंगे या नहीं, वह आपकी परीक्षा ले रहे हैं इसलिए जो बन पड़े, इस भक्त की सहायता करें। महात्मा जी के कहने पर एक चादर लोगों के बीच में घुमाई गई। सबने अपनी क्षमता के अनुसार उसमें कुछ न कुछ पैसे डाले। मैले कपड़ों में बैठे सेठ ने उस चादर में बहुत सारे रुपये डाल दिए। ये देखकर सभी की आंखें फटी रह गईं, वे तो उससे दान की कोई उम्मीद ही नहीं कर रहे थे। सब समझते थे कि वह कंगाल और नीच जाति का पुरुष है जो अपनी हैसियत के अनुसार पीछे बैठता है। अगले दिन सेठ फिर से उसी तरह मैले कपड़ों में आया और हमेशा की तरह पीछे बैठ गया। अब उसके बारे में सब जान चुके थे। सब खड़े हो गए और उसे आगे बैठने के लिए प्रार्थना की, परन्तु सेठ ने आगे बैठने से मना कर दिया। फिर महात्मा जी बोले- सेठ जी आप यहां आएं, मेरे पास बैठिए। आपका स्थान पीछे नहीं है। सेठ ने दुखी स्वर में उत्तर दिया- सच में संसार में धन की ही पूजा होती है, आम लोगों की भावनाएं तो भौतिकता से जुड़ी होती हैं, लेकिन महात्मा जी, आप तो संत है, आपको भी मैले कपड़े वाले को अपने पास बिठाने की तभी सूझी जब उसके धनवान होने का पता चला।

माया को माया मिले करके लम्बे हात, तुलसी दास ग़रीब की कोई न पूछे बात।

(यानी अमीर से अमीर बहुत अच्छी तरह मिलता है मगर ग़रीब आदमी को कोई पूछता भी नहीं)

सेठ जी बोले, इसलिए महात्मा जी आप बताएँ कि माया के प्रभाव में आकर मुझे अपना रहे हैं या कोई और कारण है ?

महात्मा जी बोले– आपको समझने में गलतफहमी हो रही है, मैं यह सम्मान आपके धनवान होने के कारण नहीं दे रहा हूँ, मैं तो जरूरतमन्दों के प्रति आपके त्याग के भाव को यह सम्मान दे रहा हूं। अक्सर लोग धनी तो होते हैं, कई बार उनके पास बेशुमार धन भी होता है, लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि दान-धर्म का भाव बिल्कुल नहीं होता। इसलिए आपकी उस दानशीलता के भाव को सम्मानित करने के लिए आपको यह स्थान दिया जा रहा है, यह आपके उस भाव का सम्मान है।

शिक्षा:– त्याग और अपरिचितों के प्रति दया का भाव मनुष्य को विचारों से संत बना देता है। परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं, इसलिए इसको धारण करने वाला व्यक्ति मान-प्रतिष्ठा से युक्त यशस्वी और संततुल्य सम्मान का अधिकारी हो जाता है।

संविदा कर्मचारी

मंजीत
प्रणाली एवं प्रौद्योगिकी विश्लेषण निदेशालय

संविदा वह नौकरी है,
जहां रोजगार सा आभास होता है।
कार्य सबसे ज्यादा होता है।
सीनियर के द्वारा काम निकालने का
भरपूर प्रयास होता है।
संविदा वह नौकरी है,
जहां रोजगार सा आभास होता है।
जिन अधिकारियों के साथ काम किया हो,
संविदा नवीनीकरण का हमेशा इंतजार होता है।
संविदा कर्मी के पास साधारण सा लिबास होता है।
संविदा कर्मी को हमेशा काम का अहसास होता है।

साहब संविदा वह नौकरी है,
जहां रोजगार सा आभास होता है।
24 घण्टे काम का अहसास होता है।
मानदेय अपनी सामर्थ्य के अनुसार होता है।
मुझे लगता था कि सरकारी महकमें में काम
कुछ खास नहीं होता है।
पर सरकारी अधिकारी पर भी,
काम का बहुत दबाव होता है।
संविदा वह नौकरी है साहब
जहां रोजगार सा आभास होता है
बेरोजगारी भी समाप्त होता है।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान

महादेव पंडित
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

आज का छात्र कल का नागरिक होगा। उसी के सबल कन्धों पर देश के निर्माण और विकास का भार होगा। किसी भी देश के युवक–युवतियाँ उसकी शक्ति का अथाह सागर होते हैं और उनमें उत्साह का अजस्र स्रोत होता है। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी शक्ति का उपयोग सृजनात्मक रूप में किया जाए; अन्यथा वह अपनी शक्ति को तोड़–फोड़ और विध्वंसकारी कार्यों में लगा सकते हैं। प्रतिदिन समाचार-पत्रों में ऐसी घटनाओं के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। आवश्यक और अनावश्यक माँगों को लेकर उनका आक्रोश बढ़ता ही रहता है। यदि छात्रों की इस शक्ति को सृजनात्मक कार्यों में लगा दिया जाए तो देश का कायापलट हो सकता है।

छात्रों के इस असन्तोष के क्या कारण हैं? वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग क्यों और किसके लिए कर रहे हैं ये कुछ विचारणीय प्रश्न हैं। इसका प्रथम कारण है– आधुनिक शिक्षा प्रणाली का दोषयुक्त होना। इस शिक्षा-प्रणाली से विद्यार्थी का बौद्धिक विकास नहीं होता तथा यह विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान नहीं कराती; परिणामत: देश में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। जब छात्र को यह पता ही है कि अन्तत: उसे बेरोजगार ही भटकना है तो वह अपने अध्ययन के प्रति लापरवाही प्रदर्शित करने लगता है। विद्यार्थियों पर राजनैतिक दलों के प्रभाव के कारण भी छात्र-असन्तोष पनपता है। कुछ स्वार्थी तथा अवसरवादी राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थों के लिए विद्यार्थियों का प्रयोग करते हैं। आज का विद्यार्थी निरुद्यमी तथा आलसी भी हो गया है। वह परिश्रम से कतराता है और येन–केन–प्रकारेण डिग्री प्राप्त करने को उसने अपना लक्ष्य बना लिया है। इसके अतिरिक्त समाज के प्रत्येक वर्ग में फैला हुआ असन्तोष भी विद्यार्थियों के असन्तोष को उभारने का मुख्य कारण है।

राष्ट्र-निर्माण में छात्रों का योगदान: आज का विद्यार्थी कल का नागरिक होगा और पूरे देश का भार उसके कन्धों पर ही होगा। इसलिए आज का विद्यार्थी जितना प्रबुद्ध, कुशल, सक्षम और प्रतिभासम्पन्न होगा; देश का भविष्य भी उतना ही उज्ज्वल होगा। इस दृष्टि से विद्यार्थी के कन्धों पर अनेक दायित्व आ जाते हैं, जिनका निर्वाह करते हुए वह राष्ट्र–निर्माण की दिशा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

राष्ट्र–निर्माण में विद्यार्थियों के योगदान की चर्चा इन मुख्य बिन्दुओं के अन्तर्गत की जा सकती है:–

क) **अनुसंधान के क्षेत्र में–** आधुनिक युग विज्ञान का युग है। जिस देश का विकास जितनी शीघ्रता से होगा, वह राष्ट्र उतना ही महान होगा। अत: विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे नवीनतम अनुसंधानों के द्वार खोलें। चिकित्सा के

क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थी औषध और सर्जरी के क्षेत्र में नवीन अनुसंधान कर सकते हैं। वे मानवजीवन को अधिक सुरक्षित और स्वस्थ बनाने का प्रयास कर सकते हैं। इसी प्रकार इंजीनियरिंग में अध्ययनरत विद्यार्थी विविध प्रकार के कल-कारखानों और पुर्जों आदि के विकास की दिशा में भी अपना योगदान दे सकते हैं।

ख) **परिपक्व ज्ञान की प्राप्ति एवं विकासोन्मुख कार्यों में उसका प्रयोग**– जीवन के लिए परिपक्व ज्ञान परम आवश्यक है। अधकचरे ज्ञान से गम्भीरता नहीं आ सकती, उससे भटकाव की स्थिति पैदा हो जाती है। इसीलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अपने ज्ञान को परिपक्व बनाएं तथा अपने परिवार के सदस्यों को ज्ञान-सम्पन्न करने, देश की सांस्कृतिक सम्पदा का विकास करने आदि विभिन्न दृष्टियों से अपने इस परिपक्व ज्ञान का सदुपयोग करें।

ग) **स्वयं सचेत रहते हुए सजगता का वातावरण उत्पन्न करना**– विद्यार्थी अपने सम-सामयिक परिवेश के प्रति सजग और सचेत रहकर ही राष्ट्र-निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं। विश्व तेजी से विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। इसलिए अब प्रगति के प्रत्येक क्षेत्र में भारी प्रतिस्पर्धाओं का सामना करना पड़ता है। इन प्रतिस्पर्धाओं में सम्मिलित होने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी सामाजिक गतिविधियों के प्रति सचेत रहें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

घ) **नैतिकता पर आधारित गुणों का विकास**– मनुष्य का विकास स्वस्थ बुद्धि और चिन्तन के द्वारा ही होता है। इन गुणों का विकास उसके नैतिक विकास पर निर्भर है। इसलिए अपने और राष्ट्र-जीवन को समृद्ध बनाने के लिए विद्यार्थियों को अपना नैतिक बल बढ़ाना चाहिए तथा समाज में नैतिक-जीवन के आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए।

च) **कर्तव्यों का निर्वाह**– आज का विद्यार्थी समाज में रहकर ही अपनी शिक्षा प्राप्त करता है। पहले की तरह वह गुरुकुल में जाकर नहीं रहता। इसलिए उस पर अपने राष्ट्र, परिवार और समाज आदि के अनेक उत्तरदायित्व आ गए हैं। जो विद्यार्थी अपने इन उत्तरदायित्वों अथवा कर्तव्यों का निर्वाह करता है, उसे ही हम सच्चा विद्यार्थी कह सकते हैं। इस प्रकार राष्ट्र-निर्माण के लिए विद्यार्थियों में कर्तव्य-परायणता की भावना का विकास होना परम आवश्यक है।

छ) **अनुशासन की भावना को महत्त्व प्रदान करना**– अनुशासन के बिना कोई भी कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न नहीं हो सकता। राष्ट्र-निर्माण का तो मुख्य आधार ही अनुशासन है। इसलिए विद्यार्थियों का दायित्व है कि वे अनुशासन में रहकर देश के विकास का चिन्तन करें।

अध्ययन से विद्यार्थियों में चिन्तन और मनन की शक्ति का विकास होना स्वाभाविक है, किन्तु कुछ विपरीत परिस्थितियों के फलस्वरूप अनेक छात्र समाज-विरोधी कार्यों में लग जाते हैं। इससे देश और समाज की हानि होती है। भविष्य में देश का उत्तरदायित्व विद्यार्थियों को ही सँभालना है, इसलिए यह आवश्यक है कि वे राष्ट्रहित के विषय में विचार करें और ऐसे कार्य करें, जिनसे हमारा राष्ट्र प्रगति के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ता रहे। जब विद्यार्थी समाज सेवा का लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ेंगे, तभी वे सच्चे राष्ट्र-निर्माता हो सकेंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अपनी शक्ति का सही मूल्यांकन करते हुए उसे सृजनात्मक कार्यों में लगाएँ।

आजादी के स्वप्न और हकीकत

रामशंकर चौरसिया
प्रौद्योगिकी विकास निधि निदेशालय

होगी समाज में समता यूं,
समरता का वह युग होगा।
जब जमी गुलामी छूटेगी,
तब एक सवेरा यूं होगा॥

होगा अखंड भारत अपना,
अपने पर अपनों का शासन।
जाति-पाति और ऊँच-नीच,
सब कुछ हो जायेगा दफन॥

होगी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति
अपना ये वतन।
कोई रोक न पायेगा हमको,
कर ले चाहे जितना जतन॥

हम अपने खून पसीने से,
एक ऐसा राष्ट्र बनायेंगे॥
विज्ञान और तकनीकी का हम,
फिर परचम लहरायेंगे॥

हम अपने ज्ञान और परम्परा का,
फिर लोहा मनवायेंगे।
भारत को बना आत्मनिर्भर,
हम विश्व गुरु कहलायेंगे॥

इन भावों की संकल्पना पर,
वह जीवन को न्यौछार गये।
हम गैरों से तो जीत गये,
पर अपनो से ही हार गये॥

क्या मिट गयी गरीबी की खाई,
और ऊँच-नीच का वह चलन।
और जाति पाति का भेदभाव,
और छुआछूत का वह प्रचलन॥

वे छू न सके उस गाँधी को,
जो हाड़ मांस के पुतले थे।
ये हाड़ मांस के पुतले पर,
भी बंदूक चलाते है॥

अरे स्वयं अहिंसा के सेवक,
कब हथियारों से मरते है।
लेकर हथियार वही चलते हैं,
जो खुद से भी डरते हैं॥

समता, समानता के सपनों को,
हमने चकनाचूर किया।
जिसको था गले लगा लेना,
उसे दूर से ही मज़बूर किया॥

इसी मिट्टी में जिसका रक्त मिला,
वह भारत माँ का सपूत है।
इंसान तो वह भी है ही न,
फिर वह कैसे अछूत है॥

लिंग, जाति और धर्म से हमने,
पहचाना इंसानो को।
अपना दुर्भाग्य लिखा हमने,
सत्ता देकर बईमानों की॥

पानी-पानी पीकर कोसे,
मैकाले और डलहौजी को।
हिंदी को हमने दफन किया,
सीने से लगा अंग्रेजी को॥

भारत के पहले राष्ट्रपति: डॉ. राजेंद्र प्रसाद

निर्देश कुमार
मानव संसाधन विकास निदेशालय

डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। 26 जनवरी, 1950 को जब हमारा गणतंत्र लागू हुआ तब डॉ राजेंद्र प्रसाद को इस पद से सम्मानित किया गया था। आजादी के बाद बनी पहली सरकार में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को पंडित जवाहरलाल नेहरु की सरकार में कैबिनेट मंत्री के तौर पर खाद्य व कृषि विभाग का काम सौंपा गया। इसके साथ ही इन्हें भारत के संविधान सभा में संविधान निर्माण के लिए अध्यक्ष नियुक्त किया गया। राजेन्द्र प्रसाद गाँधी जी के मुख्य शिष्यों में से एक थे, उन्होंने भारत की आजादी के लिए प्राण तक न्यौछावर करने की ठान रखी थी। इनका नाम मुख्य रूप से एक स्वतंत्रता संग्रामी के रूप में लिया जाता है। राजेन्द्र प्रसाद बिहार के मुख्य नेता थे। नमक तोड़ो आंदोलन व भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान इन्हें जेल यातनाएं भी सहनी पड़ी। राष्ट्रपति बनने के बाद, प्रसाद जी गैर-पक्षपात व स्वतंत्र रूप से निर्णय लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने कांग्रेस पार्टी से सन्यास ले लिया। प्रसाद जी भारत में शिक्षा के विकास के लिए अधिक जोर देते थे, नेहरु जी की सरकार को उन्होंने कई बार अपनी सलाह भी दी।

राजेन्द्र प्रसाद जन्म व परिवार

डॉ. प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर,1884 को बिहार के एक छोटे से गांव जीरादेई में हुआ था। इनके पिता का नाम महादेव सहाय था, व माता का नाम कमलेश्वरी देवी था। इनके पिता संस्कृत व फारसी भाषा के बहुत बड़े ज्ञानी थे। जबकि माता धार्मिक महिला थी, वे राजेन्द्र प्रसाद को रामायण की कहानियां भी सुनाया करती थी। डॉ. प्रसाद का बालविवाह 12 साल की उम्र में हो गया था। उनकी पत्नी का नाम राजवंशी देवी था।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की शिक्षा

5 साल की उम्र में ही प्रसाद के माता-पिता उनको एक मौलवी के यहाँ भेजने लगे थे, ताकि वे फारसी, उर्दू, हिंदी का ज्ञान प्राप्त कर सकें। डॉ राजेंद्र प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा उन्हीं के गांव जीरादेई में हुई। पढ़ाई की तरफ इनका रुझान बचपन से ही था। अपने भाई महेंद्र प्रताप के साथ वे पटना के टी के घोष अकेडमी में जाने लगे। इसके बाद यूनिवर्सिटी ऑफ़ कलकत्ता में प्रवेश के लिए परीक्षा दी, जिसमें वे बहुत अच्छे नंबर से पास हुए, जिसके बाद उन्हें हर महीने 30 रूपए की स्कॉलरशिप मिलने लगी। उनके गांव से पहली बार किसी युवक ने कलकत्ता विश्विद्यालय में प्रवेश पाने में सफलता प्राप्त की थी जो निश्चित ही राजेंद्र प्रसाद और उनके परिवार के लिए गर्व की बात थी। 1902 में प्रसाद जी ने प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ से इन्होंने स्नातक किया। 1907 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ कलकत्ता से इकोनॉमिक्स में एमए किया। सन 1915 में कानून में मास्टर की डिग्री पूरी की जिसके लिए उन्हें गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। इसके

बाद उन्होंने कानून में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। इसके बाद पटना आकर वकालत करने लगे जिससे इन्हें बहुत धन और नाम मिला। सादगी, सेवा, त्याग, देशभक्ति और स्वतंत्रता आंदोलन में अपने आपको पूरी तरह से होम कर दिया था। डॉ. राजेंद्र बाबू अत्यंत सरल और गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे, वे सभी वर्ग के लोगों से सामान्य व्यवहार रखते थे।

राजनीति में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का पहला कदम

बिहार में अंग्रेज सरकार के नील के खेत थे, सरकार अपने मजदूर को उचित वेतन नहीं देती थी। 1917 में गांधीजी ने बिहार आ कर इस समस्या को दूर करने की पहल की। उसी दौरान डॉ. प्रसाद गांधीजी से मिले, उनकी विचारधारा से वे बहुत प्रभावित हुए। 1919 में पूरे भारत में सविनय आंदोलन की लहर थी। गांधीजी ने सभी स्कूल, सरकारी कार्यालयों का बहिष्कार करने की अपील की। जिसके बाद डॉ. प्रसाद ने अपनी नौकरी छोड़ दी। चम्पारन आंदोलन के दौरान राजेन्द्र प्रसाद गांधी जी के वफादार साथी बन गए थे। गांधी जी के प्रभाव में आने के बाद उन्होंने अपने पुराने और रूढिवादी विचारधारा का त्याग कर दिया और एक नई ऊर्जा के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। 1931 में काँग्रेस ने आंदोलन छेड़ दिया था। इस दौरान डॉ. प्रसाद को कई बार जेल जाना पड़ा। 1934 में उनको बम्बई काँग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया था। वे एक से अधिक बार अध्यक्ष बनाये गए। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में इन्होंने भाग लिया, जिस दौरान वे गिरफ्तार हुए और नजर बंद रखा गया। भले ही 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, लेकिन संविधान सभा का गठन उससे कुछ समय पहले ही कर लिया गया था। संविधान निर्माण में भीमराव अम्बेडकर व राजेन्द्र प्रसाद ने मुख्य भूमिका निभाई थी। भारतीय संविधान समिति के अध्यक्ष डॉ. प्रसाद चुने गए। संविधान पर हस्ताक्षर करके डॉ. प्रसाद ने ही इसे मान्यता दी।

राष्ट्रपति के रूप में राजेन्द्र प्रसाद

26 जनवरी 1950 को भारत को डॉ राजेंद्र प्रसाद के रूप में प्रथम राष्ट्रपति मिल गया। 1957 में फिर राष्ट्रपति चुनाव हुए, जिसमें दोबारा राजेंद्र प्रसाद जी को राष्ट्रपति बनाया गया। ये पहली और आखिरी बार था, जब एक ही इन्सान दो बार लगातार राष्ट्रपति बना था। 1962 तक वे इस सर्वोच्च पद पर विराजमान रहे। 1962 में ही अपने पद को त्याग कर वे पटना चले गए और बिहार विद्यापीठ में रहकर, जन सेवा कर जीवन व्यतीत करने लगे।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को मिलने वाले सम्मान

सन 1962 में अपने राजनैतिक और सामाजिक योगदान के लिए उन्हें भारत के सर्वश्रेष्ठ नागरिक सम्मान"भारत रत्न" से नवाजा गया।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद की मृत्यु

28 फरवरी, 1963 को डॉ. प्रसाद का निधन हो गया। उनके जीवन से जुड़ी कई ऐसी घटनाएं है जो यह प्रमाणित करती हैं कि राजेन्द्र प्रसाद बेहद दयालु और निर्मल स्वभाव के थे। भारतीय राजनैतिक इतिहास में उनकी छवि एक महान और विनम्र राष्ट्रपति की है। पटना में प्रसाद जी की याद में 'राजेन्द्र स्मृति संग्रहालय' का निर्माण कराया गया। वे एक विद्वान, प्रतिभाशाली, दृढ़ निश्चयी और उदार दृष्टिकोण वाले व्यक्ति थे।

केंद्रीय सिविल सेवाओं में 'पदोन्नति'

प्रवीण कुमार दास
कार्मिक निदेशालय

भारत सरकार के कार्यालयों में सेवारत समस्त कार्मिकों के जीवन में पदोन्नति एक अत्यंत सकारात्मक महत्व की घटना है। ये कर्मचारी कतिपय नियमों द्वारा अधिशासित होते हैं जिनमें से एक नियम पदोन्नति से भी संबंधित है।

पदोन्नति कार्मिक को उच्चतर दायित्वों के निर्वहन का अवसर प्रदान करती है। इससे उच्चतर ग्रेड में उसके वेतन एंव भत्तों में तो बढ़ोत्तरी होती ही है, पद से जुड़े विशेषाधिकार भी उसे हासिल हो जाते हैं, साथ ही वह पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण कार्य कर पाता है।

यहां इस बात का उल्लेख करना भी संगत होगा कि पदोन्नति पाना कार्मिक का अधिकार नहीं है, परन्तु पदोन्नति के लिए विचार का अधिकार उसे है।

क) पदोन्नति के लिए मापदंड:

i) **गैर-चयन पद–** इसमें लिपिकिय अथवा नेमी प्रकृति वाले पद शामिल होते हैं। इस प्रकार के पदों पर पदोन्नति वरिष्ठता-क्रम के आधार पर की जाती है। इसके लिए मापदंड यह है कि वरिष्ठता-क्रम में वरिष्ठ कार्मिक की पदोन्नति पहले की जाएगी, बशर्ते कि वह पदोन्नति के अनुपयुक्त न हो।

ii) **चयन पद–** ऐसा कोई पद जिसमें भी कार्यों से अन्यथा ड्यूटियां निहित हों, उसे चयन पद के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। ऐसे किसी पद पर पदोन्नति केवल वरिष्ठता के आधार पर न होकर प्रमुखतः मेरिट (गुणावगुण) के आधार पर होती है।

ख) पदोन्नति के लिए पात्रता: पदोन्नति पाने के लिए संबंधित कार्मिक के पास भर्ती नियमों में यथानिर्धारित शैक्षणिक, तकनीकी योग्यताएं और अनुभव होना चाहिए। ये निर्धारित योग्यताएं उस स्थिति में भी मान्य होंगी जब इनसे फीडर संवर्ग में कार्यरत कुछ कर्मचारियों के पदोन्नति के अवसरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो। किसी भी कार्मिक की पदोन्नति पर विचार करने से पहले यह सुनिश्चित कर लिया जाए कि वह पात्रता की शर्तें अवश्य पूरी करता हो।

ग) विभागीय पदोन्नति समिति: विभागीय पदोन्नति समिति (DPC) अधिकारियों की एक समिति है जिसके पास किसी विनिर्दिष्ट पद पर पदोन्नति हेतु चयन करने और परस्पर मेरिट के निर्धारण की शक्ति होती है। यह समिति संगत

भर्ती नियमों के अनुसार कार्य करती है। संघ लोक सेवा आयोग में आयोग के अध्यक्ष/सदस्य विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हैं। मुख्यालय में, महानिदेशक (मानव संसाधन) विभागीय पदोन्नति समिति की अध्यक्षता करते हैं। भर्ती नियमों में यथानिर्धारित के अतिरिक्त, जिन मामलों में अनुसूचित जाति, जनजाति के आरक्षण को लागू किया जाना हो, वहाँ समिति में एक सहयोजित सदस्य को भी शामिल किया जाता है। समिति के सभी सदस्य उपयुक्त स्तर के अधिकारी होते हैं।

i) **विभागीय पदोन्नति समिति के समक्ष रखे जाने वाले कागजात (Papers put up to DPC):** विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक के विचारार्थ निम्नलिखित दस्तावेज प्रस्तुत किए जाते हैं:–

क) संबंधित पद के भर्ती नियम
ख) पद की वरिष्ठता सूची
ग) पात्रता सूची
घ) रिक्तियों का वर्षवार विभाजन और अनुसूचित जाति/जनजाति/शारीरिक रूप से विकलांग कार्मिकों के आरक्षण की स्थिति
ड़) रिक्ति की तारीख
च) सतर्कता प्रमाणपत्र
छ) सत्यनिष्ठा प्रमाणपत्र
ज) दंड का विवरण
झ) वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट डोज़ियर

ii) **विचारण क्षेत्र:** आकलित रिक्तयों के संदर्भ में पात्र अभ्यर्थियों का विचारण क्षेत्र नीचे दी गई सारणी में दर्शाया गया है:–

रिक्तियों की संख्या	विचारण क्षेत्र का सामान्य आकार	अनुसूचित जाति/जनजाति के लिए विस्तारित विचारण क्षेत्र
1	5	5
2	8	10
3	10	15
4	12	20
5 से 10	रिक्ति$\times$2+4	रिक्तियों की संख्या का 5 गुना
11 से 14	24	–उपर्युक्त–
15 और अधिक	रिक्ति$\times$1.5+3	–उपर्युक्त–

iii) चयन-सूची तैयार करना, उसके लिए मानदंड और ग्रेडिंग:

अधिकरियों की श्रेणी	मानदंड	विभागीय पदोन्नति समिति द्वारा प्रदत्त ग्रेडिंग	चयन सूची तैयार करना
1. वेतन बैंड-2 और वेतन बैंड-3 ग्रेड वेतन-रू 6600 तक	अच्छा	उपयुक्त/अनुपयुक्त	जिन कर्मचारियों को "उपयुक्त" ग्रेड प्रदान किया जाता है, उन्हें फीडर ग्रेड में उनकी परस्पर वरिष्ठता के क्रम में चयन सूची में शामिल किया जाएगा बशर्ते कि रिक्तियां उपलब्ध हों।
2. ग्रेड वेतन रू 7600 और उससे अधिक	बहुत अच्छा	उपयुक्त/अनुपयुक्त	

यह पैनल एक वर्ष तक अथवा पैनल में शामिल सभी व्यक्तियों की पदोन्नति होने तक अथवा नए पैनल के तैयार होने तक, जो भी पहले हो, मान्य रहेगा।

घ) विभागीय पदोन्नति समिति बैठक की पुनरीक्षा: रिव्यू डीपीसी का आयोजन तभी किया जाएगा यदि विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक में सभी महत्वपूर्ण पर विचार न किया गया हो। यदि रिक्ति नियमित डीपीसी से पहले घटित हुई है तो रिव्यू डीपीसी आयोजित की जाएगी। गैर-इरादतन हुई गलतियों को सुधारने के लिए भी रिव्यू डीपीसी आयोजित की जाएगी।

च) अनुपूरक डीपीसी: यदी रिक्तियां नियमित डीपीसी आयोजित होने के बाद घटित होती हैं तो अनुपूरक डीपीसी आयोजित की जानी चाहिए। अनुपूरक डीपीसी की पात्रता सूची तैयार करते समय उन अधिकारियों के नाम हटा दिए जाएंगे जिनका मूल्यांकन पूर्ववर्ती डीपीसी में किया जा चुका है।

छ) काल्पनिक पदोन्नति: पदोन्नति उस तारीख से प्रभावी होती है जब अधिकारी पद का प्रभार ग्रहण करता है और अपनी ड्यूटियों का निर्वहन करने लगता है। कभी-कभी यदि कोई व्यक्ति पिछली किसी तारीख से उस देय पदोन्नति से वंचित रह जाता है तो उसे उस पिछली तारीख से काल्पनिक पदोन्नति देना आवश्यक हो जाता है। निम्नलिखित दशाओं में काल्पनिक पदोन्नति देना आवश्यक हो जाता है:–

i) डीपीसी में चयनित अधिकारी, जिनके मामले में अनुशासनिक कार्यवाही लंबित रहने के कारण सीलबंद कवर प्रक्रिया अपनानी पड़ी थी।
ii) अधिकारी जिनका चयन डीपीसी में हो गया है परन्तु जिन्हें उनके विरूद्ध किसी पेनल्टी के चलते पदोन्नत नहीं किया जा सका है।
iii) वार्षिक कार्य मूल्यांकन रिपोर्ट में की गई प्रतिकूल टिप्पणियों को हटाना।
iv) वरिष्ठता सूची में संशोधन होने की वजह से

पिछली तारीख के अथवा काल्पनिक पदोन्नति के मामले में संबंधित अधिकारी का वेतन काल्पनिक आधार पर, उस तारीख से नियत किया जाता है, जिस तारीख को उसकी काल्पनिक पदोन्नति हुई है। किन्तु "काम नहीं तो वेतन नहीं" सिद्धांत के आधार पर उसे वेतन के बकाया का भुगतान नहीं किया जाता है।

ज) **प्रोफोर्मा पदोन्नति:** यदि कोई अधिकारी प्रतिनियुक्ति, प्रशिक्षण आदि पर होने की वजह से अपने नियमित संवर्ग से बाहर कहीं कार्यरत है तो उसके अपने कैडर में उसकी पदोन्नति देय होने पर उसके नाम पर विचार किया जाएगा। जब उक्त अधिकारी से वरिष्ठ सभी अधिकारियों तथा कम से कम उससे कनिष्ठ एक अधिकारी की पदोन्नति हो जाती है और उसे भी पदोन्नति के उपयुक्त समझा जाता है परन्तु वह पद का कार्यभार ग्रहण करने के लिए उपलब्ध नहीं होता है तो उसे उस पद की प्रोफोर्मा पदोन्नति उस तारीख से दे दी जाती है जब उसका कनिष्ठ अधिकारी पदोन्नत हुआ है।

झ) **पदोन्नति लेने से इंकार करना:** यदि कोई अधिकारी, नियुक्तिकर्ता पदाधिकारी को स्वीकार्य कारणों से, पदोन्नति स्वीकार करने से मना करता है तो उसे एक वर्ष तक अथवा अगली रिक्ति धारित होने तक, इनमें जो भी बाद में हो, पदोन्नति नहीं दी जाएगी। यदि तब तक अगली डीपीसी आयोजित की जाती है तो उसके मामले पर नए सिरे से विचार किया जाएगा और वह पहले पैनल में अपनी वरिष्ठता खो देगा। यदि पदोन्नति अस्वीकार करने के लिए बताए गए कारण नियुक्तिकर्ता प्राधिकारी को स्वीकार्य नहीं है तो पदोन्नति जबरन लागू की जाएगी। यदि व्यक्ति तब भी पदोन्नति लेने से इंकार करता है तो आदेश मानने से इंकार करने के लिए उसके विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

उपसंहार

पदोन्नति किसी भी अधिकारी के जीवन में होने वाली एक महत्वपूर्ण घटना है। यह इस बात की द्योतक है कि नियोक्ता का उसमें पूरा विश्वास है। अतः जब भी व्यक्ति को पदोन्नति का अवसर मिले, उसे पूरे मनोयोग से स्वीकार करना चाहिए।

साइबर सुरक्षा

विनोद कुमार सिंह
सिविल निर्माण एवं संपदा निदेशालय

भारत इंटरनेट का तीसरा सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है और हाल के वर्षों में साइबर अपराध कई गुना बढ़ गए हैं। साइबर सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिये सरकार की ओर से कई कदम उठाए गए हैं। 28 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में 'नई राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा रणनीति की ओर' विषय पर 12वें भारतीय सुरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के दौरान महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आधारभूत ढाँचों की सुरक्षा, उभरते साइबर खतरों, घटनाओं, चुनौतियों एवं प्रतिक्रिया जैसे कई विषयों पर चर्चा की गई। साथ ही इस विषय पर भी ध्यान केंद्रित किया गया कि 'डिजिटल संस्कृति' एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में परिवर्तित हो रही है। हर प्रौद्योगिकी की अपनी उपयोगिता है, इसी तरह साइबर प्रौद्योगिकी में इन दिनों बड़ी तेज़ी आई है। लेकिन एक वरदान होने के साथ ही यह प्रौद्योगिकी एक बड़ा खतरा भी बन गई है।

साइबर अपराध

साइबर अपराध ऐसे गैर-कानूनी कार्य हैं जिनमें कंप्यूटर एवं इंटरनेट नेटवर्क का प्रयोग एक साधन अथवा लक्ष्य अथवा दोनों के रूप में किया जाता है। ऐसे अपराधों में हैकिंग, चाइल्ड पॉर्नोग्राफी, साइबर स्टॉकिग, सॉफ्टवेयर पाइरेसी, क्रेडिट कार्ड फ्रॉड, फिशिंग आदि को शामिल किया जाता है।

साइबर अपराध के प्रकार

- **हैकिंग–** इस प्रकार के साइबर अपराध में हैकर प्रतिबंधित क्षेत्र में घुस कर किसी दूसरे इंसान के पर्सनल डाटा और संवेदनशील इनफॉर्मेशन को एक्सेस करते हैं बिना उस इंसान के अनुमति के, प्रतिबंधित क्षेत्र किसी का पर्सनल कंप्यूटर, मोबाइल या कोई ऑनलाइन बैंक अकाउंट (नेट बैंकिंग) हो सकता है।
- **साइबर चोरी–** इस प्रकार के साइबर अपराध में हैकर किसी कॉपीराइट कानून का उल्लंघन करता है, यह साइबर अपराध का एक हिस्सा है जिसका अर्थ है कि कंप्यूटर या इंटरनेट के माध्यम से की गई चोरी। इसके अंतर्गत पहचान की चोरी, पासवर्ड की चोरी, सूचना की चोरी, इंटरनेट समय की चोरी आदि शामिल हैं।
- **साइबर स्टाकिंग–** यह साइबर अपराध सोशल मीडिया साइट्स में ज्यादा देखने को मिलता है। इसमें स्टॉकर किसी इंसान को बार-बार गंदे मैसेज या ईमेल कर के उसे परेशान और उत्पीड़ित करते हैं। इसमें स्टॉकर अक्सर छोटे बच्चों और ऐसे लोगों को अपना शिकार बनाते हैं जिन्हें इंटरनेट की ज्यादा जानकारी नहीं होती है। इसके बाद स्टॉकर उस इंसान को ब्लैक मेल करना शुरू कर देते हैं इससे इंसान की ज़िन्दगी काफी तकलीफदायक हो जाती है।
- **पहचान की चोरी–** इस प्रकार का साइबर अपराध आजकल काफी ज्यादा देखने को मिलता है। इसमें हैकर उन लोगों को टारगेट करते हैं जो ऑनलाइन नकद लेनदेन और बैंकिंग सर्विस जैसे गूगल पे, फोनपे, पेटीएम का इस्तेमाल

करते हैं। हैकर्स किसी इंसान का पर्सनल डाटा जैसे अकाउंट नंबर, डेबिट कार्ड डिटेल, इंटरनेट बैंकिंग डिटेल्स आदि जानकारी किसी तरह से हासिल कर के उसका सारा पैसा निकाल लेते हैं जिससे उस इंसान को काफी ज्यादा आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है।

- **दोषपूर्ण सॉफ़्टवेयर–** ऐसे बहुत सारे खतरनाक सॉफ्टवेर हैकर द्वारा बनाए जाते हैं तो किसी भी इंटरनेट से कनेक्ट कंप्यूटर या मोबाइल के डेटा को न सिर्फ चुरा सकते हैं बल्कि उसे डिलीट भी कर सकते हैं, साथ ही इन सॉफ्टवेर की मदद से हैकर आपके पूरे सिस्टम को क्रैश कर सकते हैं। ये सॉफ़्टवेयर कई प्रकार के होते हैं जैसे मैलवेयर, स्पाइवेयर, वायरस, रैंसमवेयर तथा वर्म हैकर्स इस प्रकार के सॉफ़्टवेयर को ज्यादातर किसी लिंक, पॉप अप मेसेज या ईमेल के माध्यम से दूसरे कंप्यूटर में भेजते हैं और लुभावने तरीकों से लिंक को टच करने को बोलते हैं। अगर वह इंसान लिंक पर टच कर देता हैं तो कंप्यूटर का पूरा कन्ट्रोल हैकर के हाथों में चला जाता है।
- **फ़िशिंग–** इस प्रकार के साइबर धमकी में हैकर किसी विश्वसनीय संस्था या बैंक के रूप में किसी इंसान को कोई मैसेज या ईमेल भेजता है जो देखने पर बिलकुल मान्य लगता है। इसके पीछे हैकर का मकसद उस इंसान की संवेदनशील जानकारी जैसे बैंक अकाउंट नंबर, डेबिट कार्ड, आधार कार्ड आदि जानकारी लेकर उसे आर्थिक नुकसान पहुंचाना होता है।
- **बाल अश्लीलता और दुर्व्यवहार–** इस प्रकार के साइबर अपराध में हैकर ज्यादातर चैट रूम का इस्तेमाल करते हैं और खुद की पहचान को छुपा कर शिष्टाचार के साथ बात करते हैं। छोटे बच्चों या अवयस्क लोगों को ज्यादा जानकारी नहीं होती और धीरे-धीरे हैकर बच्चों को बाल अश्लीलता के लिए बाधित करते हैं। इसके अलावा बच्चे डर की वजह से अपने माता-पिता को कुछ बता भी नहीं पाते हैं।
- **मैन इन द मिडल (एमआईटीएम) अटैक–** इस प्रकार के साइबर अपराध में जो अटैक करने वाला हैकर होता है वह दो लोगों के संचार की जासूसी करते रहता है और कुछ समय बाद उन दो लोगों में से एक बन कर सामने वाले से जरुरी इनफॉर्मेशन, और संवेदनशील डेटा जैसे बैंक, डेबिट क्रेडिट कार्ड डिटेल्स आदि प्राप्त कर लेता है। इससे सामने वाले इंसान को पता भी नहीं चलता और हैकर के पास सारी इनफॉर्मेशन आ जाती है।
- **सेवाओं से इनकार (डीओएस)–** डीओएस अटैक का मुख्य उद्देश्य किसी नेटवर्क या वेबसाइट की ट्रैफिक को कम करना है। इस अटैक में हैकर किसी नेटवर्क या वेबसाइट पर अचानक से बहुत ज्यादा ट्रैफिक ला कर नेटवर्क सिस्टम को कमजोर कर देते हैं। इसके साथ ही जो बहुत सारी सेवाएं होती हैं जैसे ईमेल, याहू, हॉटमेल आदि। इनमें जब अचानक से बहुत ज्यादा ट्रैफिक आ जायेगा तो कोई भी यूजर अगर लॉग इन करने जाएगा तो यूजर उस सर्विस को यूज़ ही नहीं कर पायेगा।

स्पूफिंग: अटैक हैकर सर्वर

- **स्पूफिंग–** इस प्रकार के साइबर अटैक में हैकर की अन्य इंसान की पहचान का इस्तेमाल कर के किसी बड़े सर्वर या बड़ी कंपनी के सिस्टम में अटैक कर सकता है। इस अटैक का सहारा लेकर कोई हैकर किसी की भी ज़िन्दगी बर्बाद कर सकता है।
- **सलामी स्लाईसिंग अटैक–** "सलामी स्लाईसिंग अटैक" को "सलामी धोखाधड़ी" भी कहते हैं। ऐसे साइबर अपराध में साइबर अपराधी बहुत सारे छोटे-छोटे अटैक कर के एक बड़े अटैक को अंजाम देता है। हमलावर ग्राहकों की जानकारी जैसे बैंक/डेबिट कार्ड के डिटेल्स का इस्तेमाल कर के बहुत छोटी मात्रा में पैसे की कटौती करते हैं। बहुत

कम मात्रा में पैसे की कटौती होने की वजह से ग्राहक स्लाईसिंग से अनजान रहते हैं और इसकी शिकायत भी नहीं करते हैं जिससे हैकर का पता नहीं चल पाता है। यह केवल समय-समय पर छोटे वेतन वृद्धि से लाभ प्राप्त करने की एक रणनीति है।

साइबर सुरक्षा के प्रकार

यूजर को नेटवर्क की अलग-अलग परतों में अलग-अलग सुरक्षा प्रदान की जाती है। ऊपर बताये सभी अपराध ऑनलाइन किये जाते हैं और उन्हें रोकने के लिए 6 सर्वश्रेष्ठ साइबर सुरक्षा कुछ इस प्रकार हैं:-

1. **नेटवर्क और गेटवे सुरक्षा-** इसे नेटवर्क की पहली परत कहा जा सकता है। आपने कंप्यूटर में फ़ायरवॉल का नाम तो जरुर सुना होगा। यह एक नेटवर्क के लिए ऐसी दीवार होती है जो सिर्फ सुरक्षित चीजों को प्रवेश करने की अनुमति देती है तथा असुरक्षित धमकी को रोकता है।
2. **डेटा खोने की रोकथाम (डीएलपी)-** इस प्रक्रिया में यूजर के सभी डेटा को पूरी तरह एनकोड का दिया जाता है जिसमे एसएसएल (सिक्योर सॉकेट लेयर) का प्रयोग किया जाता है। इस सुरक्षा के अंतर्गत सूचना या डेटा को अनधिकृत पहुंच से दूर रखने के लिए एन्क्रिप्ट कर दिया जाता है।
3. **एप्लीकेशन सुरक्षा-** इसके द्वारा नेटवर्क में उपयोग की जा रही एप्लीकेशन को एक सुरक्षा प्रक्रिया से गुज़ारा जाता है। जिससे उस एप्लीकेशन की कमियों को दूर किया जा सके। साथ ही अगर वह एप्लीकेशन असुरक्षित है तो उसे नेटवर्क से बाहर कर दिया जाता है।
4. **ईमेल सुरक्षा-** अगर आप जी-मेल का उपयोग करते हैं तो आपने देखा होगा की कुछ ईमेल स्पैम फोल्डर में चली जाती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योकि नेटवर्क में ईमेल सुरक्षा के लिए स्पैम फ़िल्टर लगाए जाते हैं। जिससे हानिकारक ईमेल को यूजर की पहुंच से दूर रखा जा सके क्योंकि अधिकतर अपराध ईमेल फ़िशिंग के जरिये ही किया जाता है।
5. **एंटीवायरस सुरक्षा-** सभी लोग अपने कंप्यूटर में एंटीवायरस लगा कर रखते हैं। यह हमारे कंप्यूटर को विभिन्न प्रकार के वायरस से बचाता है। आखिर कंप्यूटर में ही हमारी सारी सेंसिटिव इनफॉर्मेशन और प्राइवेट फ़ाइलें स्टोर्ड रहती हैं इसीलिए इसे सुरक्षित रखना बहुत जरुरी होता है।
6. **नेटवर्क एक्सेस कंट्रोल-** इसके द्वारा अनधिकृत उपयोगकर्ताओं और उपकरणों को नेटवर्क से बाहर रखने का कार्य किया जाता है। एनएसी नेटवर्क की कार्यक्षमता की सुरक्षा करती है, यह सुनिश्चित करती है कि केवल अधिकृत उपयोगकर्ता और डिवाइसों तक ही इसकी पहुँच हो। नेटवर्क ऑपरेटर तय करते हैं कि कौन से उपकरण या एप्लिकेशन एंडपॉइंट सुरक्षा आवश्यकताओं का अनुपालन करते हैं और उन्हें नेटवर्क एक्सेस की अनुमति दी जाएगी या नहीं।

साइबर सिक्योरिटी की चुनौतियां

एक प्रभावी साइबर सिक्योरिटी के लिए, एक ऑर्गनाइज़ेशन को अपने संपूर्ण इनफॉर्मेशन सिस्टम में अपने प्रयासों का समन्वय करने की आवश्यकता होती है। निम्नलिखित में से सभी में साइबर तत्व शामिल हैं:-

- नेटवर्क सिक्योरिटी
- एंड पॉइंट सिक्योरिटी
- ऐप्लीकेशन सिक्योरिटी
- डाटा सिक्योरिटी

- आइडेंटिटी मैनेजमेंट
- डेटाबेस और इंफ्रास्ट्रक्चर सिक्योरिटी
- क्लाउड सिक्योरिटी
- मोबाइल सिक्योरिटी
- डिजास्टर रिकवरी/व्यापार निरंतरता योजना
- एंड यूजर एजूकेशन

साइबर सिक्योरिटी में सबसे कठिन चुनौती स्वयं सिक्योरिटी जोखिमों की बढ़ती प्रकृति है। परंपरागत रूप से, ऑर्गनाइज़ेशन और सरकार ने अधिक लेयर की सिक्योरिटी पर अपने अधिकांश साइबर सिक्योरिटी रिसोर्सेस पर ध्यान केंद्रित किया है ताकि केवल उनके सबसे महत्वपूर्ण सिस्टम कंपोनेंट की रक्षा की जा सके और ज्ञात खतरों के खिलाफ रक्षा की जा सके।

आज, यह दृष्टिकोण अपर्याप्त है, क्योंकि खतरे एडवांस हो गए हैं और आर्गेनाइजेशन्स की तुलना में अधिक तेज़ी से बदल सकते हैं। नतीजतन, सलाहकार आर्गेनाइजेशन साइबर सिक्योरिटी के लिए अधिक सक्रिय और अनुकूलनीय दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं। इसीलिए सिक्योरिटी संस्थान अपने जोखिम मूल्यांकन ढांचे में दिशानिर्देश जारी करते हैं पारंपरिक निगरानी-आधारित मॉडल के विपरीत सतत निगरानी और वास्तविक समय के आकलन, सिक्योरिटी के लिए डेटा-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर एक बदलाव की सिफारिश करते हैं।

साइबर सुरक्षा के तीन स्तंभ कौन से हैं?

साइबर सुरक्षा लोगों, प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकी से बनी है। प्रभावी साइबर सुरक्षा कार्यक्रम के लिए तीनों का होना आवश्यक है।

साइबर सिक्योरिटी के तीन स्तंभ

1) **लोग–** प्रत्येक कर्मचारी को साइबर खतरों को रोकने और कम करने में उनकी भूमिका के बारे में पता होना चाहिए, और विशेष तकनीकी साइबर सिक्योरिटी कर्मचारियों को साइबर हमलों को कम करने और प्रतिक्रिया देने के लिए नवीनतम कौशल और योग्यता के साथ पूरी तरह से तैयार रहने की आवश्यकता है।
2) **प्रक्रिया–** ऑर्गेनाइज़ेशन की जानकारी के जोखिमों को कम करने के लिए ऑर्गेनाइज़ेशन की गतिविधियों, भूमिकाओं और प्रलेखन का उपयोग कैसे किया जाता है, इसे परिभाषित करने में प्रक्रियाएं महत्वपूर्ण हैं। साइबर खतरे जल्दी से बदलते हैं, इसलिए प्रक्रियाओं को उनके साथ अनुकूलन करने में सक्षम होने के लिए लगातार समीक्षा करने की आवश्यकता होती है।
3) **तकनीक–** उन साइबर जोखिमों की पहचान करके, जो आपके ऑर्गेनाइज़ेशन का सामना करते हैं, तब आप यह देखना शुरू कर सकते हैं कि किस स्थान पर नियंत्रण करना है, और इसके लिए आपको किन तकनीकों की आवश्यकता होगी। साइबर जोखिमों के प्रभाव को रोकने या कम करने के लिए प्रौद्योगिकी को तैनात किया जा सकता है, जो आपके जोखिम मूल्यांकन और आप जोखिम के स्वीकार्य स्तर पर निर्भर करते हैं।

साइबर सुरक्षा के फायदे

- नेटवर्क और डेटा को अनधिकृत एक्सेस से प्रोटेक्ट करता हैं।
- बेहतर इनफॉर्मेशन सिक्योरिटी और व्यापार निरंतरता प्रबंधन।

- आपकी इनफॉर्मेशन सिक्योरिटी व्यवस्था में बेहतर हितधारक विश्वास।
- सही सिक्योरिटी नियंत्रण के साथ बेहतर कंपनी क्रेडेंशियल्स
- उल्लंघन की स्थिति में फास्ट रिकवरी टाइम

साइबर अपराधों से निपटने की दिशा में भारत के प्रयास

- भारत में 'सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000' पारित किया गया जिसके प्रावधानों के साथ-साथ भारतीय दंड संहिता के प्रावधान सम्मिलित रूप से साइबर अपराधों से निपटने के लिये पर्याप्त हैं।
- सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धाराएँ 43, 43ए, 66, 66बी, 66सी, 66डी, 66ई, 66एफ, 67, 67ए, 67बी, 70, 72, 72ए और 74 हैकिंग और साइबर अपराधों से संबंधित हैं।
- सरकार ने साइबर सुरक्षा से संबंधित फ्रेमवर्क का अनुमोदन किया है और इसके लिये राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय को नोडल एजेंसी बनाया गया है।
- राष्ट्रीय विशिष्ट अवसंरचना और विशिष्ट क्षेत्रों में साइबर सुरक्षा के लिये राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी अनुसंधान संगठन को नोडल एजेंसी बनाया गया है।
- इसके अंतर्गत 2 वर्ष से लेकर उम्रकैद तथा दंड अथवा जुर्माने का भी प्रावधान है। सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति, 2013' जारी की गई जिसके तहत सरकार ने अति-संवेदनशील सूचनाओं के संरक्षण के लिये 'राष्ट्रीय अतिसंवेदनशील सूचना अवसंरचना संरक्षण केंद्र (एनसीआईआईपीसी) का गठन किया।
- सरकार द्वारा 'कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम (सीईआरटी-इन)' की स्थापना की गई जो कंप्यूटर सुरक्षा के लिये राष्ट्रीय स्तर की मॉडल एजेंसी है।
- विभिन्न स्तरों पर सूचना सुरक्षा के क्षेत्र में मानव संसाधन विकसित करने के उद्देश्य से सरकार ने 'सूचना सुरक्षा शिक्षा और जागरूकता' (आईएसईए) परियोजना प्रारंभ की है।
- भारत सूचना साझा करने और साइबर सुरक्षा के संदर्भ में सर्वोत्तम कार्य प्रणाली अपनाने के लिये अमेरिका, ब्रिटेन और चीन जैसे देशों के साथ समन्वय कर रहा है।
- अंतर-एजेंसी समन्वय के लिये 'भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र' (आई4सी) की स्थापना की गई है।
- देश में साइबर अपराधों से समन्वित और प्रभावी तरीके से निपटने के लिए 'साइबर स्वच्छता केंद्र' भी स्थापित किया गया है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत भारत सरकार की डिजिटल इंडिया मुहिम का एक हिस्सा है।

राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा रणनीति के मुख्य घटक

- **सार्वजनिक सेवाओं का बड़े पैमाने पर डिजिटलीकरण:** सभी डिजिटलीकरण पहलों में डिज़ाइन के शुरुआती चरणों में ही सुरक्षा पर ध्यान देना।
  - मूल उपकरणों के मूल्यांकन, प्रमाणन और रेटिंग के लिये संस्थागत क्षमता का विकास करना।
  - सुभेद्यता और घटनाओं की समय-समय पर रिपोर्टिंग।
- **आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा:** इंटीग्रेटेड सर्किट और इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों की आपूर्ति श्रृंखला की निगरानी तथा मैपिंग।
  - सामरिक और तकनीकी स्तरों पर वैश्विक स्तर पर देश की सेमीकंडक्टर डिज़ाइन क्षमताओं का लाभ उठाना।

- **महत्त्वपूर्ण सूचना अवसंरचना संरक्षण:** पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण (एससीएडीए) सुरक्षा को एकीकृत करना
  - सुभेद्यता को सुरक्षित बनाए रखना।
  - क्षेत्रक की समग्र स्तर की सुरक्षा आधार रेखा तैयार करना और उसके नियंत्रणों पर नज़र रखना।
  - खतरे की तैयारी और साइबर-बीमा उत्पादों के विकास के लिये ऑडिट पैरामीटर तैयार करना।
- **डिजिटल भुगतान:** तैनात उपकरणों और प्लेटफार्मों की मैपिंग तथा मॉडलिंग, आपूर्ति शृंखला, लेनदेन करने वाली संस्थाएं, भुगतान प्रवाह, इंटरफेस एवं डेटा एक्सचेंज को मज़बूती प्रदान करना।
- **राज्य स्तरीय साइबर सुरक्षा:** राज्य स्तरीय साइबर सुरक्षा नीतियां विकसित करना,
  - समर्पित धन का आबंटन,
  - डिजिटलीकरण योजनाओं की गंभीर जांच,
  - सुरक्षा संरचना, संचालन और शासन के लिये दिशानिर्देश।
- **छोटे और मध्यम व्यवसायों की सुरक्षा:** साइबर सुरक्षा तैयारियों के उच्च स्तर के प्रोत्साहन देने के लिये साइबर सुरक्षा में नीतिगत हस्तक्षेप।
  - इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और औद्योगिकीकरण को अपनाने के लिये सुरक्षा मानकों, ढांचे और संरचना का विकास करना।

इंटरनेट पर सुरक्षित रहने के लिए सभी सुरक्षा उपकरणों और एप्लीकेशन के साथ-साथ यूज़र की कार्यशैली भी निर्भर करती है, यानि एक एंडयूज़र को भी इंटरनेट पर कार्य करते समय सुरक्षा के दृष्टिकोण से हर वो छोटे कदम लेने चाहिए जिससे साइबर सुरक्षा को खतरा हो सकता है। कैशलेस अर्थव्यवस्था को अपनाने की दिशा में बढ़ने के कारण भारत में साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। डिजिटल भारत कार्यक्रम की सफलता काफी हद तक साइबर सुरक्षा पर निर्भर करेगी। अतः भारत को इस क्षेत्र में तीव्र गति से कार्य करना होगा।

आज़ादी से अब तक टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भारत का विकास

धीरेन्द्र सिंह नेगी
प्रबंध सेवा निदेशालय

आज आजादी को 75 साल बीत गए और हम भारतीय आजाद होने का गर्व महसूस कर पा रहे हैं। आजादी के बाद 74 साल के दौरान देश में बहुत कुछ बदला है। ग्राम पंचायत से लेकर राजधानी तक में काफी विकास हुआ। गांवों को जोड़ने वाली पक्की सड़कें बनीं तो हवाई मार्ग में भी आमूलचूल परिवर्तन आ गया। पहले गांवों में पक्की सड़कें तक नहीं थीं, लेकिन आज 1,57,383 ग्राम पंचायतों में हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड इंटरनेट पहुंच चुका है। इन 74 साल के दौरान देश में विज्ञान और तकनीक को लेकर भी काफी विकास हुआ।

आर्यभट्ट देश का पहला सैटेलाइट था, जिसे 19 अप्रैल 1975 को अंतरिक्ष के लिए रवाना किया गया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (ISRO) ने सोवियत संघ की मदद से भारत में विकसित पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक स्थापित किया था। देश के पहले उपग्रह का नाम भारत के मशहूर खगोलशास्त्री और गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया था। इस सैटलाइट का वजन 360 किलोग्राम था और इसका जीवन करीब 17 साल था। उस दौरान इसकी लागत 3 करोड़ से भी ज्यादा की थी। इस सैटेलाइट का उद्देश्य एक्सरे एस्ट्रोनॉमी, एरोनॉमिक्स और सौर भौतिकी में प्रयोग करना था। आर्यभट्ट उपग्रह की तस्वीर दो रुपये के नोट पर कई साल तक थी।

1975 में ही एक अगस्त को सैटेलाइट निर्देशात्मक टेलीविजन प्रयोग (साइट) का इस्तेमाल हुआ। साइट डॉ. साराभाई का सपना था, जो 1975-76 के दौरान अमेरिका के एप्लीकेशन टेक्नोलॉजी सैटेलाइट (एटीएस-6) से तैयार किया गया था। साइट ने भारत जैसे विकासशील देश को टेलीविजन के क्षेत्र के लिए बहुत बड़ा हथियार दिया। पहली बार देश के छह राज्यों (राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक) के कुल 2,400 गांवों में लगभग 400 कम्यूनिटी टीवी सेट स्थापित किए गए। यह प्रोजेक्ट भी इसरो की देख-रेख में ही पूरा हुआ।

1978 में देश में पहली बार टेस्ट ट्यूब बेबी के जरिए किसी बच्चे का जन्म हुआ। दुनिया के दूसरे और भारत के पहले टेस्ट ट्यूब बेबी का जन्म कोलकाता में 3 अक्तूबर 1978 को हुआ। डॉ। सुभाष मुखोपाध्याय को भारत के पहले टेस्ट ट्यूब बेबी का जनक कहा जाता है। शुरुआत में मुखोपाध्याय के काम को लेकर संदेह जताया गया, लेकिन 9 जून 1981 को कोलकाता में आत्महत्या कर लेने के बाद उन्हें टेस्ट ट्यूब बेबी के जनक के रूप में मान्यता दी गई। टेस्ट ट्यूब के जरिए जन्मी बच्ची को दुर्गा नाम दिया गया था। दरअसल, तीन अक्टूबर 1978 को दुर्गापूजा का पहला दिन था। इस वजह से बच्ची का नाम दुर्गा रखा गया।

1991 भारत के लिए वह शानदार वर्ष था, जब भारत के पहले सुपर कंप्यूटर परम (Param) से दुनिया रूबरू हुई। यह देश में विकसित पहला सुपर कंप्यूटर था। 1987 में उस दौरान के अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन और भारत के प्रधानमंत्री राजीव गांधी के बीच तकनीक लेकर बैठक हुई थी, जिसमें अमेरिका ने अपना सुपर कंप्यूटर क्रे (CRAY) भारत को देने से इनकार कर दिया था। हालांकि, मौसम के पूर्वानुमान के लिए एक पुरानी मशीन की पेशकश हुई। इसके बाद 1988 में भारत में सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कंप्यूटिंग (सी-डैक) की स्थापना हुई और अगले तीन साल में करीब 30 करोड़ की लागत से पहला स्वदेशी सुपर कंप्यूटर परम 8000 तैयार हुआ।

10 2009- यूआईडीएआई (भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण) 28 जनवरी, 2009 को योजना आयोग ने विशिष्ट संख्या वाले पहचान पत्र को बनाने के लिए यूआईडीएआई के गठन का नोटिफिकेशन जारी किया। इंफोसिस के संस्थापक नंदन नीलेकणी को इसका चेयरमैन बनाया गया। सितंबर 2010 में प्रायोगिक तौर पर महाराष्ट्र के कुछ ग्रामीण इलाकों में आधार योजना को लॉन्च किया गया और दिसंबर में सरकार ने नेशनल आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया बिल 2010 संसद में पेश किया। सितंबर 2011 तक देश में 10 करोड़ लोगों के आधार कार्ड बन गए थे। 7 फरवरी 2012 को पहली बार यूआईडीएआई ने आधार का ऑनलाइन वैरिफिकेशन शुरू किया।

इसरो ने 1 जुलाई 2013 को स्वदेशी जीपीएस इंडियन रीजनल नेविगेशन सैटलाइट सिस्टम को लॉन्च किया, जिसका ऑपरेशनल नाम NavIC रखा गया। नाविक का सपोर्ट अब भारत में बिकने कई स्मार्टफोन में भी मिलने लगा है। क्वॉलकॉम के चिपसेट में नाविक का सपोर्ट मिलता है।

नेशनल पेमेंट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया ने 11 अप्रैल 2016 को रियल टाइम पेमेंट सिस्टम यूपीआई को लॉन्च किया, जिसका पूरा नाम यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस है। यूपीआई भारत का पहला रियल टाइम डिजिटल पेमेंट सिस्टम है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लॉन्च किया गया पेमेंट एप भीम (BHIM या Bharat Interface for Money) भी यूपीआई पर ही काम करता है। यूपीआई पेमेंट सिस्टम ने भारत के लोगों और कारोबारियों को वो सुविधा दे दी, जिसके बारे में किसी ने शायद ही कल्पना की थी। यूपीआई के आने के बाद ऑनलाइन भुगतान को एक नया जीवन मिला और हर हाथ में बैंक का सपना साकार हुआ। आज भारत में सभी बैंक यूपीआई की सुविधा दे रहे हैं। यहां तक कि गूगल और व्हाट्सएप जैसी कंपनियां भी भारत में यूपीआई सेवा दे रही हैं।

2018 दुनिया की सबसे बड़ी मोबाइल फैक्ट्री भारत में 2018 में भारत में दुनिया की सबसे बड़ी मोबाइल मैन्यूफैक्चरिंग फैक्ट्री की स्थापना हुई। नोएडा स्थित सैमसंग की इस मोबाइल फैक्ट्री का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। सैमसंग की इस नई फैक्ट्री में मोबाइल फोन निर्माण की क्षमता सालाना 12 करोड़ यूनिट है। यानी इस फैक्ट्री में हर महीने 1 करोड़ फोन का उत्पादन हो सकता है।

21वीं सदी की शुरुआत सूचना प्रौद्योगिकी में तेज़ बढ़ोत्तरी से हुई, कम्प्यूटिंग की क्षमता में लगातार बढ़ोत्तरी और ज्यादा सुनिश्चित करेगी कि नई और बेहतर तकनीक मानव इतिहास के किसी दूसरे समय के मुकाबले इस वक़्त और ज्यादा तेज़ी से उभरेगी। उभरती तकनीक शब्द को या तो नई तकनीक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है या मौजूदा तकनीक

में तरक्क़ी जारी रखने को जो अगले कुछ वर्षों में व्यापक तौर पर उपलब्ध होगी। 3डी प्रिंटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, नैनो टेक्नोलॉजी, 5जी वायरलेस, कम्युनिकेशन, स्टेम सेल थेरेपी और बंटी हुई खाता बही ऐसी तकनीक के कुछ उदाहरण हैं। उभरती तकनीक में निवेश के जरिए भारत महत्वपूर्ण आर्थिक, सामाजिक और सैन्य फ़ायदा हासिल कर सकता है और इससे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में बड़ा नाम होने की भारत की आकांक्षा को बल मिल सकता है। लेकिन इसके लिए भारत को अच्छी शिक्षा के अभाव और अविकसित रिसर्च डेवपलमेंट के बुनियादी ढांचे जैसी समस्या पर ध्यान देना होगा जिससे कि उभरती तकनीकी के विकास से मिलने वाले नतीजे का अधिकतम फ़ायदा उठाया जा सके।।भारत ने उभरती तकनीक के क्षेत्र में अपनी रिसर्च क्षमता को बढ़ाने के लिए पिछले कुछ वर्षों के दौरान कई सुधार और पहल का एलान किया है। 2015 में 4500 करोड़ रुपये के राष्ट्रीय सुपर कम्प्यूटिंग मिशन की शुरुआत की गई जिससे कि 2022 तक पूरे देश में 73 देसी सुपर कम्प्यूटर लगाया जाए। उभरती तकनीक के क्षेत्र में रिसर्च पर दो व्यापक दृष्टिकोण है। पहले दृष्टिकोण में विकास और वैज्ञानिक सिद्धांत हैं जो उभरती तकनीक की बुनियाद हैं जबकि दूसरे दृष्टिकण में इन सिद्धांतों को व्यावसायिक और औद्योगिक तरीक़े से उत्पादों में बदलना है। आम तौर पर विश्वविद्यालय और अकादमिक संस्थान पहले दृष्टिकोण पर आधारित प्रोजेक्ट पर काम करते हैं जबकि पेशेवर रिसर्च लैबोरेटरी दूसरे दृष्टिकोण पर ध्यान देती है। अफसोस की बात ये है कि दोनों दृष्टिकोणों के बारे में बुनियादी ढांचे पर पैसा खर्च नहीं किया गया है और रिसर्च का अच्छा माहौल बनाने के लिए इस कमी पर ध्यान देने की जरूरत है। 2018 में भारत ने अपनी जीडीपी का सिर्फ 3% शिक्षा पर खर्च किया जो कोठारी आयोग की तरफ से की गई सिफारिश का आधा है। पिछले एक दशक में प्राइवेट सेक्टर ने इस अंतर को भरने की कोशिश की है और पूरे भारत में कई नये कॉलेज और यूनिवर्सिटी खुली हैं। भारत में ज्यादातर वैज्ञानिक रिसर्च सरकारी पैसे पर चलने वाले शैक्षणिक संस्थानों जैसे आईआईएससी, आईआईटी और एम्स या विशेष संगठनों जैसे आईसीएआर, आईसीएमआर, सीएसआईआर, डीआरडीओ और इसरो में होती है।

परिणामस्वरूप आजादी के बाद के इन वर्षों में कृषि, चिकित्सा, परमाणु ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिकी, संचार, अंतरिक्ष, परिवहन और रक्षा विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति के कारण आज भारत देश विकासशील देशों की श्रेणी में अग्रणी है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य अंग रही हैं।

तकनीकी शिक्षा

विनोद कुमार
महानिदेशक (आर एंड एम) का कार्यालय

किसी व्यवसाय के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्तियों की शिक्षा देना तकनीकी शिक्षा है। तकनीकी शिक्षा एक विशिष्ट प्रकार का शिक्षा रूप है जिनका व्यक्ति और समाज के साथ अभिन्न समन्वय है। जो शिक्षा विशेष व्यावहारिक ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, उसे तकनीकी शिक्षा के रूप में जाना जाता है। यह सामान्य पारंपरिक शिक्षा से अलग है। यह छात्रों को कृषि, कम्प्यूटर, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, ड्राइविंग आदि क्षेत्रों में कुशल बनाती है। जो लोग विशेष तकनीकी कौशल और ज्ञान रखते हैं, उन्हें तकनीशियन कहा जाता है जैसे बढ़ई, ड्राइवर, यांत्रिकी, इंजीनियर, डॉक्टर, पायलट आदि तकनीशियन हैं। तकनीकी शिक्षा किसी देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निर्माण के हर क्षेत्र में तकनीशियनों की जरूरत होती है। तकनीकी शिक्षा एक विशिष्ट प्रकार का शिक्षा रूप है जिनका व्यक्ति और समाज के साथ अभिन्न समन्वय है। जो शिक्षा विशेष व्यावहारिक ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, उसे तकनीकी शिक्षा के रूप में जाना जाता है। यह शिक्षा विशेष प्रकार के वृत्तिमुखी एवं तकनीकी कार्य करने के लिए परिकल्पित मानव संपदा की सृष्टि में भाग लेती है, इसलिए इस शिक्षा को वृत्तिमुखी तथा तकनीकी शिक्षा कहा जाता है। अर्थात जो शिक्षा शिक्षार्थी को किसी विशेष वृत्ति के समन्वय में ज्ञान एवं कुशलता अर्जित करने में सहायक होती है और पूर्व एवं नव अर्जित दक्षता का प्रयोग कर उस वृत्ति को सुंदर ढंग से संपन्न करने में सक्षम होता है, उसे ही वृत्तिमूलक एवं तकनीकी शिक्षा कहते है।

तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता

आज हमारा भारत विकास की ओर बढ़ रहा है कई सुख सुविधाएं हमारे देश को मिल चुकी हैं। अब हमारे देश की तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है क्योंकि जिस देश में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है वह देश विकास की ओर बढ़ता है। हमारे पास ऐसे युवा व्यक्ति नहीं हैं जो इन साधनों का उचित प्रकार से उपयोग कर सके। सिर्फ तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा ही हमें विशेषज्ञ इंजीनियर और तकनीशियन देती है। हमारे देश में बड़ी मात्रा में इनकी आवश्यकता है। तकनीकी शिक्षा के माध्यम से देश के युवाओं को प्रशिक्षण देकर उनको हुनर सीखा कर आगे बढ़ाया जाता है । जब देश के युवा आगे बढ़ेंगे तब हमारे देश का विकास होगा । हमें सभी व्यवसायों में योग्य और प्रशिक्षित कार्य करने वालों की आवश्यकता है। यह तब ही सम्भव हो सकता है जब हम उन्हें व्यवसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण दें। सरकार भी इस विषय को गंभीरता से ले रही है क्योंकि सरकार भी जानती है कि हमारे देश में तकनीकी शिक्षा का स्तर बढ़ाने की आवश्यकता है । तकनीकी शिक्षा को बढ़ाने के लिए हमारे देश में कई इंजीनियरिंग कॉलेज भी खोले गए हैं जहां से युवा प्रशिक्षण लेकर देश के विकास में अपना योगदान दे सकता है ।

तकनीकी शिक्षा की समस्या क्या-क्या है?

- **अनुचित दृष्टिकोण की समस्या–** हमारे देश में इस शिक्षा के प्रति लोगों का दृष्टिकोण उचित नहीं है। यहाँ मानसिक श्रम की अपेक्षा शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखा जाता है।
- **शिक्षा में अनुपयुक्त माध्यम की समस्या–** तकनीकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। इससे छात्रों को विषय समझने में कठिनाई होती है।
- **संकीर्ण पाठ्यक्रम की समस्या–** इस तरह के विद्यालय का पाठ्यक्रम संकीर्ण होता है। ऐसी शिक्षा ग्रहण करने वाले व्यक्तियों के दृष्टिकोण प्राय: भौतिकवादी हो जाता है और वे समाज की विभिन्न रुचियों, प्रवृत्तियों तथा आवश्यकताओं को नहीं समझ पाते हैं।
- **विद्यालयों का अभाव–** स्वतंत्र भारत में अनेक तकनीकी शिक्षा संस्थान स्थापित किये जा चुके हैं। फिर भी व्यापक माँग की अपेक्षा उनकी संख्या कम है। शिक्षा प्राप्त नवयुवक तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने में विशेष रुप से इच्छुक होते हैं, किन्तु विद्यालयों की कमी के कारण उन्हें प्रवेश नहीं मिल पाता है।
- **प्रशिक्षित अध्यापकों का अभाव–** तकनीकी शिक्षा संस्थाओं के लिए सुयोग्य प्रशिक्षित अध्यापक नहीं मिल पा रहे हैं जिससे इस शिक्षा के विस्तार-कार्य को काफी धक्का पहुँच रहा है। तकनीकी शिक्षा में जिन विद्यार्थियों को अच्छे अंक प्राप्त होते हैं, वे आर्थिक कारणों से अन्य संस्थाओं में चले जाते हैं। जिसके कारण औसत मान के विद्यार्थी ही शिक्षकीय पेशा को अपनाते हैं।
- **प्रायोगिक शिक्षा की उपेक्षा–** तकनीकी शिक्षा में प्रयोगों का विशेष महत्व है, किन्तु विद्यालयों में सैद्धांतिक शिक्षा पर ही विशेष बल दिया जाता है। तकनीकी विषयों को श्यामपट (ब्लैकबोर्ड) पर ही समझा दिया जाता है। प्रायोगिक शिक्षा के अभाव में विद्यार्थी विषय को अच्छी तरह नहीं समझ पाते और शिक्षा समाप्ति के पश्चात उन्हें व्यावहारिक क्षेत्र में काफी परेशानी उठानी पड़ती है। तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य की सुविधाओं का अभाव है।

तकनीकी शिक्षा की समस्याओं का समाधान

तकनीकी शिक्षा की समस्याओं के समाधान के लिए प्रमुख सुझाव कुछ इस प्रकार है:–

- **दृष्टिकोण में परिवर्तन–** शारीरिक श्रम के प्रति जनता का दृष्टिकोण बदलना आवश्यक है। इसके लिए सरकार एवं समाज संस्थाओं का कर्तव्य है कि वे जनता को शारीरिक श्रम के महत्व से अवगत कराएं।
- **पर्याप्त संख्या में विद्यालयों की स्थापना (Increase in the number of Vocational schools)–** सरकार को विभिन्न स्तर की तकनीकी शिक्षा संस्थाओं का स्थापना करनी चाहिए। जिससे की तकनीकी शिक्षा की महत्ता को लोग जान सके।
- **विद्यालयों में पढ़ाने के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहन (Encouragement to the teachers for teaching in Vocational schools)–** तकनीकी विद्यालयों में पढ़ाने के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहित करना चाहिए। इस शिक्षा के अभाव की समस्या तभी हल की जा सकती है, जब सरकार इन विद्यालयों के शिक्षकों के वेतन में सुधार लाकर उनके समस्याओं का समाधान करें। इन्हें सुधारने से शिक्षकों को प्रोत्साहन मिलेगा।
- **पाठ्यचर्या में सामान्य शिक्षा का स्थान (General Education in curriculum)–** तकनीकी शिक्षा के पाठ्यचर्या में सामान्य शिक्षा को भी उचित स्थान देना चाहिए। पाठ्यचर्या का जीवन के साथ सामंजस्य होना आवश्यक है।

- **राष्ट्रीय भाषा एवं मातृभाषा शिक्षा का माध्यम (National language or Mother tongue is the medium of the instruction)–** हिंदी को तकनीकी शिक्षा का माध्यम बनाया जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि हिंदी भाषा में समस्त तकनीकी पुस्तकों का अनुवाद कराया जाए।
- **प्रायोगिक शिक्षा का तकनीकी विद्यालयों में महत्वपूर्ण स्थान (Important place of Technical education in technical school)–** तकनीकी विद्यालयों में प्रायोगिक शिक्षा पर विशेष बल देना चाहिए।

तकनीकी शिक्षा की विशेषता

- इस शिक्षा का आधार मनोवैज्ञानिक है। यह बालक की रुचि, प्रवृति एवं व्यक्तित्व का ध्यान रखती है। इस शिक्षा योजना में शिक्षक एवं पुस्तक के स्थान पर बालक को विशेष महत्व दिया जाता है।
- यह शिक्षा जीवन से संबंधित है। यह शिक्षा परिवार, श्रम तथा कार्य से संबंधित है।
- इस शिक्षा का आधार व्यक्तित्व का विकास करना है।
- तकनीकी शिक्षा एक विशिष्ट शिक्षा है।
- तकनीकी शिक्षा का रुप स्थिर नहीं रहता है। समय की गति एवं सभ्यता के विकास के साथ इसके रुप में परिवर्तन आता है।
- यह शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान न प्रदान कर जीवन के हर क्षेत्र के लिए उपयोगी होती है। यही तकनीकी शिक्षा की विशेषता है।

तकनीकी शिक्षा के लाभ

बेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए तकनीकी शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। कुशल लोग बेरोजगार नहीं हो सकते। यदि वे अपना खुद का व्यवसाय शुरू करते हैं, तो वे अन्य शिक्षित लोगों को नौकरी के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार तकनीकी शिक्षा हमें बेरोजगारी की समस्या की गंभीरता को कम करने में मदद करती है। तकनीकी शिक्षा किसी देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निर्माण के हर क्षेत्र में तकनीशियनों की जरूरत होती है। कारखानों, सड़कों, पुलों, नहरों, भवनों, हवाई अड्डों आदि को बनाने के लिए तकनीशियनों की आवश्यकता होती है। तकनीकी शिक्षा निर्विवाद रूप से राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को बढ़ावा देती है। यदि किसी देश में माल का अधिक उत्पादन होता है, तो वह अपने लोगों को आसानी से खिला सकता है। अन्य देशों को अतिरिक्त उत्पादन बेचकर विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है। इसी प्रकार और भी कई तकनीकी शिक्षा के लाभ होते है।

तकनीकी शिक्षा का उद्देश्य

- इस शिक्षा का आधार मनोवैज्ञानिक होना चाहिए।
- यह बालक की रुचि, प्रवृति एवं व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए शिक्षा योजना में शिक्षक एवं पुस्तक के स्थान पर बालक को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।
- **स्थायी ज्ञान की प्राप्ति–** इस शिक्षा प्रणाली में प्रत्येक कार्य को वैज्ञानिक ढंग से सिखाया जाता है। विभिन्न क्रियाओं में सक्रिय भाग लेने तथा क्रियाओं के रुचि के अनुकूल होने से इससे प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।

- **व्यक्ति को आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाना–** इस शिक्षा प्रणाली में स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता के सिद्धान्त को अपनाया जाता है।
- **सर्वांगीण विकास–** यह शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देता है।
- **जीवन से संबंधित–** यह शिक्षा जीवन से संबंधित है। यह शिक्षा परिवार, श्रम तथा कार्य से संबंधित है। देश की उत्पादन क्षमता को बढ़ाना तकनीकी शिक्षा का उद्देश्य है।

तकनीकी शिक्षा का महत्व

तकनीकी शिक्षा का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है। दैनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस शिक्षा के महत्व का आभास होता है और होना भी चाहिए। आधुनिक युग में तो किसी विशेषधर्मी शिक्षा के अभाव में जीवन निर्वाह ही कठिन है। यातायात वाहनों के प्रयोग, विभिन्न वेश-भूषा की संरचना, रोगों के उपचार, रहन-सहन, सांस्कृतिक परिवेश का संरक्षण, मानसिक विकास, संगीत नृत्य नाट्य, चित्राकंन जैसे कार्य के लिए यह शिक्षा अनिर्वाय है। जीविकोपार्जन सम्बन्धी कार्य करने के लिए यह शिक्षा प्रशिक्षण देता है। कहा जाता है कि मनुष्य रोटी के बिना नहीं रह सकता। रोटी कपड़ा और मकान अनिर्वाय है। इसके लिए मनुष्य को कार्य करना ही पड़ता है। किन्तु बिना समुचित प्रशिक्षण के यह कार्य कठिन है।

तकनीकी शिक्षा के द्वारा व्यक्ति विभिन्न प्रशिक्षण माध्यम से अपनी आवश्यकता को पूर्ण कर सकती है। सांस्कृतिक अभिरुचि की पूर्ति के लिए यह शिक्षा आवश्यक है। संस्कृति ही उसे आत्मिक सौंदर्य एवं उल्लास प्रदान करती है। संगीत साहित्य कला के माध्यम से व्यक्ति सुसंस्कृत एवं सभ्य बनता है। उनका रचनात्मक प्रभाव मानवीय आचार-विचार पर पड़ता है। इस शिक्षा का महत्व इसलिए भी है कि यह व्यक्ति की उन्नति का साधन मात्र न होकर समाज एवं राष्ट्र की उन्नति, राष्ट्रीय एकता, अंतर्राष्ट्रीय बंधुत्व जैसे कार्यों में भी योगदान देती है। समाज, जाति तथा राष्ट्र तभी विकास करती है जब उसमें डॉक्टर, इंजीनियर, तकनीशियन, कारीगर आदि हों क्योंकि इन लोगों का विशेष ज्ञान , दक्षता एवं अभिज्ञता ही समाज एवं जाति अथवा राष्ट्र की उन्नति के कारण बन जाते हैं। कला-कौशल, वाणिज्य-व्यवसाय तथा तकनीकी इंजीनियरिंग दृष्टि से विकसित राष्ट्र सहज ही आधुनिक विश्व मंच पर महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। इसीलिए तकनीकी शिक्षा का अधिक महत्व माना जाता है ।

तकनीकी शिक्षा, ज्ञान और अनुभव से परिपूर्ण प्रशिक्षित प्रतिभा का सृजन करने का एक स्वच्छंद, स्थिर एवं अपरंपरागत माध्यम है। यह प्रसन्नता का संकेत है कि सरकार इस समस्या को लेकर गंभीर हैं। स्वतंत्रता से लेकर अब तक हजारों तकनीकी शिक्षण संस्थान खोले जा चुके हैं। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति कुशल लोगों के हाथों पर निर्भर करती है। राष्ट्र की समृद्धि के उत्थान के लिए हर देश को तकनीकी शिक्षा पर उच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। देश में बढ़ती बेरोजगारी, युवाओं में पैदा होती दुष्प्रवृत्तियाँ तथा उनका असामाजिक कृत्यों की ओर झुकाव देश को अराजकता की ओर धकेल रहा है। इसलिए अनिवार्य है कि हमारी शिक्षा का तकनीकी के साथ सामंजस्य हो, संतुलन हो।

नेटवर्किंग का परिचय

जगत सिंह
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

नेटवर्किंग डेटा साझा करने के उद्देश्य से दो या दो से अधिक कंप्यूटिंग उपकरणों को एक साथ जोड़ने का कार्य है। दूसरे शब्दों में, नेटवर्क संचार चैनलों द्वारा परस्पर जुड़े कंप्यूटर और अन्य हार्डवेयर घटकों का एक संग्रह है जो संसाधनों और सूचनाओं को साझा करने की अनुमति देता है।

इंटरनेट एक्सेस करने या किसी दस्तावेज़ को प्रिंट करने से लेकर हर चीज़ के लिए नेटवर्किंग का उपयोग किया जाता है, उपयोग में आने वाले कुल 11 प्रकार के नेटवर्कों का प्रकारों विवरण नीचे दिया गया है:–

1. **पर्सनल एरिया नेटवर्क (PAN):** सबसे छोटा और सबसे बुनियादी प्रकार का नेटवर्क, एक पैन एक वायरलेस मॉडेम, एक कंप्यूटर या दो, फोन, प्रिंटर, टैबलेट आदि से बना होता है, और एक इमारत में एक व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमता है। इस प्रकार के नेटवर्क आमतौर पर छोटे कार्यालयों या आवासों में पाए जाते हैं, और एक ही डिवाइस से एक व्यक्ति या संगठन द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं।
2. **लोकल एरिया नेटवर्क (LAN):** LAN सबसे आम और सबसे सरल प्रकार के नेटवर्कों में से एक है। LAN सूचना और संसाधनों को साझा करने के लिए कम दूरी (एक इमारत के भीतर या दो या तीन इमारतों के समूह के बीच एक दूसरे के करीब) में कंप्यूटर के समूहों को एक साथ जोड़ता है। राउटर का उपयोग करते हुए, LAN डेटा को तेजी से और सुरक्षित तरीके से स्थानांतरित करने के लिए वाइड एरिया नेटवर्क (WAN) से जोड़ सकते हैं।
3. **वायरलेस लोकल एरिया नेटवर्क (WLAN):** LAN की तरह, WLAN वायरलेस नेटवर्क तकनीक का उपयोग करते हैं, जैसे- वाई-फाई। इस प्रकार के नेटवर्क के लिए यह आवश्यक नहीं है कि डिवाइस नेटवर्क से कनेक्ट होने के लिए भौतिक (फिजिकल) केबल पर निर्भर हों।
4. **कैंपस एरिया नेटवर्क (CAN):** यह LAN से बड़ा, लेकिन मेट्रोपॉलिटन एरिया नेटवर्क (MAN) से छोटा होता है, इस प्रकार के नेटवर्क कई इमारतों में फैले होते हैं जो एक-दूसरे के काफी करीब होते हैं ताकि उपयोगकर्ता संसाधनों को साझा कर सकें।
5. **मेट्रोपॉलिटन एरिया नेटवर्क (MAN):** इस प्रकार के नेटवर्क LAN से बड़े होते हैं लेकिन WAN से छोटे होते हैं। MAN एक संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र (आमतौर पर एक शहर या शहर, लेकिन कभी-कभी एक परिसर) तक फैला होता है। इसका स्वामित्व और रखरखाव या तो एक व्यक्ति या कंपनी द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
6. **वाइड एरिया नेटवर्क (WAN):** यह LAN की तुलना में थोड़ा अधिक जटिल, WAN कंप्यूटरों को लंबी भौतिक (फिजिकल) दूरी पर एक साथ जोड़ता है। यह कंप्यूटरों को एक दूसरे से दूर से एक बड़े नेटवर्क पर कनेक्ट होने

की अनुमति देता है, भले ही वे मीलों दूर हों। इंटरनेट WAN का सबसे बुनियादी उदाहरण है, जो दुनिया भर के सभी कंप्यूटरों को एक साथ जोड़ता है। WAN का स्वामित्व और रखरखाव आमतौर पर कई प्रशासकों या जनता के पास होता है।

7. **स्टोरेज-एरिया नेटवर्क (SAN):** एक समर्पित हाई-स्पीड नेटवर्क के रूप में जो स्टोरेज डिवाइस के साझा पूल को कई सर्वरों से जोड़ता है, इस प्रकार के नेटवर्क LAN या WAN पर निर्भर नहीं होते हैं। इसके बजाय, वे भंडारण संसाधनों को नेटवर्क से दूर ले जाते हैं और उन्हें अपने स्वयं के उच्च-प्रदर्शन नेटवर्क में रखते हैं। SAN को उसी तरह से एक्सेस किया जा सकता है जैसे सर्वर से जुड़ी ड्राइव।
8. **सिस्टम-एरिया नेटवर्क (SAN के रूप में भी जाना जाता है):** यह शब्द पिछले दो दशकों में काफी नया है। इसका उपयोग अपेक्षाकृत स्थानीय नेटवर्क की व्याख्या करने के लिए किया जाता है जिसे सर्वर-टू-सर्वर अनुप्रयोगों (क्लस्टर वातावरण), स्टोरेज एरिया नेटवर्क (SAN) और प्रोसेसर-टू-प्रोसेसर अनुप्रयोगों में उच्च गति कनेक्शन प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। SAN से जुड़े कंप्यूटर बहुत तेज गति से एकल प्रणाली के रूप में कार्य करते हैं।
9. **पैसिव ऑप्टिकल लोकल एरिया नेटवर्क (POLAN):** पारंपरिक स्विच-आधारित ईथरनेट लैन के विकल्प के रूप में, पारंपरिक ईथरनेट प्रोटोकॉल और PoE (पावर ओवर इथरनेट) जैसे नेटवर्क अनुप्रयोगों के समर्थन से संबंधित चिंताओं को दूर करने के लिए POLAN तकनीक को संरचित केबलिंग में एकीकृत किया जा सकता है। यह एक पॉइंट-टू-मल्टीपॉइंट लैन आर्किटेक्ट वाले होते है, पोलन (POLAN) ऑप्टिकल स्प्लिटर्स का उपयोग एकल मोड ऑप्टिकल फाइबर के एक स्ट्रैंड से ऑप्टिकल सिग्नल को उपयोगकर्ताओं और उपकरणों की सेवा के लिए कई सिग्नल में विभाजित करने के लिए करता है।
10. **एंटरप्राइज प्राइवेट नेटवर्क (EPN):** इस प्रकार के नेटवर्क उन व्यवसायों द्वारा निर्मित और स्वामित्व में हैं जो कंप्यूटर संसाधनों को साझा करने के लिए अपने विभिन्न स्थानों को सुरक्षित रूप से कनेक्ट करना चाहते हैं।
11. **वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (VPN):** इंटरनेट पर एक निजी नेटवर्क का विस्तार करके, एक वीपीएन अपने उपयोगकर्ताओं को डेटा भेजने और प्राप्त करने देता है जैसे कि उनके डिवाइस निजी नेटवर्क से जुड़े थे– भले ही वे न हों। वर्चुअल पॉइंट-टू-पॉइंट कनेक्शन के माध्यम से, उपयोगकर्ता एक निजी नेटवर्क को दूरस्थ रूप से एक्सेस कर सकते हैं।

विभागीय अभिलेख कक्ष (डिपार्टमेन्टल रिकॉर्ड रूम)

ललित कुमार
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

रिकॉर्ड प्रबंधन संगठन पद्दति (ओ एंड एम) के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। रिकॉर्ड प्रबंधन को न केवल सूचना प्रबंधन के रूप में देखा जाना चाहिए बल्कि व्यापक सुधार एजेंडा के रूप में भी देखा जाना चाहिए, क्योंकि अच्छे रिकॉर्ड प्रबंधन को प्रभावी प्रशासन की कुंजी के रूप में देखा जाता है। अभिलेख प्रबंधन अभिलेखों के निर्माण, नियंत्रण, संरक्षण और व्यवस्थापन के संबंध में अच्छे प्रबंधन के मानक स्थापित करता है। उचित रिकॉर्ड प्रबंधन यह भी सुनिश्चित करता है कि कोई भी अवांछित रिकॉर्ड बहुत लंबे समय तक नहीं रखा जाता है और कोई भी महत्वपूर्ण दस्तावेज समय से पहले नष्ट नहीं हो सकता है। इस दिशा में, इस निदेशालय के ओ एंड एम डिवीजन ने द्रोणा पर ऑनलाइन रिकॉर्ड के बारे में महत्वपूर्ण विवरण बनाए रखने के लिए एक सॉफ्टवेयर–आरएमएस (रिकॉर्ड्स मैनेजमेंट सिस्टम) डिजाइन करने सहित कई पहल की हैं। इसके अलावा, यह महसूस किया गया है कि भले ही महत्वपूर्ण अभिलेखों को डिजिटल रूप में रखा जाता है, जिसमें सीमित जीवन काल होता है, संगठन बेहतर गुणवत्ता और लंबे जीवन काल के लिए प्रस्तुति के अन्य तरीकों का भी पता लगा सकता है।

लोक अभिलेख अधिनियम, 1993 की धारा 5 (2) यह निर्धारित करती है कि "प्रत्येक अभिलेख सृजन एजेंसी आवश्यकतानुसार उचित स्थानों पर आवश्यक संख्या में अभिलेख कक्ष स्थापित करे एवं प्रत्येक अभिलेख कक्ष पर एक अभिलेख अधिकारी की निगरानी सुनिश्चित करें। समय-समय पर भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार के द्वारा संचालित सर्वे एवं निरीक्षण ने यह स्पष्ट किया है कि विभिन्न अभिलेख सृजन एजेंसियों में अभिलेखों के रख-रखाव एवं संरक्षण की स्थिति काफी असंतोषजनक है। उन्हें अभिलेखों के उचित देख-रेख एवं अधिक समय तक सुनिश्चित करने हेतु पर्याप्त कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

नीचे प्रस्तुत की गई प्रमुख विशेषताएं प्राथमिक तौर पर ऐसे अभिलेख वालों के लिए है, जिन्हें मौजूदा कक्षों में रखा जाना है। एक पर्याप्त रूप से सभी सुविधाओं से लैस अभिलेख कक्षों हेतु नए कार्यालय भवन को प्रदान करने की योजना बनाते समय आई एस 2663:1989 (परिशिष्ट 06) अभिलेखागार हेतु भवनों का डिजाइन- इसके प्राथमिक तत्वों से संबंधित परामर्श (द्वितीय संशोधन) (फरवरी 2011 को पुन: स्वीकृत) में भारतीय मानक ब्यूरों द्वारा निर्धारित मानकों का अनुपालन किया जा सकता है।

चित्र संख्या 1 विभागीय अभिलेख कक्ष (डीआरआर)

प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं/इकाइयों में मौजूद/बनाए जाने वाले अभिलेख कक्षों के लिए दिशा निर्देश:-

क) पहले से मौजूदा अभिलेख कक्ष

क्र. सं	मापदंड	परामर्श	टिप्पणी
1.	संवातन	फंफूद की समस्या को कम करने के लिए मौजूद सुविधाओं के साथ उचित संवातन प्रदान किया जाना चाहिए।	सापेक्ष सूर्य के प्रकाश से बचना चाहिए।
2.	फर्श की स्थिति	फिसलन वाले फर्श से बचना चाहिए।	यह आर्द्रता को कम करने में मदद करेगा।
3.	मार्गिका	ट्रॉली के साथ कार्मिकों के स्वतंत्र आवागमन पर विचार किया जाना चाहिए।	यह किसी भी प्रकार की तात्कालिकता एवं सरल आवागतन की स्थिति में मदद करेगा।
4.	वातानुकूलन	झरोखों के जैसे वातानुकूलक की योजना की जानी चाहिए। यदि यह संभव नहीं तो, एयर सरकुलेटर/पंखों/निर्वातक पंखों की योजना की जानी चाहिए।	अभिलेखों में अधिक समय तक वातानुकूलित वातावरण अच्छा होता है। इससे आर्द्रता का प्रभाव कम होता है।
5.	प्रकाश व्यवस्था	उचित प्रकाश व्यवस्था की योजना, खुले/नग्न बिजली के तारों की व्यवस्था से बचें।	यह अप्रत्याशित शॉट सर्किट के खतरे को कम करेगा।
6.	अग्नि रक्षा	अग्नि संसूचना अलार्म प्रणाली एवं अग्नि शामक उपकरणों को स्थापित करने की योजनाएं बनाएं।	यह अभिलेख कक्ष में संरक्षित अभिलेखों को सुरक्षित रखने में सहयोग करेगा।

7.	पेंटिंग	समय-समय पर दीवारों की रंगाई कराने की योजना करें।	अच्छी तरह से की गई रंगाई प्रकाश के परावर्तन द्वारा कक्ष में रोशनी बढ़ाने में सहयोग करता है।

ख) नव नियोजित रिकार्ड रूम के लिए

क्र. सं.	मानदंड	सिफारिश	टिप्पणी
i)	भवन का अनुस्थापन/ दिशा	इसे पूर्व से पश्चिम होना चाहिए।	प्रत्यक्ष धूप से बचा जाए।
ii)	फर्श की स्थिति	1000 केजीएफ/एम वहन करने की क्षमता	
iii)	गैंगवे	1.5 मीटर चौड़ा 0.8 मीटर	चारों ओर रैक के बीच में
iv)	अभिलेख रूम की लंबाई-चौड़ाई		
क.	स्पष्ट लंबाई	(एन-1)+3.8 मीटर	एन- रैक के लिए पंक्ति की संख्या
ख.	स्पष्ट चौड़ाई	रैक के 01 रॉ की लंबाई+3 मीटर	
ग.	स्पष्ट ऊँचाई	छत से फर्श तक 2.4 मीटर	
v)	रैक की लंबाई-चौड़ाई		
क.	रैक की गहराई	0.8 मीटर	
ख.	रैक की ऊँचाई	2.2 मीटर	

अभिलेख कक्ष (रिकार्ड रूम)

1. अभिलेख बनाने वाली सभी एजेंसियों के लिए पृथक अभिलेख रूम/स्टैक एरिया की बहुत अधिक आवश्यकता है। संभवतः अभिलेख रूम किसी भी भवन के भूतल पर स्थित होना चाहिए। यदि इसकी खिड़कियाँ बाहर (बाहर अथवा भीतर प्राँगन में) खुलती हो तो इसे लोहे के ग्रिल एवं तारों की जाली से बना होना चाहिए। कमरे में बारिश के छींटों से बचने के लिए जहाँ खिड़कियाँ खुल रही हैं, वहाँ छज्जा होना चाहिए। अभिलेख की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए ऐसे कमरों में सीमित प्रवेश का सुझाव दिया जाता है।
2. अभिलेख रूम जिस तल पर है, उसकी बनावट ऐसी होनी चाहिए कि अभिलेख वहन करनेवाली ट्रॉलियों इत्यादि के सहज स्थानांतरण में सहूलियत हो।
3. भवन की बनावट एवं डिज़ाइन ऐसी होनी चाहिए कि स्टैक स्थान, अभिलेख संदर्भ स्थान एवं स्वागतकक्ष पृथक हो।

जल निकास

अभिलेख कक्ष के लिए स्थान चयन करते वक्त यह सुनिश्चित किया जाए कि अभिलेख कक्ष भवन के करीब, ऊपर अथवा नीचे पानी की कोई पाइप अथवा नाली न हो। इसके अतिरिक्त, भवन के स्टेक क्षेत्र में नाली में जमाव की स्थिति अथवा पानी की पाइप में आकस्मिक क्षति हो जाने की वजह से जल के किसी प्रवाह को रोकने के लिए इसका तल, टाइल भवन के अन्य तलों के सामान्य स्तर से कुछ सेंटीमीटर ऊँचा होना चाहिए।

वातानुकूलन

1. अभिलेखों को लंबे समय तक संरक्षित करने के लिए वातानुकूलित माहौल अत्यधिक उपयुक्त होता है। इसलिए अभिलेख कक्ष के लिए वातानुकूलन आवश्यक है। मौजूदा भवन जिसमें केंद्रीय वातानुकूलन नहीं है, उसमें पैकेज टाइप के वातानुकूलक अथवा विंडो टाइप के वातानुकूलक के प्रयोग की सिफारिश की जाती है।
2. प्रभावी वातानुकूलन के लिए वायु प्रवाह की ऐसी योजना बनानी चाहिए जिसके वातानुकूलित परिवेश में लीक कम-से-कम हो। वातानुकूलित भार की गणना करते समय अनेक शेल्विंग उपकरणों, आर्काइवल सामग्री, अभिलेख कक्ष में बैठनेवाले व्यक्तियों, अंदर-बाहर अनेक अभिलेखों का चालन एवं लाइटिंग/वॉटेज का ध्यान रखा जाना चाहिए।
3. वातानुकूलित अभिलेख कक्ष में आर्द्रता एवं तापमान नियमित रूप से मापा जाना चाहिए। अभिलेखों के रख-रखाव के लिए अनुकूल स्थिति (i) तापमान 22°-25° तक तथा (ii) सापेक्ष आर्द्रता 50+-5% है।
4. वातानुकूलित क्षेत्र में उपयुक्त आर्द्रता नियंत्रण बनाए रखने के क्रम में यह आवश्यक है कि दीवारों एवं फर्श से नमी की बढ़ोत्तरी नहीं होती है। फर्श वॉटरप्रूफ होना चाहिए तथा दीवारे वॉटरप्रूफ ऑयल पेंट से रंगी होनी चाहिए।
5. अभिलेख कक्ष के लिए वातानुकूलन की योजना बनाते समय यह सुनिश्चित किया जाए कि वातानुकूलन पूरे वर्ष तक होता रहे। निरंतर चलने के कारण ऐसे प्लांटों की सेवा में आकस्मिक बाधा पहुँच सकती है। अत: एक वैकल्पिक प्लांट की व्यवस्था भी की जा सकती है, ऐसा न हो कि इस प्रकार की बाधा ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दे जो अभिलेखों की क्षति को बढ़ा दे।

गैर वातानुकूलित क्षेत्र

1. आर्थिक संसाधनों को ध्यान में रखते हुए अनगिनत मामलों में अभिलेख कक्ष का वातानुकूलित किया जाना संभव नहीं हो सकता है। ऐसे मामलों में एयर कैलकूलेटर, पंखें एवं वायु निकासी पंखें मुहैया करवाकर स्टोर रूम में हवा के यथोचित प्रवाह किया जाना चाहिए ताकि उच्च आर्द्रता के प्रभाव से बचा जा सके एवं स्टोरेज रूम में स्थिर वायु के जमाव के बनने की प्रकिया को रोका जा सके। सिलिका जेल अथवा एनैमेल में नमी रहित कैल्सियम क्लोराइड जैसे रसायनों अथवा चमकदार मिट्टी के घड़े का प्रयोग रूम में आर्द्रता को कम करने में सहयोग करते हैं। आजकल यांत्रिक रूप से नमी कम करनेवाले उपकरण उपलब्ध हैं तथा बारिश के दौरान उनका प्रयोग अति आर्द्रतावाले जलवायु के हानिकारक प्रभाव की जाँच में सहयोग करेगा।
2. ऐसे रूम का चयन करके ही अभिलेख कक्ष का सही तापमान बनाए रखा जा सकता है जो अंदर स्थित हो अथवा जिनके चारों तरफ बरामदा हो। गर्मी के मौसम में, हवा के उचित प्रवाह को बनाए रखने के लिए अभिलेख कक्ष को एयर कैलकूलेटर, इलेक्ट्रिक पंखों एवं एग्ज़ोस्ट पंखों के सहारे उपयुक्त बनाया जाना चाहिए ताकि उच्च तापमान को कम किया जा सके। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि रिकॉर्ड पर सीधे धूप न पड़े। इसे खिड़कियों पर पर्दे

लगाकर टिन्टेड ग्लास-पेन्स अथवा उष्मा प्रतिरोधी ग्लास-पेन्स लगाकर धूप से बचा जा सकता है।

शेल्विंग

1. अभिलेख कक्ष में शेल्विंग इस तरह से होना चाहिए कि यह डिजाइन में सरल, टिकाऊ, साफ करने में आसान हो तथा अग्नि से अभिलेखों को अधिकतम सुरक्षा प्रदान किया जा सके और सर्विसिंग या अभिलेख के लिए अधिकतम सुविधा सुनिश्चित की जा सके।
2. शेल्व को दीवारों से दूर सीधे फिक्सरों पर और पूरे भंडारण में समान दूरी पर लगाया जाना चाहिए। 1.40 मीटर के केंद्रीय गैंगवे के साथ लगातार शेल्फ पंक्तियों के बीच की दूरी 0.7 से 1 मीटर हो सकती है या अभिलेखागार के लिए भवनों के डिजाइन में बुनियादी तत्वों के लिए आईएस: 2663–1989 प्रक्रिया संहिता में निर्धारित आवश्यकता के अनुसार हो सकती है। शेल्व की क्रमिक पंक्तियों के बीच की दूरी अभिलेख/फाइलों के आयामों और उन पर अभिलेख श्रृंखला रखने के तरीके पर निर्भर हो सकती है। ऊपर उल्लिखित भारतीय मानक का अवलोकन सहायक होगा।
3. यदि अभिलेख कक्ष में स्टील की शेल्विंग उपलब्ध कराई जाती है तो इस पर जंगरोधी पेंट होना चाहिए। पेंट टिकाऊ और दस्तावेजों के लिए गैर-हानिकारक होना चाहिए। लकड़ी के शेल्व का दीमक के संक्रमण से बचाव करना चाहिए। शेल्व और सपोर्ट में नुकीले किनारों और कोनों को गोल किया जाना चाहिए नहीं तो इससे दस्तावेजों को भौतिक क्षति हो सकती है।
4. अभिलेख कक्ष में चल भंडारण प्रणालियों जैसे कॉम्पैक्टर को भी अधिष्ठापित किया जा सकता है जो अधिकतम भंडारण क्षमता प्रदान करती है। इन्हें विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्रियों के साथ फिट किया जा सकता है। भंडारित सूचना तक पहुँचने के लिए चल तख्तों को हैंड व्हील के उपयोग से आसानी से गति में लाया जा सकता है तथा अतिरिक्त सुरक्षा हेतु लॉक किया जा सकता है। इस प्रकार के तख्तीकरण का यह लाभ है कि यह मितव्ययी एवं कम जगह लेने वाले होते है, यह धूल एवं सूर्य प्रकाश से दस्तावेज संपत्तियों की सुरक्षा को अच्छी तरह सुनिश्चित करते हैं। एक अन्य सुरक्षा यह है कि लॉक करने की सुविधा के वजह से स्टैक क्षेत्र को सुरक्षा क्षेत्र में परिवर्तित किया जा सकता है। परन्तु ऐसी प्रणाली के अधिष्ठापन से फर्श पर भार बढता है इसलिए अधिष्ठापन से पूर्व भवन की भार सहन करने की क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए।

संग्रहण

1. अभिलेख कक्ष में संग्रह थोक, मात्रा और आकार में भिन्न-भिन्न होता है और इसमें आम तौर पर जिल्द वाल्युमों, लूज शीट्स, फाइलें, पांडुलिपियां, नक्शे, चार्ट, योजनाएं एवं आरेखण आदि शामिल होते हैं। विशिष्ट सामग्रियों के लिए आवश्यक शेल्विंग की व्यवस्था प्रकृति, आकार और थोक सामग्रियों के अनुसार डिजाइनिंग की आवश्यकता होती है। इन शेल्वस को डिजाइन करते समय यह सुनिश्चित किया जाए कि न तो ये और न ही उन पर रखी सामग्री दीवारों, छतों या फर्श को छूती हो। दीवार छत या फर्श से दूरी कम से कम 15 से.मी. होनी चाहिए।
2. इन अभिलेखों को शेल्व के बीच पर्याप्त स्थान के साथ स्टैक किया जाना चाहिए ताकि हवा का प्रवाह निर्वाध हो सके और उच्च आर्द्रता की पॉकेटों के गठन को रोका जा सके। बिना जिल्द लगे अभिलेख या तो 5 प्लाई बोर्ड के 2 टुकड़ों के बीच बांधे जा सकते हैं या गुणवत्ता सामग्री से बने कार्टून बॉक्स में रखे जा सकते हैं।
3. अभिलेखों की मूवमेंट और उचित सर्विसिंग के लिए, स्टेप लैडर्स या प्लेटफॉर्म टाइप लैडर्स और स्वीवेल कैस्टर्स के

साथ निर्धारित किए गए ट्रॉलियों का उपयोग किया जा सकता है।

4. कीटों के संक्रमण के कारण होने वाले नुकसान से अभिलेखों की सुरक्षा के लिए, अभिलेख कक्ष में शेल्व के नीचे, कैबिनेट के पीछे और कोनों आदि में भी कीटनाशक घोल का छिड़काव किया जाना चाहिए। फर्श और दीवारों की सभी दरारें भर दी जानी चाहिए ताकि कीटों की छिपने की जगह न हो। स्प्रे गन या प्रेशर गन या इसी तरह के किसी अन्य उपकरण का उपयोग किया जा सकता है। हालांकि, केवल उन्हीं रसायनों का छिड़काव किया जाना चाहिए जिनका कागज और अन्य अभिलेख घटकों के टिकाउपन और स्थायित्व पर प्रभाव का सही ढ़ंग से अध्ययन किया गया हो।
5. एक गैर-वातानुकूलित क्षेत्र में जालीदार कपड़े में बंधी गेंदों या शेल्व पर रखी ईटों के रूप में नेफथलीन जैसे परिरक्षकों का उपयोग उच्च अभिलेखों को कीड़ों से सुरक्षित रखने में मदद करता है। फ्लिट, शेल-टैक्स और अन्य संबंधित कीटनाशकों जैसे कीटनाशक फॉर्मूलेशन प्रभावकारी है।
6. आम तौर पर अभिलेख का ज्यादा नुकसान रोडेन्ट द्वारा किया जाता है। जबकि आउटलेट ड्रेन में उचित वायर मेस का उपयोग करके अभिलेख कक्ष में उनके प्रवेश को रोकना वांछनीय है। अभिलेख कक्ष में उनके प्रवेश के मामले में उनके खतरे को खत्म करने के लिए चूहे-जाल लगाया जाना चाहिए। भंडारण क्षेत्र में न तो खाने-पीने की चीजें और न ही धूम्रपान, न ही नेकेड फ्लेम की अनुमति दी जानी चाहिए।
7. अभिलेख कक्ष में आर्द्रता में वृद्धि के संबंध में संकेत मिलते ही निवारक कार्रवाई शुरू की जानी चाहिए। इसके अलावा, किसी भी कीट के संक्रमण या फंगस के विकास का पता चलने या पहचान होने पर भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली जैसे संस्थानों की सलाह ली जानी चाहिए।
8. धूल रोधी भवन और वातानुकूलित होने के बावजूद, धूल स्टोर की सामग्री तक पहुंच ही जाती है। इसलिए भंडारण क्षेत्र में वैक्यूम क्लीनर की मदद से नियमित रूप से धूल हटाने का संचालन, स्टोर सामग्री से धूल हटाने के लिए वांछनीय है। अभिलेख कक्ष को भी बिल्कुल साफ रखना चाहिए। धूल की सफाई करने वाले कर्मचारियों को डस्ट रेस्पिरेटर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। सर्जिकल लाइनिंग वाले कपड़ों के बैग संतोषजनक श्वास यंत्र के रूप में काम करता है जिसे कभी-कभी बदला जा सकता है ।

प्रकाश-व्यवस्था

प्रत्येक अभिलेख कक्ष के लिए प्राकृतिक अथवा कृत्रिम प्रकाश की अच्छी व्यवस्था आवश्यक है। आधुनिक प्रकाश व्यवस्था का उद्देश्य विभिन्न कमरों के लिए अलग-अलग तीव्रता की डिफ्यूज्ड रोशनी प्रदान करना है। प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने वाले पेंट का उपयोग करके प्रकाश व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है।

अग्निशमन व्यवस्था

1. किसी भी आकस्मिक आग से अभिलेखों की सुरक्षा के लिए, इलैक्ट्रिक वायरिंग को कॉनडिट पाइपों के माध्यम से होना चाहिए और भंडारण क्षेत्र में लगे रोशनी आदि का मुख्य नियंत्रण स्विच अभिलेख कक्ष के बाहर स्थित होना चाहिए। अभिलेख कक्ष को एकल रूप में (दीवार,दरवाजे,खिडकियॉं आदि सहित) न्यूनतम 01 घंटे की फायर रेटिंग प्रदान की जानी चाहिए। बड़े अभिलेख कक्ष में भंडारण स्थान को अलग अग्नि प्रतिरोधी कम्पार्टमेंट में विभाजित किया जाना चाहिए।

अतिरिक्त स्वचालित डैम्पर्स को केंद्रीय वातानुकूलित क्षेत्र में लगाया जाना चाहिए ताकि आग लगने की स्थिति में नलिकाओं को तुरंत बंद किया जा सके जिससे अन्य कम्पार्टमेंट में आग को फैलने से रोका जा सके। जहां आवश्यक हो अभिलेखीय सामग्री को सुरक्षित रूप से हटाने के लिए अभिलेख रूम में मुख्य प्रवेश द्वार के बगल में आपात निकास उपलब्ध कराने की सलाह दी जाती है। किसी भी प्रकार की अग्नि की पहचान हेतु हर अभिलेख कक्ष के भंडारण क्षेत्र में बहुमापदंडीय संसूचक (ताप एवं धुंआ) और माइक्रोप्रोसेसर आधारित एनालॉग ट्रेसेबल अग्नि नियंत्रण पैनल युक्त अग्नि पहचान एवं अलार्म प्रणाली लगा होना चाहिए। कमरे में नेकेड लाइट, हीटर और धूम्रपान का प्रयोग करना प्रतिबंधित होना चाहिए। आकस्मिक आग से बचने के लिए निवारक उपाय के रूप में कार्यालय समय के बाद सभी लाइट और पावर सर्किट बंद कर दिए जाने चाहिए। इस क्षेत्र के लिए उपलब्ध कराए गए वॉच एवं वार्ड स्टाफ यदि आवश्यक हो तो टॉर्च का उपयोग कर सकता हैं।

अस्थायी लाइट, पंखे के लिए ढीले और साधारण लचीले वायर, एयर-सरकुलेशन और रिपोजिटरी के लिए अन्य बिजली के उपकरणों से बचा जाना चाहिए और इसके बजाय 'वर्कशॉप ब्राडेड एंड आर्मर्ड' लचीले वायर का उपयोग किया जाना चाहिए। रिपोजिटरी में विद्युत उपकरण और फिटिंग ढ़ीले कनेक्शन और दोषों को सुधारने के लिए समय-समय पर जांच की जानी चाहिए।

2. अभिलेख कक्ष में सुगमता से प्राप्त हो जाने वाले समुचित स्थानों पर अग्नि नियंत्रण हेतु भारतीय मानक के अनुरूप स्पष्ट एजेंट प्रकार 15683 (अति महत्वपूर्ण दस्तावेजों के लिए) और कार्बन-डाई-ऑक्साइड (सीओ2) प्रकार (अन्य दस्तावेजों के लिए) उपयुक्त संख्या में पोर्टेबल अग्नि शामक रखे जाने चाहिए।इसके अलावा, किसी भी भीषण आग से मुकाबला करने के लिए सुविधाजनक स्थानों पर पानी के पाइप और हौज लगाए जाने चाहिए।
3. आग का पता लगाने या आग पर काबू पाने के लिए सभी उपकरणों की नियमित अंतराल पर जांच की जानी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे सक्रिय अवस्था में हैं। इसी प्रकार अभिलेखों के भंडारण से जुड़े कर्मचारियों को अग्निशमन में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। प्रशिक्षित कर्मचारियों को सतर्क रखने के लिए दो महीनों में कम से कम एक बार फायर ड्रिल की व्यवस्था की जा सकती है।
4. अभिलेख कक्ष में फाइल एवं अग्निशमन की रोकथाम संबंधी निर्देश प्रमुखता से प्रदर्शित किए जाने चाहिए, इसी प्रकार अभिलेख कक्ष में एक केंद्रीय स्थान पर अग्निशमन सेवा के टेलीफोन नंबर भी प्रदर्शित किए जाने चाहिए। आवश्यकता के अनुरूप विशेषज्ञ अग्निशामक एजेंसियां शीघ्र सहायता देने में मदद करेंगी।

उचित साफ-सफाई, स्वास्थ्य संबंधी शर्तों का निर्माण, उचित वातानुकूलित वातारण के साथ सतत कार्मिक सतर्कता अभिलेखों के उचित रख-रखाव और उनकी दीर्घ आयु को आसान बनाएंगे। अभिलेख कक्ष की संपूर्ण जिम्मेदारी लोक अभिलेख, 1993 की धारा 5 की उप-धारा 1 के आलोक में नामित अभिलेख अधिकारी (रिकॉर्ड ऑफिसर) को सौंपी जानी चाहिए।

राष्ट्रपति चुनाव

अशोक कुमार
सिविल निर्माण एवं संपदा निदेशालय

भारत में कैसे होता है राष्ट्रपति चुनाव?

नई दिल्ली: राष्ट्रपति का चुनाव आम जनता के वोटों से तय नहीं होता संविधान में इसका अलग से नियम बनाया गया है। हमारा संविधान पूरे विश्व के तमाम संविधानों से मिला जुलाकर बनाया गया है। हमारे यहां प्रधानमंत्री सर्वोच्च शक्ति रखता है जोकि हमने ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली से लिया है वहीं अमेरिका में राष्ट्रपति सर्वेसर्वा होता है। ऐसे ही तमाम देशों का अपना-अपना संविधान है। बाकी चुनावों की तरह भारत में राष्ट्रपति चुनाव, चुनाव आयोग की देखरेख में ही होता है। चुनाव आयोग द्वारा देश के नए राष्ट्रपति के चुनाव कार्यक्रम की घोषणा कर दी गई है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का कार्यकाल 24 जुलाई को समाप्त हो रहा है और अगले राष्ट्रपति का चुनाव इससे पहले ही होना है।

भारत में राष्ट्रपति का चुनाव सीधे जनता के वोटों से तय नहीं होता। बल्कि जनता जिनको चुनती है उनके वोटों से राष्ट्रपति चुना जाता है। इसीलिए इसको अप्रत्यक्ष निर्वाचन कहते हैं। यहां आपको फिर से स्पष्ट कर दें, सिर्फ वो ही राष्ट्रपति चुनाव में मतदान कर सकता है, जिसका चुनाव जनता करती है। यानी सांसद और विधायक। राष्ट्रपति चुनाव में संसद में नामित सदस्य और विधान परिषदों के सदस्य वोट नहीं डाल सकते हैं, क्योंकि ये जनता द्वारा सीधे नहीं चुने जाते हैं।

अप्रत्यक्ष चुनाव: राष्ट्रपति का चुनाव एक निर्वाचक मंडल यानी इलेक्टोरल कॉलेज करता है। संविधान के अनुच्छेद 54 में इसका उल्लेख है। यानी जनता अपने राष्ट्रपति का चुनाव सीधे नहीं करती, बल्कि उसके वोट से चुने गए लोग करते हैं। यह है अप्रत्यक्ष निर्वाचन।

मताधिकार: इस चुनाव में सभी प्रदेशों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य और लोकसभा तथा राज्यसभा में चुनकर आए सांसद वोट डालते हैं। राष्ट्रपति की ओर से संसद में मनोनीत सदस्य वोट नहीं डाल सकते। राज्यों की विधान परिषदों के सदस्यों को भी वोटिंग का अधिकार नहीं है, क्योंकि वे जनता द्वारा चुने गए सदस्य नहीं होते।

सिंगल ट्रांसफरेबल वोट: इस चुनाव में एक खास तरीके से वोटिंग होती है, जिसे सिंगल ट्रांसफरेबल वोट सिस्टम कहते हैं। यानी मतदाता एक ही वोट देता है, लेकिन वह तमाम कैंडिडेट्स में से अपनी प्राथमिकता तय कर देता है। यानी वह बैलट पेपर पर बता देता है कि उसकी पहली पसंद कौन है और दूसरी, तीसरी कौन। यदि पहली पसंद वाले वोटों से

विजेता का फैसला नहीं हो सका, तो उम्मीदवार के खाते में वोटर की दूसरी पसंद को नए सिंगल वोट की तरह ट्रांसफर किया जाता है। इसलिए इसे सिंगल ट्रांसफरेबल वोट कहा जाता है।

आनुपातिक प्रतिनिधित्व की व्यवस्था: वोट डालने वाले सांसदों और विधायकों के वोट का वेटेज अलग-अलग होता है। दो राज्यों के विधायकों के वोटों का वेटेज भी अलग होता है। यह वेटेज जिस तरह तय किया जाता है, उसे आनुपातिक प्रतिनिधित्व व्यवस्था कहते हैं। वर्तमान में देश के राज्यों के सभी विधायकों के वोट का वैल्यू 5 लाख 43 हजार 231 है। वहीं, लोकसभा के सांसदों का कुल वैल्यू 5 लाख 43 हजार 200 है।

कैसे तय होता है यह वेटेज?

एमएलए के वोट का वेटेज: विधायक के मामले में जिस राज्य का विधायक हो, उन राज्य की आबादी देखी जाती है। इसके साथ उस प्रदेश के विधानसभा सदस्यों की संख्या को भी ध्यान में रखा जाता है। वेटेज निकालने के लिए प्रदेश की जनसंख्या को निर्वाचित एमएलए की संख्या से भाग किया जाता है। इस तरह जो संख्या मिलती है, उसे फिर 1000 से भाग किया जाता है। अब जो आंकड़ा हाथ लगता है, वही उस राज्य के एक विधायक के वोट का वेटेज होता है। 1000 से भाग देने पर अगर शेष 500 से ज्यादा हो तो वेटेज में 1 जोड़ दिया जाता है।

एमपी के वोट का वेटेज: सांसदों के मतों के वेटेज का गणित अलग है। सबसे पहले सभी राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य के वोटों का वेटेज जोड़ा जाता है। अब इस सामूहिक वेटेज को राज्यसभा और लोकसभा के निर्वाचित सदस्य की कुल संख्या से भाग किया जाता है। इस तरह जो नंबर मिलता है, वह एक सांसद के वोट का वेटेज होता है। अगर इस तरह भाग देने पर शेष 0.5 से ज्यादा बचता हो तो वेटेज में एक का इजाफा हो जाता है।

वोटों की गणना

राष्ट्रपति के चुनाव में सबसे ज्यादा वोट हासिल करने से ही जीत तय नहीं होती है। राष्ट्रपति वही बनता है, जो मतदाताओं अर्थात सांसदों और विधायकों के वोटों के कुल वेटेज का आधा से ज्यादा हिस्सा हासिल करे। यानी इस चुनाव में पहले से तय होता है कि जीतने वाले को कितना वोट यानी वेटेज पाना होगा। इस समय राष्ट्रपति चुनाव के लिए जो इलेक्टोरल कॉलेज है, उसके सदस्यों के वोटों का कुल वेटेज 10,98,882 है। तो जीत के लिए कैंडिडेट को हासिल करने होंगे 5,49,442 वोट। जो प्रत्याशी सबसे पहले यह कोटा हासिल करता है, वह राष्ट्रपति चुन लिया जाता है। लेकिन सबसे पहले का मतलब क्या है?

प्रायॉरिटी का महत्व

इस सबसे पहले का मतलब समझने के लिए वोट काउंटिंग में प्रायॉरिटी पर गौर करना होगा। सांसद या विधायक मतदान करते वक्त अपने मतपत्र पर बता देते हैं कि उनकी पहली पसंद वाला प्रत्याशी कौन है, दूसरी पसंद वाला कौन और तीसरी पसंद वाला कौन आदि। सबसे पहले सभी मतपत्रों पर दर्ज प्रथम वरीयता के मत गिने जाते हैं। यदि इस पहली गिनती में ही कोई प्रत्याशी जीत के लिए जरूरी वेटेज का कोटा हासिल कर ले, तो उसकी जीत हो गई। लेकिन अगर ऐसा न हो सका, तो फिर एक और कदम उठाया जाता है।

कैसे रेस से बाहर होते जाते हैं कैंडिडेट

पहले उस प्रत्याशी को रेस से बाहर किया जाता है, जिसे पहली गिनती में सबसे कम वोट मिले। लेकिन उसको मिले वोटों में से यह देखा जाता है कि उनकी दूसरी पसंद के कितने वोट किस उम्मीदवार को मिले हैं। फिर सिर्फ दूसरी पसंद के ये वोट बचे हुए उम्मीदवारों के खाते में ट्रांसफर किए जाते हैं। यदि ये वोट मिल जाने से किसी उम्मीदवार के कुल वोट तय संख्या तक पहुंच गए तो वह उम्मीदवार विजयी माना जाएगा। अन्यथा दूसरे दौर में सबसे कम वोट पाने वाला रेस से बाहर हो जाएगा और यह प्रक्रिया फिर से दोहराई जाएगी। इस तरह वोटर का सिंगल वोट ही ट्रांसफर होता है। यानी ऐसी मतदान प्रणाली में कोई बहुसंख्यक समूह अपने दम पर जीत का फैसला नहीं कर सकता है। छोटे-छोटे दूसरे समूह के वोट निर्णायक साबित हो सकते हैं। यानी जरूरी नहीं कि लोकसभा और राज्यसभा में जिस पार्टी का बहुमत हो, उसी का दबदबा चले। विधायकों का वोट भी अहम है।

रेस से बाहर करने का नियम

सेकंड प्रायॉरिटी के वोट ट्रांसफर होने के बाद सबसे कम वोट वाले प्रत्याशी को बाहर करने की नौबत आने पर अगर दो प्रत्याशियों को सबसे कम वोट मिले हों, तो उसे बाहर किया जाता है, जिसके फर्स्ट प्रायॉरिटी वाले वोट कम हों। अगर अंत तक किसी प्रत्याशी को तय कोटा न मिले, तो भी इस प्रक्रिया में प्रत्याशी बारी-बारी से रेस से बाहर होते रहते हैं और आखिर में जो बचेगा, वही विजयी होगा।

भारतीय मुद्रा का इतिहास: रुपये का विकास

अमित बंसल
कार्मिक निदेशालय

मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभिक चरण में वस्तु विनिमय चलता था लेकिन बाद में लोगों की जरूरतें बढ़ी और वस्तु विनिमय से कठिनाइयाँ पैदा होने लगीं जिसके कारण कौड़ियों से व्यापार आरम्भ हुआ जो कि बाद में सिक्कों में बदल गया।

रुपये का पूरा इतिहास जानने से पहले हम ये भी जान लेते हैं कि प्राचीन भारत में मुद्रा को किस तरह वर्गीकृत किया जाता था। आज जिस एक रुपये की क़ीमत हमारे लिए न के बराबर है कभी वह बहुत बड़ी मुद्रा माना जाता था और उससे छोटी कई मुद्राएं भी चलन में थी। कई बार हम अपनी ग़रीबी को बताने के लिए जिस जुमले का इस्तेमाल करते हैं- हमारे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं है, वह भी मुद्रा हुआ करती थी और उसे प्राचीन भारत में सबसे छोटी मुद्रा के रूप में जाना जाता था।

आप फूटी कौड़ी से रुपये तक के वर्गीकरण को इस तरह समझ सकते हैं-
फूटी कौड़ी (Phootie Cowrie) से कौड़ी, (3 फूटी कौड़ी–1 कौड़ी) कौड़ी से दमड़ी (Damri), (10 कौड़ी–1 दमड़ी) दमड़ी से धेला (Dhela), (2 दमड़ी–1 धेला) धेला से पाई (Pie), 1 धेला = 1.5, पाई पाई से पैसा (Paisa), 3 पाई–1 पैसा (पुराना), पैसा से आना (Aana), 4 पैसा–1 आना, 16 आना–1 रुपया।

भारतीय मौद्रिक प्रणाली

इतिहासकार के. वी. आर. आयंगर का मानना है कि प्राचीन भारत में मुद्राएं राजसत्ता के प्रतीक के रूप में ग्रहण की जाती थीं। परंतु प्रारंभ में किस व्यक्ति अथवा संस्था ने इन्हें जन्म दिया, यह ज्ञात नहीं है। अनुमान यह किया जाता है कि व्यापारी वर्ग ने आदान-प्रदान की सुविधा हेतु सर्वप्रथम सिक्के तैयार करवाए। संभवत: प्रारंभ में राज्य इसके प्रति उदासीन थे। परंतु परवर्ती युगों में इस पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से ज्ञात होता है कि मुद्रा निर्माण पर पूर्णत: राज्य का अधिकार था। कुछ विद्वानों का मानना है कि भारत में मुद्राओं का प्रचलन विदेशी प्रभाव का परिणाम है। वहीं कुछ इसे धरती की उपज मानते हैं। विल्सन और प्रिंसेप जैसे विद्वानों का मानना है कि भारत भूमि पर सिक्कों का आविर्भाव यूनानी आक्रमण के पश्चात् हुआ। वहीं जॉन एलन उनकी इस अवधारणा को गलत बताते हुए कहते हैं कि 'प्रारम्भिक भारतीय सिक्के जैसे 'कार्षापण' अथवा 'आहत' और यूनानी सिक्कों के मध्य कोई सम्पर्क नहीं था। भारत उन गिने-चुने देशों में शुमार है जिसने सबसे पहले सिक्के जारी किए। परिणामत: इसके इतिहास में अनेक मौद्रिक इकाइयों (मुद्राओं) का उल्लेख मिलता है। इस बात के कुछ ऐतिहासिक प्रमाण मिले हैं कि पहले सिक्के 2500 और 1750 ईसा-

पूर्व के बीच कभी जारी किए गए थे। लेकिन दस्तावेजी प्रमाण सातवीं/छठी शताब्दी ईसा-पूर्व के बीच सिक्कों की ढलाई के ही मिले हैं। इन सिक्कों के निर्माण की विशिष्ट तकनीक के कारण इन्हें पंच मार्क्ड सिक्के कहा जाता है। अगली कुछ सदियों के दौरान जैसे-जैसे साम्राज्यों का उदय और पतन हुआ, देश की मुद्राओं में इसका प्रगति-क्रम दिखाई देने लगा ।

इन मुद्राओं से प्रायः तत्कालीन राजवंश, सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं, आराध्य देवों और प्रकृति का परिचय मिलता था। इनमें इंडो-ग्रीक काल के यूनानी देवताओं और उसके बाद के पश्चिमी क्षत्रप वाली तांबे की मुद्राएं शामिल हैं जो पहली और चौथी शताब्दी (ईसवीं) के दौरान जारी की गई थीं।

अरबों ने 712 ईसवीं में भारत के सिंध प्रांत को जीत कर उस पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। बारहवीं शताब्दी तक दिल्ली के तुर्क सुल्तानों ने लंबे समय से चली आ रही अरबी डिजाइन को हटाकर उनके स्थान पर इस्लामी लिखावटों को मुद्रित कराया। इस मुद्रा को टका कहा जाता था। दिल्ली के सुल्तानों ने इस मौद्रिक प्रणाली का मानकीकरण करने का प्रयास किया और फिर बाद में सोने, चांदी और तांबे की मुद्राओं का प्रचलन शुरू हो गया।

रुपये का इतिहास

अफ़ग़ान सुल्तान शेरशाह सूरी (1540 से 1545) ने चांदी के 'रुपैये' अथवा रुपये के सिक्के की शुरूआत की। पूर्व-उपनिवेशकाल के भारत के राजे-रजवाड़ों ने अपनी अलग मुद्राओं की ढलाई करवाई, जो मुख्यत: चांदी के रुपये जैसे ही दिखती थीं, केवल उन पर उनके मूल स्थान (रियासतों) की क्षेत्रीय विशेषताएं अंकित होती थी।

'रुपया' शब्द संस्कृत शब्द रुप्यकम से लिया गया है, जिसका अर्थ है चांदी का सिक्का। रुपया शब्द सन् 1540–1545 के बीच शेरशाह सूरी के द्वारा जारी किए गए चाँदी के सिक्कों के लिए उपयोग में लाया गया। मूल रुपया चाँदी का सिक्का होता था, जिसका वजन 11.34 ग्राम था। यह सिक्का ब्रिटिश भारत के शासन काल में भी उपयोग में लाया जाता रहा।सन् 1526 में मुग़लों का शासनकाल शुरू होने के बाद समूचे साम्राज्य में एकीकृत और सुगठित मौद्रिक प्रणाली की शुरूआत हुई। बीसवीं सदी में फ़ारस की खाड़ी के देशों तथा अरब मुल्कों में भारतीय रुपया मुद्रा के तौर पर प्रचलित थी।

बैंक नोटों का प्रचलन

अट्ठाहरवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, एजेंसी घरानों ने बैंकों का विकास किया। बैंक ऑफ बंगाल, द बैंक ऑफ हिन्दुस्तान, ओरियंटल बैंक कॉरपोरेशन और द बैंक ऑफ वेस्टर्न इंडिया इनमें प्रमुख थे। इन बैंकों ने अपनी अलग-अलग कागजी मुद्राएं उर्दू, बंगला और देवनागरी लिपियों में मुद्रित करवाई। लगभग सौ वर्षों तक निजी और प्रेसिडेंसी बैंकों द्वारा जारी बैंक नोटों का प्रचलन बना रहा। परन्तु 1861 में पेपर करेंसी क़ानून बनने के बाद इस पर केवल सरकार का एकाधिकार रह गया। ब्रिटिश सरकार ने बैंक नोटों के वितरण में मदद के लिए पहले तो प्रेसीडेंसी बैंकों को ही अपने एजेंट के रूप में नियुक्त किया, क्योंकि एक बड़े भू-भाग में सामान्य नोटों के इस्तेमाल को बढ़ावा देना एक दुष्कर कार्य था। महारानी विक्टोरिया के सम्मान में 1867 में पहली बार उनके चित्र की श्रृंखला वाले बैंक नोट जारी किए गए। ये नोट एक ही ओर छापे गए थे और पांच मूल्यों में जारी किए गए थे।

भारतीय रिज़र्व बैंक

बैंक नोटों के मुद्रण और वितरण का दायित्व 1935 में भारतीय रिज़र्व बैंक के हाथ में आ गया। जॉर्ज पंचम के चित्र वाले नोटों के स्थान पर 1938 में जॉर्ज षष्ठम के चित्र वाले नोट जारी किए गए, जो 1947 तक प्रचलन में रहे। भारत की स्वतंत्रता के बाद उनकी छपाई बंद हो गई और सारनाथ के सिंहो के स्तम्भ वाले नोटों ने इनका स्थान ले लिया। स्वतंत्र भारत द्वारा छापा गया पहला बैंक नोट 1 रुपये का नोट था।

1955 का भारतीय सिक्का (संशोधन) अधिनियम, जो 1 अप्रैल 1957 से लागू हुआ, ने "दशमलव शृंखला" की शुरुआत की। रुपया अब 16 आने या 64 पैसे के स्थान पर 100 पैसे में विभाजित हो गया था।

1996 में 10 रुपये और 500 रुपये के नोटों के साथ महात्मा गांधी श्रृंखला के नोट जारी किए गए थे। इस सीरीज ने पहले से चले आ रहे लायन कैपिटल सीरीज के सभी नोटों को बदल दिया है। दृष्टिहीन विकलांगों के लिए एक बदला हुआ वॉटरमार्क, विंडोड सिक्योरिटी थ्रेड, लेटेंट इमेज और इंटैग्लियो फीचर नई विशेषताएं थीं।

2016 में बंद हुए पुराने नोट

8 नवंबर 2016 को केंद्र सरकार ने 500 रुपये और 1,000 रुपये के नोटों की कानूनी मान्यता रद्द कर दी थी और उसके जगह नए 500 रुपये के नोट जारी किए जो वर्तमान में चल रहे हैं। इसी के साथ सरकार ने देश के इतिहास में पहली बार 200 रुपये का नोट भी छापा।

भारत सरकार ने इसके अलावा 1000 रुपये के नोट के स्थान पर 2000 रुपये के नोट जारी किए, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने 19 मई को 2 हजार रुपये के नोटों को सर्कुलेशन से वापस लेने का ऐलान किया है. केंद्रीय बैंक ने बताया है कि 23 मई से 30 सितंबर, 2023 तक दो हजार रुपये (Rs 2000 Notes) के नोट को जमा या अन्य नोटों में बदला जा सकता है।

ओ टी टी और सिनेमा का समाज पर प्रभाव

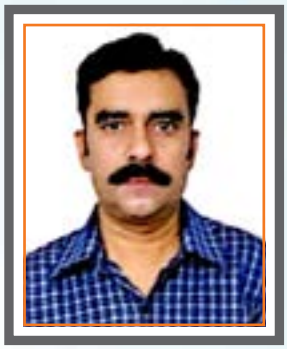

सुरेंद्र सिंह
कार्मिक निदेशालय

ऐसा कहा जाता है कि सिनेमा समाज का दर्पण है परन्तु कभी-कभी ऐसा भी प्रतीत होता है कि सिनेमा समाज को आकार देने वाला शिल्पकार है। आज का अपना स्वरुप बदल रहा है, समाज में आने वाले बदलाव बहुत तेज़ गति से हो रहा है। परन्तु यह बदलाव पहले के बदलाव से कुछ अलग हैं। कभी आम लोगों के दिलों में देश भक्ति की ज्वाला जलाने वाला सिनेमा आज कुछ संशय में नज़र आता है। आज की फिल्में वास्तविकता से परे हो चुकी है। उनमें अश्लीलता भरपूर मात्रा में परोसी जा रही है।

आज समाज को दर्पण दिखाने के लिए केवल सिनेमा का ही प्रयोग नहीं हो रहा अपितु ओ टी टी नामक एक ऐसा मंच मिल गया है जो दर्शकों को वही मनोरंजन परोसता है जो वह देखना चाहता है। ओ टी टी एक ऐसा मंच होता है, जो मनोरंजन जगत की कंपनियों की सामग्री, तमाम तरह की फिल्में, सीरीज और धारावाहिक को इंटरनेट की मदद से आपके फोन, कंप्यूटर या स्मार्ट टीवी पर उपलब्ध कराता है। यह विचार अपने आप में ही उत्साह से भर देता है और दर्शकों को लगातार अपने पसंद का कार्यक्रम दिखाता रहता है। और यहीं से समस्या प्रारम्भ होती है, क्योंकि यह ओ टी टी जगत में जिस प्रकार हिंसा और आपत्तिजनक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है वह समाज को और विशेषकार युवा पीढ़ी को अपने पथ से भ्रमित कर रहा है। निर्देशकों ने अपनी नैतिक जिम्मेदारियों को भुला सा दिया है और नग्नता को हिंसा के साथ मिला कर कुछ इस तरह दिखाना शुरु कर दिया है कि युवा पीढ़ी अपने विचारों में ऐसे विचारों की मिलावट को मनोरंजन के नाम पर स्वीकार कर रही है। एक घटना में चोरों ने चोरी करने के लिए मशहूर फिल्म "धूम" से प्रेरणा ली। जिस प्रकार गैंगस्टर को किसी आदर्श की तरह प्रस्तुत करते हैं, उनके जीवन के चमकीले हिस्से दिखाते है और उनको कहानी के नायक की तरह प्रस्तुत करते है तो कोई भी उनसे गलत प्रेरणा ले सकता है।

भारत में तेजी से बढ़ते इंटरनेट के प्रयोग तथा कोविड-19 महामारी के कारण जब लोग अपने घरों तक सीमित थे, इस समय ओ टी टी की स्वीकृति एवं लोकप्रियता और अधिक मात्रा में बढ़ी। ओ टी टी पर प्रस्तुत किए जाने वाली विस्तृत श्रृंखला के कारण दर्शक इस प्लेटफॉर्म के आदि हो सकते हैं। इसके परिणाम स्वरुप उनका सामाजिक जीवन सीमित हो जाता है। लोग इन प्लेटफॉर्म की ओर इसलिए भी आकर्षित हो रहे है क्योंकि वे पारंपरिक निरंतर चलने वाले टीवी धारावाहिकों से थक चुके हैं। समस्या यहीं समाप्त नहीं होती, बल्कि जब कोई दर्शक किसी ऐसे कार्यक्रम को देखता है तो उसके बाद एक एक करके उसके सामने ऐसे कार्यक्रमों का मेला सा लग जाता है। जिस प्रकार हज़ार बार झूठ कहने पर वह सच लगने लगता है उसी प्रकार किसी आपत्तिजनक प्रस्तुति को बार-बार देखने पर वह सामान्य सा प्रतीत होने

लगता है और हमारा मस्तिष्क उसे स्वीकार करने लग जाता है। आज कल जिस तरह अपशब्दों का प्रयोग बढ़ा है वह परिस्थिति की गंभीरता को सूचित करता है।

सिनेमा जगत भी ओ टी टी को मिलने वाली सफलता से प्रेरित हो कर कुछ ऐसे-ऐसे विषयों पर चलचित्र बना रहा है जिससे साम्प्रदायिक भावनाएं भड़क सकती है। देश के अलग अलग हिस्सों में दंगों के समाचार, महिलाओं के साथ घिनौने दुष्कर्म कि घटनाएं इस बात कि ओर संकेत देती है कि समाज के नैतिक मुल्यों में गिरावट आ रही है।

धर्म, सम्प्रदाय, समलैंगिकता जैसे विषयों पर मनोरंजन के साथ–साथ नैतिक जिम्मेदारी का भाव भी होना चाहिए। हाल ही में प्रदर्शित चलचित्र "आदिपुरुष" ने जिस प्रकार से हिंदु धर्म के पवित्र ग्रंथ रामायण को प्रदर्शित किया है वह निंदा का पात्र है। रामायण श्री राम जी के जीवन का चित्रण है जिसमें प्रेरणादायक प्रसंगों की कोई कमी नहीं है, उस रामायण के आधार पर इस प्रकार चलचित्र बनाना जैसे यह कोई आम उपन्यास हो।

अब समय आ गया है कि निर्माता निर्देशक और अन्य अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझे और मनोरंजन के नाम पर कुछ भी ना परोसा जाए बल्कि ऐसी कला का निर्माण किया जाए जो देश और समाज को और मज़बूत बनाए।

कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)

राजेन्द्र अटल
कार्मिक निदेशालय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमता) एक ऐसे भविष्य की ओर इशारा करता है जो एक ओर सुनहरा है और एक ओर मानव जाति के सबसे बुरे सपने से भी बुरा। कृत्रिम बुद्धिमता एक कंप्यूटर या कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट की उन कार्यों को करने की क्षमता है जो आमतौर पर मनुष्यों द्वारा किए जाते हैं क्योंकि उन्हें मानव बुद्धि और विवेक की आवश्यकता होती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को समझने के लिए आप यह मान सकते है कि यह एक ऐसा कंप्यूटर प्रोग्राम है जो मानव मस्तिष्क की भांति अपने अनुभवों से सीखता है। जब किसी प्रकिया को बार–बार किया जाता है तो ए.आई. (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) उस प्रक्रिया को समय के साथ-साथ निखारता है और उस प्रक्रिया को करने के और उत्तम तरीके ढूंढ लेता है।

वैसे तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का पिछले कई दशकों से विकास किया जा रहा है परंतु पिछले 4-5 वर्षों से जिस गति से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उभर कर सामने आया है वह प्रशंसा का पात्र है। वैज्ञानिकों ने निजी कंपनियों के साथ मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के शोध का कार्य तेज गति से आगे बढ़ाया है। इस विकास के साथ अपार संभावनाओं के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कई उपयोग सामने आए हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रयोग से आम गलतियों से बचा जा सकता है अत: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के द्वारा किसी जटिल काम को करने में कम जोखिम है। मनुष्य केवल 8-10 घंटों तक ही एक दिन में काम कर सकता है परन्तु आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बिना थके दिन-रात काम कर सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नए-नए अनुसंधान करने में मदद कर रहा है। मजे की बात यह है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बिना किसी पूर्वाग्रह के कार्य करता है तो इससे किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करता है और तो और किसी तनाव पूर्ण काम या पुनरावृत्ति वाले कार्य को बड़ी सटीकता से कर सकता है।

हाल ही में प्रचलित हुए कई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रोग्राम जैसे चैट जीपीटी, बार्ड, एलैक्सा, सिरी तथा अन्य ने आम जनता में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लोकप्रिय बनाना शुरु कर दिया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अपार संभावनाओं में से एक चिकित्सकीय प्रयोग है एक ऐसे भविष्य की कल्पना की जा सकती है जहाँ बड़ी-बड़ी शल्य चिकित्सा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा की जाएगी।

परन्तु ऐसा नहीं है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से सब अच्छा-अच्छा ही होने वाला है जिस प्रकार किसी भी वैज्ञानिक आविष्कार एक दोधारी तलवार की भांति होती है उसी प्रकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी अपने अंदर उपयोगों के

साथ साथ प्रलय तक का सामर्थ्य रखती है। आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को चलाने के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता होती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अपने उपयोग से एक दिन मानव को इतना कमज़ोर कर देगी कि वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का गुलाम हो जाएगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सबसे बड़ा डर यह है कि जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक बार में कई लोगों के काम करने लगेगी तो लोगों की नौकरी चली जाएगी। कुछ बुद्धिजीवियों का कहना है कि कई नौकरियाँ तो आने वाले एक दशक में ही खत्म होने वाली है। स्वचालित कार और भाषा के आधार पर चित्र को बना लेने की क्षमता एक उदाहरण है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस किस प्रकार नौकरी खत्म कर देगा।

अभी बहुचर्तित फिल्म कंपनी "मारवल" ने अपने एक कार्यक्रम का परिचय अंश आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से बनवाया, कई फिल्म कंपनियों ने ऐसा सुझाव दिया कि अभिनेता के चहरे को कंप्यूटर में दर्ज करके आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा कभी भी अभिनय करवाया जा सकता है। ऐसा करके उन अभिनेताओं को भी फिर से परदे पर उतारा जा सकेगा जो अब इस दुनिया में नहीं है। इस प्रकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सभी आयामों में बड़े अंतर लाने वाला है।

ए.आई. बहुत तेज़ गति से विकास कर रहा है लेकिन ए.आई. न केवल तब प्रभावी होगा जब मशीनें वह कर सकें जो मनुष्य करते हैं, बल्कि तब जब वे इसे बेहतर ढंग से और मानव पर्यवेक्षण के बिना कर सकें। परन्तु यह विकास ए.आई. को एक ऐसे स्तर तक ले जा सकता है जिसे ए.आई. विलक्षणता (ए.आई. सिंगुलैरिटी) कहते हैं, यह एक काल्पनिक अवधारणा है जहां कृत्रिम बुद्धि मानव बुद्धि से अधिक है। सरल शब्दों में, यदि कंप्यूटर मनुष्यों की तार्किक क्षमताओं को पार कर जाए, तो बुद्धिमत्ता का एक नया स्तर सामने आएगा जो मानव के लिए प्राप्त कर पाना संभव नहीं होगा। ऐसे भविष्य में मानव और ए.आई. के टकराव की संभावना बनी रहेगी। लेकिन भविष्य में क्या होना है इसकी सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है। वर्तमान के लिए यही आवश्यक है कि सभी बुद्धिमान व्यक्ति मिल कर कृत्रिम बुद्धिमता के प्रभाव के बारे में चर्चा करें और मानव जाति के लिए बेहतर और सुरक्षित भविष्य का निर्माण करें।

हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2022- एक रिपोर्ट

अरुण कुमार पंडा
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन मुख्यालय में 01 से 15 सितंबर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। 01 सितंबर 2022 को डॉ रविन्द्र सिंह, निदेशक, संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय के साथ-साथ श्रीमती आशा त्रिपाठी, सह निदेशक, श्री संजीव कुमार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) एवं श्री सुजीत कुमार मेहता, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का विधिवत उद्घाटन किया। हिंदी पखवाड़े के दौरान 16 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। साथ ही ड्राइवरों के लिए एक क्विज का आयोजन किया गया।

29 सितंबर 2022 को हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. समिर वी कामत सचिव, रक्षा अनु. एवं वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ एवं श्री संगम सिन्हा, महानिदेशक (आर एवं एम), डॉ. रविन्द्र सिंह, निदेशक, संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, श्रीमती आशा त्रिपाठी, सह निदेशक द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. समिर वी कामत, सचिव, रक्षा अनु. एवं वि. विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने अपने संबोधन में मुख्यालय के सभी अधिकारियों कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करके अपना संवैधानिक दायित्व निभाने की अपील की। श्री संगम सिन्हा, महानिदेशक (आर एवं एम) ने भी उपस्थित कर्मियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि हिंदी दिवस को पर्व की तरह मनाएँ और यही उत्साह साल भर बनाए रखें। डॉ. रविन्द्र सिंह, निदेशक, संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति ने हिंदी को रोजगार से जोड़ने की बात कही। श्रीमती आशा त्रिपाठी, सह निदेशक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के 80 विजेताओं को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए और वर्ष के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले 10 कार्मिकों को भी पुरस्कृत किया गया। मुख्यालय में वर्ष 2021-22 के दौरान हिंदी में अधिकतम कार्य करने वाले निदेशालय के रूप में प्रबन्ध सेवा निदेशालय को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए और वर्ष के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले 10 कार्मिकों को भी प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। पुरस्कार की राशि का विवरण इस प्रकार है:–

प्रथम पुरस्कार	2	5,000/-
द्वितीय पुरस्कार	3	3,000/-
तृतीय पुरस्कार	5	2,000/-

इसमें कुल मिला कर 20,000/- की नकद राशि प्रदान की गई। डीआरडीओ मुख्यालय में 01 से 15 सितंबर 2022 तक निम्नलिखित 17 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई:–

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	तारीख
1.	कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण	01.09.2022
2.	हिंदी आशुलिपि	01.09.2022
3.	टिप्पण तथा प्रारूपण	02.09.2022
4.	टिप्पण तथा प्रारूपण	02.09.2022
5.	अनुवाद	05.09.2022
6.	अनुवाद	05.09.2022
7.	हिंदी निबंध	06.09.2022
8.	हिंदी निबंध	06.09.2022
9.	हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता	07.09.2022
10.	हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता	07.09.2022
11.	सुलेख	08.09.2022
12.	सुलेख	08.09.2022
13.	हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता	09.09.2022
14.	हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता	09.09.2022
15.	हिंदी डिक्टेशन प्रतियोगिता	12.09.2022
16.	क्विज प्रतियोगिता (ड्राइवरों के लिए)	13.09.2022
17.	16.08.2022 से 15.09.2022 के दौरान अधिकाधिक हिंदी कार्य करने का मूल्यांकन	15.09.2022

मुख्यालय में वर्ष 2021-22 के दौरान हिंदी में अधिकतम कार्य करने वाले निदेशालय के रूप में प्रबन्ध सेवा निदेशालय को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में 418 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कुल 06 प्रतियोगिताएं हिंदीतर भाषियों के लिए आयोजित की गई । 80 कार्मिकों को प्रतिस्पर्द्धा के आधार पर पुरस्कार के योग्य पाया गया। मुख्यालय के सरकारी कामकाज में मूलत: हिंदी में टिप्पण/प्रारूपण करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों

के लिए एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें 10 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी पत्राचार की समीक्षा करते समय यह पाया गया कि इस अवधि के दौरान करीब 8%- 9% पत्राचार में वृद्धि हुई। इस समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार प्रदान किए। इस वर्ष की राशि का विवरण इस प्रकार है:–

प्रथम पुरस्कार	1	3,000/-
द्वितीय पुरस्कार	1	2,000/-
तृतीय पुरस्कार	1	1,500/-
सांत्वना पुरस्कार	2	1,000/-

कुल मिलाकर 1,36,000/-रु. के नकद पुरस्कार वितरित किए गए ।

प्रबंध सेवा निदेशालय के ड्राइवरों के लिए आज़ादी का अमृत महोत्सव से संबंधित एक क्विज प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिह्न देकर प्रोत्साहित किया गया। इसी मौके पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कविगणों ने काव्य पाठ किया। निदेशक महोदय द्वारा सभी कवियों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान धन्यवाद ज्ञापन श्री संजीव कुमार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) ने एवं मंच संचालन श्री सुजीत कुमार मेहता, सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं श्रीमती अरुणकमल, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने किया।

जेल गई, ससुराल नहीं

हिमानी
अंतराष्ट्रीय सहयोग निदेशालय

26 जून 1884 को देश के एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी अखबार में संपादक के नाम एक पत्र छपा जिसमे समाज के कट्टरपंथी तबकों में खलबली मचा दी। पत्र रख्माबाई ने लिखा था लेकिन नाम दिया था 'अ हिन्दू लेडी'। पत्र में बाल विवाह के औचित्य पर सवाल उठाया गया था। पत्र लेखिका की चारों तरफ आलोचना होने लगी लेकिन इनसे बेपरवाह रख्माबाई बाल विवाह पर अपना पक्ष रखते हुए यह स्थापित करने में लगी रहीं कि सहमति के बिना संपन्न हुआ उनका बाल विवाह अवैध है।

मसला यह था कि रख्माबाई अपने विवाह को मानने और ससुराल जाने के लिए तैयार नहीं थी। वह पढ़ना चाहती थी। मगर ससुराल वालों का कहना था कि उन्हें पति के घर आकर पत्नी धर्म निभाना चाहिए। जब रख्माबाई ने यह स्वीकार नहीं किया। तो पति ने मुकदमा कर दिया। मुकदमे के दौरान यह मामला और फैला। रख्माबाई केस हार गई। फैसला सुनाते हुए बॉम्बे हाई कोर्ट के जज ने कहा, वह या तो अपने पति के घर जाएं या छह छह महीने की जेल की सजा काटने के लिए तैयार रहें। रख्माबाई ने पति के घर जाने के बजाय जेल जाना स्वीकार किया।

जेल की सजा भी उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर पाई। जेल से बाहर आने के बाद वह कामा हॉस्पिटल के डायरेक्टर ई.पी. फिप्सन के सहयोग से मेडिकल की पढ़ाई करने इंग्लैंड चली गई। वहां से डाक्टर बनकर लौटी और भारत की पहली महिला प्रैक्टिशनर डॉक्टर बनीं। यही नहीं, उनके संघर्ष ने सरकार को सहमति से सेक्स की न्यूनतम उम्र 10 साल से बढ़ाकर 12 साल करने को प्रेरित किया। वह ऐसा समय था जब देश ही नहीं, दुनिया में भी महिलाओं की स्थिति काफी कमजोर थी। विपरीत परिस्थितियों में दिखाए गए रख्माबाई के संकल्प ने उस समय भी अनेक महिलाओं की स्वावलंबी बनने के लिए प्रेरित किया और आज भी यह महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

आज की युवा पीढ़ी

आनन्द कुमार साव
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

युवा पीढ़ी यानी हमारे देश के नौजवान समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारा आने वाला भविष्य हमारी युवा पीढ़ी की सोच और उनके प्रदर्शन पर निर्भर करती है। युवा वर्ग जिसे अंग्रेजी में Youth, Young जनरेशन कहा जाता है। युवा पीढ़ी में जोश और उमंग की कोई कमी नहीं होती है। वह हमेशा आसमान को छू लेना चाहते है अथार्त कामयाबी की शिखर तक पहुंचना चाहते है। युवा पीढ़ी में भरपूर जूनून होता है कुछ कर दिखाने का, कुछ बनाने का युवा वर्ग में अनोखी काबिलियत होती है कि वह पूरी दुनिया को बदल सके। युवा पीढ़ी पूरी कायनात को बदलने की शक्ति रखती है। युवा पीढ़ी के कंधों पर कुछ जिम्मेदारियां होती है। युवा वर्ग अपने हौंसले और जुनून को सही मार्ग पर ले जाए तो एक सकारात्मक समाज की रचना कर सकते हैं।

युवा पीढ़ी ने समाज के हर क्षेत्र में अपना भरपूर योगदान दिया है। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उन्होंने खास उपलब्धियां की है जो देश को एक नए उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा रहा है। वहीं युवा पीढ़ी के कुछ लोगों ने अपनी स्वतंत्रता का गलत फायदा उठाते हुए अपना सर्वनाश कर लिया है। युवा पीढ़ी को अपने जिम्मेदारियों को धैर्य, लगन और पूरे आत्मविश्वास के साथ निभाना चाहिए। हमारे देश की युवा पीढ़ी ने कई कार्य सफलतापूर्वक किए है और देश की नाम रोशन किया है। वह सिपाही बने और देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। वह इंजीनियर और डॉक्टर भी बने ताकि वह समाज की भली भांति सेवा कर सकें।

युवा वर्ग के कुछ नौजवान पैसे कमाने के लिए आसान तरीके सोचते है। इसी चक्कर में कभी-कभी अपना रास्ता भटक जाते है और गलत मार्ग की ओर चल पड़ते है जिसके नतीजे भयंकर हो सकते है। आजकल की युवा पीढ़ी हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने हेतु बड़ी उत्सुक रहती है। युवा पीढ़ी निडरता और हिम्मत के साथ हर कठिन परिस्थिति का सामना करने का दृढ़ विश्वास रखती है। युवा पीढ़ी में तर्क करने की काबिलियत बहुत अधिक होती है। वह अपने नवीन विचारों को निडरता के साथ सबके समक्ष रखते है। लेकिन जोश में नियंत्रण रखने की आवश्यकता होती है क्योंकि जोश में होश खो देना मूर्खता की निशानी होती है।

आजकल युवा पीढ़ी में सोशल मीडिया की तरफ झुकाव काफी ज्यादा है। नए-नए मोबाइल के प्रति आकर्षण और व्हाट्सप्प एवं फेसबुक जैसे नेटवर्किंग जगहों पर उनका रुझान ज्यादा बढ़ गया है। युवा पीढ़ी में नए-नए फैशन की तरफ भी झुकाव ज्यादा देखा जा रहा है। कुछ नौजवानों में धैर्य और सहनशीलता बिल्कुल कम होती है जिसकी वजह से वह जिन्दगी में गलत निर्णय ले लेते है। इसके लिए उन्हें आगे पछताना पड़ता है।

सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल नौजवानों के लिए लाभप्रद साबित हो सकता है जिसका सकता इस्तेमाल वह बखूबी करते है। अपने विचारों का सही रूप से आदान-प्रदान करना यह उनकी पीढ़ी की जिम्मेदारी है। अपने नए सुविचारों का तथाकथित समाज में प्रयोग करके समाज को एक नयी दिशा की ओर ले जा सकते है। युवा वर्ग समाज की नकारात्मक सोच को बदलने की ताकत रखते है बस जज्बा सही होना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी मोबाइल और कंप्यूटर पर ज्यादा व्यस्त रहते है जिसकी वजह से वह अपने परिवारों को ज्यादा वक्त नहीं देते है। युवा वर्ग को अपने परिवार की उतनी कदर करनी चाहिए जितना वह अपने दोस्तों की करते है। हर क्षेत्र का सही उपयोग सही समय पर करना एक जिम्मेदार नौजवान का कर्तव्य है।

कुछ नौजवान अपने मनोरंजन और गमों को भुलाने के लिए नशे के पदार्थों का सहारा से लेते है जो की गलत कदम है। अपने परिवार और समाज के प्रति उत्तरदायित्व से युवा वर्ग को अवगत होना चाहिए। नशे की दुनिया एक नकारात्मक कदम है जिस पर अंकुश लगाना युवा वर्ग का दायित्व है। विश्व में कई जगहों पर हिंसा का कारण युवा वर्ग है। कभी-कभी वह जिन्दगी के कुछ पड़ाव में गलत फैसला ले लेते है और किसी की भी बातों में आ जाते है। हर सही फैसले और कार्य का चुनाव करना भी उनका ही कर्तव्य है। उन्हें किसी भी हाल में अपने संयम को नहीं खोना है।

निष्कर्ष

माँ-बाप का भी कर्तव्य है कि जब बच्चे इस उम्र में आ जाएं उससे पहले वह गलत और सही के बीच की रेखा को समझा दे और जिससे वह सही फैसला ले सके। इस उम्र में युवा वर्ग बहुत अधिक उत्सुक रहते है और जिन्दगी के हर पहलु को जानने के लिए हर प्रकार का प्रयोग करते है। इसमें नियंत्रण लाना यह युवा वर्ग की जिम्मेदारी है। युवा वर्ग में नौजवानों के अंदर कई प्रतिभाएं होती है। जिसे उन्हें पहचान कर सही मार्ग पर जाना चाहिए उन्हें असफलताओं से घबरा कर निराश और बेसब्र नहीं होना चाहिए। आज की युवा पीढ़ी कल के देश का सुनहरा भविष्य बनेगी। उन्हें सही प्रोत्साहन के साथ अपने जीवन और देश को उन्नति के उंचाइयों पर ले जाना है।

ज्योतिर्लिंग

अर्चना सिंह
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशलय

भगवान शिव में आस्था रखने वाले श्रद्धालुओं के लिए सावन मास का विशेष महत्व होता है और इस वर्ष अधिक मास होने के कारण यह सावन का पवित्र महिना दो महीने के लिए है। इस अवसर पर जगह-जगह मंदिरों में शिव उपासना और ज्योतिर्लिंगों के दर्शन और महत्व है। पूजन का विशेष श्रीशिव महापुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में द्वादश ज्योतिर्लिंगों की महिमा का उल्लेख है। आईये चलते है इस सावन मास के पवित्र अवसर पर देश के प्रमुख हिस्सों में स्थित द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से पुण्य प्राप्त होता है।

उत्तराखंड का केदारनाथ

उत्तराखंड में स्थित केदारनाथ ज्योतिर्लिंग की स्थापना का इतिहास संक्षेप में यह है कि हिमालय के केदार-श्रृंग पर विष्णु के अवतार महातपस्वी नर और नारायण ऋषि तपस्या करते थे। उनकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शंकर प्रकट हुए और वहां ज्योतिर्लिंग के रूप में सदा वास करने का वर प्रदान किया।

काशी का विश्वेश्वर

श्री विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग वाराणसी में विराजमान है। इस मंदिर की स्थापना अथवा पुन: स्थापना आदि शंकराचार्य ने स्वयं अपने कर कमलों से की थी। इस 2010 प्राचीन मंदिर को मुगल आक्रमणकारियों द्वारा काफ़ी क्षति पहुंचाई गई थी। बाद में शिवभक्त महारानी अहिल्याबाई ने इस मंदिर के पास भगवान विश्वनाथ का एक सुंदर नया मंदिर बनवा दिया और पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने इस पर स्वर्ण कलश चढ़वा दिया।

नासिक में त्र्यंबकेश्वर

गोदावरी नदी के उद्गम स्थान नासिक के समीप अवस्थित त्र्यंबकेश्वर भगवान की भी बड़ी महिमा है। गौतम ऋषि तथा गोदावरी के प्रार्थनानुसार भगवान शिव ने इस स्थान में वास करने की कृपा की और त्र्यंबकेश्वर नाम से विख्यात हुए।

चंद्र का इष्ट सोमनाथ

सोमनाथ काठियावाड़ के श्री प्रभास क्षेत्र में विराजमान हैं। यहाँ के प्रमुख ज्योतिर्लिंग सोमनाथ की कथा संक्षेप में यह है कि दक्ष प्रजापति ने अपनी सभी 27 कन्याओं का विवाह चंद्रदेव के साथ किया था। परंतु चंद्रमा का अनुराग उनमें से एकमात्र रोहिणी के प्रति था और अन्य कन्याओं की वह उपेक्षा करते थे। इससे क्षुब्ध होकर दक्ष ने चंद्रमा को शाप दिया– तुम्हारा क्षय हो जाए। फलत: चंद्रमा क्षयग्रस्त हो गए। फिर उन्होंने छ: माह तक निरंतर घोर तप किया। फलत: भगवान

शिव प्रसन्न हुए और उन्होंने मृतप्राय चंद्रमा को अमरत्व प्रदान किया। इस प्रकार चंद्रदेव शापमुक्त हो गए और शिव जी भक्तों के उद्धार के लिए ज्योतिर्लिंग रूप में सदा के लिए इस क्षेत्र में वास करने लगे।

शिव का एक और नाम घुश्मेश्वर

यह ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के मनमाड से 66 मील दूर 'दौलताबाद स्टेशन' के पास है। इसकी उत्पत्ति के संबंध में एक कथा प्रचलित है दक्षिण में देवगिरि पर्वत के निकट सुधर्मा और सुदेहा नामक निसंतान ब्राह्मण दंपती रहते थे। संतान प्राप्ति के लिए सुदेहा ने अपनी छोटी बहन घुश्मा से अपने पति का विवाह करवा दिया। घुश्मा प्रतिदिन नियमपूर्वक 101 पार्थिव शिवलिंग बनाकर उनका विधिवत पूजन करती थी। भगवान शंकर के आशीर्वाद से उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। परंतु समय बीतने के साथ-साथ सुदेहा के अंदर ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हुआ। एक रोज़ रात्रि के समय जब वह बालक नदी के किनारे "सैर कर रहा था तो सुधर्मा ने उसकी हत्या कर डाली और उसके शव को ले जाकर उसी सरोवर में छोड़ दिया, जिसमें घुश्मा पार्थिव शिवलिंग विसर्जित करती थी। प्रतिदिन की तरह घुश्मा शिवजी की पूजा करके शिवलिंग को विसर्जित करने सरोवर चली गई। वहाँ उसने देखा कि सरोवर से पुत्र जीवित बाहर निकल आया। धर्मपरायण घुश्मा की प्रार्थना से प्रसन्न होकर शिवजी वहीं ज्योतिर्लिंग के रूप में वास करने लगे और घुश्मेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए।

दक्षिण के मल्लिकार्जुन

तमिलनाडु के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल पर्वत है। इसे दक्षिण कैलास कहते हैं। इस स्थान के संबंध में पौराणिक कथा है कि जब विश्व परिक्रमा की प्रतियोगिता में श्री गणेश को शिवजी ने विजयी घोषित किया तो इस बात से रुष्ट होकर कार्तिकेय क्रौंच पर्वत पर चले गए। माता-पिता ने नारद को भेजकर उन्हें वापस बुलाया, पर वे न आए। अंत में, माता का हृदय व्याकुल हो उठा और पार्वती शिवजी को लेकर क्रौंच पर्वत पर पहुंची, किंतु उनके आने की खबर पाते हीं वहाँ से भी कार्तिकेय भाग खड़े हुए और काफ़ी दूर जाकर, रुके। कहते हैं, क्रौंच पर्वत पर पहुंच कर शंकरजी ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए और तब से वह स्थान श्रीमल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रख्यात है

उज्जैन में महाकालेश्वर

श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मालवा प्रदेशांतर्गत शिप्रा नदी के तट पर उज्जैन नगरी में है। इसकी स्थापना के संबंध में कथा प्रचलित है कि एक दिन श्रीकर नामक एक बालक रास्ते से गुज़र रहा था। शिप्रा नदी के तट पर नगर के राजा को शिवपूजन करते देखा। घर लौटते समय उसने रास्ते से एक पत्थर का टुकड़ा उठा लिया और घर आकर उसी को शिव रूप में स्थापित कर श्रद्धापूर्वक उसकी पूजा करने लगा। माता भोजन के लिए बुलाती रही, पर बालक की समाधि नहीं टूटी। अंत में, झल्लाकर उसने पत्थर का टुकड़ा वहाँ से उठाकर दूर फेंक दिया। तब सरल चित्त भक्त बालक ने विलाप करते हुए शंभु को पुकारना शुरू किया और रोते हुए वह अचेत हो गया। अंततोगत्वा भोलेनाथ प्रसन्न हुए और ज्यों ही होश में आकर उसने आंखे खोली तो उसने देखा कि सामने एक अति विशाल स्वर्ण कपाटयुक्त रत्नजड़ित मंदिर खड़ा है और उसके अंदर एक अति प्रकाशयुक्त ज्योतिर्लिंग देदीप्यमान हो रहा है।

पर्वतों से घिरे ओंकारेश्वर

यह स्थान मध्य प्रदेश स्थित मालवा में नर्मदा नदी के तट पर है। यहीं मांधाता पर्वत पर ओंकारेश्वर तीर्थ है। प्रसिद्ध सूर्यवंशी

राजा मांधाता बहुत बड़े तपस्वी थे। उनके पुत्र अंबरीश और मुचकुंद भी प्रसिद्ध भक्त थे। राजा मांधाता ने इस स्थान पर घोर तपस्या करके शंकरजी को प्रसन्न किया था। यहां शिवलिंग के चारों ओर हमेशा जल भरा रहता है। लोग इस पर्वत को ओंकार रूप मानते हैं कुछ परिक्रमा करते हैं। शिवपुराण और में श्री ओंकारेश्वर के दर्शन तथा नर्मदा स्नान का बड़ा माहात्म्य वर्णित है।

झारखंड में वैद्यनाथ धाम

झारखंड स्थित वैद्यनाथ धाम भी ज्योतिर्लिंग है। उसकी स्थापना की कथा यह है कि एक बार शिवजी को प्रसन्न करने के लिए रावण अपने सिर काटकर उन्हें अर्पित कर रहा था। नौ सिर चढ़ाने के बाद वह दसवां सिर भी काटने को ही था कि शिव जी प्रकट हो गए। उन्होंने उसके दसों सिर वापस ज्यों के त्यों कर दिए और फिर वरदान मांगने को कहा तो रावण ने लंका जाकर उस शिवलिंग को वहाँ स्थापित करने की आज्ञा मांगी। शिवजी ने अनुमति तो दे दी, पर इस चेतावनी के साथ कि यदि मार्ग में वह इस पृथ्वी पर रख देगा तो वह वहीं अचल हो जाएगा। रावण शिवलिंग लेकर चला, पर मार्ग में उसे लघुशंका निवृत्ति की आवश्यकता हुई और वह उस शिवलिंग को एक राहगीर को थमाकर चला गया। जब रावण के लौटने में देर हुई तो उसने शिवलिंग को भूमि पर रख दिया। लौटने पर रावण पूरी शक्ति लगाकर भी उसे उठा न सका और वहाँ शिवजी ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गए।

गुजरात के नागेश्वर

नागेश्वर का मंदिर गुजरात स्थित द्वारिकापुरी के पास स्थित है। इस संबंध में प्रचलित कथा है कि वहाँ सुप्रिय नामक वैश्य था, जो शिवजी का अनन्य भक्त था। एक बार वह नौका पर सवार होकर कहीं जा रहा था, अचानक दारुक नामक के एक राक्षस ने उस नौका पर आक्रमण किया और उसमें बैठे सभी यात्रियों को अपने नगर में ले जाकर कारागार में बंद कर दिया। उसने अपने अनुचरों को राजा सुप्रिय की हत्या करने का आदेश दिया, परंतु वह इससे भी विचलित नहीं हुआ और शिवजी का ही नाम जपता रहता। फलत: कारागार में ही शिव जी ने उसे ज्योतिर्लिंग रूप में दर्शन दिए ।

महाराष्ट्र मेँ भीमाशंकर

भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग मुंबई से पूर्व की ओर भीमा नदी के तट पर स्थित है। इस शिवलिंग की उत्पत्ति की कथा संक्षेप में इस प्रकार है। कामरूप देश में कामरूपेश्वर नामक एका महाप्रतापी शिवभक्त राजा थे। वहां भीम नामक एक महाराक्षस रहता था जो भगवान शिव के ध्यान में मग्न राजा के ऊपर तलवार से वार किया। पर तलवार पार्थिव शिवलिंग पर पड़ी और उसी क्षण शिवजी ने प्रकट-होकर राक्षस का प्राणांत कर दिया और ज्योतिर्लिंग के रूप में वहीं निवास करने लगे।

जहाँ राम ने पूजा शिव को

लंका पर चढ़ाई के लिए जाते हुए भगवान रामचंद्र जब रामेश्वरम पहुंचे तो उन्होंने समुद्र तट पर बालुका से शिवलिंग बनाकर पूजन किया था। उसी के बाद से भगवान शिव वहां ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए स्थायी रूप से वहीं निवास करने लगे।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात॥

एकात्म मानववाद

अजय कुमार
कार्मिक निदेशालय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने 22 अप्रैल से 25 अप्रैल 1965 के दौरान मुंबई में चार भाषणों "राष्ट्रवाद की सही कल्पना", "एकात्म मानववाद", "व्यष्टि, समष्टि में समरसता" एवं "राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ रचना" के द्वारा सार्वजनिक रूप से एकात्म मानववाद अथवा एकात्म मानवदर्शन को प्रस्तुत किया था।

एकात्म मानववाद पर संक्षेप में बात करने से पहले पंडित जी का संक्षिप्त जीवन परिचय पाठकों को देना जरुरी है कि जिस व्यक्ति ने एकात्म मानववाद की परिकल्पना की उनका जीवन किन परिस्थितियों से गुजरा था।

पंडित जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

पंडित जी का जन्म 25 सितंबर 1916 को मथुरा जिले के ग्राम नगला चन्द्रभान में श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय एवं श्रीमती रामप्यारी के घर में हुआ। उनकी माताजी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं और उनके पिताजी जलेसर में सहायक स्टेशन मास्टर थे। उनके परदादा एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। उनके जन्म के दो वर्ष बाद उनके अनुज का जन्म हुआ। पंडित जी एवं उनके अनुज का पालन पोषण ननिहाल में अपने ममेरे भाइयों के साथ आगरा जिले में फतेहपुर सीकरी के पास ग्राम गुड़ की मँढई में हुआ। जब वह तीन वर्ष से कम उम्र के थे उन्होंने अपने पिताजी को खो दिया और आठ वर्ष की उम्र हुई तो उनकी माताजी का स्वर्गवास हो गया। दस वर्ष की आयु तक पहुँचते पहुँचते उनके नाना जी भी नहीं रहे। पंद्रह वर्ष की आयु तक पहुँचे तो उनकी मामी का निधन हुआ। उनकी आयु अठारह वर्ष हुई तो उनके अनुज भी स्वर्ग को प्रस्थान कर गए। उन्नीस वर्ष के हुए तो उनकी नानी उन्हें छोड़ स्वर्ग सिधार गयीं। बीस वर्ष की आयु तक पहुँचते पहुँचते पंडित जी मृत्यु को बहुत नजदीक से देख चुके थे।

कम उम्र में इतना सब कुछ घटित होने के बावजूद पंडित जी ने दसवीं की बोर्ड परीक्षा एवं इंटरमीडिएट की परीक्षा विशिष्ट योग्यता के साथ उत्तीर्ण की। बाद में वे सीकर के हाई स्कूल गए। सीकर के महाराजा ने पंडित जी को एक स्वर्ण पदक, किताबों के लिए रुपये और मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की। उन्होंने बी.ए. की पढ़ाई के लिए कानपुर के सनातन धर्म कॉलेज में प्रवेश लिया और 1939 में बी०ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसके बाद एम०ए० करने के लिए आगरा चले गए और सेंट जॉन्स कालेज में एम०ए० में प्रवेश लिया और पूर्वार्द्ध में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। इसी दौरान पंडित जी की चचेरी बहन रमा देवी बीमार पड़ गईं और पंडित जी बीमार बहन रमादेवी की सेवा में लग गए, परंतु कुछ समय बाद बहन की भी मृत्यु हो गई। बहन की मृत्यु के उपरांत पंडित जी बहुत उदास हो गए और एम.ए. की परीक्षा नहीं दे

सके। इतना कुछ झेलने के बाद भी अपने मामाजी के आग्रह पर उन्होंने प्रशासनिक परीक्षा दी और उत्तीर्ण हुए किन्तु देशभक्ति के भाव में ओतप्रोत होने के कारण उन्होंने अंग्रेज सरकार की नौकरी नहीं की। बाद में उन्होंनें प्रयाग से बी०टी० की परीक्षा भी उत्तीर्ण की परंतु नौकरी नहीं की।

पंडित जी 1937 से 1968 तक भारत के राजनीतिक जीवन में सक्रिय थे। 16 साल (1951 से 1967) तक वे भारतीय जनसंघ के महासचिव रहे। 1967 में कालीकट अधिवेशन में पंडित जी को भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष चुना गया। जिस व्यक्ति ने बाल्यावस्था और किशोरावस्था में ही मृत्यु को इतना पास अपनों को बारी बारी ले जाते देखा था, वही मृत्यु उन्हें भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष बनने के मात्र 43 दिन बाद 11 फरवरी 1968 को अपने साथ ले गई। 12 फरवरी 1968 की शाम को निगम बोध घाट पर पंडित जी का शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। पंडित जी ताउम्र अविवाहित रहे ।

पंडित जी ने जीवन में कार्यक्षेत्र के लिए पत्रकारिता को चुना था। वह एक सफल पत्रकार होने के साथ-साथ चिन्तक और लेखक थे। उनकी प्रमुख पुस्तकों के नाम: दो योजनाएँ, राजनीतिक डायरी, राष्ट्र चिन्तन भाषणों का संग्रह, भारतीय अर्थ नीति: विकास की एक दिशा, भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन, सम्राट चन्द्रगुप्त, जगद्गुरु शंकराचार्य, एकात्म मानववाद, राष्ट्र जीवन की दिशा, एक प्रेम कथा इत्यादि हैं।

एकात्म मानववाद/मानव दर्शन

पंडित जी की सब पुस्तकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण “एकात्म मानववाद” (Integral Humanism) मानी जाती है जिसे “एकात्म मानव दर्शन” के नाम से भी जाना जाता है।

पंडित जी द्वारा एकात्म मानववाद या एकात्म मानव दर्शन का केंद्र ‘व्यक्ति’ है। व्यक्ति ही वह महत्वपूर्ण इकाई है जिससे परिवार, समाज, जाति, राष्ट्र, विश्व एवं ब्रह्माण्ड का विकास होता है। एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति के सार्वलौकिक विकास की संस्तुति करता है। अगर व्यक्ति का सार्वलौकिक विकास हो जाए तो न ही उसमे कोई विकृति और न ही कोई तृष्णा किसी संघर्ष को जन्म देगी। पंडित जी ने विचार किया कि पश्चिमी राष्ट्रों में भी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के विकास का चिंतन तो किया परन्तु वह सार्वभौमिक न करके पृथक पृथक किया। यही वजह रही है कि पश्चिमी राष्ट्रों में अलग अलग कालखंड में अलग अलग तरह की विकृतियों ने जन्म लिया। उन विकृतियों से मुक्ति पाने के लिए अलग अलग तरह के वादों (मार्क्सवाद, साम्यवाद, समाजवाद, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद इत्यादि) का जन्म वहाँ हुआ, जो तात्कालिक परिस्तिथियों के समाधान के रूप में उभरे। परन्तु एक समग्र मानवीय विकास शायद संभव नहीं हो पाया जिसकी वजह से आज भी वहाँ कभी कभी संघर्ष देखने को मिलता है। पिछले कई सौ वर्षों के कालखंड में पश्चिमी राष्ट्र खुद तो संघर्षों से जूझे ही उनका अनुसरण करते, उनके अधीन रहे पूर्वी राष्ट्र भी स्वाधीन होने के उपरांत संघर्षों से दो चार हुए। पश्चिम में यंत्र क्रांति से उपभोगवाद एवं भौतिकवाद को निरंकुश बढ़ावा मिला जिसने औपनिवेश काल को जन्म दिया। पंडित जी ने विचार किया कि व्यक्ति व्यक्ति में भेद न किया जाए, अपितु व्यक्ति को उपकरणों व पैसों से अधिक महत्व दिया जाए। उपकरणों व पैसों को साधन ही रहने दिया जाए, साध्य न बनाया जाए। पंडित जी ने एकात्म मानववाद में इसी बात को समग्र विकास की आत्मा माना है। आवश्यकता के अनुसार आविष्कार हो न कि आविष्कार को आवश्यकता मानकर उपभोगवाद को बढ़ावा दिया जाए।

पंडित जी ने विचार किया कि परतंत्रता में समाज का ''स्व'' दब जाता है। इसीलिए लोग राष्ट्र के स्वराज की कामना करते हैं, जिससे वे अपनी प्रकृति और गुणधर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है, उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे संस्कृति बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि किस प्रकार मानव-प्रकृति एवं भावों की अवहेलना से व्यक्ति के जीवन में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति प्राय: उदासीन एवं अनमना रहता है। उसकी कर्म-शक्ति क्षीण हो जाती है अथवा विकृत होकर विपथगामिनी बन जाती है। व्यक्ति के समान, राष्ट्र भी प्रकृति के प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनता है। पंडित जी के अनुसार आज भारत की अनेक समस्याओं का यही मूल कारण है। पंडित जी के अनुसार राष्ट्रीय दृष्टि से तो हमें अपनी संस्कृति का विचार करना ही होगा, क्योंकि वह हमारी अपनी प्रकृति है।

पंडित जी ने विचार किया कि भारतीय संस्कृति हमेशा से एकात्मवादी ही रही है। भारतीय संस्कृति में सह अस्तित्व का भाव प्राकृतिक है। हमारे यहाँ विविधता में एकता का आत्मिक विचार प्राकृतिक है। भारतीय संस्कृति ने सर्वथा ही व्यक्ति को भौतिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर सामंजस्य बिठा संतुलन बनाने पर बल दिया है। भारतीय संस्कृति मनुष्य को चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) करते हुए जीवनयापन के लिए प्रेरित करती है। भारतीय संस्कृति की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा अनादि काल से प्रचलित है, जो सम्पूर्ण धरा एवं धरा पर स्थित सभी जीवों को ईश्वरीय रूप में एकात्म करती है। भारतीय संस्कृति सदा से सभी आयामों को लेकर समावेशी चिंतन करती रही है।

पंडित जी के एकात्म मानववाद अथवा मानव दर्शन को सर्पिलाकार मंडलाकृति (spiral) द्वारा समझा जा सकता है, जिसके केंद्र में व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा हुआ अगला घेरा उसका परिवार, परिवार से जुड़ा हुआ अगला घेरा समाज, फिर जाति, फिर राष्ट्र, फिर विश्व और फिर अनंत ब्रह्माण्ड को मान सकते हैं। इस अखंड मंडलाकार आकृति में एक घटक से दूसरे का, फिर दूसरे से तीसरे का, फिर तीसरे से चौथे का, इसी तरह निरंतर अगले घटक का विकास होता जाता है। सभी घटक एक दूसरे से जुड़कर अपना अस्तित्व साधते हुए एक दूसरे के पूरक एवं स्वाभाविक सहयोगी हैं। जिनमें कोई संघर्ष नहीं। पूरे ब्रह्माण्ड को ईश्वरीय रूप में एक शरीर भारतीय संस्कृति ने ही माना है। भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण महारथी अर्जुन को अपने उसी दिव्य एवं विराट ईश्वरीय एकात्मवादी रूप के दर्शन देते हैं जिसमे इस ब्रह्माण्ड का हर द्रव्य उस विराट ईश्वरीय रूप का अभिन्न अंग है। अगर हम हिन्दू धर्म से पृथक होकर दर्शन (philosophy) के अनुरूप देखें तो पाएंगे कि एक घटक का अस्तिव दूसरे घटक के अस्तित्व का पूरक है। भारतीय संस्कृति के दर्शन अनुरूप ब्रह्माण्ड में उपस्थित सभी द्रव्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। पंडित जी ने इसी एकात्मवादिता को राष्ट्र से जोड़कर एक युगदृष्टि दी। जिसमें मर्यादा है, त्याग है, समर्पण है, आदर है, भिन्नता के लिए स्वीकृति है। भारतीय संस्कृति मनुष्य को इन्द्रियों पर संयम रखते हुए अपनी भौतिक आकांक्षाओं एवं आध्यात्मिक संतुष्टि में सामंजस्य बिठाते हए संतुलन बनाये रखने को प्रेरित करती है।

पंडित जी ने एकात्म मानववाद में सभी घटकों के लिए अपनी अपनी मर्यादा में रहते हुए अन्य घटकों के साथ परस्पर सहयोग एवं समावेशी विचारधारा का चिंतन किया, जिसका मूल भारतीय संस्कृति है। जरुरी नहीं कि किसी भी कर्म का त्वरित फल मिले ही मिले, ऐसा विचार भारतीय संस्कृति में मिलता है। परंतु कर्म फल निश्चित ही मिलेगा यह भारतीय संस्कृति के दर्शन में स्पष्ट है जिससे ईश्वर भी अछूते नहीं हैं। भगवान श्री कृष्ण के वंश का नाश ऐसे ही कर्मफल थे।

भगवान श्री कृष्ण ने सब कुछ ज्ञात होते हुए भी महत्वपूर्ण निर्णय लिए थे जो धर्म के अनुसार दोनों ही परिस्थितियों के अनुकूल सिद्ध हुए थे। अतः किसी कालखंड अथवा परिस्थितियों के अनुकूल लिए गए निर्णय अथवा कर्म अन्य कालखंड एवं परिस्थिति के अनुकूल भी हो सकते हैं और प्रतिकूल भी हो सकते हैं। अगर प्रतिकूल होते हैं तो विकृति आती है और संघर्ष की स्थिति पैदा होती है। अनुकूल होते हैं तो समाज को सही दिशा और दशा मिलती है। अर्थात् किसी भी घटक के संदर्भ में किया गया कोई भी निर्णय अथवा कर्म दूरगामी परिणाम लेकर आता है।

एकात्म मानव दर्शन में पंडित जी ने यही विचार बार बार किया (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व) कि हर घटक सिर्फ अपने अधिकारों द्वारा नहीं अपितु अन्य घटकों के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन पर ध्यान केंद्रित करें। जब अधिकार की जगह उत्तरदायित्व की बात होती है तो कोई भी कार्य संपूर्ण सत्यनिष्ठा एवं मर्यादा के साथ किया जाता है। जब सत्यनिष्ठा एवं मर्यादा किसी कार्य के साथ सैद्धांतिक रूप से जुड़ जाती है तब उसमें धर्म का प्रादुर्भाव कर्मयोग के रूप में स्वाभाविक रूप में उत्पन्न हो जाता है। कर्मयोग के भाव उत्पन्न होने से मानव चरित्र श्रेष्ठता की होड़ छोड़ उत्तमता की ओर अग्रसर हो जाता है। श्रेष्ठ बनने के लिए प्रतिस्पर्धा का जन्म होता है जिससे नकारात्मक भाव आते हैं और अवगुणों का सृजन होता है उसके विपरीत उत्तम बनने के लिए सकारात्मक भाव एवं स्वाभाविक संतुष्टि आती हैं। उत्तम बनने के लिए मनुष्य अपने अवगुणों का त्याग एवं सद्गुणों में निरंतर वृद्धि करता है। पाश्चात्य संस्कृति में श्रेष्ठता की होड़ लगी जिसने औपनिवेशिक काल को जन्म दिया और पश्चिमी राष्ट्र निरंकुश हो शक्ति के बल पर अन्य राष्ट्रों को अपने अधीन करने लगे। अधीन होने के बाद अधीन हुए राष्ट्रों की मूल संस्कृति पश्चिमी राष्ट्रों की संस्कृति से प्रभावित हुईं जो स्वाभाविक ही था।

पंडित जी पाश्चात्यीकरण से हुए प्रभाव को स्वीकारते हुए स्पष्ट करते हैं कि जरूरी नहीं कि उसे बदला जाए और जो बदलाव हो चुके वह भी नकारे नहीं जा सकते परंतु हमें अपनी मूल संस्कृति के आधार पर स्वयं अपनी दिशा तय करनी पड़ेगी। हमारी मूल संस्कृति की आत्मा स्वाभाविक रूप से एकात्मवादी है, उसी के बल पर हमारा राष्ट्र उन्नति करता हुआ संपूर्ण विश्व को श्रेष्ठता के संघर्ष से छुटकारा दिला उत्तमता की और ले जा सकता है और हम भारतीय संस्कृति की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा एकात्म मानववाद अथवा एकात्म मानव दर्शन के द्वारा प्रमाणित कर सकते हैं।

एकात्म मानववाद अथवा मानव दर्शन इस लेख से बहुत ऊपर है। इस पर जितना विचार किया जाए कम ही लगता है।

गाँव बेचकर शहर खरीदा

देशराज मीना
प्रणाली एवं प्रौद्योगिकी विश्लेषण निदेशालय

गाँव बेचकर शहर खरीदा, कीमत बड़ी चुकाई है।
जीवन के उल्लास बेच के, खरीदी हमने तन्हाई है॥
बेचा है ईमान धरम तब, घर में शानो शौकत आई है।
संतोष बेच तृष्णा खरीदी, देखो कितनी महंगाई है॥

बीघा बेच स्कवायर फीट खरीदा, ये कैसी सौदाई है।
संयुक्त परिवार के वट वृक्ष से, टूटी ये पीढ़ी मुरझाई है॥
रिश्तों में है भरी चालाकी, हर बात में दिखती चतुराई है।
कहीं गुम हो गई मिठास, जीवन में कड़वाहट सी भर आई है॥

रस्सी की बुनी खाट बेच दी, मैट्रेस ने वहां जगह बनाई है।
अचार, मुरब्बे आज अधिकतर, शो केस में सजी दवाई है॥
माटी की सोंधी महक बेच के, रुम स्प्रे की खुशबू पाई है।
मिट्टी का चूल्हा बेच दिया, आज गैस पे पकी खीर बनाई है॥

पहले पांच पैसे का लेमन जूस था, अब कैडबरी हमने पाई है।
बेच दिया भोलापन अपना, फिर चतुराई पाई है॥
सैलून में अब बाल कट रहे, कहाँ घूमता घर- घर नाई है।
कहाँ दोपहर में अम्मा के संग, गप्प मारने कोई आती चाची ताई है॥

मलाई बरफ के गोले बिक गये, तब कोक की बोतल आई है।
मिट्टी के कितने घड़े बिक गये, अब फ्रीज़ में ठंडक आई है॥
खपरैल बेच फॉल्स सीलिंग खरीदा, जहां हमने अपनी नींद उड़ाई है।
बरकत के कई दीये बुझा कर, रौशनी बल्बों में आई है॥

गोबर से लिपे फर्श बेच दिये, तब टाईल्स में चमक आई है।
देहरी से गौ माता बेची, अब कुत्ते संग भी रात बिताई है॥
ब्लड प्रेशर, शुगर ने तो अब, हर घर में ली अंगड़ाई है।
दादी नानी की कहानियां हुईं झूठी, वेब सीरीज ने जगह बनाई है॥

चमक रहे हैं बदन सभी के, दिल पे जमी गहरी काई है।
गाँव बेच कर शहर खरीदा, कीमत बड़ी चुकाई है॥
जीवन के उल्लास बेच के, खरीदी हमने तन्हाई है।
कीमत बड़ी चुकाई है।कीमत बड़ी चुकाई है॥

रक्षा क्षेत्र में निजीकरण: सुरक्षा और विकास की दिशा में एक कदम

मोहित लाल
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

निजीकरण एक प्रौद्योगिकी और आर्थिक प्रबंधन की प्रक्रिया है जिसमें सरकारी संस्थानों या उद्यमिता संस्थानों के संचालन और प्रबंधन की जिम्मेदारी निजी क्षेत्र को सौंपी जाती है। रक्षा क्षेत्र में निजीकरण भी एक ऐसा प्रस्ताव है जिसने बहुत से विचारों को समावेश किया है। रक्षा क्षेत्र में निजीकरण के फायदे और नुकसानों की चर्चा के माध्यम से बदलते परिदृश्य को समझा जा सकता है:

रक्षा क्षेत्र में निजीकरण के फायदे

1. **तकनीकी उन्नति:** निजीकरण से रक्षा उद्योग में तकनीकी उन्नतियों की गति बढ़ सकती है, जिससे नए और उन्नत हथियारों और सुरक्षा सम्प्रेषणों का विकास हो सकता है।
2. **आर्थिक विकास:** निजीकरण से रक्षा उद्योग का आर्थिक विकास हो सकता है जिससे नौकरियों का सृजन होगा और वित्तीय संदर्भ में वृद्धि हो सकती है।
3. **विकास की गति:** निजी निवेशकों की भागीदारी से रक्षा उद्योग में विकास की गति बढ़ सकती है, जिससे तकनीकी और आर्थिक संसाधनों का संचय होगा।
4. **सामर्थ्य विकास:** निजीकरण से नए उद्यमिता द्वारा रक्षा उद्योग में सामर्थ्य का विकास हो सकता है, जिससे उद्यमिता की भागीदारी में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

रक्षा क्षेत्र में निजीकरण के नुकसान

1. **राष्ट्रीय सुरक्षा:** रक्षा क्षेत्र में निजीकरण से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो सकता है, क्योंकि संरक्षण की गुणवत्ता और नियंत्रण में कमी हो सकती है।
2. **जनसंख्या के लिए नौकरी की कमी:** निजीकरण से कुछ सरकारी पदों की कमी हो सकती है, जिससे आम जनता के लिए नौकरियों की कमी हो सकती है।
3. **गोपनीयता का खतरा:** निजीकरण से संभावित गोपनीयता की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, क्योंकि निजी कंपनियाँ गोपनीयता के नियमों का पालन नहीं कर सकती हैं।
4. **प्रशिक्षण और अनुसंधान की कमी:** निजीकरण से रक्षा उद्योग में प्रशिक्षण और अनुसंधान की कमी हो सकती है, जो नए और उन्नत तकनीकों के विकास को रोक सकती है।

निजीकरण के भविष्य में दिशानिर्देश

रक्षा क्षेत्र में निजीकरण का फैसला लेते समय सरकार को सावधानीपूर्वक सोचना चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा और संरक्षण की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए सामर्थ्य और प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। आर्थिक विकास को प्राथमिकता देते हुए, निजीकरण के साथ रक्षा क्षेत्र को विकसित करने के लिए सही मार्गदर्शन और नियमों का पालन करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

रक्षा क्षेत्र में निजीकरण के संभावित फायदों और नुकसानों को समझते हुए, हमें सावधानीपूर्वक और समझदारी से निजीकरण के साथ आगे बढ़ना चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय है जो हमारे राष्ट्र की सुरक्षा और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

अधूरे सपने

अभिषेक सेन
कार्मिक निदेशालय

कल जो खरीदे थे नए कपड़े आज वो पुराने हो गए।
माँ-बाप के दुलारे अब सयाने हो गए।

रोटी कमाने निकले तो घर छूट गए। अपनों से मिले भी अब ज़माने हो गए।
जिन सपनों की खातिर परदेस जाता हूँ। उन्हीं सपनों को अधूरा लेकर बिस्तर पर सो जाता हूँ।

माँ की साड़ी, बाबा की छड़ी और बहन के गहनें कैसे करुं इस महंगाई में पूरे अपनों के सपने।
दौलत-शोहरत कमा कर भी खुद को गरीब पाता हूँ उम्मीदों के इस शहर में खुद को तन्हा पाता हूँ।

सुबह-शाम दिन-रात यूं बीते, बीत गया दिन सारा अपनों से बात करने को तड़प रहा दिल बेचारा।
बहुत हुआ मन करता है लौट चलूँ फिर गांव में जहाँ बीता था बचपन मेरा पेड़ों कि शीतल छाँव में।

ऊर्जा क्षेत्र में विकास: नई संभावनाओं की ओर

विशाल कुमार
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

विकास और प्रगति की दिशा में ऊर्जा क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बदलते समय के साथ, ऊर्जा स्रोतों में नवाचार और नए प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से ऊर्जा क्षेत्र में विकास हो रहा है। ऊर्जा क्षेत्र में विकास के कुछ प्रमुख पहलु इस प्रकार है:

नवाचारी ऊर्जा स्रोतों का विकास

मानवता के विकास और वृक्षारोपण की दिशा में नवाचारी ऊर्जा स्रोतों का विकास महत्वपूर्ण है। सोलर और विंड ऊर्जा जैसे नवाचारी स्रोतों का उपयोग कर विद्युत उत्पादन को प्रमोट किया जा रहा है। सोलर पैनलों के साथ-साथ, विंड टरबाइन्स भी विद्युत उत्पादन में मदद कर रहे हैं और प्रदूषण को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

ऊर्जा दक्षता की बढ़ती मांग

आधुनिक युग में ऊर्जा दक्षता की महत्वपूर्ण बढ़ती मांग देखने को मिल रही है। ऊर्जा का सही तरीके से प्रबंधन करने और इसकी बर्बादी को कम करने के लिए नए तकनीकी उपाय विकसित किए जा रहे हैं। ऊर्जा दक्षता के उन्नत सिस्टम, ऊर्जा संचयन तकनीक और ऊर्जा संवर्धन के उपायों का विकास हो रहा है, जिससे समुद्र तटों पर बिजली का उत्पादन और संचयन किया जा सकता है।

क्लीन और न्यूनतम प्रदूषण ऊर्जा स्रोत

आजकल के विकास की दिशा में स्वच्छ और न्यूनतम प्रदूषण ऊर्जा स्रोतों का विकास महत्वपूर्ण है। विद्युत उत्पादन के लिए जलवायु संरक्षण और प्रदूषण को कम करने वाले तकनीकी उपाय विकसित किए जा रहे हैं। इससे हम जीवन को स्वस्थ और सुरक्षित बनाने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का भी सही उपयोग कर सकते हैं।

नई उत्पादन प्रक्रियाएँ

ऊर्जा क्षेत्र में विकास के साथ-साथ, नई उत्पादन प्रक्रियाएँ भी विकसित की जा रही हैं। उर्वरक के तत्वों से जल उत्पादन करने की प्रक्रियाएँ, जैसे कि हाइड्रोजन फ्यूल सेल्स, आदि में नवाचार हो रहे हैं जो ऊर्जा संचयन और उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष

ऊर्जा क्षेत्र में विकास और प्रगति की दिशा में हो रहे प्रयास से समाज को स्वच्छ, सस्ती और उपलब्ध ऊर्जा स्रोतों का सही तरीके से उपयोग करने की संभावना बढ़ी है। नवाचारी तकनीकों, ऊर्जा दक्षता के सिस्टम और क्लीन ऊर्जा स्रोतों के विकास से एक स्वस्थ, प्रदूषणमुक्त और विकसित भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

कॉलेज का आखिरी दिन

विकास कुमार
कार्मिक निदेशालय

पहली बार अखर रहा है, कॉलेज में यूं आना।
पहली बार समझ में आया, कॉलेज से यूं जाना।

अनायास ही खोज रहा हूँ, कॉलेज का हर कोना।
कैसे मन को समझाऊँ, अब नहीं है कॉलेज आना।

मिलते पर बिछड़ जाते है, कॉलेज के सब दोस्त।
आना-जाना नियम कॉलेज का, फिर नहीं मिलेंगे ऐसे दोस्त।

आज मन है मेरा व्याकुल, कैसे मन को समझाऊँ।
कोई बता दे पता उन दोस्तों का, उनसे फिर मिल पाऊँ।

समझ नहीं पाया मैं उनको, जब थे मेरे पास।
कॉलेज से जाते-जाते हुआ, मुझे यह अहसास।

याद आ रही है सब बातें, जो की थी दोस्तों के साथ।
याद आती है सर की बातें, और प्यारी-प्यारी डाँट।

ममता, करूणा, धैर्य, त्याग से भरा है सर का प्यार।
कॉलेज बिन लगता जीवन सूना सूना सब संसार।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: भविष्य का मार्गदर्शन

अनुज मुदगिल
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एक क्रांतिकारी प्रौद्योगिकी है। हालांकि एआई के कई लाभ भी हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फायदे और नुकसान हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फायदे

1. **स्वचालन और कुशलता:** एआई पुनरावृत्तिकारक कार्यों को स्वचालित करने की क्षमता प्रदान करता है, जिससे कुशलता में वृद्धि होती है और मानव त्रुटि कम होती है। यह विशेष रूप से विनिर्माण और लॉजिस्टिक्स जैसे उद्योगों में महत्वपूर्ण है।
2. **डेटा विश्लेषण और दृढ़ता:** एआई बड़ी मात्रा में डेटा को तेजी से प्रोसेस कर सकता है और पैटर्न्स की पहचान कर सकता है, जिससे विपणन, वित्त, और विपणन जैसे क्षेत्रों में बेहतर निर्णय लिया जा सकता है।
3. **व्यक्तिगतीकरण:** एआई-संचालित एल्गोरिदम यूजर के व्यवहार और पसंद की विश्लेषण करके व्यक्तिगत अनुभव प्रदान कर सकते हैं, जो ई-कॉमर्स और सामग्री सिफारिश के क्षेत्र में ग्राहक संतुष्टि और गहराई पैदा करते हैं।
4. **स्वास्थ्य सेवाओं की उन्नति:** एआई चिकित्सा विशेषज्ञों को रोगों का निदान करने, चिकित्सा छवियों का विश्लेषण करने और रोगियों के परिणामों का पूर्वानुमान करने में मदद कर सकता है, जिससे संभावित रोगियों की देखभाल और उपचार का क्रांतिकारी परिवर्तन हो सकता है।
5. **सुरक्षा और सुरक्षा:** एआई-संचालित निगरानी और मॉनिटरिंग प्रणालियाँ वास्तविक समय में संभावित खतरों और जोखिमों की पहचान करके सार्वजनिक सुरक्षा को बढ़ावा दे सकती है।
6. **नवाचार और सृजनात्मकता:** एआई नई विचार और समाधान उत्पन्न कर सकता है, डिजाइन, कला और संगीत जैसे सृजनात्मक प्रक्रियाओं में सहायक होने में मदद।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नुकसान

1. **नौकरी में विघटन:** एआई की व्यापकता से नौकरी का अस्थायीकरण हो सकता है, विशेष रूप से उन उद्योगों में जहां कार्य स्वचालित रूप से किए जा सकते हैं, जिससे आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।
2. **नैतिक चिंताएँ:** जैसे-जैसे एआई अधिक विकसित होगी, नैतिक प्रश्न उत्पन्न होंगे, जैसे कि यह कैसे निर्णय लेती है और मानव मूल्यों और अधिकारों के साथ मेल खाती है।

3. **पक्षपात और निष्पक्षता:** एआई एल्गोरिदम में उन आदर्शों को शामिल कर सकती है जो प्रशिक्षण डेटा में मौजूद होते हैं, जिससे आरक्षण, कर्ज, और कानूनी तंत्रिका जैसे क्षेत्रों में भेदभावपूर्ण परिणाम हो सकते हैं।
4. **गोपनीयता मुद्दे:** एआई डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा के बारे में चिंताएँ उत्पन्न करती है, साथ ही निगरानी प्रौद्योगिकियों के अवांछनीय उपयोग की संभावना के बारे में भी।
5. **आश्रितता और भरोसेमंदी:** एआई प्रणालियों पर अधिक आश्रित होने से यह गलत निर्णय ले सकता है।
6. **मानव इंटरएक्शन की हानि:** जैसे-जैसे एआई प्रणालियाँ दैनिक जीवन में अधिक एकीकृत होंगी, मानव-से-मानव इंटरएक्शन कम होने का खतरा होता है, जिससे सामाजिक संबंधों और समुदाय बंधों पर असर पड़ सकता है।

भविष्य में नेविगेट करना

जैसे-जैसे हम विभिन्न समाज के क्षेत्रों में एआई को समाहित करते हैं, यह आवश्यक है कि हम इसके लाभों को इसके हानिकारक प्रभावों के साथ तुलना करें। सरकार, व्यवसाय, और व्यक्तियों को नैतिक दिशानिर्देशों, विनियमों और जिम्मेदार प्रथाओं की स्थापना करने के लिए सहयोग करना आवश्यक है ताकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाओं का लाभ उठाया जा सके और उसके नकारात्मक प्रभावों को सामना किया जा सके।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता किस्मत बदल सकती है और कुशलता, ज्ञान को बढ़ावा दे सकती है उद्योगों में जिससे क्रांति आ सकती है। हालांकि, इसे बेहतर तरीके से समझने और इसके संभावित खराबियों का समाधान करने के लिए एक सतर्क और जागरूक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फायदों और नुकसान को समझकर, हम इस बदलते प्रौद्योगिकी दृश्य को अधिक प्रभावी तरीके से नेविगेट कर सकते हैं।

भूकंप: प्राकृतिक प्रकोप की अद्वितीय ताक़त

शमशेर सिंह
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

पृथ्वी के अंधकार से निकलकर हमारे जीवन को बदल देने वाले प्राकृतिक प्रकोपों में एक ऐतिहासिक और भयंकर प्रकोप है, वह है 'भूकंप'। यह विश्व भर में दूसरे प्राकृतिक आपदाओं के साथ जीवन को बदलकर रख देता है। भूकंप के प्राकृतिक और सामाजिक पहलू के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे:

भूकंप क्या है?

भूकंप एक प्राकृतिक प्रकोप है जब पृथ्वी की ऊपरी परत में आवश्यक दबाव में बदलाव होता है तो यह दबाव भूकंप के केंद्र में से फैलता है और तेजी से ज़मीन को हिला देता है, जिससे उच्चतम वेग के ज़लज़लों की उत्पति होती है। यह प्राकृतिक प्रकोप सीमित सीमा में नहीं रहता, बल्कि यह समानत्र दिशा में फैलता है, जिससे यह कई देशों को प्रभावित करता है।

भूकंप के कारण

भूकंप के कई कारण होते हैं, जिनमें प्रमुख हैं:-

1. **तटीय प्लेट की चिकनी तह के संघटन:** जब तटीय प्लेटों में बदलाव होता है, तो वह एक बड़े भूकंप का कारण बन सकता है।
2. **अंतरप्लेट संघटन:** जब दो प्लेटें आपस में टकराती हैं, तो भूकंप उत्पन्न होने का कारण बन सकता है।
3. **उपजाऊ पत्तियाँ:** जब उपजाऊ पत्तियाँ भूकंप के कारण जलती हैं, तो उसके बाद भूकंप हो सकता है।

प्राकृतिक प्रभाव

भूकंप के प्राकृतिक प्रभाव भी काफी भयानक होते हैं। जब ज़मीन हिलती है, तो यह भूमि के ताजगी पर्यावरण को बदल सकता है। भूकंप के प्रभाव से बड़ी डिग्गी बन सकती हैं, जिनमें घरों का निर्माण हो सकता है, और यह लोगों के लिए सुरक्षित नहीं होता है। इसके अलावा, भूकंप, जल, आग और अन्य आपदाओं की तरह बाकी प्राकृतिक प्रकोपों की ओर भी बढ़ सकता है।

सामाजिक प्रभाव

भूकंप के सामाजिक प्रभाव भी गंभीर होते हैं। जब भूकंप होता है, तो लोगों के जीवन पर भी बड़ा प्रभाव पड़ता है। लाखों लोग घर और संपत्ति की नुकसान का सामना करते हैं और बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है। व्यापार और अर्थव्यवस्था पर भी भूकंप का असर पड़ता है और यह एक समृद्धि क्षेत्र को भी नुकसान पहुँचा सकता है।

भूकंप से बचाव

भूकंप से बचाव के लिए उपायों की आवश्यकता होती है। जनसामान्य को भूकंप से संबंधित जागरूकता और शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए ताकि वे आपदाओं के खतरों के बारे में जानकारी हो सके। बच्चों को सुरक्षित स्थानों पर जाने की जागरूकता दिलानी चाहिए और सार्वजनिक स्थानों में भूकंप के प्रतिष्ठान में आवश्यक सुरक्षा उपाय उपलब्ध कराने चाहिए।

निष्कर्ष

भूकंप एक अद्वितीय प्राकृतिक प्रकोप है जिसके प्राकृतिक और सामाजिक प्रभाव दोनों ही भयानक होते हैं। हमें इसके प्रति सतर्क और तैयार रहने की आवश्यकता है, और साथ ही सामुदायिक सहयोग से इसके प्रभाव को कम करने का प्रयास करना चाहिए। भूकंप से संबंधित जागरूकता और शिक्षा के माध्यम से हम बेहतर तरीके से इस आपदा का सामना कर सकते हैं और नुकसान को कम कर सकते हैं।

संध्या की फरियाद

शुभाषीश श्रीवास्तव

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

हो भूरी चमड़ी, काले दिमाग,
हर देव की गाता तू राग
हर पत्थर को मूर्ति बनाता,
हर साए को तू सघन बनाता ...
क्या मानूं मैं तेरी वक्त से वफादारी,
सूर्य के छिपते ही तेरा ये भक्त ओझल हो जाता ...
सूर्य समक्ष हर अशर्फी तेरे लिए गौरहीन हो जाती
मेरे सामने ही आधुनिक वस्त्रों में नारी चरित्रहीन हो जाती
माना मेरे काल में तू लम्बी पूजा पाठ करता
सच बताना यहां भी तू दगा देता,
जो तुझे सुबह का भागता वक्त धोखा न देता...

बेवजह की शहनाई से, मेरे ही काल में तुझे ऐतराज...
वाह! मेरे सुबह के मुसाफिर
पसंद आया मुझे तेरा ये कपटी अंदाज....
दीये की रोशनी से मुझे नहलाने वाले,
अपनों को मेरे सामने न जलाएं...
सुबह का आया शाम को जाए
अपने गांव में भी घबराए ...
देव का प्रतीक हूं, करवा चौथ की पूर्णी हूं मैं...
हर वक्त सटीक हूं, तेरे छलावे की रोगी हूँ मैं...
याद रख तेरे काले कर्मों की अकेली भोगी हूं मैं....

दिल्ली में बाढ़ की विभीषिका

राज कुमार
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

मामूली बरसात का मामूली परिणाम, ऐसा नहीं है यह दिल्ली के ही कुछ समय पहले हुए बारिश और बाढ़ के साथ हुआ है। दिल्ली में हाल के दिनों में हुए बारिश और बाढ़ के प्रसंग में अच्छे और बुरे पहलुओं की चर्चा करने के लिए उपयुक्त समय है।

दिल्ली भारत की राजधानी है जो हर वर्ष मानसून में विभिन्न मौसम परिवर्तनों का सामना करता है। हाल ही में यहाँ भारी मात्रा में वर्षा देखी गई जिसने बाढ़ की स्थिति को और भी खतरनाक बना दिया। इस बार की बारिश ने दिल्ली के कई हिस्सों में बाढ़ की स्थिति पैदा की और इससे कई समस्याएँ उत्पन्न हुईं। दिल्ली में बारिश के कारण हुई बाढ़ ने सड़कों और गलियों को जल से भर दिया, जिससे यातायात और सामान्य जीवन प्रभावित हुआ। बाढ़ के कारण दिल्ली के कई हिस्से पानी में डूब गए और लोगों को अपने घरों से बाहर निकलने में समस्या हो गई। इसके अलावा, बाढ़ से कई लोगों को अपनी संपत्ति की नुकसान हुई।

बाढ़ की स्थिति को देखते हुए सरकारी अधिकारियों ने त्वरित कदम उठाए और लोगों की मदद की। निगरानी केंद्रित प्रणालियों के माध्यम से लोगों को जानकारी दी गई और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया। साथ ही, अत्यधिक पानी भरने से बचाव के लिए प्रयास किए गए और डूबती गाड़ियों की मदद की गई। इस घटना से हमें यह सीखने को मिलता है कि समय-समय पर निगरानी और बचाव संबंधी उपायों की आवश्यकता होती है ताकि हम बाढ़ जैसी आपदाओं का सही समय पर सामना कर सकें। सार्वजनिक स्थानों में जल संचार की अच्छी योजना और अनुशासन का पालन करने से हम इस प्रकार की स्थितियों से बच सकते हैं। यह बाढ़ की घटना दिल्ली की सामाजिक और सार्वजनिक व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण चुनौती साबित हुई। सरकार को यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करना चाहिए कि वर्षा के समय सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा और जनसामान्य की रक्षा की जाए ताकि वे बाढ़ और उसके प्रभावों से सही तरीके से बच सकें।

कुल मिलाकर, बारिश और बाढ़ के चलते दिल्ली के कई हिस्से प्रभावित हुए। यह घटना सिखाती है कि हमें प्राकृतिक आपदाओं के खतरों के लिए सदैव सजग रहना चाहिए और समय पर कदम उठाने की क्षमता रखनी चाहिए। यह हम सभी की जिम्मेदारी है कि अपने साथी नागरिकों की मदद करें और एक सुरक्षित और बेहतर वातावरण विकसित करें।

महिला सशक्तिकरण: समर्थन की दिशा में एक कदम

कोमल कुमारी
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

महिला सशक्तिकरण, एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है जो समाज में समानता और उत्तरदायित्व की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। समाज की सकारात्मक बदलाव की दिशा में, महिलाओं को सशक्त बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि महिलाएं समाज की मूल शक्ति होती हैं।

महिला सशक्तिकरण का मतलब होता है महिलाओं को वे अधिकार और अवसर प्रदान करना जिनकी वे हकदार हैं। यह न केवल उनके व्यक्तिगत विकास की दिशा में मदद करता है, बल्कि समाज के स्तर पर भी सकारात्मक परिवर्तन लाता है। महिला सशक्तिकरण से समाज में समानता बढ़ती है और यह समाज के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षित महिलाएं समाज में अपनी पहचान बना सकती हैं और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी योगदान कर सकती हैं। समाज की सोच बदलने के लिए महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक होना जरूरी है और उन्हें समाज में वो मानवाधिकार प्राप्त करने का अधिकार है जो हर व्यक्ति को प्राप्त होता है।

महिला सशक्तिकरण के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। यह संगठन न सिर्फ महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करते हैं, बल्कि उन्हें रोजगार, व्यवसाय और प्रशिक्षण के अवसर भी प्रदान करते हैं। समाज में महिला सशक्तिकरण की दिशा में होने वाले बदलाव समाज के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। हमें समाज में महिलाओं के प्रति विचारशीलता और समर्थन को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि समाज समानता और सामाजिक सद्भावना की दिशा में अग्रसर हो सके।

समापन

महिला सशक्तिकरण समाज के विकास की मुख्य दिशा है। महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, उन्हें शिक्षा और व्यावसायिक अवसर प्रदान करना समाज को मजबूत और सशक्त बनाता है। हम सभी को इस मार्ग पर एक साथ चलकर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना चाहिए ताकि हमारे समाज की प्रगति और विकास हो सके।

क्योंकि जीना इसी का नाम है

शिवानी वर्मा
सतर्कता एवं सुरक्षा निदेशालय

सुदूर पश्चिम दिशा में शाम का अस्त होता सूरज इस प्रकार तेजी से क्षितिज की तरफ जा रहा था मानो दिन भर आँगन में खेलने के बाद नन्हा बालक शाम को अपनी माँ के आँचल के लिए विकल हो उठता है। दिन भर कल-कल कर बहने वाली नदी का पानी अब शांत होकर बह रहा था मानो विश्राम कर रहा हो। दिन भर की थकान मिटाने वाली ठंडी हवा बहने लगी थी। नदी के किनारे बने एक छोटे से विश्रामालय में तीन मित्र अलग-अलग दिशाओं से आकर मिलते हैं और एक दूसरे की यात्रा का विवरण जानने के लिए एक साथ बैठ जाते हैं। तीनों मित्रों उद्यम, आनंद और जीवन की यात्रा का उद्देश्य दुर्गम पहाड़ों की ऊँची चोटी पर पायी जाने वाली एक विशेष प्रकार की औषधि को खोजना था जिसके सेवन से बढ़ती आयु पर नियंत्रण कर फिर से युवा, नीरोग एवं स्वस्थ शरीर प्राप्त किया जा सकता था। सबसे पहले उद्यम ने अपनी यात्रा वृत्तान्त कहना प्रारम्भ किया। उसने बताया कि यात्रा प्रारम्भ करने से अंत तक उसका एकमात्र लक्ष्य औषधि को ढूँढना था। इसके लिए वह कड़ी धूप में दुर्गम रास्तों पर भूखा-प्यासा बिना विश्राम किए चलता रहा और अंत में औषधि प्राप्त करने में सफल भी हो गया। परंतु कठिन परिश्रम और थकान ने उसके शरीर को पहले से इतना कमजोर बना दिया था कि औषधि का असर उस पर कम ही हुआ। अब आनंद की बारी थी। आनंद ने एक ठंडी सांस ली और बताया कि वह रास्ते की दुर्गमता से थक गया और आलस्य के कारण यात्रा से अधिक समय उसने विश्राम करने में व्यतीत कर दिया। इसका परिणाम ये हुआ कि वह औषधि प्राप्त नहीं कर सका। परंतु यात्रा का असर उस पर दिखना स्वाभाविक था और वो अपनी उम्र से अधिक बूढ़ा हो चला था। इन दोनों से अलग तीसरा मित्र जीवन सबसे अधिक स्वस्थ, ओजपूर्ण एवं युवा दिख रहा था। उसकी आंखों की चमक बता रही थी कि औषधि का सबसे अधिक असर उस पर ही हुआ है। परंतु जीवन ने जब बताया कि उसने औषधि का सेवन किया ही नहीं तो दोनों मित्र आश्चर्यचकित रह गए। जीवन ने बताया कि निश्चय ही औषधि प्राप्त करने के लिए उसे दुर्गम मार्गों से होकर गुजरना पड़ा किन्तु उसका लक्ष्य बस औषधि पाना नहीं बल्कि अपनी यात्रा को अर्थपूर्ण बनाना भी था। वह कठिन रास्तों से चला, थका एवं विश्राम भी किया। मार्ग में उसे प्राकृतिक मनोरम दृश्य मिले, नदी का संगीत मिला, प्रकृति माँ की गोद में मिलने वाले फल-फूल मिले। सूरज ने उसे तपाया तो चाँद ने अपनी शीतल चाँदनी से उसे गहरी नींद में सुलाया। जीवन ने अपनी यात्रा में उद्यम और आनंद दोनों के गुणों को परिणत किया जिसका परिणाम यह हुआ कि उसे औषधि मिलने के बाद भी उसकी आवश्यकता ही नहीं रही। उसने सहर्ष वह औषधि अपने मित्रों उद्यम एवं आनंद को दे दी जिनको औषधि की आवश्यकता थी।

यद्यपि यह कहानी एक कल्पना है परंतु इसका संदेश आज के परिदृश्य में प्रासंगिक है। आज एक तरफ हमारे समाज में उन्नति की असीमित संभावनाएँ एवं अनगिनत महत्वाकांक्षा हैं। दूसरी तरफ मनोरंजन के असंख्य साधन हैं। यदि केवल

महत्वाकांक्षाओं के पीछे भागते रहे तो अंत में यह अफसोस रह जाएगा कि काश! थोड़ा ठहर कर जीवन जी लिया होता। यदि केवल मनोरंजन के पीछे भागते रहे तो यह अफसोस रह जाएगा कि काश! जीवन में परिश्रम करके कुछ प्राप्त पर लिया होता। इन दोनों से हट कर एक ऐसी जीवन शैली होनी चाहिए जहां हम नए सपने देखें, उसे पूरा करने के लिए अथक परिश्रम करे एवं उनके पूरा होने पर उस क्षण को खुल कर जिये और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें। यह एक छोटी सी सामान्य लेकिन महत्वपूर्ण बात है कि जीवन में बड़ी सफलता पाना ही खुशी नहीं है बल्कि छोटे-छोटे क्षणों को खुल कर जीना जीवन की सबसे बड़ी सफलता है। सप्ताह के पाँच दिन शनिवार एवं रविवार का इंतज़ार करने से अच्छा है कि हम हर दिन कुछ-न-कुछ ऐसा जरूर करें जिससे हमें खुशी मिले। फिर चाहे वह मनपसंद संगीत पर कुछ पल थिरकना हो, स्वादिष्ट खाना खाना, मनपसंद किताब पढ़ना, अपनों के साथ समय व्यतीत करना या अच्छी नींद लेना। इस संसार में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जो ये संदेश देते हैं कि जिसने छोटी सफलता का महत्व समझा है उसने बड़ी सफलता पायी है और जिंदगी को जीना सीखा है।

हर सुबह जो अपनी आखों में, इक सपना लेकर जगते हैं।
दिन से लेकर जो शाम तलक, चलते हैं, थकते हैं पर हँसते हैं।

जो कड़ी धूप में संघर्षों की, सोने सा तप के निखरते हैं।
छोटी या बड़ी हर खुशी का प्याला, उल्लास से भर कर पीते हैं।

सच मानो वो ऐसा कर के, हर साँस में जीवन जीते हैं।
मानो तो हर दिन खास है, मानो तो हर दिन आम है।

कभी सुबह सुखों के साथ हुई, कभी बीती गमों में शाम है।
पर हर लम्हें को जीते जाना, बस इतना सा ही काम है।

जीना इसी का नाम है, क्योंकि जीना इसी का नाम है।

वृक्षों का महत्व

सुनील कुमार
अपर सचिव एवं अपर वित्तीय सलाहकार का कार्यालय

वृक्ष हमारे जीवन का अस्तित्व हैं। वृक्षों के बिना धरती पर जीवन की कल्पना करना असंभव है। ये धरती पर अमूल्य सम्पदा के समान हैं। वृक्षों के कारण ही मनुष्य को अपनी आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के संसाधन प्राप्त होते हैं। यदि वृक्ष न हों तो पर्यावरण का संतुलन ही बिगड़ जाये और सब ओर तबाही मच जाये। आजकल मनुष्य विकास के नाम पर कंक्रीट के जंगल बना रहा है और वे भी इस प्राकृतिक संपदा की कीमत पर।

यदि वृक्ष काटने के साथ-साथ इनका रोपण न किया गया तो इस ग्रह पर जीवन की संभावनायें ही खत्म हो जायेंगी। वृक्ष प्रकृति की वो देन है जिसका कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है। वृक्ष हमारा सबसे घनिष्ठ मित्र है। हमारे द्वारा लगाया गया वृक्ष सिर्फ हमें ही लाभ नहीं पहुँचाता बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों को लाभ पहुँचाता है। हवा, पानी, खाने-पीने की सामग्री, ईंधन, वस्त्र, जानवरों का चारा अन्य कार्यों में प्रयोग करने के लिए लकड़ी सब हमें वृक्षों से ही मिलता है। वृक्ष पर्यावरण से कार्बन डाईऑक्साईड लेकर बदले में ऑक्सीजन देते हैं।

वृक्षों पर कई जीव-जन्तु अपना घर बनाते हैं। यदि वृक्ष न हों तो हम इन सब चीजों की कल्पना तक नहीं कर सकते। लेकिन क्या मनुष्य इस प्राकृतिक संसाधन से अपना लाभ लेना ही जानता है या वह इसके संरक्षण और संवर्द्धन की ओर भी जागरुक है? वर्तमान स्थिति देखकर ऐसा लगता है कि हम वृक्षों को बचाना तो चाहते हैं पर शायद उतना प्रयास नहीं कर पा रहे हैं जितना आवश्यक है।

ऐसी परिस्थिति से धीरे-धीरे प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जायेगा और हम प्रकृति की इस अमूल्य सम्पदा को धीरे-धीरे अन्य प्रजातियों को लुप्त कर देंगे। इस प्रकार इस धरती पर न जीवन होगा न जीव। अतः हमें चाहिये कि हमारे आसपास हमें जितनी भी खाली भूमि दिखाई दे वहाँ पौधारोपण करें और कुछ न कुछ अपने घर में गमलों में ही इस अमूल्य धरोहर को संरक्षित करें। यदि यह छोटा सा कदम हर व्यक्ति उठायेगा तो यह धरती और धरती पर जीवन सब खुशहाल रहेगा।

वृक्षों को हरा सोना भी कहा जाता है क्योंकि यह बहुत मूल्यवान सम्पदा है। धरती पर जीवन प्रदान करने वाली ऑक्सीजन और पानी प्रदान करने वाला मुख्य साधन वृक्ष ही है। ऑक्सीजन प्रदान करने का कार्य और कोई नहीं कर सकता और वृक्षों के बिना पानी की कल्पना करना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। वृक्ष वायु प्रदूषण कम करने में हमारी सहायता कर पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं। मात्र वायु प्रदूषण ही नहीं ये, हानिकारक रसायनों को छानकर जल को भी साफ करते

हैं। हर उद्योग में वृक्ष के उत्पाद का मुख्य योगदान रहता है। हमारे दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली वस्तुओं में वृक्षों का बहुत महत्व है। जितने अधिक वृक्ष होंगे पर्यावरण भी उतना ही शुद्ध रहेगा। आजकल लोगों को वायु प्रदूषण के कारण कई प्रकार के साँस एवं अन्य रोगों से पीड़ित होना पड़ रहा है। यदि वृक्ष होंगे तो हवा में मिली हानिकारक गैसों को शोषित कर हमें स्वच्छ हवा प्रदान करेंगे और रोगों से छुटकारा भी। यदि हम वृक्षों की संख्या में वृद्धि करेंगे तो ये प्राकृतिक रुप से हवा को स्वच्छ करने के साथ हमें और भी कई फायदे पहुँचायेंगे। इनकी वृद्धि से हम एयर कंडीशनर के उपयोग से बच कर इससे निकलने वाली हानिकारक गैसों से भी निजात पा सकते हैं। पेड़ के कारण ही हमें भरपूर वर्षा प्राप्त होती है।

वृक्ष की जड़े मिट्टी को बांध कर रखती हैं जिनसे भूमि कटाव भी नहीं होता व भूमि जल को अच्छे से अवशोषित कर लेती है। यही जल भूमिगत जल बनकर हमें पानी के अभाव से बचाता है। वृक्ष हमें छाया प्रदान कर गर्मी के प्रभाव से भी धरती को बचाते हैं।

इस अमूल्य सम्पदा की कमी से धरती पर ग्लोबल वार्मिंग, सूखा, भूमि कटाव जैसे समस्यायें अपना विकराल रूप लेती जा रही हैं। यदि हम इस प्राकृतिक आपदा से बचना चाहते हैं तो हमें वृक्षों के संरक्षण की ओर कदम उठाने ही होंगे। यदि आज हम इस दिशा में कार्य करेंगे तभी भावी पीढ़ी को भी इस ओर काम करने की प्रेरणा मिलेगी। ख़ुशी के अवसर पर हम पैसा खर्च करते हैं, दावतें करते हैं लेकिन इन सब के बजाय हम पौधारोपण और पेड़ों का संरक्षण करें तो ये सिर्फ हमारे जान-पहचान वालों के लिए ही नहीं बल्कि मनुष्य के लिए भी ख़ुशी का संकेत होगी।

भारतीय संस्कृति में तो वैसे भी पेड़ों की पूजा की बात कही गई है। एक जिम्मेदार नागरिक बनकर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिये कि यदि विकास के नाम पर पेड़ कट रहे हैं तो उनकी क्षतिपूर्ति हेतु कहाँ पौधारोपण हो रहा है?

ईश्वर ने मनुष्य को ही बुद्धि/विवेक का गुण प्रदान किया है। यदि इस बुद्धि का प्रयोग हम विकास के नाम पर प्रकृति को नुकसान पहुँचाने में करते रहे तो यह मनुष्य के विवेक पर धब्बा होगा। अतः आओ हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम अपने लिए ही नहीं बल्कि पूरी प्रकृति के लिए पेड़ों के संरक्षण पर कार्य करेंगे और इस धरा को हरा-भरा करेंगे।

मेहनत के फल का महत्व

सुमन जोशी
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

एक नगर में प्रतिष्ठित व्यापारी रहते थे जिन्हें बहुत समय बाद एक पुत्र की प्राप्ति हुई थी। उसका नाम चंद्रकांत रखा गया। चंद्रकांत घर में सभी का दुलारा था। अतिकठिनाई एवं लंबे समय इंतजार के बाद संतान का सुख मिलने पर, घर के प्रत्येक व्यक्ति के मन में व्यापारी के पुत्र चंद्रकांत के प्रति विशेष लाड़ प्यार था जिसने चंद्रकांत को बहुत बिगाड़ दिया था। घर में किसी भी बात का अभाव नहीं था। चंद्रकांत की मांग से पहले ही उसकी सभी इच्छाये पूरी कर दी जाती थी। शायद इसी के कारण चंद्रकांत को ना सुनने की आदत नहीं थी और ना ही मेहनत के महत्व का आभास था। चंद्रकांत ने जीवन में कभी अभाव नहीं देखा था इसलिए उसका नजरिया जीवन के प्रति बहुत अलग था और वहीं व्यापारी ने कड़ी मेहनत से अपना व्यापार बनाया था।ढलती उम्र के साथ व्यापारी को अपने कारोबार के प्रति चिंता होने लगी थी। व्यापारी को चंद्रकांत के व्यवहार से प्रत्यक्ष था कि उसके पुत्र को मेहनत के फल का महत्व नहीं पता। उसे आभास हो चूका था कि उसके लाड़ प्यार ने चंद्रकांत को जीवन की वास्तविकता और जीवन में मेहनत के महत्व से बहुत दूर कर दिया है। गहन चिंतन के बाद व्यापारी ने निश्चय किया कि वो चन्द्रकांत को मेहनत के फल का महत्व, स्वयं सिखायेगा। चाहे उसके लिए उसे कठोर ही क्यूँ न बनना पड़े ।

व्यापारी ने चंद्रकांत को अपने पास बुलाया और बहुत ही तीखे स्वर में उससे बात की। उसने कहा कि तुम्हारा मेरे परिवार में कोई अस्तित्व नहीं है, तुमने मेरे कारोबार में कोई योगदान नहीं दिया और इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी मेहनत से धन कमाओ, तब ही तुम्हें तुम्हारे धन के मुताबिक दो वक्त का खाना दिया जायेगा। यह सुनकर चन्द्रकांत को ज्यादा कोई फर्क नहीं पड़ा, उसने उसे क्षण भर का गुस्सा समझ लिया लेकिन व्यापारी ने भी ठान रखी थी। उसने घर के सभी सदस्यों को आदेश दिया कि कोई चन्द्रकांत की मदद नहीं करेगा और ना ही उसे बिना धन के भोजन दिया जायेगा।

चन्द्रकांत से सभी बहुत प्यार करते थे जिसका उसने बहुत फायदा उठाया। वो रोज किसी न किसी के पास जाकर धन मांग लाता और अपने पिता को दे देता। और व्यापारी उसे उन पैसों को कुँए में फेंकने को बोलता जिसे चंद्रकांत बिना किसी अड़चन के फेंक आता और उसे रोज भोजन मिल जाता। ऐसा कई दिनों तक चलता रहा लेकिन अब घर के लोगों को रोज-रोज धन देना भारी पड़ने लगा। सभी उससे अपनी कन्नी काटने लगे, जिस कारण चंद्रकांत को मिलने वाला धन कम होने लगा और उस धन के हिसाब से उसका भोजन भी कम होने लगा।

एक दिन चन्द्रकांत को किसी ने धन नहीं दिया और उसे अपनी भूख को शांत करने के लिए गाँव में जाकर कार्य करना पड़ा। उस दिन वो बहुत देर से थका हारा व्यापारी के पास पहुँचा और धन देकर भोजन माँगा। रोज के अनुसार व्यापारी

ने उसे वो धन कुँए में फेंकने का आदेश दिया जिसे इस बार चंद्रकांत सहजता से स्वीकार नहीं कर पाया और उसने पलट कर जवाब दिया– पिताजी मैं इतनी मेहनत करके, पसीना बहाकर इस धन को लाया और आपने मुझे एक क्षण में इसे कुँए में फेंकने कह दिया। यह सुनकर व्यापारी समझ गया कि आज चंद्रकांत को मेहनत के फल का महत्व समझ आ गया है। व्यापारी भलीभांति जानता था कि उसके परिवार वाले चन्द्रकांत की मदद कर रहे हैं, तब ही चंद्रकांत इतनी आसानी से धन कुँए में डाल आता था लेकिन उसे पता था, एक न एक दिन सभी परिवारजन चन्द्रकांत से कन्नी काट लेंगे,उस दिन चन्द्रकांत के पास कोई विकल्प शेष नहीं होगा। व्यापारी ने चन्द्रकांत को गले लगा लिया और अपना सारा कारोबार उसे सौंप दिया।

शिक्षा

आज के समय में उच्च वर्ग के परिवारों की संतानों को मेहनत के फल का महत्व पता नहीं होता और ऐसे में यह दायित्व उनके माता पिता का होता हैं कि वो अपने बच्चों को जीवन की वास्तविक्ता से अवगत कराये। लक्ष्मी उसी घर में आती हैं जहाँ उसका सम्मान होता है।

मेहनत ही एक ऐसा हथियार हैं जो मनुष्य को किसी भी परिस्थिति से बाहर ला सकता है। व्यापारी के पास इतना धन तो था कि चंद्रकांत और उसकी आने वाली पीढ़ी बिना किसी मेहनत के जीवन आसानी से निकाल लेते लेकिन अगर आज व्यापारी अपने पुत्र को मेहनत का महत्व नहीं बताता तो एक न एक दिन व्यापारी की आने वाली पीढ़ी व्यापारी को कोसती।

विश्व हिंदी सम्मेलनः उद्देश्य एवं उपलब्धियां

सौरभ शुक्ला
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

प्रस्तावना

विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्व भर से हिंदी विद्वान, साहित्यकार,पत्रकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी जुटते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरुकता पैदा करने, समय-समय पर हिंदी की विकास यात्रा का आकलन करने, लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिंदी साहित्य के प्रति सरोकारों को और दृढ़ करने, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने तथा हिंदी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण व महत्त्वपूर्ण रिश्तों को और अधिक गहराई व मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से 1975 में विश्व हिंदी सम्मेलनों की शृंखला आरंभ की गई थी।

इस लेख में मैंने विश्व हिंदी सम्मेलनों के परिप्रेक्ष्य में, उन विभिन्न उद्देश्यों, आंकड़ों, दृष्टियों, प्रस्तावों, मंतव्यों, उपलब्धियों एवं योगदानों को संक्षिप्त में उल्लेख करने का विनम्र प्रयास किया है जो हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आधिकारिक रूप से ख्याति प्राप्त कराने में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आजादी के अमृत महोत्सव पर विश्व हिंदी सम्मेलनों के झरोखे से हिंदी के विकास की गाथा एवं यात्रा का वर्णन आप सबके सामने प्रस्तुत करना मेरा मंतव्य है।

उद्देश्य

विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य हिंदी का विश्व स्तर पर प्रचार-प्रसार करना है ताकि इसे विश्वस्तरीय स्वरूप में अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित किया जा सके और साथ ही इसे संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में आधिकारिक भाषा के रुप में मान्यता दिलाई जा सके। सम्मेलन का उद्देश्य इस विषय पर विचार विमर्श करना भी था कि तत्कालीन वैश्विक परिस्थिति में हिंदी किस प्रकार सेवा का साधन बन सकती है। महात्मा गाँधी की सेवा भावना से अनुप्राणित हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रवेश पाकर विश्वभाषा के रूप में समस्त मानव जाति की सेवा की ओर अग्रसर हो। साथ ही यह किस प्रकार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र 'वसुधैव कुटुंबकम' विश्व के समक्ष प्रस्तुत करके 'एक विश्व एक मानव परिवार' की भावना का संचार करें।

प्रारंभ में इनका आयोजन हर चौथे वर्ष आयोजित किया जाता था लेकिन अब यह अंतराल घटाकर 3 वर्ष कर दिया गया है। अब तक ग्यारह विश्व हिंदी सम्मेलन हो चुके हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है:-

अब तक आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन:

1.	प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन	नागपुर, भारत	10–12 जनवरी 1975
2.	द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	28–30 अगस्त 1976
3.	तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन	नई दिल्ली, भारत	28–30 अक्टूबर 1983
4.	चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट लुई,मॉरीशस	02–04 दिसंबर1993
5.	पांचवां विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट ऑफ स्पेन, ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो	04–08 अप्रैल 1996
6.	छठा विश्व हिंदी सम्मेलन	लंदन, यू. के.	14 -18 सितंबर1999
7.	सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन	पारामारिबो, सूरीनाम	06–09 जून 2003
8.	आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन	न्यूयार्क, संयुक्त राज्य अमरीका	13 -15 जुलाई 2007
9.	नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन	जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका	22–24 सितंबर 2012
10.	दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन	भोपाल, भारत	10–12 सितंबर 2015
11.	ग्यारहवां विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्टलुइ (मॉरीशस)	18–20 अगस्त 2018

संक्षिप्त परिचय, उद्देश्य एवं उपलब्धियाँ

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन

अध्यक्ष– शिवसागर रामगुलाम (मॉरीशस राष्ट्रपति)

उद्घाटनकर्ता– इंदिरा गांधी। सम्मेलन का बोध वाक्य– "वसुधैव कुटुंबकम्"। सम्मेलन में पारित मंतव्य:

- संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए।
- वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना हो।
- विश्व हिंदी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिये अत्यंत विचारपूर्वक एक योजना बनाई जाए।

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन–10 जनवरी से 12 जनवरी 1975 तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। सम्मेलन से संबंधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी डी जत्ती थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी उस समय महाराष्ट्र के वित्त, नियोजन व अल्पबचत मन्त्री थे। सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस के प्रधानमन्त्री श्री शिवसागर रामगुलाम, जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आये एक प्रतिनिधिमंडल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था। प्रसिद्ध समाजसेवी एवं स्वतंत्रता सेनानी विनोबा भावे ने इस सम्मेलन में अपना विशेष संदेश भेजा।

इस सम्मेलन में 30 देशों के कुल 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन

भारत के तत्कालीन केंद्रीय स्वास्थ्य परिवार नियोजन मंत्री डॉक्टर करण सिंह + 30 सदस्य ने इस सम्मेलन में भाग लिया। भारत के अतिरिक्त सम्मेलन में 17 देशों के 191 प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया। मंतव्य:

- मॉरीशस में एक विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना की जाए जो सारे विश्व में हिंदी की गतिविधियों का समन्वय कर सके।
- एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए जो भाषा के माध्यम से ऐसे समुचित वातावरण का निर्माण कर सके जिसमें मानव विश्व का नागरिक बना रहे और आध्यात्म की महान शक्ति एक नए समन्वित सामंजस्य का रूप धारण कर सके।
- हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में एक आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान मिले। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जाए।

तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन

अध्यक्ष– डॉ बलराम जाखड़ (लोकसभा अध्यक्ष)

सम्मेलन में कुल 6,566 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें विदेशों से आये 260 प्रतिनिधि भी शामिल थे। हिंदी की सुप्रसिद्ध कवियत्री सुश्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा था– **"भारत के सरकारी कार्यालयों में हिंदी के कामकाज की स्थिति उस रथ जैसी है जिसमें घोड़े आगे की बजाय पीछे जोत दिये गये हों।"** मंतव्य:

- अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार की संभावनाओं का पता लगा कर इसके लिए गहन प्रयास किए जाएं।
- हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप को विकसित करने के लिए विश्व हिंदी विद्यापीठ स्थापित करने की योजना को मूर्त रूप दिया जाए।
- विगत दो सम्मेलनों में पारित संकल्पों की संपुष्टि करते हुए यह निर्णय लिया गया कि अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के विकास और उन्नयन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी समिति का गठन किया जाए। इस समिति में देश-विदेश के लगभग 25 व्यक्ति सदस्य हों।

चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन

आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मन्त्री श्री मुक्तेश्वर चुनी ने संभाला था। इसमें भारत से गए प्रतिनिधिमंडल के नेता श्री मधुकर राव चौधरी थे । भारत के तत्कालीन गृह राज्यमन्त्री श्री रामलाल राही प्रतिनिधिमंडल के उपनेता थे। सम्मेलन में मॉरीशस के अतिरिक्त 200 विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इस सम्मेलन के बाद विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मॉरीशस में हुई। मंतव्य:

- भारत में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए।
- विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ खोले जाएं।
- भारत सरकार विदेशों से प्रकाशित दैनिक समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें प्रकाशित करने में सक्रिय सहयोग करे।
- हिंदी को विश्व मंच पर उचित स्थान दिलाने में शासन और जन-समुदाय विशेष प्रयत्न करे।
- विश्व के समस्त हिंदी प्रेमी अपने निजी एवं सार्वजनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और संकल्प

लें कि वे कम से कम अपने हस्ताक्षरों, निमंत्रण पत्रों, निजी पत्रों और नामपट्टों में हिंदी का प्रयोग करेंगे।

- सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि अपने-अपने देशों की सरकारों से संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास करेंगे।

पांचवा विश्व हिंदी सम्मेलन

सम्मेलन का केंद्रीय विषय– "प्रवासी भारतीय और हिंदी" था। जिन अन्य विषयों पर इसमें ध्यान केंद्रित किया गया, वे थे–हिंदी भाषा और साहित्य का विकास, कैरेबियाई द्वीपों में हिंदी की स्थिति एवं कप्यूटर युग में हिंदी की उपादेयता। सम्मेलन में भारत से 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के 257 प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए। मंतव्य:

- विश्व व्यापी भारतवंशी समाज हिंदी को अपनी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करेगा।
- मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत में एक अंतर-सरकारी समिति बनाई जाए।
- सभी देशों, विशेषकर जिन देशों में अप्रवासी भारतीय बड़ी संख्या में हैं, उनकी सरकारें अपने-अपने देशों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करें। उन देशों की सरकारों से आग्रह किया जाए कि वे हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए राजनीतिक योगदान और समर्थन दें।

छठा विश्व हिंदी सम्मेलन

अध्यक्ष– डॉ कृष्ण कुमार

सम्मेलन का विषय– "हिंदी और भावी पीढ़ी"। मंतव्य:

- हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता दी जाए।
- हिंदी को सूचना तकनीक के विकास, मानकीकरण, विज्ञान एवं तकनीकी लेखन, प्रसारण एवं संचार की अद्यतन तकनीक के विकास के लिए भारत सरकार एक केंद्रीय एजेंसी स्थापित करे।
- नई पीढ़ी में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक पहल की जाए।
- भारत सरकार विदेश स्थित अपने दूतावासों को निर्देश दे कि वे भारतवंशियों की सहायता से विद्यालयों में एक भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था करवाएँ।

सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन

21वीं सदी में आयोजित होने वाला पहला विश्व हिंदी सम्मेलन

सम्मेलन का विषय– "विश्व हिंदी: नई शताब्दी की चुनौती"। मंतव्य:

- विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना हो।
- भारतीय मूल के लोगों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रभावी उपाय किए जाएं।
- हिंदी के प्रचार हेतु वेबसाइट की स्थापना और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग हो।
- हिंदी विद्वानों की विश्व-निर्देशिका का प्रकाशन किया जाए।
- विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हो एवं कैरेबियन हिंदी परिषद की स्थापना हो।
- दक्षिण भारत के विश्व विद्यालयों में हिंदी विभाग की स्थापना हो।

- हिंदी पाठ्यक्रम में विदेशी हिंदी लेखकों की रचनाओं को शामिल किया जाए।
- सूरीनाम में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था की जाए।

आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन

सम्मेलन का विषय– "विश्व मंच पर हिंदी"। मंतव्य:

- विदेशों में हिंदी शिक्षण और देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने हेतु दूसरी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाया जाए तथा हिंदी शिक्षकों को मान्यता प्रदान करने की व्यवस्था की जाए।
- दिल्ली सहित विश्व के चार-पाँच अन्य देशों में इस सचिवालय के क्षेत्रीय कार्यालय खोलने पर विचार किया जाए। सम्मेलन सचिवालय यह आह्वान करता है कि हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए विश्व मंच पर हिंदी वेबसाइट बनाई जाए।
- हिंदी में ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विषयों पर सरल एवं उपयोगी हिंदी पुस्तकों के सृजन को प्रोत्साहित किया जाए। हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के प्रभावी उपाय किए जाएं। एक सर्वमान्य व सर्वत्र उपलब्ध यूनिकोड को विकसित व सर्वसुलभ बनाया जाए।
- विदेशों में जिन विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है उनका एक डेटाबेस बनाया जाए और हिंदी अध्यापकों की एक सूची भी तैयार की जाए।
- यह सम्मेलन विश्व के सभी हिंदी प्रेमियों और विशेष रूप से प्रवासी भारतीयों तथा विदेशों में कार्यरत भारतीय राष्ट्रिकों से भी अनुरोध करता है कि वे विदेशों में हिंदी भाषा, साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान करें।
- वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विदेशी हिंदी विद्वानों के अनुसंधान के लिए शोधवृत्ति की व्यवस्था की जाए।
- विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना पर विचार-विमर्श किया जाए।
- हिंदी को साहित्य के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और वाणिज्य की भाषा बनाया जाए।
- भारत द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर आयोजित की जाने वाली संगोष्ठियों व सम्मेलनों में हिंदी को प्रोत्साहित किया जाए।

नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन

सम्मेलन का विषय– "भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ"। मंतव्य:

- हिंदी के बढ़ते हुए वैश्वीकरण के मूल में गांधी जी की भाषा दृष्टि का महत्वपूर्ण स्थान है।
- मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत और मॉरीशस की सरकारों द्वारा किए गए अथक प्रयासों एवं समर्थन की सराहना करता है।
- महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय भी विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित संकल्पों का ही परिणाम है। यह विश्वविद्यालय हिंदी के प्रचार-प्रसार और उपयुक्त आधुनिक शिक्षण उपकरण विकसित करने में सराहनीय कार्य कर रहा है।
- सम्मेलन केंद्रीय हिंदी संस्थान की भी सराहना करता है कि वह उपयुक्त पाठ्यक्रम और कक्षाओं का संचालन करके विदेशियों और देश के गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों के बीच हिंन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहा है।

दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन

अध्यक्ष– सुषमा स्वराज

सम्मेलन का विषय– "हिंदी जगत: विस्तार एवं संभावनाएं"। मंतव्य:

- विदेश नीति में हिंदी
- प्रशासन, विज्ञान, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी
- विधि एवं न्याय क्षेत्र में हिंदी और भारतीय भाषाएं
- बाल साहित्य व अन्य भाषा भाषी राज्यों में हिंदी
- हिंदी पत्रकारिता और संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता
- गिरमिटिया देशों एवं विदेशों में हिंदी शिक्षण–समस्याएं और समाधान
- विदेशियों के लिए भारत में हिंदी अध्ययन की सुविधा
- देश और विदेश में प्रकाशन: समस्याएं एवं समाधान

ग्यारहवां विश्व हिंदी सम्मेलन

स्थान– स्वामी विवेकानंद अंतर्राष्ट्रीय सेवा केंद्र

सम्मेलन का मुख्य विषय– "हिंदी विषय और भारतीय संस्कृति"।

- सम्मेलन के उपयुक्त लोगो हेतु प्रतीक चिह्न चयन समिति के सहयोग से, एक प्रतीक चिह्न का चयन किया गया।
- इस सम्मेलन का पहला सत्र "भोपाल से मॉरीशस तक" था जिसमें 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित अनुशंसाओं पर की गई कार्रवाई से संबन्धित एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। यह सम्मेलन तकनीक और डिजिटल प्रकाशन को भी समर्पित था।
- सम्मेलन हेतु www.vishwahindisammelan.gov.in वैबसाइट निर्मित की गई। वैबसाइट को निरंतर अद्यतित किया जाता रहेगा।

बारहवां विश्व हिंदी सम्मेलन 2021

12 वां विश्व हिंदी सम्मेलन 2021 में, फ़िजी, में प्रस्तावित था। कोरोना महामारी के कारण इसके आयोजन में विलंब हो रहा है।

निष्कर्ष

अंतत: बड़े हर्ष के साथ हम यह कह सकते हैं कि हिंदी के भविष्य और भविष्य की हिंदी के बारे में बहुफलकीय सार्थक संवाद एवं विचार-विमर्श करने हेतु यह एक अत्यंत प्रभावशाली मंच है। इस सम्मेलन के आयोजन से न केवल हिंदी का प्रचार-प्रसार होता है बल्कि इस भाषायी आदान-प्रदान के मंच पर सभी हिंदी भाषी देशों के लोग स्वयं को तौलते हैं और अपनी जमीन की मजबूती को परखते हैं। इस प्रकार के सम्मेलनों से विभिन्न देशों के साहित्यकार आपस में परिचित होते ही हैं, साथ में साहित्य और संस्कृतियों का भी आदान-प्रदान होता है। यह मंच हिंदी भाषा का विशिष्ट एवं अद्भुत विचार संगम होता है और हिंदी को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए अनुकूल वातावरण हेतु उचित माहौल भी बनाता है। इस सम्मेलन के द्वारा हिंदी का न केवल अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रकट होता है बल्कि विश्व की अन्य भाषाओं के

साथ एवं समकक्ष हिंदी का आकलन भी होता है। हिंदी के विशिष्ट कार्यों, योगदान एवं उपलब्धियों को सम्मानित करने हेतु भी यह सम्मेलन अत्यंत सार्थक सिद्ध हुआ है।

लेखक का संक्षिप्त परिचय

सौरभ शुक्ला ने अपनी स्नातकोत्तर शिक्षा आई आई टी दिल्ली से रेडियो फ्रीक्वेंसी डिज़ाइन टेक्नोलॉजी में तथा स्नातक राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संसथान, हमीरपुर से इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार अभियांत्रिकी में प्राप्त की। इनका चयन वैज्ञानिक के तौर पर रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, रक्षा मंत्रालय में वर्ष 2006 में हुआ था। इन्होंने वैज्ञानिक पद पर रहते हुए माइक्रोवेव एवं ऐन्टेना से सम्बंधित पुस्तकें एवं कई शोध पत्र लिखे है। वर्तमान में ये संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, डी आर डी ओ मुख्यालय, नई दिल्ली में अपर निदेशक के रूप में तैनात है।

विश्व मौसम विज्ञान दिवस

सुरेश चंद
प्रबंध सेवा निदेशालय

विश्व मौसम विज्ञान दिवस हर वर्ष 23 मार्च को पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इस दिवस की शुरूआत सन् 1950 में विश्व मौसम विज्ञान संगठन की स्थापना के दौरान की गई। इस वर्ष इस दिन को 73 वर्ष पूरे हो जाएंगे। आपको पता है कि, ये दिन क्यों मनाते हैं। इस दिन को मनाने के पीछे का मुख्य कारण है लोगों को मौसम विज्ञान और इसमें हो रहे बदलावों के बारे में जागरूक करना। क्योंकि पता नहीं कब कौन सी आपदा आपके सामने आ जाए। जिससे आपको खुद बचना पड़ सके। जैसे- भूकंप, प्राकृतिक आपदा, चक्रवात आदि। इनसे सुरक्षित रहने के लिए आपको इस दिन कुछ खास बातें वैज्ञानिकों द्वारा बताई जाती हैं। जिसका आपको ध्यान रखना होता है। आपको बता दें कि, हर साल इस दिन अलग-अलग थीम के अनुसार मनाया जाता है। जैसे साल 2022 में इसे 'प्रारंभिक चेतावनी और प्रारंभिक कार्रवाई' थीम के हिसाब से मनाया गया था। ऐसे ही इस साल भी इसकी थीम है "पीढ़ियों तक मौसम, जलवायु और जल का भविष्य"। वर्ष 2024 के थीम का चयन मौसम विज्ञान विभाग में काम कर रहे लोग करेंगे। लेकिन फिलहाल इस साल की थीम से जुड़ी जानकारी अभी साझा नहीं की गई है। जिसके कारण किसी को नहीं पता कि इस दिन को कैसे मनाया जाएगा।

प्रार्थना का प्रभाव

विकास शर्मा
कार्मिक निदेशालय

प्रार्थना का अर्थ

विनती या निवेदन करना है। प्रार्थना का मार्ग इतना प्रशस्त मार्ग होता है कि जिसके आगे ईश्वर भी नतमस्तक हो जाते हैं। जब हम किसी भी मुश्किल में होते हैं, समस्या का कोई हल नहीं निकल रहा होता है और हम अपने स्तर से हर प्रयास कर चुके होते हैं, पर कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा होता तब हमें केवल एक ही मार्ग दिखाई देता है वो है ईश्वर से प्रार्थना का मार्ग प्रार्थना में इतनी शक्ति होती है जो आपके अंधेरे जीवन में आशा की किरण पैदा कर देती है। जिसके परिणामस्वरूप आप आशान्वित हो कर पुनः अपने लक्ष्य के प्रति अग्रसर हो जाते हो। ये सब प्रार्थना के प्रभाव से ही संभव हो पाता है क्योंकि सच्चे मन से की गई प्रार्थना ईश्वर तक अवश्य ही पहुंचती है। प्रार्थना ही एक ऐसा मार्ग है जो आपको आपकी हर विपत्ति से बाहर निकाल सकती है क्योंकि सच्चे मन से ईश्वर से की गई प्रार्थना का प्रभाव इतना सकारात्मक होता है कि वो आपको आपकी हर विपत्ति से बाहर निकाल सकता है। जरूरत है ईश्वर पर भरोसे की। प्रार्थना का संबंध सभी धर्मों से है। हर धर्म में प्रार्थना का महत्व है और सभी धर्मों में प्रार्थना का अपना रूप है। कहने का तात्पर्य यह है कि सभी धर्मों के पूजा-पाठ में एक चीज समान रूप से देखने को मिलती है वो है प्रार्थना। सभी धर्मों के लोग अपने-अपने तरीकों से पूजा-पाठ करते हैं। पर ईश्वर से प्रार्थना सभी धर्मों के लोग करते हैं कोई इसे योग-साधना से जोड़ता है तो कोई 'दुआ' के रूप में मानता है। कोई इसे गॉड प्रेयर का नाम देता है तो कोई इसे 'अरदास' के रूप में मानता है। प्रार्थना का महत्व सभी धर्मों में देखने को मिलता है। प्रातःकाल यानी सूर्योदय काल के समय जिसे हम ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं उस समय में की गई प्रार्थना और रात को सोने से पहले की गई प्रार्थना ज्यादा प्रभावकारी मानी गई है। हमारे सभी धर्मों में ब्रह्ममुहूर्त में की गई प्रार्थना का महत्व ज्यादा बताया गया है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार ब्रह्ममुहूर्त में की गई प्रार्थना सीधे ईश्वर तक जाती है और आपकी सभी तरह की समस्याओं से निजात दिलाने में महत्वपूर्ण कदम उठाती है। प्रार्थना मानवीय जीवन के लिए वरदान का कार्य करती है। जिसके करने से मनुष्य में विश्वास और साहस बढ़ता है और मनुष्य बड़े से बड़े कार्यों में सफलता प्राप्त कर लेता है जो कि मनुष्य के लिए असंभव से प्रतीत हो रहे होते हैं। प्रार्थना करने से मनुष्य के अंदर सकारात्मक शक्तियों का विस्तार होता है और नकारात्मकता का पतन होने लगता होती है। प्रार्थना के प्रभाव से मनुष्य का मन प्रसन्न होता है और उसके आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है और वह जटिल कार्यों में भी सफलता प्राप्त कर लेता है। मेरा मानना है कि हर मनुष्य को प्रार्थना रूपी वरदान को अपने जीवन में उतारना चाहिए। इसके उपरांत आप खुद ही सकारात्मक परिवर्तन महसूस करेंगे। सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना का प्रभाव हमेशा सकारात्मक ही पड़ता है इसलिए हर मनुष्य को अपने दैनिक जीवन से कुछ समय निकाल कर प्रार्थना का अनुसरण जरूर करना चाहिए जो मानव हित के लिए वरदान साबित होगा।

ग्लोबल वार्मिंग: एक उभरता हुआ संकट

प्रीति पंत
महानिदेशक (आर एंड एम) का कार्यालय

ग्लोबल वार्मिंग, जो मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों से प्रेरित है, हमारे समय की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों के संचय के कारण पृथ्वी की औसत सतह के तापमान में क्रमिक वृद्धि को संदर्भित करता है। जबकि प्राकृतिक प्रक्रियाएं ग्रीनहाउस प्रभाव में योगदान करती हैं, पिछली शताब्दी में देखी गई वार्मिंग की त्वरित गति काफी हद तक मानवीय कार्यों, विशेष रूप से जीवाश्म ईंधन के जलने, वनों की कटाई और औद्योगिक गतिविधियों के कारण है। ग्लोबल वार्मिंग के परिणाम दूरगामी और बहुआयामी हैं। बढ़ते तापमान के कारण ग्लेशियर और बर्फ के टुकड़े पिघल रहे हैं, जिससे समुद्र के स्तर में वृद्धि हो रही है, जो बदले में तटीय समुदायों और पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है। तूफान, सूखा और लू जैसी चरम मौसमी घटनाएं लगातार और तीव्र होती जा रही हैं, जो कृषि, जल संसाधनों और समग्र मानव कल्याण को प्रभावित कर रही हैं। जैव विविधता की हानि, चूँकि प्रजातियाँ बदलती परिस्थितियों के अनुकूल ढलने के लिए संघर्ष करती हैं, पारिस्थितिक तंत्र और खाद्य श्रृंखलाओं को और अधिक बाधित करती हैं। ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर तत्काल और ठोस प्रयास की आवश्यकता है। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए सरकारों, उद्योगों और व्यक्तियों को सहयोग करना चाहिए। सौर और पवन जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाना, ऊर्जा-कुशल प्रौद्योगिकियों को अपनाना और स्थायी भूमि उपयोग को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण कदम हैं। पेरिस समझौते जैसे अंतर्राष्ट्रीय समझौते वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे सीमित करने के लिए वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। व्यक्तिगत कार्यों के प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाना, जैसे सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करके व्यक्तिगत कार्बन पदचिह्न को कम करना, ऊर्जा संरक्षण और अपशिष्ट को कम करना, सामूहिक रूप से ग्लोबल वार्मिंग को कम करने में योगदान दे सकता है। इसके अलावा, उन्नत प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार का समर्थन करना आवश्यक है जो वायुमंडल से ग्रीनहाउस गैसों को सक्रिय रूप से हटा सकते हैं।

निष्कर्षत:

ग्लोबल वार्मिंग हमारे ग्रह और उसके निवासियों के लिए एक आसन्न खतरा बन गया है। जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों को रोकने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है। टिकाऊ प्रथाओं के लिए प्रतिबद्ध होकर, स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों में परिवर्तन करके और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर, हम ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों को कम करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक टिकाऊ भविष्य सुरक्षित करने का प्रयास कर सकते हैं।

राष्ट्रीय युवा दिवस

रमेश गौड़
साइबर सलाहकार का कार्यालय

स्वामी विवेकानंद के विचार, दर्शन और अध्यापन भारत की महान सांस्कृतिक और पारंपरिक संपत्ति हैं। युवा देश के महत्वपूर्ण अंग हैं जो देश को आगे बढ़ाता है इसी वजह से स्वामी विवेकानंद के आदर्शों और विचारों के द्वारा सबसे पहले युवाओं को चुना जाता है। राष्ट्रीय युवा दिवस के रुप में स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस को मनाने के लिये वर्ष 1984 में भारतीय सरकार द्वारा इसे पहली बार घोषित किया गया था। तब से (1985), पूरे देश भर में राष्ट्रीय युवा दिवस के रुप में इसे मनाने की शुरुआत हुई। इसे मनाने का मुख्य लक्ष्य भारत के युवाओं के बीच स्वामी विवेकानंद के आदर्शों और विचारों के महत्व को फैलाना है। भारत को विकसित देश बनाने के लिये उनके बड़े प्रयासों के साथ ही युवाओं के अनन्त ऊर्जा को जागृत करने के लिये यह बहुत अच्छा तरीका है।

स्वामी विवेकानंद एक महान इंसान थे जो हमेशा देश की ऐतिहासिक परंपरा को बनाने और नेतृत्व करने के लिये युवा शक्ति पर विश्वास करते थे और मानते थे कि विकसित होने के लिये देश के द्वारा कुछ उन्नति की जरुरत है। स्वामी विवेकानंद का दर्शन और उनके आदर्श की ओर देश के सभी युवाओं को प्रेरित करने के लिये भारतीय सरकार द्वारा ये फैसला किया गया था। स्वामी विवेकानंद के विचारों और जीवन शैली के द्वारा युवाओं को प्रोत्साहित करने के द्वारा देश के भविष्य को बेहतर बनाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिये राष्ट्रीय युवा दिवस के रुप में स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस को मनाने का फैसला किया गया था।

स्वामी विवेकानंद कौन थे

भारत के दार्शनिक, शुभचिंतक, युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत,समाज सुधारक, युवा संन्यासी और महान देशभक्त के रूप में विख्यात स्वामी विवेकानंद जी का जन्म कोलकाता के एक कायस्थ परिवार में 12 जनवरी 1863 को हुआ, उनके बचपन का नाम 'नरेंद्र नाथ दत्त' था।

उनके पिता विश्वनाथ दत्त कोलकाता हाई कोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील और उनकी माता भुवनेश्वरी देवी एक धार्मिक विचारों वाली महिला थी। वे बचपन से ही पढ़ाई में काफी तेज थे 1871 में वे ईश्वरचंद्र विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन संस्थान में पढ़ाई के लिए स्कूल गए। 1879 में वे प्रेसीडेंसी कॉलेज की प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल करने वाले इकलौते छात्र थे।

उन्होंने ज्यादातर सभी चीजों का अध्ययन किया वह दर्शनशास्त्र, इतिहास, समाज कला, साहित्य, धर्म, वेद, धार्मिक पुस्तकें (जैसे श्रीभगवद गीता, रामायण, महाभारत) तथा हिंदू शास्त्रों को भी पढ़ा।

विवेकानंद जी वर्ष 1881 में गुरू रामकृष्ण परमहंस से कोलकाता के दक्षिणेश्वर काली माता मंदिर में मिले, जिसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन 'गुरूदेव रामकृष्ण परमहंस' को समर्पित कर दिया जिसके परिणामस्वरूप वे गुरु सेवा और गुरु भक्ति के लिए पूरे संसार में जाने गए। नरेंद्र नाथ दत्त (विवेकानंद) ने 25 वर्ष की आयु में ही घर-बार छोड़ सन्यास ले लिया और गेरुआ वस्त्र धारण किया, सन्यास लेने के बाद ही नरेंद्र नाथ दत्त 'स्वामी विवेकानंद' कहलाए।

उन्होंने 9 दिसंबर 1898 को कलकत्ता के पास बेलूर में गंगा तट पर अपने गुरू/शिक्षक रामकृष्ण को समर्पित 'रामकृष्ण मठ' की स्थापना की।

विश्व धर्म परिषद में प्रतिनिधित्व

स्वामी विवेकानंद जी ने सन्यास लेने के बाद पूरे भारत वर्ष का पद भ्रमण (पैदल यात्रा) किया, उन्होंने 31 मई 1893 को विश्व यात्रा शुरू की जिसमें वह जापान का दौरा करते हुए चाइना और कनाडा से होकर अमेरिका के 'शिकागो' शहर पहुंचे।

जिस समय स्वामी विवेकानंद जी भारत का प्रतिनिधित्व करने शिकागो पहुँचे, उस समय भारत के गुलाम होने के कारण भारतीय लोगों को काफी निम्न दृष्टि से देखा जाता था। लेकिन जब उन्होंने विश्व धर्म परिषद् में अपने भाषण की शुरुआत अमेरिका के भाइयों और बहनों कहकर की तो तालियों की गूंज काफी देर तक रही और उनके विचारों से परिषद् में बैठे विद्वान काफी प्रभावित हुए, और वहाँ के लोग भी उनके के मुरीद बन गए।

राष्ट्रीय युवा दिवस उत्सव

पौष कृष्णा सप्तमी तिथि में वर्ष 1863 में 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद का जन्म हुआ था। स्वामी विवेकानंद का जन्म दिवस हर वर्ष रामकृष्ण मिशन के केन्द्रों पर, रामकृष्ण मठ और उनकी कई शाखा केन्द्रों पर भारतीय संस्कृति और परंपरा के अनुसार मनाया जाता है।

इस वर्ष यह महोत्सव 12 जनवरी से 16 जनवरी तक पांच दिवसीय इवेंट के रूप में "विकसित युवा – विकसित भारत" थीम पर कर्नाटक के हुबली-धारवाड़ में आयोजित किया गया, जिसमें देश के सभी युवाओं को विवेकानंद के विचारों और दर्शन से परिचित व प्रोत्साहित कराया गया। कई जगहों पर और भी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जैसे भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन सहित कई सारे रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर गतिविधियां (क्रिया-कलाप)

खेल, सेमिनार, निबंध-लेखन के लिये प्रतियोगिता, प्रस्तुतिकरण, योगासन, सम्मेलन, गायन, संगीत, व्याख्यान, स्वामी विवेकानंद पर भाषण, परेड आदि के द्वारा सभी स्कूल, कॉलेज में युवाओं के द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस (युवा दिवस या स्वामी विवेकानंद जन्म दिवस) मनाया जाता है। भारतीय युवाओं को प्रेरित करने के लिये विद्यार्थियों द्वारा स्वामी विवेकानंद के विचारों से संबंधित व्याख्यान और लेखन भी किया जाता है।

उनके आंतरिक आत्मा को प्रोत्साहन, युवाओं के बीच भरोसा, जीवन शैली, कला, शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये देश के

बाहर के साथ ही पूरे भारत में विभिन्न प्रकार के दूसरे कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी होती है।

युवाओं को प्रेरित करने वाले विचार

- हर युवा के पास ताकत होती है कि वो अपने आनेवाले कल को अच्छा बना सके। युवाओं द्वारा जो मेहनत या पढ़ाई की जाती है, वो उसके भविष्य में जाकर उसे फल देती है। वहीं नीचे कुछ ऐसे विचारों के बारे में बताया गया है, जिनको पढ़कर आपको प्रोत्साहन मिलेगा और आप भी अपने लिए एक बेहतर भविष्य बना सकेंगे।
- "उच्चतम आदर्श को चुनो और उस तक अपना जीवन जीयो। सागर की तरफ देखों न कि लहरों की तरफ।"
- "कुछ सच्चे, ईमानदार और ऊर्जावान पुरुष और महिलाएं एक वर्ष में एक सदी की भीड़ से अधिक कार्य कर सकते हैं।"
- "धर्म आदमी में पहले से ही देवत्व की अभिव्यक्ति है।"
- "धन पाने के लिये कड़ा संघर्ष करो पर उससे लगाव मत करो।"
- "जो गरीबों में, कमजोरों में और बीमारियों में शिव को देखता है, वो सच में शिव की पूजा करता है।"
- "प्रत्येक आत्मा संभावित परमात्मा है।"
- "दिन में एकबार खुद से बात अवश्य करो.....नहीं तो आप संसार के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति से मिलने से चूक जाओगे।"
- "मेरा विश्वास युवा पीढ़ी में है, आधुनिक पीढ़ी से मेरे कार्यकर्ता आ जायेंगे।"
- "काम, काम, काम – बस यही आपके जीवन का उद्देश्य होना चाहिये।"
- "पृथ्वी का आनंद नायकों द्वारा लिया जाता है – ये अमोघ सत्य है। एक नायक बनो और सदैव कहो "मुझे कोई डर नहीं है।"
- "महसूस करो कि तुम महान हो और तुम महान बन जाओगें।"
- "मेरी भविष्य की आशाएँ युवाओं के चरित्र, बुद्धिमत्ता, दूसरों की सेवा के लिए सभी का त्याग और आज्ञाकारिता– खुद को और बड़े पैमाने पर देश के लिए अच्छा करने वालों पर निर्भर है।"
- "मृत्यु तो निश्चित हैं, एक अच्छे काम के लिये मरना सबसे बेहतर हैं।"
- "हमारे देश को नायकों की जरुरत है, नायक बनो, तुम्हारा कर्तव्य है काम करते जाओ और फिर सभी तुम्हारा खुद अनुसरण करेंगे।"
- "उठो, जागो और जब तक मत रुको तब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो।"
- "आप भगवान में जब तक विश्वास नहीं कर सकते जब तक कि आप खुद में विश्वास नहीं करते।"
- "जब एक विचार यदि मन में आये तो ये वास्तविक शारीरिक या मानसिक स्थिति में तब्दील हो जाता है।"
- "युवाओं के बीच काम करना सबसे अच्छा है जिनमें तुम्हारी आशाएँ रहती हैं – धैर्य, व्यवस्थित रुप से और बिना शोर के।"
- "एक बच्चा इंसान का पिता होता है" "एक बूढ़े आदमी के लिये ये कहना कहा तक उचित है कि बचपन पाप है या युवा अवस्था पाप है।"
- अगर कोई कार्य करते हुए आप से कुछ गलत हो जाता है, तो इसका मतलब ये नहीं कि आप हार गए हैं। बल्कि इन गलतियों का मतलब है कि आप कुछ पाने की कोशिशों में लगे हुए हैं।
- अगर आप सकारात्मक सोच रखेंगे तो आपके साथ सब कुछ अच्छा ही होगा। सकारात्मक सोच के जरिए आप

अपने जीवन में आसानी से कुछ भी हासिल कर सकते हैं।

- आप किसी भी लक्ष्य को पाने में तभी नाकाम होते हैं, जब आपके अंदर उसे पाने का जज्बा खत्म हो जाता है। इसलिए आप कभी भी अपने अंदर के जज्बे को खत्म ना होने दें।
- लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं इस चीज से ज्यादा महत्वपूर्ण ये है कि आप अपने बारे में क्या राय रखते हैं, क्योंकि आपको आप से बेहतर कोई ओर नहीं समझ सकता।
- कोई भी मुनष्य अपने आपको सही राह पर चला सकता है, इसलिए जब भी आपको लगे कि आप गलत राह पर चल रहे हैं, तो अपनी दिशा या राह खुद बदल लें।

धरती का हरा सोना: वृक्ष

मनोज कुमार कटारिया
साइबर सलाहकार का कार्यालय

वृक्ष प्रकृति की तरफ से धरती पर मानवता को दिया गया सबसे अनमोल उपहार है, जिसका हमें आभारी होना चाहिये । हमें अपने जीवन में वृक्ष की भूमिका और महत्ता को समझना चाहिये और इसे सुरक्षित रखने की प्रतिज्ञा के साथ ही लोगों को अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लिये प्रेरित करना चाहिये। वृक्ष धरती पर जीवन का सबसे मूल्यवान और महत्वपूर्ण साधन है। धरती पर स्वास्थ्य और व्यवसायिक समुदायों के लिये ये बहुत काम का है। कुछ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों से धरती पर ये सभी जीव जन्तुओं को फायदा पहुँचाते हैं। धरती पर सब कुछ एक-दूसरे से जुड़ी हुई है और प्रकृति के संतुलन से चलता है, अगर इसके साथ कोई गड़बड़ी होती है, पूरा पर्यावरण बाधित हो सकता है और धरती पर जीवन को नुकसान पहुँचा सकता है।

वृक्ष हवा, मिट्टी और पानी को शुद्ध करने में बड़ी भूमिका निभाता है इस वजह से धरती को रहने के लिये एक बेहतर जगह बनाता है। लोग जो वृक्षों के पास रहते हैं वो आमतौर पर स्वस्थ और खुश रहते हैं। पूरे जीवन भर अपनी असीमित सेवा के द्वारा वृक्ष हमारी बहुत मदद करता है। मानव होने के नाते, क्या हम कभी वृक्षों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को समझते हैं या केवल हम उसके फायदे का आनन्द लेते रहेंगे। वृक्षों को बचाना उसके प्रति दया दिखाना नहीं है बल्कि हम अपने जीवन के प्रति दया दिखाते हैं क्योंकि धरती पर बिना वृक्ष के जीवन संभव नहीं है। इसलिये, अगर हम स्वस्थ तरीके से जीना चाहते हैं, हमें हमेशा के लिये वृक्षों को बचाना होगा।

वृक्ष की भूमिका और महत्ता

यहां पर हम वृक्षों के कुछ महत्वपूर्ण और अनमोल गुण बता रहें हैं, जो हमें ये जानने में मदद करेगा कि क्यों धरती पर वृक्षों को हरा सोना और स्वस्थ जीवन के लिये बहुत महत्वपूर्ण कहा जाता है:-

- वृक्ष हमारे जीवन में ढेर सारी उपयोगिता जोड़ता है साथ ही ताजा हवा और पोषक भोजन उपलब्ध कराने के द्वारा हमारे जीवन की स्थिति को सुधारता है।
- वृक्ष हमारी अतिरिक्त ज़रुरतों जैसे छत, दवा और हमारे आधुनिक जीवन शैली की दूसरी ज़रुरतों को पूरा करता है।
- शांतिपूर्ण पर्यावरण और सौंदर्यपरक सुखदायी पर्यावरण उपलब्ध कराने में पेड़ समाज, समुदाय, सड़क, पार्क, खेल का मैदान और मकान के पीछे के आँगन में बड़ी भूमिका निभाता है। हमारी बाहरी क्रियाओं के दौरान ठंडी छाया उपलब्ध कराने के द्वारा जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में वृक्ष मदद करता है।
- रहने के क्षेत्र में पुराने वृक्ष ऐतिहासिक स्थल और शहर का गौरव बन जाते हैं।

- वृक्ष सूर्य की रोशनी को मोड़ने में मदद करता है और इसी वजह से गर्मी को घटाता है और पर्यावरण को स्वच्छ और ठंडा रखता है।
- वृक्ष शुद्ध ऑक्सीजन उपलब्ध करता है और खतरनाक गैसों के निस्पंदन के द्वारा वायु प्रदूषण को घटाता है।
- जल वाष्पीकरण बचाने के द्वारा ये जल संरक्षण में मदद करता है।
- ये मिट्टी को कटाव से बचाता है और वन्यजीवन को सहायता प्रदान करता है।
- सूर्य, वर्षा और हवा के प्रभाव के प्रबंधन के द्वारा वृक्ष जलवायु को नियंत्रित करने का उपयोगी साधन है।
- प्रकृति में पारिस्थितिकी को संतुलित करने में पेड़ बहुत जरुरी है।
- वृक्ष बारिश के पानी को सोखने और इकट्ठा करने का अच्छा साधन है इस वजह से तूफान के बाद नुकसान से बचाता है।
- जंगली जानवरों के लिये वृक्ष भोजन और छाया का अच्छा साधन है। पक्षी पेड़ों की टहनियों पर ही अपने घोसलें बनाती हैं।
- वृक्षों के पास अपना व्यक्तिगत और आध्यात्मिक गुण होता है क्योंकि वो रंग-बिरंगे और सुंदर दिखाई देते हैं। कुछ वृक्षों को प्रचीन समय से ही लोग पूजते आ रहें हैं।
- वृक्ष बहुत सारे लोगों के लिये अर्थव्यवस्था का साधन है क्योंकि ये वाणिज्यिक रुप से ईंधन, मकान निर्माण में, औज़ार, फर्नीचर बनाने में खेल के सामान बनाने आदि में प्रयोग किये जाते हैं।

वृक्षों को क्यों बचायें

- धूल, सूक्ष्म धातु कण, प्रदूषक, ग्रीन हाउस गैसों, (ओजोन, अमोनिया, नाइट्रोजन ऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड) आदि सहित ऑक्सीजन छोड़ने और छोटे कण पदार्थ को निस्पंदन के द्वारा पेड़ हमेशा हवा को स्वच्छ और ताजा करता है।
- वृक्ष धुंध और वायु प्रदूषण को पर्यावरण से घटाता है।
- ये जल की गुणवत्ता को सुधारता है, जल प्रदूषण से बचाता है, इसका जड़ तंत्र तूफानी पानी के प्रवाह को घटाकर बाढ़ और मिट्टी के कटाव से बचाता है।
- वृक्ष ऊर्जा संरक्षण का अच्छा साधन है क्योंकि ये पंखा, एयर कंडीशन आदि को गर्मी के मौसम में हवा को ठंडा करने की व्यवस्था को घटाता है।
- 4 वृक्ष घर के पास 30% तक गर्मी को ठंडा करता है जबकि 1 मिलियन पेड़ प्रति वर्ष लगभग $10मिलियन ऊर्जा की कीमत को बचा सकता है।
- 40 से 50 वृक्ष प्रति वर्ष वायु प्रदूषकों को हटाने में मदद करता है।
- वृक्षों को प्रति वर्ष बहुत कम पानी की ज़रुरत होती है (400 वृक्षों को लगभग 40,000 गैलन वर्षा के जल की आवश्यकता होती है)।
- एक वृक्ष 50 वर्ष के अपने पूरे जीवन काल में $31,250 कीमत का ऑक्सीजन उपलब्ध कराता है।

निष्कर्ष

जैसा कि हमने वृक्षों के महत्व के बारे में देखा, हमारे जीवन में वृक्षों के मूल्य के साथ ये भी जाने कि क्यों वृक्ष को बचाना

चाहिये; आम लोगों को जागरुक करने के लिये अपने आस-पास में वृक्ष बचाओ जागरुकता का एक अभियान हमें शुरु करना चाहिये। वृक्ष धरती पर जीवन का सबसे मूल्यवान और महत्वपूर्ण साधन है। धरती पर स्वास्थ्य और व्यवसायिक समुदायों के लिये ये बहुत काम का है। कुछ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों से धरती पर ये सभी जीव जन्तुओं को फायदा पहुँचाते हैं। धरती पर सब कुछ एक-दूसरे से जुड़ी हुई है और प्रकृति के संतुलन से चलता है, अगर इसके साथ कोई गड़बड़ी होती है, पूरा पर्यावरण बाधित हो सकता है और धरती पर जीवन को नुकसान पहुँचा सकता है। धरती पर पेड़ों की संख्या घटने से संबंधित मुद्दे को जानने के लिये इस प्रकार के कार्यक्रमों में अत्यधिक भागीदारी के लिये हमें लोगों को बढ़ावा देना चाहिये। हमें हमेशा सक्रिय रहना चाहिये और धरती पर हरे सोने के अस्तित्व के संबंध में अपनी आँखों को खुला रखना चाहिये। हमें वृक्ष काटने में शामिल नहीं चाहिये और वृक्षों और जंगलों के काटने का विरोध करना चाहिये। हमें हमेशा लोगों के रहने वाली जगह और प्रदूषित क्षेत्रों में वृक्ष लगाने में भागीदार बनना चाहिये।

आजादी का अमृत महोत्सव: हर घर तिरंगा अभियान

सुरेन्द्र पटेल
साइबर सलाहकार का कार्यालय

किसी देश का राष्ट्रीय ध्वज उस पूरे देश का प्रतीक होता है। यह प्रतीक एक ही छवि में देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य को दर्शाता है। जिस तरह एक झंडा किसी देश का प्रतिनिधित्व करता है, उसी तरह हमारा राष्ट्रीय झंडा भारत देश का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे लिए हमारे राष्ट्रीय झंडे के बहुत मायने हैं। यह हमें गौरवान्वित महसूस कराता है। हमारे झंडे को और अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिए भारत में एक अभियान "हर घर तिरंगा" शुरू किया गया है। हर घर तिरंगा अभियान आजादी का अमृत महोत्सव के तहत भारत की आजादी के 75 साल के गौरवशाली उपलब्धि के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक अभियान है।

तिरंगा पर एक नजर

तिरंगा या भारत का राष्ट्रीय ध्वज देश के लोगों के लिए बहुत महत्व रखता है। भारत का राष्ट्रीय ध्वज शांति, प्रेम और एकता का प्रतीक है। भारत को आजाद कराने में कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जान गंवाई। यह उनके अमूल्य बलिदान का प्रतिनिधित्व करता है। पहले, झंडे के लिए कई डिजाइन और रंगों का इस्तेमाल किया जाता था। ध्वज का मूल रूप जो आज हम देखते हैं, वह 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा द्वारा अपनाया गया था। यह पिंगली वेंकय्या द्वारा डिजाइन किया गया था और इसमें केसरिया, सफेद और हरे रंग की तीन समान पट्टियां होती हैं। भारतीय ध्वज संहिता ध्वज के प्रदर्शन और उपयोग को नियंत्रित करती है। राष्ट्रीय ध्वज "तिरंगा" एक स्वतंत्र गणराज्य के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व करता है।

हर घर तिरंगा अभियान का उद्देश्य

हर घर तिरंगा अभियान का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय ध्वज के साथ हमारे संबंध को गहरा करना है। पहले झंडे का इस्तेमाल केवल संस्थागत कार्यों और औपचारिक अवसरों के लिए किया जाता था। घरों और संस्थानों में झंडा फहराने से लोग व्यक्तिगत स्तर पर झंडे से जुड़ सकेंगे। यह अभियान लोगों को हमारे राष्ट्रीय झंडे के महत्व के बारे में जागरूक करने में मदद करेगा। इस उत्सव को सभी स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि के रूप में भी देखा जा सकता है। हर घर तिरंगा अभियान भारत के नागरिकों के बीच देशभक्ति और राष्ट्रवाद को बढ़ाने में मदद करेगा। यह एक राष्ट्र के रूप में हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाने का भी एक अच्छा तरीका है। परिणामस्वरूप, हमारा हमारे राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान बढ़ेगा। साथ ही, यह अभियान भारतीय नागरिकों को राष्ट्र के प्रति उनकी जिम्मेदारियों की याद दिलाएगा।

भारत को आजादी मिलने के बाद पिछले 75 वर्षों में देश ने हर क्षेत्र में जबरदस्त प्रगति की है। हमारे देश ने ऊपर सूचीबद्ध क्षेत्रों के अलावा विज्ञान और प्रौद्योगिकी, चिकित्सा विज्ञान और कई अन्य क्षेत्रों में भारी प्रगति की है। अब हम अपने विकास के बहुत अच्छी पंक्ति में हैं और इसे मनाने का यह बहुत अच्छा समय है। इस प्रकार, आजादी का अमृत महोत्सव का उत्सव कुछ ऐसा है जिसमें प्रत्येक भारतीय नागरिक को भाग लेना चाहिए और इस पर बहुत गर्व होना चाहिए। एक भारतीय के रूप में इस देश और उत्सव का हिस्सा होने से ज्यादा गर्व की कोई बात नहीं है।

सबसे पहले महात्मा गांधी ने 1921 में कांग्रेस के सम्मुख राष्ट्रीय ध्वज की बात रखी। पिंगली वेंकैया द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ ही समय पूर्व ध्वज की अभिकल्पना की गई। 22 जुलाई 1947 के संविधान सभा बैठक में इसे अपनाया गया। राष्ट्रध्वज में तीन रंग सुशोभित है तथा मध्य में गहरे नीले रंग का 24 तीलियों वाला चक्र विद्यमान है। इन सब का अपना-अपना विशेष मायना तथा महत्व है।

राष्ट्रध्वज का इतिहास

- **सबसे पहला झंडा** 1906 में कांग्रेस के अधिवेशन में, पारसी बगान चौक (ग्रीन पार्क) कोलकत्ता में फहराया गया। यह भगिनी निवेदिता द्वारा 1904 में बनाया गया था। इस ध्वज को लाल, पीला और हरा क्षैतिज पट्टी से बनाया गया, सबसे ऊपर हरी पट्टी पर आठ कमल के पुष्प थे, मध्य की पीली पट्टी पर वन्दे मातरम् लिखा था तथा सबसे आखिरी के हरे पट्टी पर चाँद तथा सूरज सुशोभित थे।
- **दूसरा झंडा** 1907 पेरिस में, मैडम कामा तथा कुछ क्रांतिकारियों द्वारा फहराया गया। यह पूर्व ध्वज के समान था। बस इसमें सबसे ऊपर लाल के स्थान पर केसरिया रंग रखा गया। उस केसरिया रंग पर सात तारों के रूप में सप्तऋषि अंकित किया गया।
- **तीसरा झंडा** 1917 में, जब भारत का राजनैतिक संघर्ष नये पड़ाव से गुज़र रहा था। घरेलु शासन आन्दोलन के समय पर डॉ एनी बेसेन्ट तथा लोकमान्य तिलक द्वारा यह फहराया गया। यह पाँच लाल तथा चार हरी क्षैतिज पट्टी के साथ बना हुआ था। जिसमें एक लाल पट्टी तथा फिर एक हरी पट्टी करके समस्त पट्टियों को जोड़ा गया था। बायें से ऊपर की ओर एक छोर पर यूनियन जैक था, तथा उससे लग कर तिरछे में बायें से नीचे की ओर सप्तऋषि बनाया गया व एक कोने पर अर्ध चन्द्र था।
- **चौथा झंडा तथा गाँधी का सुझाव** 1921 में, अखिल भारतीय कांग्रेस सत्र के दौरान बेजवाड़ा (विजयवाड़ा) में, आंध्र प्रदेश के एक युवक "पिंगली वेंकैया" ने लाल तथा हरे रंग की क्षैतिज पट्टी को झण्डे का रूप दिया। जिसमें लाल हिन्दु के आस्था का प्रतीक था और हरा मुसलमानों का। महात्मा गाँधी ने सुझाव दिया इसमें अन्य धर्मों की भावनाओं की कद्र करते हुए एक और रंग जोड़ा जाए तथा मध्य में चलता चरखा होना चाहिए।
- **पांचवा झंडा, स्वराज ध्वज** 1931 झण्डे के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण वर्ष रहा। इस वर्ष में राष्ट्रीय ध्वज को अपनाने का प्रस्ताव रखा गया तथा राष्ट्रध्वज को मान्यता मिला। इसमें केसरिया, सफेद तथा हरे रंग को महत्व दिया गया जो कि वर्तमान ध्वज का स्वरूप है, तथा मध्य में चरखा बनाया गया।
- **छठवां झंडा, तिरंगा को राष्ट्रध्वज के रूप में मान्यता** 22 जुलाई 1947 को अन्ततः कांग्रेस पार्टी के झण्डे (तिरंगा) को राष्ट्र ध्वज के रूप में (वर्तमान ध्वज) स्वीकार किया गया । केवल ध्वज में चलते हुए चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म चक्र को स्थान दिया गया।

राष्ट्रध्वज के सम्मान में

राष्ट्रध्वज की शान, प्रतिष्ठा, मान तथा गौरव सदा बनी रहे, इसलिए भारतीय कानून के अनुसार ध्वज को सदैव सम्मान के नज़र से देखना चाहिए तथा झण्डे का स्पर्श कभी भी पानी और ज़मीन से नहीं होना चाहिए। मेज़पोश के रूप में, मंच, किसी आधारशिला या किसी मूर्ति को ढकने के लिए इसका प्रयोग नहीं किया जा सकता।

2005 से पूर्व तक इसका उपयोग किसी पोशाक तथा वर्दी के रूप में नहीं किया जा सकता था, पर 5 जुलाई 2005 के संशोधन के पश्चात से इसकी अनुमति दी गई। इसमें भी कमर के नीचे के कपड़े व रूमाल तथा तकिये के रूप में इसका उपयोग नहीं किया जा सकता है। झण्डा डुबाया नहीं जा सकता है तथा जान-बूझकर उल्टा नहीं रखा जा सकता है। राष्ट्रध्वज को फहराना एक पूर्ण अधिकार है, पर इसका पालन संविधान के अनुच्छेद 51ए के अनुसार करना होगा।

निष्कर्ष

अनेक पड़ाव को पार कर राष्ट्रध्वज तिरंगा आज भारत की शान है। राष्ट्रध्वज का अपमान देश का अपमान है। अतः इसका दोषी दंड का पात्र है। ध्वज के अपमान किए जाने पर दंड स्वरूप तीन वर्ष की कैद तथा जुर्माने का प्रावधान है। राष्ट्रध्वज से संबंधित अनेक रोचक तथ्य तथा निर्देश है जैसे झंडे का प्रयोग कैसे करें, कैसे न करें, कब झंडे को झुकाया जाता है आदि, इन सभी उपदेशों का हम सबको गंभीरता से पालन करना चाहिए।

तिरंगे का इतिहास स्वतंत्रता प्राप्ति से बहुत समय पूर्व प्रारम्भ हो गया था। जिसमें समय-समय पर सोच विचार कर संशोधन किए गए। यह सबसे पहले कांग्रेस पार्टी के ध्वज के रूप में था, पर 1947 में तिरंगे को राष्ट्रध्वज के रूप में अपनाया गया और यह प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव का क्षण था।

नारी समाज का दर्पण

प्रियंका कुमारी
प्रणाली और प्रौद्योगिकी विश्लेषण निदेशालय

"दुनिया की तरक्की तब तक संभव नहीं हो सकती जब तक महिलाओं की स्थिति नहीं सुधरती। कोई भी चिड़िया एक पंख की मदद से उड़ नहीं सकती है।"

–स्वामी विवेकानंद

नारी समाज का दर्पण है। किसी भी समाज की प्रगति उस समाज में महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति से मापी जा सकती है। नारी समाज की शान है। नारी चाहे तो कठिन से कठिन कार्य कर सकती है। वर्तमान स्थिति में नारी ने जो साहस का परिचय दिया है, वह आश्चर्यजनक है। आज नारी की भागीदारी के बिना कोई भी काम पूर्ण नहीं माना जा रहा है। समाज के हर क्षेत्र में उसका परोक्ष – अपरोक्ष रूप से प्रवेश हो चुका है।

आज कई ऐसे प्रतिष्ठान एवं संस्थाएं हैं, जिन्हें केवल नारी संचालित करती है। हालांकि यहां तक का सफर तय करने के लिए महिलाओं को काफी मुश्किलों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ा है और महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए अभी मीलों लम्बा सफर तय करना है, जो दुर्गम एवं मुश्किल तो है लेकिन महिलाओं ने ही ये साबित किया है कि वो हर कार्य को करने में सक्षम हैं।

महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं और स्वयं ही अपना मुकाम तय कर रही हैं। धीरे- धीरे ही सही लेकिन महिलाओं में आत्मनिर्भरता बढ़ रही है। वर्तमान में देश दुनिया की महिलाएं राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे रही हैं। हर क्षेत्र में महिलाएं अपनी दमदार भूमिका में हैं। आज महिलाएं खेल जगत में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रदर्शन दिखा रही हैं, तो वहीं व्यावसायिक जगत और राजनीति में भी अपनी भूमिका को मजबूत बना रही हैं। भारतीय महिलाएं देश के सर्वोच्च और सशक्त पदों पर कार्यरत हैं। आजादी से पहले और स्वतंत्रता संग्राम की जंग के दौरान भी कई भारतीय महिलाओं के सशक्त व्यक्तित्व की कहानी प्रचलित हैं। वर्तमान में महिलाएं राजनीति के क्षेत्र में अपनी सहभागिता दे रही हैं। वह देश के सर्वोच्च पद यानी राष्ट्रपति से लेकर वित्त मंत्रालय और अन्य कई विभागों को संभाल रही हैं।

इसरो की महिला वैज्ञानिक 'रॉकेट वुमन' नाम से मशहूर स्पेस वैज्ञानिक ऋतु करिधाल श्रीवास्तव को चंद्रयान-3 मिशन की कमान सौंपी गई थी। ऋतु करिधाल चंद्रयान-3 की मिशन डायरेक्टर के रूप में अपनी भूमिका निभा चुकी हैं। लखनऊ की रहने वाली ऋतु विज्ञान की दुनिया में भारतीय महिलाओं की बढ़ती धाक की मिसाल हैं।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण वर्तमान में सबसे दमदार और चर्चित राजनेता हैं। फोर्ब्स की 100 सबसे सशक्त महिलाओं की सूची में लगातार चार वर्षों से सीतारमण का नाम आ रहा है। सीतारमण पूर्णकालिक वित्त मंत्री हैं जो लगातार वित्त मामलों को संभाल रही हैं। इसके पहले वह रक्षा मंत्रालय का कार्यभार भी संभाल चुकी हैं।

देश की दूसरी महिला राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू वर्तमान में सबसे उच्च पद पर आसीन हैं। द्रौपदी मुर्मू झारखंड की राज्यपाल भी रह चुकी हैं। वह इस राज्य की गवर्नर बनने वाली पहली महिला थीं। वे इस पद पर पहुंचने वाली सबसे कम उम्र की और स्वतंत्र भारत में जन्म लेने वाली पहली महिला हैं।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" की परम्परा हमारे ग्रंथों में लिखी गई है जिसका अर्थ है जहाँ महिलाओं का सम्मान किया जाता है वहां देवता निवास करते हैं। इस तरह हम कह सकते है कि हमारी संस्कृति में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को अधिक सम्मान दिया गया हैं। हमारे ग्रंथों को ध्यान से पढ़ा जाए तो प्रतीत होता है कि पूर्व सतयुग, त्रेता और द्वापर युग में भी नारियों का सम्मान किया जाता था। एक राष्ट्र में एक महिला की विशेष भूमिका होती है। महिलाओ को आज का पुरुषप्रधान समाज कमजोर समझ रहा है। जिस कारण महिलाओ को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते है। नारी देवी की प्रतिमूर्ति होती है। जो हर परस्थिति को सहन कर प्रेमभाव का विकास करती है। आज हमें मानसिक चिंतन कर महिलाओ के प्रति सम्मान और प्रेमभाव प्रकट करना चाहिए। नारी के प्रति आपका सम्मान व आदर इस बात को दिखाता है कि आप कितने सभ्य समाज का हिस्सा हैं। अपने लिए सम्मान की उम्मीद करना हर नारी की अपेक्षा नहीं, बल्कि अधिकार है। नारी के अनेकों रूप हर किसी के जीवन में खास भूमिका निभाते हैं। वह मां, बहन, पत्नी, भाभी, बहू, साथी, टीचर जैसे अनेक रूपों में जीवन के हर मोड़ पर साथ खड़ी होती है।

जिंदगी की असली उड़ान बाकी है, जिंदगी के कई इम्तेहां अभी बाकी हैं,
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीन हमने, अभी तो सारा आसमान बाकी है...

नारी की उपलब्धियां कभी भी कहीं भी कम नहीं आंकी जा सकती। सूर्य के प्रकाश सा ही है नारी का जीवन। जिस प्रकार सूर्य न निकले तो अंधेरा छा जाता है, ऐसे ही नारी वो प्रकाश स्त्रोत है जिसके बिना घर, समाज व राष्ट्र की आंखे धूमिल हो जाती हैं। नारी को आज सिसक-सिसक कर घुट-घुट कर जीवन जीने को मजबूर नहीं किया जा सकता। जो दूसरों को उजाला देती हैं वह स्वयं को अंधेरे में नहीं रखे। अपनी गुम हुई, खोई हुई आवाज को सुने, सम्माननीय नारी अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक रहे।

ऐसे परिवार जो नारी को सिर्फ जंजीरों में जकड़े रखना चाहते हैं, जो नारी को मात्र दासी मानते हैं, उसका तिरस्कार करते हैं, वे ये नहीं जानते कि नारी ही सृष्टि का श्रृंगार है। उसने सदा अपनी गरिमा की रक्षा करते हुए स्वयं को हर पल ही एक नया रूप दिया है। हर दिन नारी के बिना अधूरा है। आज का समय नारी जागरूकता का, नारी के उन्नति का, उसके सहयोग का व नारी के नव जागरण काल का प्रतीक है। उस दिव्य, अनुपम, विधाता की अलौकिक कृति नारी के लिए हर वर्ग, हर देश, हर समाज हर गली व हर कूचे से एक ही आवाज गूंजनी चाहिए

नारी तू विधाता की अनमोल रचना है कोई भी तेरा सानी नहीं,
वक्त ने करवट बदल ली है, नारी तू भी छुपा ले आंखों का पानी कहीं
सिसकने को तड़पने को नहीं मिली है ये जिन्दगानी तुझे
सम्माननीय हो सम्मान पाने की हो अधिकारिणी तुम्हीं
अबला नहीं सबला हो सशक्त पहचान बनाई है,
विश्व की ऊंचाइयों को छूने की तुमने जो सोच बनाई है।

हास्य व्यंग्य

सुखबीर सिंह
कार्मिक निदेशालय

मेरे एक मित्र खाना खाने की प्रतियोगिता में
लगातार बीस वर्षों से प्रथम आ रहे हैं।
साथ ही 25 लोगों का भोजन, अकेले ही पचा रहे हैं
मैंने पूछा, मँहगाई के दौर में आप इतना क्यों खा रहें हैं।
और गर्मी पड़ने के बावजूद आसानी से पचा रहे हैं।
मेरी बात सुनकर वह कुछ उदास हो गए
पहले पास थे अब दूर हो गए।
पास आए और बोले भइया
यह स्वतंत्र भारत है यहाँ सबको खाने की आदत है।
जैसे लोग ईमान खा रहे हैं
और अपनों का विश्वास खा रहे हैं।
उसी तरह कुछ लोग रुतबा दिखा रहे हैं
और तो और कुछ ऐसे भी लोग हैं
जो अपना सम्मान लूटा कर मुस्कुरा रहे हैं।

पिता

प्रभात कुमार
महानिदेशक (एचआर) का कार्यालय

पिता वह अलौकिक शब्द है, जिसके स्मरण मात्र से ही रोम-रोम में शक्ति और साहस का संचारण होने लगता है। हृदय में भावनाओं का अनहद ज्वार स्वतः उमड़ पड़ता है और मनोःमस्तिष्क स्मृतियों के अथाह समुद्र में डूब जाता है। पिता वो अमोघ मंत्र है, जिसके उच्चारण मात्र से ही हर पीड़ा का नाश हो जाता है। पिता का स्नेह और अपनेपन के तेज और स्पर्श को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है, उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। वह विलक्षण, साहस और संस्कारदाता होता है, जो परिवार को आदर्श संस्कार ही नहीं देता, बल्कि जीवन निर्वाह के साधन भी उपलब्ध कराता है। उनके दिए गए संस्कार ही संतान की मूल थाती होते है। इसीलिये पिता के चरणों में भी स्वर्ग एवं सर्व कहा गया है। क्योंकि वे हर क्षण परिवार एवं संतान के लिए छाया की भांति एक बड़ा सहारा बनते हैं और उनका रक्षा कवच परिवारजनों के जीवन को अनेक संकटों से बचाता है। जीवन में जब भी निर्माण की आवाज उठेगी, पौरुष की मशाल जगेगी, सत्य की आंख खुलेगी तब हम, हमारा वो सब कुछ जिससे हम जुड़े होंगे, वो सब पिता का किमती तौहफा होगा।

मानवीय रिश्तों में दुनिया में सबसे बड़ा स्थान माँ को दिया जाता है, लेकिन एक बच्चे को बड़ा और सभ्य बनाने में उसके पिता का योगदान कम करके नहीं आंका जा सकता। बच्चे को जब कोई खरोंच लग जाती है तो जितना दर्द एक मां महसूस करती है, उतना दर्द एक पिता भी महसूस करता है। यह अलग बात है कि बेटे को चोट लगने पर मां पुचकार देती है, चोट लगी जगह पर फूंक की ठंडक देती है, वहीं पिता अपने बेटे की चोट पर व्यथित तो होता है लेकिन उसे बेटे के सामने मजबूत बने रहना है। ताकि बेटा उसे देख कर जीवन की समस्याओं से लड़ने का पाठ सीखे, सख्त एवं निडर बनकर जिंदगी की तकलीफों का सामना करने में सक्षम हो। माँ ममता का सागर है पर पिता उसका किनारा है। माँ से ही बनता घर है पर पिता घर का सहारा है। माँ से स्वर्ग है माँ से बैकुंठ, माँ से ही चारों धाम है पर इन सब का द्वार तो पिता ही है। आधुनिक समाज में पिता-पुत्र के संबंधों की संस्कृति को जीवंत बनाने की अपेक्षा है।

पिता एक ऐसा शब्द है जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ऐसा पवित्र रिश्ता जिसकी तुलना किसी और रिश्ते से नहीं हो सकती। बचपन में जब कोई बच्चा चलना सीखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उंगली थामता है। नन्हा-सा बच्चा पिता की उँगली थामे और उसकी बाँहों में रहकर बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चे जिद करना शुरू कर देते है और पिता उनकी सभी जिदों को पूरा करते हैं। बचपन में चॉकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवा होने तक बाइक, कार, लैपटॉप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक संतान की सभी माँगों को वो पूरा करते रहते हैं लेकिन एक समय ऐसा आता है जब भागदौड़ भरी इस जिंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। इसी को ध्यान में रखकर पितृ दिवस मनाने की परंपरा का आरम्भ हुआ।

एक शिल्पकार प्रतिमा बनाने के लिए जैसे पत्थर को कहीं काटता है, कहीं छांटता है, कहीं तल को चिकना करता है, कहीं तराशता है तथा कहीं आवृत्त को अनावृत्त करता है, वैसे ही पिता भी अपने पुत्र के व्यक्तित्व को तराशकर उसे महनीय और सुघड़ रूप प्रदान करता है। पिता देह से विदेह होकर भी हर पल अपने बच्चों के साथ प्रेरणा के रूप में, शक्ति के रूप में, संस्कार के रूप में रहते हैं। हर पिता अपने पुत्र की निषेधात्मक और दुष्प्रवृत्तियों को समाप्त करके नया जीवन प्रदान करता है। वरुण जल का देवता होता है। जैसे जल वस्त्र आदि के मैल को दूर करता है, वैसे ही पिता पुत्र की मानसिक कलुषता को दूर कर सद्संस्कारों का बीजारोपण करता है एवं उसके व्यक्तित्व को नव्य और स्वच्छ रूप प्रदान करता है। चन्द्रमा सबको शांति और अह्लाद प्रदान करता है, वैसे ही पिता की प्रेरणाएं पुत्र को मानसिक प्रसन्नता और परम शांति देती है। जैसे औषधि दुख, दर्द और पीड़ा का हरण करती है, वैसे ही पिता शिव शंकर की भांति पुत्र के सारे अवसाद और दुखों का हरण करते हैं। पय का अर्थ है-दूध। जैसे माता का दूध पुष्टि प्रदान करता है, वैसे ही पिता पुत्र के आत्मिक बल को पुष्ट करते हैं।

पिता हर संतान के लिए एक प्रेरणा हैं, एक प्रकाश हैं और संवेदनाओं के पुंज हैं। पिता आंसुओं और मुस्कान का एक समुच्चय है, जो बेटे के दुख में रोता और सुख में हंसता है। उसे आसमान छूता देख अपने को कद्दावर मानता है तो राह भटकते देख अपनी किस्मत की बुरी लकीरों को कोसता है। पिता गंगोत्री की वह बूंद है जो गंगा सागर तक एक-एक तट, एक-एक घाट को पवित्र करने के लिए धोता रहता है। पिता वह आग है जो घड़े को पकाता है, लेकिन जलाता नहीं जरा भी। वह ऐसी चिंगारी है जो जरूरत के वक्त बेटे को शोले में तब्दील करता है। वह ऐसा सूरज है, जो सुबह पक्षियों के कलरव के साथ धरती पर हलचल शुरू करता है, दोपहर में तपता है और शाम को धीरे से चांद के लिए रास्ता छोड़ देता है। पिता वह पूनम का चांद है जो बच्चे के बचपने में रहता है, तो धीरे-धीरे घटता हुआ क्रमशः अमावस का हो जाता है। पिता समंदर के जैसा भी है, जिसकी सतह पर असंख्य लहरें खेलती हैं, तो जिसकी गहराई में खामोशी ही खामोशी है। वह चखने में भले खारा लगे, लेकिन जब बारिश बन खेतों में आता है तो मीठे से मीठा हो जाता है।

भारत में अंतर्राष्ट्रीय मिलेट उत्सव

राकेश कुमार
कार्मिक निदेशालय

दुनिया भर में साल 2023 को अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। भारत सरकार का लक्ष्य बाजरा के अंतराष्ट्रीय वर्ष को एक 'जन आंदोलन' बनाना है और भारत को मोटा अनाज के लिए वैश्विक हब के रूप में स्थापित करना है। भारत दुनिया में बाजरा का सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

जनवरी 2023 के महीने में भारत में, भारत सरकार और उसके मंत्रालय राज्य सरकार के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष मनाने के लिय कार्यक्रम आयोजित किया प्रसंस्करण गया। केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय आंध्र प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में उद्योग बाजरा मेला-सह-प्रदर्शनियों का आयोजन हुआ कृषि का प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के साथ केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय बेल्जियम में बाजरा पर एक व्यापार शो में भाग लिया।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय में 08 अगस्त को अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष उत्सव मनाया गया। "रक्षा खाद्य प्रयोगशाला", मैसूर ने इसका सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस आयोजन में "रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन", मुख्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इस आयोजन में बाजरा से बने लगभग 25 व्यंजनों का सभी लोगों ने लुत्फ उठाया और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के वैज्ञानिकों ने बाजरा के बारे में उप्युक्त जानकारी दी।

बाजरा मनुष्य के लिए सबसे पुराने ज्ञात खाद्य पदार्थों में से एक है। हालांकि सरकारों द्वार गेहूं और चावल पर दिए जा रहे जोर के कारण दुनिया में इसकी खपत में कमी आई है। उच्च पोषक मूल्य के कारण इसे मोटा अनाज या पोषक अनाज भी कहा जाता है। भारत में बाजरा की खपत बढ़ाने के लिए भारत सरकार ने बाजरा को पोषक अनाज घोषित किया और 2008 को भारत में राष्ट्रीय बाजरा वर्ष घोषित किया गया।

भारत सरकार ने 2022-23 तक देश में 205 लाख टन पोषक अनाज के उत्पादन का लक्ष्य रखा है। राजस्थान भारत में पोषक अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक है जिसके बाद महाराष्ट्र और कर्नाटक का स्थान आता है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ता डीआरडीओ

संजय कुमार
जनसंपर्क निदेशालय

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) भारतीय सशस्त्र बलों के लिए आवश्यक रक्षा प्रणालियों और उत्पादों को विकसित करने के अपने अधिदेश के साथ देश में अत्याधुनिक रक्षा प्रौद्योगिकियों के स्वदेशी विकास का मशाल वाहक रहा है। डीआरडीओ अपने प्रयोगशालाओं और केंद्रों के नेटवर्क के साथ एयरोनॉटिक्स, आयुध, इलेक्ट्रॉनिक्स, लड़ाकू वाहन, इंजीनियरिंग सिस्टम, इंस्ट्रूमेंटेशन, मिसाइल, एडवांस्ड कंप्यूटिंग सिमुलेशन, विशेष सामग्री, नौसेना प्रणाली, जीवन विज्ञान, प्रशिक्षण सूचना प्रणाली और आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न विषयों को कवर करने वाली रक्षा प्रौद्योगिकियों के विकास में गंभीरतापूर्वक जुटा हुआ है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में जुटा हुआ डीआरडीओ, रक्षा प्रणालियों में आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए खुद को समर्पित कर चुका है। इसके द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों को प्रासंगिक 'जानकारी' और उत्पादन के लिए हैंडहोल्डिंग समर्थन के साथ भारतीय उद्योगों को हस्तांतरित किया जाता है। अब तक डीआरडीओ ने मिसाइल, लड़ाकू विमान, टैंक (बख्तरबंद लड़ाकू वाहन), मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर, इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम, रडार, एयर डिफेंस सिस्टम, नेवल सिस्टम जैसे स्वदेशी उपकरण विकसित करके देश को रक्षा प्रणालियों में आत्मनिर्भर बनाया है। कुछ प्रमुख तकनीकी सफलताएं हैं मुख्य युद्धक टैंक अर्जुन मार्क1 और मार्क1ए, तेजस एलसीए, सक्रिय इलेक्ट्रॉनिक रूप से स्कैन किए गए एरे रडार, पनडुब्बियों और ईडब्ल्यू सिस्टम के लिए सोनार, एईडब्ल्यूएंडसी और एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम (एटीएजीएस) आदि। हाल ही में प्रदर्शित क्षमताएं एएसएटी, एचएसटीडीवी, क्यूआरएसएएम, स्मार्ट, हेलिना, एमपीएटीजीएम, क्वांटम कम्युनिकेशन, लंबी दूरी की सबसोनिक क्रूज मिसाइल का सफलतापूर्वक विकास और परीक्षण, आदि देश के लिए कुछ प्रमुख सफलताएं हैं। एलसीए नौसेना कार्यक्रम ने आईएनएस विक्रमादित्य से लैंडिंग और टेक-ऑफ का संचालन करके महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। मिशन ने डीआरडीओ की तकनीकी कौशल और अंतरिक्ष में देश की संपत्ति की रक्षा करने की क्षमता, युद्ध के चौथे आयाम का प्रदर्शन किया। यह मिशन डीआरडीओ द्वारा किए गए सबसे जटिल ऑपरेशनों में से एक था जिसमें जमीन से लॉन्च की गई मिसाइल को सैकड़ों किलोमीटर दूर कक्षा में तेजी से घूम रहे एक उपग्रह को सटीक सटीकता के साथ मारना और निष्क्रिय करना था। सफल डीआरडीओ ने सफलतापूर्वक एचएसटीडीवी यानी हाइपर टेक्नॉलिटी डेमॉन्स्ट्रेटर व्हीकल का परीक्षण किया है। इस परीक्षण के साथ ही भारत अमेरिका, रूस और चीन के बाद चौथा ऐसा देश बन गया जिसके पास यह तकनीक है। जीवन समर्थन और उत्तरजीविता प्रणालियाँ और अन्य विश्व स्तरीय उत्पाद भारत की सैन्य शक्ति को क्वांटम उछाल दे रहे हैं।

अत्याधुनिक हथियार प्रणालियों और उपकरणों के विकास के माध्यम से महत्वपूर्ण रक्षा प्रौद्योगिकियों और प्रणालियों के मामले में आत्मनिर्भरता हासिल करना डीआरडीओ की मुख्य गतिविधियों में से एक है। डीआरडीओ नई प्रौद्योगिकियों को विकसित करने हेतु उद्योग और अकादमिक जगत के साथ सहयोग को बढ़ावा देने के लिए रक्षा इकोसिस्टम के विभिन्न हितधारकों के साथ बातचीत कर रहा है। उद्योग और शिक्षा जगत के भीतर रक्षा अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से डीआरडीओ ने 27 जून, 2023 को नई दिल्ली में एक 'अनुसंधान चिंतन शिविर' का आयोजन किया। इस अवसर पर 75 प्रौद्योगिकी से संबंधित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की सूची जारी की गई। डीआरडीओ द्वारा पहचान की गई इस सूची को 403 तकनीकी श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जिनका विस्तार 1,295 वर्तमान औरभविष्य के प्रौद्योगिकी विकास कार्यों तक है। इन 75 प्रौद्योगिकी से संबंधित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को खोलने से भारत को आत्मनिर्भरता के पथ अग्रसर करने हेतु रक्षा प्रौद्योगिकियों के स्वदेशीकरण और उनमें नवाचार करने के लिए उद्योग जगत को प्रोत्साहित करते हुए रक्षा विनिर्माण क्षेत्र को एक बड़ा बढ़ावा मिलेगा। इस प्रकार, उद्योग और शिक्षा जगत के साथ जुड़ाव के माध्यम से देश में सैन्य प्रौद्योगिकी डिजाइन और विकास को बढ़ावा मिलेगा। डीआरडीओ की यह दूसरी सूची, पहले जारी की गई 108 वस्तुओं की सूची का अगला क्रम है। "उत्पादन समन्वय के लिए डीआरडीओ ने दिशा-निर्देश" भी जारी किए, जो डीआरडीओ द्वारा विकसित सैन्य उपकरणों/प्लेटफार्मों/प्रणालियों के उत्पादन से जुड़े मुद्दों के उत्पादन समन्वय और समाधान की रूपरेखा तैयार करते हैं। दिशा-निर्देश डिजाइनरों, उपयोगकर्ताओं, उत्पादन एजेंसियों, गुणवत्ता एजेंसियों और अन्य हितधारकों को शामिल करके इन प्रणालियों के उत्पादन से संबंधित मुद्दों को हल करने के लिए दो स्तरीय व्यवस्था प्रस्तुत करते हैं। यह पहल भारतीय रक्षा उद्योग के लिए आत्मनिर्भर भारत की दिशा में रक्षा प्रौद्योगिकियों/प्रणालियों को विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

डीआरडीओ अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों पर काम कर रहे हैं, जिनकी भविष्य की हथियार प्रणालियों के लिए आवश्यकता होगी। डीआरडीओ कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्मार्ट सामग्री, क्वांटम प्रौद्योगिकी, असममित प्रौद्योगिकियों और संज्ञानात्मक प्रौद्योगिकियों जैसे उन्नत प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। AEW&C, AMCA, गाइडेड पिनाका, रडार सिस्टम, मिसाइल सिस्टम, अंडरवाटर मानवरहित सिस्टम जैसी विभिन्न प्रणालियों से संबंधित कई गतिविधियों की योजना बनाई गई है। इस दशक में कई और नए नवाचार आने वाले हैं जैसे नेक्स्ट जेन एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए), एलसीए एएफ एमके II, लंबी दूरी के रडार, उन्नत मिसाइल प्रौद्योगिकियां, अर्जुन एमके II आदि। हमारे वैज्ञानिक अकादमिक संस्थानों के साथ साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी भविष्य की प्रौद्योगिकियों पर संयुक्त रूप से काम कर रहे हैं। डीआरडीओ साझेदार के रूप में उनकी भागीदारी के माध्यम से भारतीय उद्योग को सक्षम करके अपने विनिर्माण आधार को मजबूत करने की योजना बना रहे हैं। डीआरडीओ परियोजना की शुरुआत से ही उन्हें विकास-सह-उत्पादन भागीदार के रूप में शामिल करेंगे। इससे प्रौद्योगिकी के आसान हस्तांतरण में मदद मिलेगी और विकास चक्र के समय में कटौती होगी।

डीआरडीओ की प्रौद्योगिकी विकास निधि योजना (टीडीएफ) के अंतर्गत प्रदान किया जाने वाला अनुदान बढ़ाकर पाँच गुना कर दिया गया है। इस बढ़ोतरी के बाद प्रौद्योगिकी विकास निधि योजना के अंतर्गत मिलने वाले 10 करोड़ रुपये की अनुदान राशि बढ़कर अब 50 करोड़ रुपये प्रति परियोजना कर दी गई है। प्रौद्योगिकी विकास निधि योजना का उद्देश्य रक्षा अनुप्रयोगों के लिए अत्याधुनिक स्वदेशी प्रणालियों का निर्माण और रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए

पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है। यह कार्यक्रम डीआरडीओ द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, जो थलसेना, नौसेना, वायुसेना और डीआरडीओ की आवश्यकताओं को पूरा करता है। रक्षा मंत्रालय का यह कार्यक्रम मेक इन इंडिया अभियान का हिस्सा है। इसके अंतर्गत स्वदेशी घटकों, उत्पादों, प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए सार्वजनिक/निजी उद्योगों; विशेष रूप से एमएसएमई और स्टार्टअप्स की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है। डीआरडीओ ने उद्योग के लिए परीक्षण सुविधाएं खोल दी हैं और आज हमारी 1,800 से अधिक भागीदार कंपनियां विभिन्न परियोजनाओं के लिए काम कर रही हैं। अपनी परीक्षण सुविधाएं भी खोली हैं और 450 से अधिक पेटेंट उद्योग को मुफ्त उपलब्ध कराए हैं ताकि स्वदेशी निर्माताओं और डेवलपर्स को अपना समर्थन बढ़ाया जा सके। प्रयास है कि मिसाइलों, राडार, सोनार, टॉरपीडो, आयुध और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली आदि का कोई आयात न हो, जहां हमने आत्मनिर्भरता हासिल की है।

स्वदेशी विनिर्माण और विकास को प्रोत्साहित करने और समर्थन करने के लिए कई नीतियां भी प्रख्यापित की गई हैं जैसे टीओटी का तेजी से निष्पादन, उद्योग की सहायता, रॉयल्टी हटाना आदि। जैसा कि पहले ही कहा गया है, प्रौद्योगिकी विकास निधि (टीडीएफ) के प्रावधान के साथ तकनीकी स्टार्टअप को समर्थन भारतीय अनुसंधान एवं विकास को सशक्त बनाने वाला एक बड़ा कदम है।

डीआरडीओ हमारे सशस्त्र बलों के लिए आत्मनिर्भर प्रौद्योगिकियों में अनुसंधान एवं विकास गतिविधियां चला रहा है। डीआरडीओ की विशाल उपलब्धियों ने हमारे देश को स्क्रैमजेट इंजन और ए-सैट तकनीक के साथ हाइपरसोनिक मिसाइल जैसी तकनीकी क्षमताओं वाले चुनिंदा देशों के क्लब में शामिल कर दिया है। वर्तमान में, भारत डीआरडीओ द्वारा विकसित वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र के साथ स्वदेशी रूप से रक्षा क्षेत्र में किसी भी नई तकनीक को विकसित करने की चुनौती लेने के लिए तैयार है। एमबीटी अर्जुन मार्क I फाइटर जेट जैसी प्रणालियों के विकास में शुरू में तकनीकी चुनौतियाँ थीं जिनके लिए कठिन प्रयासों की आवश्यकता थी। हालाँकि, डीआरडीओ ने पिछले कुछ वर्षों में अपनी विशेषज्ञता विकसित की है और अब इन प्रणालियों को उन्नत सुविधाओं के साथ नई पीढ़ी में अपग्रेड कर रहा है। वर्षों से विकसित विशेषज्ञता और अनुभव का उपयोग नई युद्ध प्रौद्योगिकियों जैसे उन्नत और जटिल सुविधाओं के साथ लड़ाकू यूएवी के विकास, झुंड ड्रोन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर रक्षा, क्वांटम संचार, कंप्यूटिंग और उन्नत स्मार्ट सामग्री आदि के लिए किया जा रहा है। यह सराहना की जानी चाहिए कि रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान और विकास करने वाले किसी भी अन्य संस्थान या उद्योग की भारी कमी के बीच डीआरडीओ अपना अनुसंधान एवं विकास कर रहा है। अन्य बड़े औद्योगिक देशों के विपरीत, जहां निजी घराने न केवल बड़ी पूंजी निवेश करते हैं, बल्कि अन्य देशों और संस्थानों के साथ मिलकर कंसोर्टियम भी चलाते हैं। जाहिर है, इस बाधा की हमारे रक्षा समुदाय के साथ-साथ थिंक टैंकों ने भी सराहना नहीं की है और इसलिए यह गलत धारणा है। वास्तव में, मुझे लगता है कि हमने जो प्रगति की है वह सराहनीय है।

डीआरडीओ का प्रयास एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने पर होगा, जहां एकीकरण और नवाचार और रक्षा निर्यातक बनने पर पूरा ध्यान हो। डीआरडीओ उन्नत प्रौद्योगिकियों के साथ तीनों सेनाओं की भविष्य की युद्ध लड़ने की आवश्यकताओं का जवाब देने में सक्षम होगा। जहां एकीकरण और नवप्रवर्तन और रक्षा निर्यातक बनने पर पूरा ध्यान है। उन्नत प्रौद्योगिकियों के साथ डीआरडीओ तीनों सेनाओं की भविष्य की युद्ध लड़ने की आवश्यकताओं का जवाब देने में सक्षम होगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: मानवता के विकास में एक क्रांतिकारी कदम

अंकुर मैंदीरत्ता
जनसंपर्क निदेशालय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रौद्योगिकियां मानव इतिहास में परिवर्तन की सबसे शक्तिशाली एजेंट बनने की राह पर हैं। बड़ी संख्या में व्यवसायों, व्यक्तियों और यहां तक कि सरकारों ने उत्पादकता और दक्षता बढ़ाने के लिए एआई को अपनाया है। यह आश्चर्य कि बात है कि एक मानव मस्तिष्क ने न केवल ज्ञान का सृजन/पुन:उत्पादन किया है, बल्कि ऐसी बुद्धि का विकास किया है जो ज्ञान का सृजन कर रही है। यह न केवल वैश्विक आर्थिक और तकनीकी परिदृश्य बल्कि हमारे दैनिक जीवन के हर पहलू को नया आकार देगा।

स्वाभाविक है कि दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और एक युवा राष्ट्र, भारत को एआई से लाभ उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए। सामाजिक समस्याओं का समाधान करने और अधिक आर्थिक समृद्धि की ओर बढ़ने के लिए एआई का लाभ उठाया जा सकता है। एआई से 2035 तक भारतीय अर्थव्यवस्था में 967 बिलियन अमरीकी डालर और 2025 तक भारत की जीडीपी में 450-500 बिलियन अमरीकी डालर जोड़ने की उम्मीद है, जो देश की अर्थव्यवस्था को अमरीकी डालरों में 5 ट्रिलियन का आकार प्रदान करने के सरकार के लक्ष्य का 10 प्रतिशत हिस्सा है। भारत में एआई का उपयोग भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चुस्त-दुरुस्त गतिशीलता और परिवहन सहित स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, कृषि, स्मार्ट शहरों और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में सामाजिक जरूरतों को पूरा कर रहा है। यह नए ज्ञान के सृजन और अनुप्रयोगों के विकास और उपयोग के माध्यम से प्रौद्योगिकी की सीमाओं का विस्तार करने में मदद कर रहा है।

एआई ने रक्षा, स्वास्थ्य और चिकित्सा, कृषि, व्यापार और वाणिज्य तथा परिवहन सहित लगभग हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना ली है। जब युद्धों में पूर्ण मानव भागीदारी रही है, एआई अनुप्रयोगों की सहायता से नए स्वचालित हथियार/प्रणालियां विकसित की गई हैं। वे मानव नियंत्रण के बिना ही दुश्मन के प्रतिष्ठानों को नष्ट कर सकती हैं। एआई-सक्षम सैन्य उपकरण बड़ी मात्रा में डेटा को कुशलतापूर्वक संभालने में समर्थ हैं। यह उपकरण जवानों को प्रशिक्षण देने में भी काफी मददगार साबित हो रहे हैं। आने वाले समय में ऑगमेंटेड और वर्चुअल रियलिटी तकनीकों का भी प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाएगा।

डीआरडीओ रक्षा के लिए नवाचार और स्वदेशी एआई समाधान प्रदान करने के लिए सार्थक प्रयास कर रहे हैं और भविष्य की प्रौद्योगिकी भी विकसित कर रहे हैं। एआई में अनुसंधान और विकास के लिए, रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) की दो समर्पित प्रयोगशालाएं हैं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स केंद्र (सीएआईआर), बेंगलुरु तथा एआई में अनुप्रयोग उन्मुख अनुसंधान के लिए डीआरडीओ युवा वैज्ञानिक प्रयोगशाला (डीवाईएसएल) -एआई।

सभी डीआरडीओ सिस्टम प्रयोगशालाओं ने सभी उत्पादों में एआई सुविधाओं को पेश करने के लिए एआई प्रौद्योगिकी समूह शुरू किए हैं। जनवरी 2019 में, डीआरडीओ प्रयोगशाला, सेंटर फॉर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड रोबोटिक्स (सीएआईआर) ने सिग्नल इंटेलिजेंस के लिए एआई-आधारित समाधान विकसित करने के लिए एक परियोजना शुरू की, जो सशस्त्र बलों के लिए खुफिया, संयोजन और विश्लेषण क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करेगी। परियोजना के विकास में उपयोग किए गए एआई-आधारित उपकरण रक्षा बलों को निर्णय समर्थन, सेंसर डेटा विश्लेषण, पूर्वानुमानित रखरखाव, स्थितिजन्य जागरूकता, सटीक डेटा निष्कर्षण और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में रचनात्मक रूप से मदद करेंगे।

हाल ही में रक्षा मंत्रालय ने 75 उत्पादों के विवरण वाली एक पुस्तक के भौतिक के साथ-साथ ही ई-संस्करण का भी विमोचन किया। इस पुस्तक में सेवाओं, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ), रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (डीपीएसयू), आईडीईएक्स, स्टार्ट-अप्स और निजी उद्योग द्वारा एआई के क्षेत्र में पिछले चार वर्षों के दौरान किए गए सामूहिक प्रयासों को प्रदर्शित किया गया है। इन प्रयासों की सराहना करते हुए रक्षा मन्त्री माननीय श्री राजनाथ सिंह ने एआई को मानवता के विकास में एक क्रांतिकारी कदम बताते हुए कहा कि यह प्रमाण है कि मनुष्य इस ब्रह्मांड में सबसे विकसित प्राणी है। डीआरडीओ के उत्पादों में एआई प्लेटफॉर्म ऑटोमेशन; स्वायत्त/मानवरहित/रोबोटिक्स प्रणालियां; ब्लॉक चेन आधारित स्वचालन; कमान, नियंत्रण, संचार, कंप्यूटर और इंटेलिजेंस, निगरानी और टोही; साइबर सुरक्षा; मानव व्यवहार संबंधी विश्लेषण; बुद्धिमान निगरानी प्रणाली; घातक स्वायत्त हथियार प्रणाली; लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, परिचालन डेटा विश्लेषिकी; विनिर्माण और रखरखाव; प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण का उपयोग करते हुए सिमुलेटर/परीक्षण उपकरण और समभाषण/आवाज विश्लेषण शामिल हैं।

रक्षा सेवाओं में एआई अनुप्रयोगों को तेजी से बढ़ावा देने के लिए डीआरडीओ ने उद्योग के साथ कई समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। डीआरडीओ अत्याधुनिक एआई अनुसंधान को आगे बढ़ाने में विभिन्न संस्थानों को सहायता प्रदान कर रहा है। तकनीकी विकास कोष परियोजनाओं और 'डेयर टू ड्रीम' प्रतियोगिताओं के माध्यम से एआई के क्षेत्र में प्रगति करने के प्रयास किए जा रहे हैं। डीआरडीओ द्वारा देश में कई रक्षा-उद्योग-अकादमिक उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए गए हैं और उनमें से अधिकांश के मांगपत्रों में एआई को प्रमुखता दी जा रही है।

एक आत्मनिर्भर अनुसंधान एवं विकास इकोसिस्टम स्थापित करने के लिए डीआरडीओ द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की जानी चाहिए जो प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' विजन के अनुरूप सशस्त्र बलों को अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध कराता है। डीआरडीओ ने अपने आपको अत्यधिक परिष्कृत हथियार प्लेटफार्मों/प्रणालियों के डिजाइन, विकास और उत्पादन के माध्यम से अपना महत्व स्वयं सिद्ध कर दिया है। इससे निजी क्षेत्र की भागीदारी में बढ़ोत्तरी हुई है और इन प्रयासों के कारण भारत अब रक्षा उपकरण निर्यात करने वाले शीर्ष 25 देशों में शामिल हो गया है। भारत जल्द ही एआई के क्षेत्र के अग्रणी देशों में शामिल हो जाएगा। भविष्य के युद्ध में एआई की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए हथियारों/प्रणालियों का विकास किया जा रहा है। रिमोट पायलट मानव रहित हवाई वाहनों आदि में एआई अनुप्रयोगों को शामिल करना शुरू कर दिया है। हमें इस दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है ताकि हमस्वचालित हथियार प्रणाली विकसित कर सकें। रक्षा क्षेत्र में एआई और बिग डेटा जैसी प्रौद्योगिकियों का समय पर समावेश अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि हम प्रौद्योगिकी प्रगति में पीछे न रहें और अपनी सेवाओं के लिए प्रौद्योगिकी का अधिकतम लाभ उठाने में सक्षम हो सकें।

राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन

मिट्ठू मेहता
ज्ञान केंद्र

कपड़ा और वस्त्र उद्योग श्रम प्रधान क्षेत्र है, जो भारत में 4.5 करोड़ लोगों को रोज़गार देता है, और 6 करोड़ लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराता है, रोज़गार के मामले में इस क्षेत्र का कृषि क्षेत्र के बाद दूसरा स्थान है।

अगर मैं भारत के सबसे बड़े औद्योगिक घराने का नाम लेने को कहूँ तो अमूमन आप–टाटा, बिड़ला और अंबानी का नाम ले लेंगे, लेकिन अगर मैं आपसे पूछूं कि इन तीनों में एक कॉमन बात क्या है तो शायद आप सोच में पड़ जाएं! मैं बताता हूँ:–

इन तीनों में कॉमन है–इनकी शुरुआत इन तीनों की शुरुआत टेक्सटाइल यानी कपड़ों के धंधे से हुई है।

- 1850 के दशक में सेठ शिव नारायण बिड़ला ने कॉटन ट्रेडिंग का काम शुरू किया।
- 1870 के दशक में जमशेदजी टाटा ने मुंबई के चिंचपोकली में बंद हो चुकी आयल मिल खरीदी और उसे कॉटन मिल में बदल दिया।
- 1966 में धीरुभाई अंबानी ने रिलायंस कमर्शियल कॉरपोरेशन की स्थापना एक पॉलिएस्टर फर्म के रूप में की बाद में जिसका नाम बदलकर रिलायंस इंडस्ट्रीज कर दिया गया, जो आज दस लाख करोड़ की कम्पनी है।

भारत का कपड़ा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे पुराने उद्योगों में से एक है और पारंपरिक कौशल, विरासत तथा संस्कृति का भंडार एवं वाहक है। इसे मुख्यत: दो भागों में बाँटा जा सकता है:–

- असंगठित क्षेत्र- छोटे पैमाने का है जो पारंपरिक उपकरणों और विधियों का उपयोग करता है। इसमें हथकरघा, हस्तशिल्प एवं रेशम उत्पादन शामिल हैं।
- संगठित क्षेत्र आधुनिक मशीनरी और तकनीकों का उपयोग करता है तथा इसमें कताई, परिधान एवं वस्त्र शामिल हैं।

वस्त्र उद्योग का महत्त्व

- यह भारतीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 2.3%, औद्योगिक उत्पादन का 7%, भारत की निर्यात आय में 12% और कुल रोज़गार में 21% से अधिक का योगदान देता है।
- भारत 6% वैश्विक हिस्सेदारी के साथ तकनीकी वस्त्रों (टेक्निकल टेक्सटाइल) का छठा (विश्व में कपास और जूट का सबसे बड़ा उत्पादक) बड़ा उत्पादक देश है।
- भारत विश्व में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश भी है जिसकी विश्व में हाथ से बुने हुए कपड़े के मामले में 95% हिस्सेदारी है।

राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन

तकनीकी वस्त्र कार्यात्मक वस्त्र होते हैं जो ऑटोमोबाइल, सिविल इंजीनियरिंग और निर्माण, कृषि, स्वास्थ्य देखभाल, औद्योगिक सुरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा इत्यादि सहित विभिन्न उद्योगों में अनुप्रयोग होते हैं। टेक्निकल टेक्सटाइल में ऐसे वस्त्र आते हैं, जिनका निर्माण फैशन के उद्देश्यों के लिये नहीं बल्कि कार्यात्मक गुण प्रमुख होते हैं। कोरोना काल में पीपीई किट, मास्क आदि हैं। इसके अलावा एयरबैग, बुलेटप्रूफ जैकेट, वाहनों में उपयोग में आने वाले वस्त्र, चिकित्सा में उपयोग किये जाने वाले वस्त्र, कृषि और रक्षा से संबंधित होते हैं।

प्रयोग के आधार पर 12 तकनीकी वस्त्र खंड हैं: एग्रोटेक, मेडिटेक, बिल्डटेक मोबिल्टेक, क्लोथेक, ओईटेक, जियोटेक, पैकटेक, हॉमटेक, प्रोटेक, इंडुटेक और स्पोर्टेक । उदाहरण के तौर पर रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) में मोबिलटेक वर्ग में पैराशूट, एरोस्टेट पर हवाई वितरण अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (एडीआरडीई) आगरा में तथा डीआरडीओ लैब की शाखा कानपुर, चंडीगढ़ व बैंगलोर में प्रोटेक वर्ग में बुलेट प्रूफ जैकेट, प्रोटेक्टिव क्लोथिंग आदि पर काम किया जाता है

राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन का लक्ष्य घरेलू बाज़ार के आकार को वर्ष 2024 तक 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक ले जाना है।

तकनीकी वस्त्र परिदृश्य

- भारत में तकनीकी वस्त्रों के विकास ने पिछले पाँच वर्षों में गति पकड़ी है, जो वर्तमान में 8% प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है। अगले पाँच वर्षों के दौरान इस वृद्धि को 15-20% की सीमा तक ले जाने का लक्ष्य है। मौजूदा विश्व बाज़ार 250 अरब अमेरिकी डॉलर का है और इसमें भारत की हिस्सेदारी 19 अरब अमेरिकी डॉलर है।
- भारत इस बाज़ार में 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर (8% शेयर) के साथ एक महत्त्वाकांक्षी देश है।
- सबसे बड़े देश यूएसए, पश्चिमी यूरोप, चीन और जापान (20-40%) हैं।

आगे की राह

- वस्त्र क्षेत्र में काफी संभावनाएँ हैं और इसे नवाचारों, नवीनतम प्रौद्योगिकी और सुविधाओं का उपयोग करके महसूस किया जाना चाहिये।
- भारत वस्त्र उद्योग के लिये मेगा अपैरल पार्क और साझा बुनियादी ढाँचे की स्थापना करके इस क्षेत्र को संगठित कर सकता है। अप्रचलित मशीनरी और प्रौद्योगिकी के आधुनिकीकरण पर ध्यान दिया जाना चाहिये।
- भारत को वस्त्र क्षेत्र के विकास हेतु एक व्यापक खाका तैयार करने की ज़रूरत है। इसके एक बार तैयार हो जाने के बाद देश को इसे हासिल करने के लिये मिशन मोड में कार्य करने की ज़रूरत होगी।

जीवन का 'लक्ष्य' प्राप्त करने का मार्ग

विजेंद्र कुमार
अपर सचिव एवं अपर वित्तीय सलाहकार का कार्यालय

ईश्वर भक्तों के स्नेह और श्रद्धा भाव को ग्रहण करते हैं। चढ़ावा तो असल में भक्ति भाव व व्यक्त करने का स्थूल जरिया है। भगवान तो सच्ची भावना का आदर करते हैं और उसका फल देते है गरीब भक्त सुदामा के मुट्ठी भर चावल के बदले भगवान ने उसे मालामाल कर दिया। यह बात अलग कि बचपन में सखा कृष्ण के प्रति कपट आचरण ने उसकी तकदीर को लकीर लगा दी। इसलिए मन में अगर छल, कपट, द्वेष है तो हम ईश्वर से कोसों दूर हैं। मन, वचन और कर्म में खोट है, तो न स्वयं को, परिवार को या समाज को प्रिय लगेंगे और न ही प्रभु को कोई भी मनोविकार इंसान को अशांत, परेशान, तनावग्रस्त और आपराधिक बना देता है। इंसानी तकलीफ को कम या समाप्त करने के लिए ईश्वर किसी न किसी के जरिए ज्ञान और नसीहत देते हैं कि सुख और दुख का कारण मनुष्य की ऊंची-नीची सोच है। इसका आधार उसकी सही और गलत नीयत है जिससे इंसान के मन में अच्छे और बुरे संकल्प और विचार आते हैं। कहते हैं, नीयत साफ तो मुराद हासिल। यानी किसी नेक मकसद को पूरा करने के लिए साफ नीयत, शुभ संकल्प और मकसद मुताबिक कर्म की जरूरत है। यह अलग बात है कि मनुष्य अपने बुरे कर्म भोग से सीखें, ईश्वरीय ज्ञान और योग के बल से अपनी गलतियों को सुधारे और सच्चे मन से पश्चाताप करते हुए प्रभु शरण में जाएं। तब भगवान उसकी सब गलतियां माफ कर सकते हैं। मन, वचन, कर्म और जीवन के सर्व संबंधों से प्रभु उसे अपना सकते हैं। उसके कुकर्म और पाप कर्म से बने दुर्भाग्य को श्रेष्ठ, सुखदायी और पुण्य प्रदायक सौभाग्य में बदल सकते हैं।

भगवान के द्वारा मानव के भाग्य बदलने का भाव यह नहीं कि इंसान की तकदीर ईश्वर बनाते हैं। ईश्वर तो केवल मार्गदर्शक और पथ प्रदर्शक का कर्तव्य करते हैं। मनुष्य अपने कर्मों से भाग्य बनाता और बिगाड़ता है। मानव जीवन के इस महाभारत संग्राम में गीता ज्ञान, सहज राजयोग, सात्विक कर्म और जीवन दर्शन को अपना कर ही मनुष्य अपनी भावना, बोल, कर्म, जीवन और भाग्य को श्रेष्ठ बना सकता है। देखा जाए तो, कर्म और पुरुषार्थ एक उपाय है किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए। एक गृहस्थ के लिए उद्देश्य हैं- सुखी और संपन्न जीवन व परिवार उसके लिए हम गलत तरीका नहीं अपना सकते। हम अपवित्र मन से पवित्र मंजिल तक नहीं पहुंच सकते। अक्सर हम कर्म को कर्मफल से, यानी पुरुषार्थ को जीवन से अलग समझने की भूल करते हैं। तभी हम सुख शांति से कार्य करने के बजाय सुख-शांति पाने के लिए काम करते हैं। जीवन यात्रा में सुख- शांति को हमराही बनाने के बजाय, उसे दूर की मंजिल बना देते हैं। तभी हम सुख पाने के लिए संघर्ष करते हैं। गीता में कहा गया है कि योगयुक्त होकर ही हमें सांसारिक कर्म करना चाहिए। तभी हम शांत चित्त, स्थिर बुद्धि, संतुष्ट मन और खुशी की स्थिति में रहकर अपना कर्तव्य कुशलता और सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

समय से अधिक सत्य मूल्यवान है

जयबीर

संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

दुनिया में मूल्यवान वही होता है जो या तो दुर्लभ होता है या जिसका कुछ महत्त्व होता है और उसका तो मूल्य और अधिक होता है जिसका ना तो उत्पादन किया जा सकता है और ना ही उसे नियंत्रित किया जा सकता है। 'समय' उनमें से सबसे प्रमुख है। दुनिया में आने वाले प्रत्येक मनुष्य के पास एक निश्चित मात्रा में समय होता है। जो उसके जन्म लेने के समय से ही निरंतर एक नियमित गति से घटता जाता है और जो क्षण व्यक्ति एक बार जी लेता है वह दोबारा उसे जीवन में लौटकर नहीं आता। अतः समय अत्यंत ही मूल्यवान है लेकिन क्या सत्य उससे भी अधिक मूल्यवान है इसको जानने के लिए सबसे पहले यह जानना होगा कि वास्तव में सत्य क्या होता है।

सत्य शब्द संस्कृत के सत शब्द से निकला है जिसका अर्थ होता है शाश्वत, वास्तविक या यथार्थ। सत्य वास्तव में एक नैतिक मूल्य होता है जिस पर मानव समाज टिका होता है, सत्य एक साथ साध्य और साधन दोनों है जिसको प्राप्त करने के लिए प्राचीन काल से लोगों द्वारा प्रयास किया जाता रहा है।

सत्य को अगर हम साधन के रूप में लेते हैं तो यह मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों जैसे स्वतंत्रता, समानता आदि को प्राप्त करने का एक माध्यम है। वही व्यक्ति अपने हित में स्वतंत्र रूप से विवेकशील निर्णय ले सकता है जिसे वास्तविकता का पूर्ण व सही ज्ञान हो। व्यक्ति वास्तव में तब ही स्वतंत्र माना जाएगा जब व्यक्ति समाज में अपना उचित स्थान बनाए रख सकता है और तभी वह अपने खिलाफ किए जाने वाले कार्यों के विरुद्ध आवाज उठा सकता है। साम्यवादी विचारधारा के अनुसार पृथ्वी पर जन्म लेने वाले प्रत्येक मनुष्य का पृथ्वी के प्रत्येक संसाधन पर बराबर का अधिकार होता है। परंतु आज समाज में हमें अत्यधिक असमानता देखने को मिलती है और यह असमानता कुछ लोगों के द्वारा अन्य लोगों के अधिकारों को हड़पकर उन्हें उनके प्राकृतिक अधिकारों के बारे में सत्य ना बताने के कारण बनी हुई है। अतः सत्य जानकर ही व्यक्ति धरती पर अपने प्राकृतिक अधिकारों को प्राप्त कर समानता का जीवन जी सकता है।

कहा जाता है कि सत्य के रास्ते पर चलने वाले की ही जीत होती है और इतिहास में इसके अनेकों उदाहरण भी हैं चाहे वह पौराणिक कथाओं में रावण के विरुद्ध राम की विजय हो या महाभारत में पांडवों की या वास्तविक जीवन में महात्मा गांधी द्वारा सत्याग्रह का प्रयोग कर भारत को आजादी दिलवाना हो सभी जगह सत्य की ही जीत हुई है। लेकिन सत्य का रास्ता इतना आसान नहीं है। सत्य को एक साधन के रूप में प्रयोग करने वालों को इसके लिए अत्यधिक मूल्य चुकाना पड़ा है जैसे राम को वनवास, पांडवों को अपना राज्य व गांधीजी को अंग्रेजों का अमानवीय अत्याचार सहना पड़ा ।

इसी प्रकार आज भी पाखंड का विरोध करने व सत्य को उद्घाटित करने वाले बुद्धिजीवियों को सत्य की कीमत चुकानी पड़ती है और कई बार यह कीमत उनकी जान के बराबर होती है। अतः सत्य अत्यधिक मूल्यवान होता है इसीलिए शायद साहिर लुधियानवी जी ने कहा है कि–

झूठ तो कातिल ठहरा उसका क्या रोना यहाँ तो सच ने भी इंसान का खून बहाया है

इसके अलावा सत्य केवल इसलिये ही मूल्यवान नहीं होता कि इसके लिये अत्यधिक मूल्य चुकाना पड़ता है बल्कि इसलिये भी मूल्यवान होता है क्योंकि सत्य स्वयं में एक मूल्य है जिस पर अन्य मूल्य टिके हैं। जैसे-विश्वास, ईमानदारी, संवेदनशीलता, दया, अपनत्व और मानवता। इस प्रकार सत्य एक तरह से मानव के अस्तित्व का आधार है। एक बार सत्य के पराजित होने या अनुपस्थित होने से मानवता और यहाँ तक कि मानव के अस्तित्व पर भी सवाल खड़ा हो सकता है।

वहीं अगर हम सत्य को यदि एक शस्त्र के रूप में मानते हैं तो भी इसे जानने के लिए सदियों से विभिन्न विद्वानों ने अनेकानेक प्रयास किए हैं। सत्य की खोज के लिये महात्मा बुद्ध, महावीर जयंती ऐसे लोगों ने अपना राज-पाट त्यागकर सन्यासियों का जीवन बिताया। महात्मा बुद्ध के शब्दों में–

'तीन चीजें कभी नहीं छिपाई जा सकती हैं-सत्य, ईश्वर और ज्ञान।'

इसी प्रकार बहुत से विद्वानों ने इस धरती व संसार को मोह माया तथा क्षणिकवादी माना है। वे जीवन का वास्तविक लक्ष्य सत, चित, आनंद को प्राप्त करना मानते हैं क्योंकि धरती पर मनुष्य का वास्तविक लक्ष्य भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने में नहीं बल्कि उस परमात्मा को प्राप्त करने में है जो प्रत्येक मनुष्य का अंतिम लक्ष्य है। इसलिए कहा गया है कि–

सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप,
जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप

महात्मा गांधी एवं इमैनुअल कांट जैसे विद्वान जीवन को लॉजिकल एप्रोच के तहत सत्य के साथ कभी समझौता नहीं करने को आदर्श स्थिति मानते हैं और यह कहते हैं कि सत्य के रास्ते पर चलना ही वास्तव में वास्तविक लक्ष्य है इसीलिये गांधी जी कहते हैं कि–

'सत्य ही ईश्वर है'

हाँ यह अलग बात है कि कई बार सत्य के रास्ते पर चलने वालों को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा वांछित लक्ष्य प्राप्त होने में देर लगती है लेकिन यह तथ्य है कि विजय हमेशा सत्य की ही होती है। लेकिन यह भी सही है कि भगवान के घर देर है लेकिन अंधेर नहीं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जहाँ सत्य को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक मूल्य चुकाना पड़ता है वहीं सत्य को प्राप्त कर लेने से हम अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। इससे मानवता का आधार मजबूत होता है और मानवमात्र पर विश्वास टिका रहता है क्योंकि जहाँ सत्य नहीं होता वहाँ अराजकता और अन्याय अपना मुँह उठाते हैं और शायद इसीलिये भारत सरकार ने अपना राष्ट्रीय आदर्श वाक्य **सत्यमेव जयते** रखा है। भारतीय नागरिकों को सत्य जानने के लिये **सूचना**

का अधिकार अधिनियम पारित कर सत्य की प्राप्ति हेतु एक महत्त्वपूर्ण हथियार मुहैया करवाया गया है क्योंकि धरती पर समय तो प्राकृतिक रूप से सबको बराबर मिला है वही धरती पर प्राकृतिक अधिकार भी बराबर ही मिले हैं लेकिन समय के साथ ही झूठ का सहारा लेकर व्यक्ति को उसके प्राकृतिक अधिकारों से वंचित किया जाता रहा है जिसे सत्य के माध्यम से ही वह दुबारा प्राप्त किया जा सकता है अन्यथा धरती पर उसे मिला अधिकार वह प्राप्त नहीं कर पाएगा और बिना अधिकारों के उसका जीवन निरर्थक ही रहेगा। इसीलिये किसी ने कहा है कि **जीवन लंबा नहीं महान होना चाहिए**।

लेकिन क्या उपयुक्त विवेचन से यह मान लें कि सत्य समय से अधिक मूल्यवान होता है नहीं समय का भी बराबर महत्त्व होता है क्योंकि जीवन में प्रत्येक क्रिया या वस्तु का एक निश्चित समय होता है। वह वस्तु या क्रिया उसी समय मूल्यवान होती है जब समय उपयुक्त होता है। अगर वह चीज समय पर ना मिले तो वह कितना भी महंगा क्यों न हो हमारे लिए निरर्थक है जैसे कृषकों के लिए यह कहा गया है कि–

समय चूंकि पुनि का पछिताने का वर्षा जब कृषि सुखाने

अतः वर्षा का मूल्य उसी समय है जब वह समय पर हो। अतः यह समय ही है जो किसी का मूल्य निर्धारित करता है इसी प्रकार उस न्याय को न्याय नहीं माना जाता जो समय पर ना मिले जिसके लिए एक महत्त्वपूर्ण कहावत प्रचलित है कि–

न्याय में देरी न्याय न मिलने के समान है

इसके अलावा समय अपने आप में भी मूल्यवान होता है। हाँ, यह अलग बात है कि किसी के लिए कम मूल्यवान होता है और किसी के लिए अधिक मूल्यवान होता है। जैसे किसी विद्यार्थी के लिए उसका परीक्षा के दौरान का समय अत्यधिक मूल्यवान होता है क्योंकि यह समय उसके पूरे जीवन की दिशा निर्धारित करता है। उस दौरान व्यर्थ में समय व्यतीत करने वाले विद्यार्थी जीवन भर पछताते रहते हैं जबकि इस समय का सदुपयोग कर अध्ययन करने वालों को सफलता मिलती है।

इसी प्रकार कई बार ऐसी परिस्थिति आती है जब आपको सत्य से समझौता करना पड़ता है जैसे किसी अंधे को अंधा या लंगड़े को लंगड़ा कहना तो सत्य है लेकिन यह सही नहीं है। इसी प्रकार यदि कोई चोर आपके पास छुपे हुए व्यक्ति को उन हथियारबंद व्यक्तियों के पास भेज दे तो भले ही वह सत्य के रास्ता का चयन करता है लेकिन यह नैतिक रूप से कहीं भी सही नहीं होगा।

इसके अलावा समय कितना मूल्यवान होता है इसका पता ऐसे लगा सकते है कि आपके द्वारा खोई गई किसी भी प्रिय वस्तु को आप दुनिया की कोई भी कीमत देकर वापस नहीं प्राप्त कर सकते हैं। अतः समय केवल मूल्यवान ही नहीं यह अनमोल भी होता है इसलिए कहा गया है–

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब पल में परलय होएगी बहुरि करोगे कब।

नियतिवादी विचारक तो यहाँ तक मानते हैं कि हर घटना का समय निश्चित है ना तो उसे कोई आगे कर सकता है और ना ही कोई पीछे कर सकता है। हर व्यक्ति सिर्फ एक मशीन की तरह कार्य करता है इसी को व्यक्त करते हुए वक्त फिल्म का यह गाना याद आता है

वक्त से दिन और रात, वक्त से कल और आज
वक्त की हर शै गुलाम वक्त का हर शै पे राज

लेकिन कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जब हम यह चाहते हैं कि यह समय जल्द-से-जल्द गुजर जाए और बहुत उदासी के समय या किसी असाध्य पीड़ा से ग्रसित व्यक्ति का समय जब बीमारी घातक हो और सारे इलाज के माध्यम अपनाने के बावजूद भी वह ठीक ना हो तो व्यक्ति के लिए वह समय जल्द-से-जल्द गुजर जाना अच्छा होता है।

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समय और सत्य दोनों एक-दूसरे से अपना मूल्य प्राप्त करते हैं, लेकिन सत्य साध्य और साधन दोनों रूप में मूल्यवान होता है। यह ज़रूरी है कि समय कितना भी लगे लेकिन सत्य उद्घाटित होना ही चाहिए और सत्य का ही बोलबाला होना चाहिए। अतः समय और सत्य दोनों अत्यधिक मूल्यवान होते हैं एक बार समय से तो समझौता किया जा सकता है, लेकिन सत्य से समझौता नहीं किया जा सकता क्योंकि समय व्यक्ति को मिला एक ऐसा कोश है जिसका समाप्त होना तो निश्चित है लेकिन यदि उसके सही मूल्य को समझकर उसे सही जगह निवेश किया जाए तो आपके जीवन में मिला यह थोड़ा सा ही समय उस पूरे युग को मूल्यवान बना देता है। जबकि सत्य ऐसा मूल्य है जो पूरी मानव जाति को वास्तविक मानवतावादी बनाती है। शायद इसीलिये किसी ने कहा है कि–

लहू में हरकतें मुँह में जुबान डालेंगे,
जो सच्चे लोग हैं वो मुर्दों में जान डालेंगे।

पर्यावरण के लिए जीवन-शैली अभियान

स्वाति सिन्हा
संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय

गत वर्षों में विश्वभर के लोगों ने अनगिनत प्राकृतिक आपदाओं का सामना किया है। कोरोना महामारी, बाढ़, फ्लैश फ्लड, वनों में आग लगना इत्यादि इसके कुछ उदाहरण है। साथ ही में विश्व ऐसी आपदाओं से भी पीड़ित है जो मानवीय गतिविधियों का परिणाम हैं जैसे कि प्रदूषण अपने सभी रूपों में , भूमिगत जल स्तर में कमी, नदियों से संबंधित समस्याएं, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक ताप में वृद्धि आदि। आपदा प्राकृतिक हो या मानवजनित, नुकसान होना स्वाभाविक है। जान माल की हानि, संसाधन का नुकसान, विस्थापन आदि जैसी कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं और सम्पूर्ण जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है।

ऐसे में सभी सरकार को जिम्मेदार ठहराते हैं कि सरकार कहां है? सरकार कुछ करती क्यों नहीं? परंतु क्या कभी हमनें ये प्रश्न अपने आप से किया ? क्या हमने स्वयं को जिम्मेदार माना? हमें अन्यत्र को गैर जिम्मेदार न बताकर अपनी भूमिका पर ध्यान देना चाहिए। हमें ये सोचना चाहिए कि स्थिति को बेहतर बनाने में हमारा क्या योगदान हो सकता है। जैसे बूंद बूंद से सागर बनता है वैसे ही हमारे द्वारा किए गए छोटे छोटे प्रयास एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। इसी बिंदु को उद्देश्य बनाकर "लाइफस्टाइल फॉर एन्वायरमेंट" यानी पर्यावरण के लिए जीवन शैली अभियान आरंभ किया गया था। यह एक वैश्विक पहल है जिसका आरंभ भारत के प्रतिनिधित्व में ग्लास्गो में आयोजित 26वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन कॉप 26 के दौरान किया गया था।

इस अभियान का उद्देश्य लोगों में एक ऐसी जीवन-शैली को प्रोत्साहित करना है जो हमारे पृथ्वी ग्रह के स्वास्थ्य के अनुकूल हो। यह पहल पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली को बढ़ावा देती है जो "विवेकहीन और व्यर्थ खपत" के बजाय "सावधानी के साथ और सुविचारित उपयोग" पर केंद्रित है। यह पहल दुनिया भर के लोगों समुदायों और संगठनों को पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से शुरू की गई है। ऐसी जीवन शैली अपनाने वालो को "प्रो प्लेनेट पीपल" की संज्ञा दी जाती है। भारत ने एक देश के स्तर पर इस दिशा में कई प्रयास किए हैं ताकि भारतीय लोगों का जीवन पर्यावरण के अनुकूल बनें और यह प्रयास सफल भी रहे हैं। अक्षय ऊर्जा के प्रयोग पर बल देना, ई परिवहन को प्रोत्साहन देना, वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित करना, जागरूकता अभियान का आयोजन करना इत्यादि इसके कुछ उदाहरण हैं। अब प्रश्न बनता है इसमें हमारा क्या योगदान हो सकता है? हमारे देश ने एक ऐसा अभियान आरंभ किया है जो अपने जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालने की मांग करता है। हमें चाहिए कि हम सभी इसमें सहयोग करें और विश्व के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें कि कैसे हम सभी अपने व्यक्तिगत स्तर पर योगदान देकर जलवायु

परिवर्तन जैसी समस्या का निदान कर सकते हैं। जब भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा कहते हैं कि "हम पहली पीढ़ी हैं जिसने जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अनुभव किया है और हम आखिरी पीढ़ी हैं जो इसके सुधार के लिए कुछ कदम उठा सकते हैं" उनका आशय यही है कि पर्यावरण क्षरण को रोकने में हम सभी को अपने स्तर पर भूमिका निभानी होगी। पर्यावरण के लिए जीवन शैली अभियान में अपना योगदान देकर हम पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति को सुधारने का प्रयास कर सकते हैं। इसके लिए हमें अपने जीवन को प्रकृति के अनुसार ढालना होगा। ऐसी आदतों का अनुसरण करना होगा जो प्रकृति एवं पृथ्वी ग्रह के स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हो।

हम अपने व्यक्तिगत स्तर पर कई बदलाव लाकर इसमें अपना योगदान दे सकते हैं। ये अभियान हमें बताता है कि कैसे हम अपनी जीवन-शैली को पर्यावरण के अनुकूल बना सकते हैं। हम सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग से बचकर, ई वाहनों का प्रयोग करके, सार्वजनिक परिवहनों का प्रयोग करके, बिजली की खपत को नियंत्रित करके, पानी को रीसाइकल करके, पानी का सदुपयोग करके, उपभोग की आदतों में बदलाव करके, अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर (ज्यादा नहीं तो जीवन में कम से कम एक ही वृक्ष) और सबको वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करके, अपने बच्चों को भी पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करके, नई पीढ़ी को पर्यावरण संकट से जागरूक कराकर उसमें सुधार करने के उपायों से अवगत कराकर तथा ऐसे ही अन्य ढेरों प्रयास है जिनका अनुसरण करके बड़े बदलाव संभव हो सकते हैं। नई पीढ़ी को शिक्षित एवं जागरूक बनाना इस दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकता है। व्यक्तिगत एवं सामुदायिक व्यवहार में बदलाव पर्यावरण क्षरण को रोकने और जलवायु परिवर्तन में कमी लाने में सहायक होगा। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू एन डी पी) का मानना है कि यदि आठ अरब की वैश्विक आबादी में से एक अरब आबादी भी अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण अनुकूल व्यवहार अपनाती है तो कार्बन उत्सर्जन में लगभग 20 प्रतिशत की गिरावट आ सकती है। जीवन शैली में अचानक से बदलाव करना आसान नहीं है परंतु असंभव भी नहीं है। एक समय पर एक कार्रवाई, प्रतिदिन एक बदलाव हमारी जीवन शैली में अनगिनत सकारात्मक बदलाव ला सकता है। अध्ययन में साबित भी हुआ है कि किसी भी कार्य को आप अगर 21 दिन तक लगातार करते हैं तो आप उस कार्य में कुशल हो जाते हैं। हम 21 दिन का चैलेंज लेकर अपनी आदतों में सुधार कर सकते हैं।

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि प्रकृति हम सबकी जरूरतों की पूर्ति करने में सक्षम है परंतु हमारे लालच की पूर्ति करने में नहीं। हमें उपभोग की सभ्यता और "उपयोग करो और फेंको" की प्रवृत्ति को छोड़ कर पर्यावरण के अनुकूल जीवन जीना ही होगा। भले ही मानव आज चांद पर पहुंच गया है , मंगल पर जाने की तैयारी कर रहा है और ब्रह्मांड में ऐसे ग्रहों की तलाश में है जहां जीवन संभव हो परंतु इतनी वैज्ञानिक उपलब्धि हासिल करने के पश्चात भी मानवजाति एक ऐसा ग्रह नहीं खोज पाई है जहां जीवन संभव हो और न ही हम नए जीवन के सृजन की तकनीक ही विकसित कर पाए हैं। इस स्थिति में यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि अपने पृथ्वी ग्रह की सुरक्षा और संरक्षण के लिए इस अभियान का हिस्सा बनें। इस अभियान में भागीदारी देकर भारत देश के "जलवायु के लिए जीवन शैली" के संदेश को विश्वभर में प्रसारित करें ताकि विश्वभर के लोग इस अभियान के महत्व को समझें और बड़े स्तर पर इस अभियान का हिस्सा बन पर्यावरण संरक्षण में अपना अपना योगदान देने को प्रेरित हों। अगर हम यह संदेश विश्वभर में पहुंचाने में सफल हो पाते हैं तो यह भी अपने आप में एक बड़ी सफलता होगी।

ग्रीनहाउस प्रभाव

राजेन्द्र सिंह
कार्मिक निदेशालय

पृथ्वी पर मौजूद वातावरण ग्रीनहाउस की सतह के रूप में कार्य करता है। सूर्य की ओर से आने वाली प्रकाश किरणों का 31 प्रतिशत भाग पृथ्वी की सतह से पुनः परिवर्तित होकर स्पेस में चला जाता है और 20 प्रतिशत भाग वातावरण के द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। सूर्य से आई ऊर्जा का बचा हुआ भाग, पृथ्वी पर मौजूद समुद्र और सतह पर मौजूद तथ्यों द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। फिर इसे ऊष्मा (heat) में परिवर्तित किया जाता है जो पृथ्वी की सतह और ऊपर मौजूद हवाओं को गर्म बनाये रखने में मदद करती है। पृथ्वी के वातावरण में मौजूद कुछ खास गैसें ग्रीनहाउस की सतह के रूप में कार्य करती है और ऊष्मा को पृथ्वी पर बांधे रखती है।

ग्रीनहाउस प्रभाव क्या है?

ग्रीनहाउस प्रभाव एक प्राकृतिक घटना है, जो पृथ्वी की सतह को गर्म बनाये रखने में मदद करती है और इसी कारण पृथ्वी पर जीवन संभव है। ग्रीनहाउस में सूर्य की ओर से आने वाली ऊर्जा प्रकाश किरणों के रूप में एक सतह को पार करके ग्रीनहाउस तक आती है। सूर्य की ओर से आने वाली ऊर्जा का कुछ भाग मिट्टी, पेड़ पौधों और ग्रीनहाउस के अन्य साधनों द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। इस अवशोषित ऊर्जा का अधिक्तर भाग ऊष्मा (heat) में परिवर्तित हो जाता है, जो ग्रीनहाउस को गर्म बनाये रखता है। ग्रीनहाउस में मौजूद सतह इस ऊष्मा को बांधे रखती है और ग्रीनहाउस का तापमान निश्चित बनाये रखने में मदद करती है।

ग्रीनहाउस में उपस्थित गैसें ऊष्मा को अवशोषित करती है, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ जाता है और अन्य ग्रहों की तुलना में पृथ्वी पर जीवन संभव हो पाता है। सबसे जरूरी ग्रीनहाउस गैस पानी से उत्पन्न वाष्प है और ग्रीनहाउस प्रभाव में यह बहुत अधिक उपयोगी है। अन्य गैसें जिसमें कार्बन डाई ऑक्साइड, मिथेन और नाइट्रस ऑक्साइड आदि शामिल है, वो भी ग्रीनहाउस प्रभाव में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, हालाँकि इसकी मात्रा का प्रतिशत बहुत ही कम होता है।

अगर पृथ्वी पर ग्रीनहाउस प्रभाव नहीं होता तो, पृथ्वी अभी से कहीं ज्यादा ठंडी होती और पृथ्वी का तापमान 18° C होता। पृथ्वी पर जलवायु में गर्माहट बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि हमारी पृथ्वी के तीन चौथाई भाग पर पानी है और यह पानी बर्फ, तरल और वाष्प तीन रूपों में पृथ्वी पर मौजूद है। पृथ्वी पर मौजूद जल चक्र के कारण पानी एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होता रहता है और हमें अपने जीवन को नियमित बनाये रखने के लिए पीने योग्य पानी मिलता है। यह पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ग्रीनहाउस गैसों के संदर्भ में जानकारी

ग्रीनहाउस गैस का नाम	कार्बनिक नाम	पर्यावरण में इस गैस का प्रतिशत
भाप (Water vapor)	H_2O	36-70%
कार्बन डाईऑक्साइड	CO_2	9-26%
मिथेन	CH_4	4-9%
नाइट्रस ऑक्साइड (Nitrous oxide)	N_2O	3-7%
ओज़ोन	O_3	—
क्लोरोफ्लोरोकार्बन (Chlorofluorocarbons)	CFCs	—

ग्रीनहाउस प्रभाव में वृद्धि

पिछले कुछ वर्षों से विश्व के तापमान में लगातार वृद्धि देखी जा रही है इसका मुख्य कारण ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि है। इन ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि और पृथ्वी के तापमान में वृद्धि का मुख्य कारण मानव निर्मित है। मनुष्य अपनी सुख सुविधाओं के लिए पेड़ों और वनों को नष्ट करते जा रहा है। जीवाष्म इंधनों का अंधाधुंध प्रयोग हो रहा है, इसके परिणामस्वरूप पृथ्वी का तापमान अब पहले से 11 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है और कहा जा रहा है सन 2030 तक यह तापमान 5 डिग्री सेल्सियस और बढ़ जायेगा। इसके कई दुष्परिणाम भी हमें देखने मिल रहे हैं, जैसे रेगिस्तान में बाढ़ का आना, अतिवर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षा की कमी होना तथा ग्लेशियर पर मौजूद बर्फ भी पिघलने लगी है। यदि आगे भी यह सब ऐसे ही चलता रहा तो वह दिन भी दूर नहीं जब पृथ्वी नाश की ओर अग्रसर होगी। कहा जाता है कि अगर पृथ्वी का तापमान इसी तरह बढ़ता रहा तो कई जगह गर्म हवाओं के तूफान उठेंगे तो कही समुद्र का जलस्तर भी बढ़ जायेगा और निचले हिस्से में मौजूद देश जलमग्न हो जायेंगे। पीने और सिंचाई के लिए भी पानी मौजूद नहीं होगा, वन और पेड़ पौधे भी नष्ट होने लगेंगे। इसलिए आज जरूरत है कि हम बढ़ते हुये प्रदूषण को नियंत्रित करें और अपनी पृथ्वी के अस्तित्व को खोने से बचाएं।

ग्रीनहाउस प्रभाव की प्रक्रिया

नीचे कुछ चरणों में हम ग्रीनहाउस प्रभाव को आपको समझाने कि कोशिश कर रहें है, जिससे आप इसे सरलता से समझ सकते हैं।

पर्यावरण/जलवायु में परिवर्तन के कारण

मौसम और जलवायु दोनों एक दूसरे से बहुत अलग है, मौसम में परिवर्तन आम बात है और हम साल में तीन मौसम ठंड, गर्मी और बारिश का अनुभव करते हैं। इस मौसम में हुये परिवर्तन को हम आसानी से समझ लेते हैं परंतु जलवायु में परिवर्तन अत्यंत धीमा होता है और हम इस धीमी प्रक्रिया में भी सामंजस्य आसानी से बैठा लेते है और इस परिवर्तन

को समझ नहीं पाते। परंतु जलवायु में हुआ यह परिवर्तन पृथ्वी और इस पर उपस्थित जीवों के लिए अत्यंत खतरनाक है। जलवायु में परिवर्तन का कारण प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों ही है। प्राकृतिक कारणों पर तो हमारा कोई नियंत्रण नहीं है परंतु मानव द्वारा निर्मित कारणों को नियंत्रित करके हम पृथ्वी के वर्तमान और भविष्य में होने वाली कठिनाइयों से खुद को बचा सकते हैं। इसके लिए हमें जलवायु परिवर्तन के कारणों पर गौर करना पड़ेगा।

जलवायु परिवर्तन के कारण:

प्राकृतिक कारण:

- महाद्वीपों का खिसकना
- ज्वालामुखी
- समुद्री तरंगें
- धरती का घुमाव

मानवीय कारण:

- कई ऐसे मानवीय कारण है, जिसके फलस्वरूप पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ रहा है जिसके फलस्वरूप जलवायु में भी परिवर्तन हुया है और यह ग्लोबल वार्मिंग का बहुत बड़ा कारण है।
- जीवाष्म इंधनों जैसे कोयला, पेट्रोल, प्राकृतिक गैस आदि के प्रयोग से अधिक मात्रा में कार्बन डाई ऑक्साइड पर्यावरण में मुक्त हो रही है।
- वनों के लगातार कटाव से उनके द्वारा अवशोषित की जाने वाली कार्बन डाईऑक्साइड का स्तर पर्यावरण में बढ़ रहा है।
- औद्योगीकरण के चलते नवीन ग्रीनहाउस गैसे भी पर्यावरण में आवश्यकता से अधिक मात्रा में शामिल हो रही है जिससे तापमान लगातार बढ़ रहा है।
- जल्द अपघटित न हो सकने वाले समान जैसे प्लास्टिक आदि के प्रयोग से।
- खेती में उर्वरक कीटनाशकों के छिड़काव से भी पर्यावरण प्रदूषण बढ़ा है।
- घर बनाने और औद्योगीकरण के लिए जमीन प्राप्त करने के उद्देश्य से पेड़ो की कटाई के चलते भी पर्यावरण प्रदूषण बढ़ा है।

यह सभी कारण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हमारे पर्यावरण को प्रभावित करते है। हम सभी को इन सभी कारणों को नियंत्रित करने के लिए प्रयास करके अपने भविष्य को बचाने की ओर कदम बढ़ाना चाहिए और अपने आगे वाली पीढ़ी को भी इस दिशा में शिक्षित करना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन में सुधार कैसे लाया जा सकता है?

यदि जलवायु परिवर्तन होने से पृथ्वी पर अनेक तरह के बदलाव हो रहे हैं, अगर ग्रीनहाउस के प्रभाव में बदलाव आता है तो एक समय ऐसा आएगा की पृथ्वी पर मानव जीवन मुश्किल हो सकता है। जलवायु परिवर्तन में सुधार के लिए हमें यह प्रयास करने होंगे।

- अपने आस-पास के क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगायें।
- ईंधन से चलने वाले वाहनों का उपयोग कम करना होगा।
- समुद्र एवं नदियों को साफ़ रखना होगा।
- कारखानों से निकलने वाले कचरे को दुबारा उपयोग में लाना होगा।
- अगर खेतों में कीटनाशक का उपयोग करते हैं तो उसे कम करना होगा।

हमारी भारतीय विरासत का सम्मान

दीपक कुमार
सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ का कार्यालय

हमारे देश में बड़ी संख्या में धार्मिक समूहों के रहने के कारण भारतीय विरासत और संस्कृति विशाल और ज्वलंत है। हर समुदाय के अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं का एक समूह होता है, जो अपनी युवा पीढ़ी को सौंपता है। हालाँकि, हमारे कुछ रीति-रिवाज़ और परंपराएँ पूरे भारत में समान हैं। हमारी परंपराएँ हमें अच्छी आदतों को अपनाने और एक अच्छा इंसान बनने की शिक्षा देती हैं। हमारी सांस्कृतिक विरासत इस प्रकार हमारी पुरानी पीढ़ी का एक सुंदर उपहार है जो हमें एक बेहतर इंसान बनने और एक सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने में मदद करेगा।

बुजुर्गों को युवा पीढ़ी में भारतीय विरासत के प्रति प्रेम को जागृत करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। यह शुरू से ही किया जाना चाहिए तभी हम अपनी समृद्ध विरासत को संरक्षित कर सकते हैं। युवा पीढ़ी में भारतीय विरासत के लिए प्रेम का आह्वान करना बड़ों का कर्तव्य है। यह शुरू से ही किया जाना चाहिए तभी हम अपनी समृद्ध विरासत को संरक्षित कर सकते हैं। स्कूलों को छात्रों को भारतीय विरासत के बारे में सिखाना चाहिए और बताना चाहिए कि यह सदियों से कैसे जीवित रहा है। उन्हें इसे संरक्षित करने के महत्व को भी साझा करना चाहिए। इससे उनके अंदर गर्व की भावना लाने में मदद मिलेगी और वे परंपरा को जारी रखने के लिए प्रेरित होंगे और नई पीढ़ी के लिए भी इसे पारित करेंगे। इसके लिए शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों के सामूहिक प्रयास की जरूरत है।

भारत में यूनेस्को ने निम्नलिखित भूवैज्ञानिक स्थानों को यूनेस्को की विश्व प्राकृतिक विरासत स्थलों में सूचीबद्ध किया है:–

1. वर्ष 1985 में दुर्लभ एकल-सींग वाले गैंडो के लिए घर, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान ।
2. सुंदर पक्षियों की कई प्रजातियों के लिए घर, वर्ष 1985 में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान।
3. वर्ष 1985 में एक सुंदर वन्यजीव अभयारण्य, मानस वन्यजीव अभयारण्य।
4. वर्ष 1987 में सबसे बड़ा मैंग्रोव वन, सुंदरवन।
5. नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, वर्ष 2004 में।
6. पश्चिमी घाट, वर्ष 2012 में।
7. ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय पार्क को वर्ष 2014 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

दुनिया के सात अजूबे

संजीव कुमार
अपर वित्तीय सलाहकार एवं अपर सचिव का कार्यालय

दुनिया के सात अजूबे सबसे पहले लगभग 2200 साल पहले आये थे। प्राचीन विश्व में सबसे पहले 7 अजूबे का विचार हेरोडोटस और कल्लिमचुस को आया था।

उस समय के सात अजूबे थे:-

- ग्रेट पिरामिड ऑफ़ गिज़ा
- हैंगिंग गार्डन ऑफ़ बेबीलोन
- स्टेचू ऑफ़ ज़ीउस अट ओलम्पिया
- टेम्पल ऑफ़ आर्टेमिस
- माउसोलस का मकबरा
- कोलोसुस ऑफ़ रोडेज
- लाइटहाउस ऑफ़ अलेक्सान्दिरा

इन सात अजूबों में सिर्फ अभी ग्रेट पिरामिड ऑफ़ गिज़ा बचा हुआ है और इसे अब एक 7 अजूबों से अलग एक विशेष स्थान दिया गया है। बाकि सभी अब नष्ट हो चुके हैं। इसके बाद कई देश के अभियन्ता और शोधकर्ताओं ने अपने हिसाब से कई सूची निकाली, लेकिन उसे पूरे विश्व से सहमति नहीं मिली।

दुनिया के नए सात अजूबे

21वीं सदी शुरू होने से पहले 1999 में सात अजूबे को नए तरीके से सबके सामने लाने की बात शुरू हुई। इसके लिए स्विट्ज़रलैंड के ज्यूरिक में न्यू 7 वंडर फाउंडेशन बनाया गया। इन्होंने कनाडा में एक साईट बनवाई, जिसमें विश्व भर की 200 कलाकृति के बारे में जानकारी थी और एक पोल शुरू हुआ, जिसमें इन 200 एंट्री में से 7 एंट्री को चुनना था।

अजूबा का नाम	निर्माण	जगह
चीन की दीवार	सातवी ई. पू. शताब्दी में	चीन
पेट्रा	100 ई. पू.	जोर्डन
ताजमहल	1648	भारत

क्राइस्ट रिडीमर	1931	ब्राजील
माचू पिच्चु	AD 1450	पेरू
कोलोसम	AD 80	इटली
चिचेन इत्ज़ा	AD 600	मैक्सिको

दुनिया के नए सात अजूबे के बारे में विस्तार से जानिए

1. **चीन की दीवार–** चीन की इस विशाल दीवार को दुनिया में सब जानते हैं। यह दीवार कई हिस्सों में वहां के शासकों द्वारा अपने राज्य की रक्षा के लिए बनाई गई थी, जिसे धीरे धीरे जोड़ दिया गया, जो अब एक किलेनुमा आकृति की हो गई है। इसका निर्माण सातवीं शताब्दी से 16 वीं शताब्दी तक हुआ था। यह महान कलाकृति इतनी मजबूत और विशाल है कि इसे ग्रेट वाल ऑफ़ चाइना कहा गया। इस चीन की दीवार की विशालता को वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष से भी देखा है, यह मानव निर्मित कलाकृति अंतरिक्ष से भी दिखाई पड़ती है। इसका निर्माण मिट्टी, पत्थर, ईंट, लकड़ी और दूसरे मटेरियल को मिला कर हुआ है। यह विशाल दीवार पूर्व के दंदोंग से शुरू होकर पश्चिम में लोप लेक तक फैली है। चीन की दीवार लगभग 6400 किलोमीटर तक फैली है और यह 35 फीट ऊँची है। यह दीवार किले के समान बनी है, इसकी चौड़ाई इतनी है कि इसमें 10-15 लोग आराम से चल सकते हैं।

2. **पेट्रा–** साउथ जॉर्डन में बसे पेट्रा शहर की कलाकृति सात अजूबों में शामिल है। यह एक ऐतिहासिक और पुरातात्विक शहर है। इस शहर में चट्टानों को काटकर वास्तुकला का निर्माण हुआ है, साथ ही यहाँ पानी की नालीनुमा प्रणाली है, यही वजह है ये शहर बहुत प्रसिद्ध है। इस शहर को रोस सिटी भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ पत्थर काटकर कलाकृति बनी है, वो सब लाल रंग की है। इसका निर्माण 312 BC के लगभग हुआ था। यह जॉर्डन का मुख्य आकर्षण है, जहाँ हर साल बहुत से पर्यटक जाते हैं। यहाँ ऊँचे ऊँचे मंदिर है, जो आकर्षण का केंद्र है। इसके अलावा तालाब, नहरें भी हैं, जो बहुत सुनियोजित तरीके से बनाई गई है। इसको देखने के लिए भी बहुत लोग यहाँ आते हैं।

3. **ताजमहल–** भारत की शान ताजमहल भी दुनिया के सात अजूबों में से एक है। अपनी खूबसूरत कलाकारी, आकृति की वजह से इसे अजूबा बोला गया था। ताजमहल का निर्माण 1632 में शाहजहाँ द्वारा करवाया गया था, यह एक प्यार की निशानी है, जिसे शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज की याद में बनवाया था। सफ़ेद संगमरमर का बना ये मकबरा, पूरी तरह से सफ़ेद है, जिसके चारों ओर बगीचा है एवं सामने फव्वारा है। ताजमहल भारत के आगरा शहर में स्थित है। इस जैसी सुंदर कलाकृति दुनिया में और कही देखने को नहीं मिलेगी। मुग़ल शासक शाहजहाँ ने जब इसे बनवाया था, तब इसमें 15 साल का समय लगा था और इसे बनाने के बाद राजा ने निर्माण से जुड़े सभी मजदूरों के हाथ कटवा दिए थे, ताकि वे ऐसा कुछ दूसरा न बना सके। भारत में मुगलों ने लम्बे समय तक शासन किया था, इस दौरान उन्होंने बहुत सी शिल्पकारी, कलाकृति बनवाई थी, जो आज तक भारत में मौजूद है। ताजमहल की सुन्दरता को देखने के लिए, देश दुनिया के लोग दूर-दूर से आते हैं।

4. **क्राइस्ट दी रिडीमर–** यह ब्राजील के रियो डी जनेरिओ में स्थित है। यीशु मसीह की 38 मीटर, लगभग 130 फीट ऊँची और 28 मीटर चौड़ी यह प्रतिमा, दुनिया के अजूबों में से एक है। इससे ऊँची कोई भी प्रतिमा आज तक नहीं बनी है। दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में माने जाने वाले यीशु मसीह की इस मूर्ति का निर्माण 1922 में शुरू हुआ था, जो 12 अक्टूबर 1931 को इस जगह पर स्थापित किया गया था। यह मूर्ति कंक्रीट और पत्थर से बनी है, जिसे ब्राजील के सिल्वा कोस्टा ने डिजाइन किया था एवं फ्रेंच मूर्तिकार लेनदोव्सकी ने इसे बना कर तैयार किया था। इसका वजन लगभग 635 टन है। यह रियो शहर के 700 मीटर ऊँची कोरकोवाडो की पहाड़ी पर स्थित है।दुनिया भर में ईसाई धर्म का यह बहुत बड़ा प्रतीक है।

5. **माचू पिच्चु–** दक्षिण अमेरिका के पेरू में स्थित माचू पिच्चु ऊँची चोटी पर स्थित शहर है। समुद्र तल से 2430 मीटर ऊपर माचू पिच्चु में 15 वीं शताब्दी के समय इंका सभ्यता रहा करती थी। इतनी ऊंचाई में शहर कैसे बसा, ये सोचने वाली बात है और यही इसे दुनिया का सातवाँ अजूबा बना देता है। पुरातत्वविदों का मानना है कि माचू पिच्चु का निर्माण राजा पचाकुती ने 1400 के आस पास करवाया था। यहाँ उनके शासक रहा करते थे इसके 100 साल बाद इस पर स्पेन ने विजय प्राप्त की और इसे ऐसे ही छोड़ कर चले गए। उन्हें इस जगह से कोई ज्यादा लगाव नहीं था, जिसके बाद इसकी देखरेख करने वाला कोई नहीं था, जिससे यहाँ रहने वाली सभ्यता भी नष्ट हो गई। ये जगह भी इसी के साथ गुम हो गई, लेकिन 1911 में अमेरिका के इतिहासकार हीरम बिंघम ने इसकी खोज की और इसे दुनिया के सामने लाया। 1983 में यूनेस्को (UNESCO) ने इसे विश्व धरोहर घोषित किया। यहाँ इंका सभ्यता की कलाकृति को आज भी देखा जा सकता है, बहुत सी ऐसी चीजें अभी भी मौजूद है, जो उनके द्वारा बनाई गई थी। माचू पिच्चु पर्यटकों का ध्यान अपनी और आकर्षित करता है, इसे देखने लाखों पर्यटक जाते रहते हैं।

6. **रोम का कोलोसियम–** रोम के इटली में बसा ये एक विशाल स्टेडियम है। रोम में देखने के लिए ये मुख्य आकर्षण है। इसका निर्माण 72 AD में शुरू हुआ था, जो 80 AD में पूरा हुआ था। ओवल शेप की ये विशाल आकृति, कंक्रीट व रेत से बनाई गई थी। इतनी पुरानी ये वास्तुकला आज भी दुनिया के सात अजूबों में अपनी जगह बनाये हुए है। प्राकृतिक आपदा, भूकंप से ये थोड़ा बहुत ध्वस्त हुआ, लेकिन आज भी इसकी विशालता वैसे ही है। यहाँ 50 हजार से 80 हजार लोग बैठ सकते हैं। यहाँ जानवरों की लड़ाई, खेल कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। यह 24 हजार वर्गमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। इस जैसी आकृति को बनाने की कोशिश कई इंजीनियरों द्वारा की गई, लेकिन ये एक तरह की पहेली है, जिसे आज तक कोई नहीं सुलझा पाया है।

7. **चिचेन इत्ज़ा–** चिचेन इत्ज़ा मैक्सिको में बसा बहुत पुराना मयान मंदिर है। इसका निर्माण AD 600 में हुआ था। चिचेन इत्ज़ा बहुत बड़ा शहर है, यहाँ की जनसँख्या भी अधिक है। मैक्सिको में चिचेन इत्ज़ा सबसे पुराने पुरातात्विक स्थलों में से एक है, जहाँ हर साल 1.4 मिलियन पर्यटक घूमने आते हैं। चिचेन मैक्सिको में युकान्तन स्टेट में स्थित है। चिचेन इत्ज़ा का माया मंदिर 5 किलोमीटर में फैला हुआ है। यह 79 फीट ऊँचा है। जो पत्थरों से पिरामिड की आकृति का बना है। इस मंदिर में ऊपर जाने के लिए चारों दिशाओं से सीढ़ियां बनी है, कुल 365 सीढियां हैं। हर दिशा से 91 सीढ़ियां हैं। कहते है, हर एक सीढ़ी एक दिन का प्रतीक है। ऊपर 365 दिन के लिए एक बड़ा चबूतरा बना हुआ है। इसके अलावा इस जगह पर पिरामिड ऑफ़ कुकुल्कन, चक मूल का मंदिर, हज़ार स्तंभों के हॉल एवं

कैदियों के खेल का मैदान है। यह सबसे बड़े मयान मंदिरों में से एक है।

दी ग्रेट पिरामिड ऑफ़ गिज़ा– सबसे बड़ा और सबसे पुराना पिरामिड है, जो आज तक इस दुनिया में प्राचीनकाल से मौजूद है। इसलिए इसे एक विशेष सम्मान के तौर पर स्थान प्राप्त है और 7 वंडर्स के अलावा इसका नाम भी लिया जाता है। मिस्र में स्थित गिजा का ये पिरामिड बहुत पुरानी कलाकृति है, जो प्राचीन 7 अजूबे में से एक है। इसका निर्माण 2580-2560 BC में हुआ था। यह 2583283 क्यूबिक मीटर में फैला हुआ है। इसकी ऊंचाई 146.5 मीटर है। 3800 साल तक ये सबसे लम्बी मानव निर्मित कलाकृति रही है।

माँ और नवरात्रि

निशि श्रीवास्तव
कार्मिक निदेशालय

कुछ वर्ष पहले नवरात्रों के ही समय में मैंने फेसबुक पर एक पोस्ट लिखा था नवरात्र और पापा जिसमें मैंने पापा के नवरात्रों के व्रत और पूजा की चर्चा की थी। आज बैठे बैठे अनायास ही मन में ये विचार आया कि क्या पापा इतने वर्ष तक पूरी तन्मयता, विधि-विधान से वर्ष में दो बार ये पूजन कर पाते अगर माँ ने उसमें योगदान न दिया होता? मां जो एक सत्संगी (राधास्वामी-दयालबाग) परिवार में जन्मी तथा पली-बढ़ी लेकिन शादी के बाद परिवार के रीति-रिवाज के अनुसार सारे व्रत-पूजा जैसे कि वट-सावित्री, छठ, सकट-चौथ, करवा चौथ और सबसे कठिन हरतालिका तीज। सारे व्रत उठाये और निभाए भी। नवरात्रों में पूरे नौ दिन, प्रतिदिन पूजा की तैयारी और उपर से जब तक हम भाई बहन छोटे थे हमारे लिए नाश्ता बनाना, टिफिन रखना, लंच इत्यादि, पापा के लिए दोनों समय फलाहार बनाना नवरात्रों के समय की माँ की दिनचर्या तो लगता है कि मेरी ईकहरे तन की कोमल सी माँ ये सब कैसे कर लेती थी आखिर।

अष्टमी के दिन उनका व्रत होता था और शाम को काली पूजन। उसके प्रसाद को बनाने का सारा जिम्मा माँ का होता। कच्चा- पक्का दोनों प्रकार का भोजन यानी कढ़ी, चावल, मीठे चावल, रोटी, पुरी, दही भल्ले, हलवा और जाने क्या। सब खुद बनाना होता क्योंकि नियम के अनुसार और कोई छू नहीं सकता था। उधर पापा हवन पर बैठे होते। आज कल देखती हूँ कि दिल्ली में करवा चौथ का व्रत खोलने लोग रेस्तरां चले जाते हैं तो याद आता है वो सब। ऐसा नहीं है कि माँ बचपन से पाक कला में निपुण थी। पीहर में शायद ही कभी खाना बनाने की आवश्यकता पड़ी हो। और ऐसा भी नहीं कि उस समय की तरह पढ़ाई लिखाई ना की हो। बी.ए., एम.ए. किया था बीएचयू से। लिखने का शौक था और उनके लेख छपते थे, बनारस के 'आज' में। शादी के बाद परिवार, रिवाज़ की भेंट चढ़ गयी सारी लेखनी। जब हमें पढ़ाती तो बताती थी ये सब। हमेशा यही शिक्षा दी कि पहले पढ़ाई बाद में घर के काम काज। दीदी और मैं दोनों साइंस स्टूडेंट्स थे सारा दिन कॉलेज में बीतता, थक कर शाम को आते तो क्या हेल्प करते। माँ का कोमल हृदय, कभी उन्होंने कहा भी नहीं। मेरी सिविल सर्विसेस की तैयारी और उसके बाद नौकरी, उन्होंने हमेशा यही कहा, बेटा तुम्हारा अपने पैरों पर खड़ा होना, इंडिपेंडेंट, सशक्त होना मेरा सबसे बड़ा अचीवमेंट है। जीवन के अंतिम वर्षों में मानसिक बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद मेरे ऑफिस के आई कार्ड को उठा कर पढ़तीं और खुशी से कहती, "निशि श्रीवास्तव", तुम अब डायरेक्टर हो गयी? उनकी बात से ऐसा लगता उन्होंने वो सब पा लिया जो पाना चाहती थी।

क्या मेरी माँ का यह स्वरूप साक्षात शक्ति का प्रतीक नहीं है? अब जब भी नवरात्रि आती है। तो मेरा रोम रोम अपनी जन्म दात्री के प्रति शत्-शत् नमन तथा सस्नेह आभार में झुक जाता है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का इतिहास

सतपाल
प्रबंध सेवा निदेशालय

इस समय हमें टेक्नोलॉजी ने हर तरफ से घेर रखा है, हमारी हर जरुरत को पूरा करने में टेक्नोलॉजी हमारी मदद करती है। इतना ही नहीं काफी हद तक इंसान टेक्नोलॉजी पर निर्भर होता जा रहा है। जिसके पीछे का कारण है कि टेक्नोलॉजी हमारे हर काम को बेहतर और आसान बनाने में हमारी सहायता करती है। अब अगर टेक्नोलॉजी ही ना हो तो हमें दूरसंचार, मेडिकल, शिक्षा एवं व्यापार करने में बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। आसान शब्दों में कहा जाए तो किसी देश या देश के नागरिकों को विकास करने के लिए टेक्नोलॉजी की बहुत ज्यादा जरुरत है। इसलिए कुछ वर्षों से भारत अपनी टेक्नोलॉजी को एक उच्च स्तर पर पहुंचाने में लगा हुआ है। इसके साथ-साथ भारत का केंद्रीय मंत्रालय टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन करता है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस कब मनाया जाता है?

भारत 1998 में एक उभरती परमाणु शक्ति बन गया था, जिसके पीछे का कारण था 11 मई 1998 को हुआ परमाणु परीक्षण। इस बड़ी सफलता को हासिल करने के बाद भारत के प्रधानमंत्री ने 1999 में नेशनल टेक्नोलॉजी डे मनाने की घोषणा कर दी। चूंकि 11 मई को भारत ने अपना सबसे ताकतवर परमाणु परीक्षण (न्यूक्लियर टेस्ट) किया था, इसीलिए इस दिन को याद रखने के लिए हर साल 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाते हैं।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का इतिहास

- अपनी परमाणु शक्ति का प्रदर्शन करने से पहले भारत को काफी कमजोर देश माना जाता था। इसके साथ-साथ जिन देशों के पास पहले से ही परमाणु शक्ति थी, वे भारत को कमतर समझते थे। इन देशों की इस सोच में असली मोड़ तब आया, जब भारत ने खुद को ऐसा छठवां देश बताया, जिसके पास परमाणु हथियार बनाने की शक्ति है।
- भारत में 11 मई 1998 को जब परमाणु अनुसंधान विभाग ने पोखरण में तीन परमाणु बमों का एक साथ परीक्षण किया था, तब 5.3 रिक्टर स्केल तक का भूकंप आस-पास के क्षेत्रों में दर्ज किया गया था। इस परीक्षण को भारत के अनुसंधान विभाग ने "शक्ति" नाम दिया था। इसके 2 दिन बाद यानी 13 मई 1998 को दो और परमाणु बमों के परीक्षण किये गए। इसी दिन भारतीय सुरक्षा विभाग ने त्रिशूल मिसाइल और हंस-3 (ट्रेनिंग एयरक्राफ्ट) का भी परीक्षण किया।

आखिर क्यों मनाया जाता है राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

भारत का सबसे ताकतवर एवं सफल परमाणु परीक्षण सन् 1998 में किया गया था और इस पूरे परीक्षण को अंजाम देने के पीछे महान वैज्ञानिक अब्दुल कलाम का हाथ था। अब्दुल कलाम को इस काम को सौंपने का श्रेय पूर्व प्रधानमंत्री अटल

बिहारी वाजपेयी को जाता है। अब्दुल कलाम जी के शानदार मार्गदर्शन में ही सभी परमाणु परीक्षणों का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया था। इस परीक्षण के बाद केंद्र सरकार ने इस उपलब्धि को भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस की थीम

इस दिन केंद्र सरकार, अनुसंधान विभाग एवं संबंधित कार्यालय मिलकर मनाते हैं। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस को मनाने के लिए हर साल एक नई थीम रखी जाती है, 2024 के लिए भी नई थीम रखी जाएगी, लेकिन अभी तक थीम की घोषणा नहीं की गई है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस कैसे मनाते हैं?

1. **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग कार्यक्रमों का आयोजन करता है**
   भारत का टेक्नोलॉजी विभाग हर साल नई तकनीक को बढ़ावा देने के कई प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन करता है। जिसमें देश की तरक्की के लिए नई-नई तकनीकों के विचारों का स्वागत किया जाता है।

2. **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा पुरस्कार वितरण**
   भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय हर साल भारत के कुछ होनहार वैज्ञानिकों को सम्मान देता है। हालांकि ये सम्मान उन्हीं वैज्ञानिकों को दिए जाते है, जिन्होंने तकनीक के क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट योगदान दिया हो।

3. **इंजीनियरिंग कॉलेज में कार्यक्रम**
   भारत के लगभग सभी टेक्निकल कॉलेज में इस दिन कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जिसमें छात्र प्रेजेंटेशन, स्लाइडशो एवं प्रोजेक्ट की मदद से इस दिन के बारे में मुख्य जानकारियां देते हैं।

4. **राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के बारे में सूचना देना**
   इस दिन भारत की टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में कामयाबी के बारे में लोगों को उजागर किया जाता है एवं भारत की तकनीक में होने वाले सुधार और तरक्की की जानकारी भी दी जाती है। इसके बाद इस दिन भारत के छात्रों को वैज्ञानिकों से मिलने का अवसर प्रदान किया जाता है। जिसमें देश के छात्र नई तकनीक एवं वैज्ञानिकों के अनुभव के बारे में जान पाते हैं।

5. **कॉलेजों में होने वाली प्रतियोगिताएं**
   भारत के कई इंजीनियरिंग एवं टेक्निकल कॉलेजों द्वारा इस दिन विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं की जाती हैं। जहां बहुत से कॉलेजों के छात्र आकर इन प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। इन प्रतियोगिताओं के लिए छात्र अपडेटेड लैब्स, खोज करने के लिए तकनीकी प्रबंधनशालाओं एवं अन्य केंद्रों पर भी जाते हैं।

6. **माता पिता भी उपस्थित रहते हैं**
   सरकार या कॉलेजों द्वारा आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में छात्रों के माता पिता को भी आमंत्रित किया

जाता है। हर छात्र की शिक्षा उसके घर से ही आरम्भ होती है, इसलिए माता पिता को प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के बारे में जानकर अपने बच्चों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसा करने से बच्चे के अंदर भी नयी खोज करने एवं वैज्ञानिक बनने की इच्छा पैदा होती है।

7. मीडिया का रोल

मीडिया को भी राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के दिन होने वाले महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को देश दुनिया में दिखाने की जरुरत होती है, जिससे पूरी दुनिया को प्रौद्योगिकी दिवस के महत्त्व के बारे में पता चल सके। इसके अलावा इस दिन वैज्ञानिकों के बीच टेक्नोलॉजी को लेकर होने वाली वार्ता भी दिखाई जाती है।

थीम का चुनाव

- हर साल टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट बोर्ड यानी की टीडीबी एक विशिष्ट (स्पेसिफिक) थीम का चुनाव करती है। इस थीम पर आधारित प्रोग्राम भी आयोजित किये जाते हैं।
- वर्ष 2017 की थीम "टेक्नोलॉजी फॉर इंक्लूसिव एंड सस्टेनेबल ग्रोथ" विषय पर केंद्रित की गई थी। चूंकि हर साल अलग थीम होती है इसलिए वर्ष 2016 की थीम भी एक नए विषय पर आधारित थी, जिसका विषय था "टेक्नोलॉजी इनेबलर्स ऑफ स्टार्टअप्स इंडिया"।

भारत सरकार को इस समय टेक्नोलॉजी विकसित करने के लिए काफी पैसे निवेश करने की जरुरत है, हालांकि ऐसा किया भी जा रहा है। इस दिन लोगों को कार्यक्रम का आयोजन करके टेक्नोलॉजी के क्षेत्र की महत्वपूर्ण जानकारियां दी जाती है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से भारत में कई इनोवेटिव तकनीकों के बारे में भी जागरूक किया जाता है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाने के पीछे उद्देश्य

1. पोखरण परमाणु बम के सफल परीक्षण को याद करना

प्रथम परमाणु बम का परीक्षण पोखरण में हुआ था और इसमें भारत को सफलता भी मिली थी। इसके पश्चात भारत के प्रधानमंत्री ने गर्व पूर्वक अपनी सफलता का गुणगान करते हुए कहा था कि भारत अब एक परमाणु शक्ति बन चुका है। उन्होंने उस समय ये भी कहा था कि भारत नॉन प्रॉलिफरेशन एग्रीमेंट ऑफ न्यूक्लियर वेपन (परमाणु अप्रसार संधि) पर हस्ताक्षर नहीं करेगा। भारत को मिलने वाली इस महान उपलब्धि के जश्न के रूप में हम राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाते हैं।

2. त्रिशूल मिसाइल की सफलता के रूप में

भारत की सेना एवं सुरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में त्रिशूल मिसाइल को आधार माना जाता है। 11 मई 1998 के दिन परमाणु बमों के अलावा भारत के रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने कम दूरी पर जल्दी हमला करने वाली मिसाइल का सफल परीक्षण किया था। जमीन से हवा में मार करने वाली इस मिसाइल को त्रिशूल नाम से पुकारा गया था।

3. **हंसा-3 का सफल परीक्षण**

मई 1998 में एक और सफलता भारत के हाथ लगी थी, हंसा-3 भारत का एयरक्राफ्ट वायु सेना में प्रशिक्षण के लिए शामिल हुआ था। 11 मई को हंसा-3 को बेंगलुरु की हवाई पट्टी से उड़ाया गया था।

4. **वैज्ञानिकों को नाम एवं सम्मान देना**

भारत के जितने भी वैज्ञानिकों ने देश के लिए अपना उत्कृष्ट योगदान दिया है, इस दिन उनको याद किया जाता है। इस दिन सभी नए एवं पुराने वैज्ञानिकों को लाइम लाइट में लाया जाता है, जिससे भारत की युवा पीढ़ी को टेक्नोलॉजी की तरफ प्रोत्साहित किया जा सके।

5. **नयेअनुसंधान केंद्र या प्लेटफॉर्म देना**

भारत में इस दिन युवाओं को प्रोत्साहन के साथ-साथ अपने टेक्निकल आईडिया को सबके सामने लाने का मंच उपलब्ध कराया जाता है। उसके बाद साइंटिस्ट एवं टेक्नॉलाजिस्ट आपस में तकनीक को विकसित करने के लिए अपने विचार साझा करते हैं। इस वजह से भारत को एक नई एवं भरोसेमंद तकनीक खोजने में आसानी हो जाती है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर उदरन

- इस 21 वीं शताब्दी के दौर में अगर कोई देश आगे बढ़ना चाहता है, तो उसे टेक्नोलॉजी रूपी वाहन की जरुरत अवश्य पड़ेगी अन्यथा उस देश की विकास दर में दीमक लग जाएगा।
- इस समय समाज का हर पहलू टेक्नोलॉजी से जुड़ता जा रहा है, इसलिए जरुरी है कि हम भी टेक्नोलॉजी के साथ कदम से कदम मिलकर चलें क्योंकि इस समय टेक्नोलॉजी ही विकास करने का सबसे अच्छा रास्ता है।
- भारत में वैज्ञानिकों को उच्च एवं सम्मानीय दर्जा दिलाने के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाना एक सकारात्मक विचार है। जिसकी मदद से तमाम वैज्ञानिकों को देश में सम्मान प्राप्त हो रहा है।
- प्राचीन समय में इस तकनीक को जादू के नाम से जाना जाता था, वर्तमान में विज्ञान की मदद से कुछ भी करना असंभव नहीं है। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के कार्यक्रमों में लोगों को इसके द्वारा होने वाले फायदे के बारे बताया जाता है, जो समूचे राष्ट्र को तकनीक में विकास की ओर अग्रसर करता है।
- तकनीक ऐसा अभिन्न अंग बनती जा रही है जिसके बिना भविष्य की कल्पना करना नामुमकिन है। इसके लिए हमे संतुलन एवं जागरूकता की भी आवश्यकता है, जिसके लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन एक अच्छा प्लेटफार्म है।

बाजरा: सुपर फूड

वी पी सिंह
महानिदेशक (आर एंड एम) का कार्यालय

संदर्भ

बाजरे (Millets) को अक्सर एक सुपरफूड (पोषण तत्त्वों से भरपूर अनाज) के रूप में देखा जाता है तथा इसका उत्पादन टिकाऊ कृषि एवं विश्व स्वास्थ्य के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। यहाँ बाजरे से जुड़े बहुआयामी लाभ, पोषण सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा प्रणाली एवं किसानों के कल्याण से संबंधित मुद्दों पर चर्चा किया गया है।

इसके अलावा बाजरे से जुड़ी कई अनूठी विशेषताएँ हैं जो भारत की विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल हैं और इसे एक प्रमुख फसल के रूप में संदर्भित करती है। इन सब कारकों के परिप्रेक्ष्य में वर्ष 2018 को पहले ही बाजरे के राष्ट्रीय वर्ष (National Year of Millets) के रूप में घोषित किया जा चुका है तथा साथ ही भारत द्वारा वर्ष 2023 को 'बाजरे का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष' (International Year of Millets) के रूप में घोषित करने का आह्वान किया गया।

हालाँकि एक सुपरफूड के रूप में इसके महत्त्व को स्वीकार करने के बावज़ूद इसके प्रति एक आम धारणा बनी हुई है कि बाजरे को 'गरीब व्यक्ति के भोजन' (Poor Person's Food) के रूप में देखा जाता है। इसलिये मोटे अनाज एवं बाजरे जैसे पोषक तत्त्वों से भरपूर अनाजों को पुनः बढ़ावा देने के साथ उनके उत्पादन एवं खपत पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

भारत में बाजरे का उत्पादन

वर्तमान में भारत में उगाई जाने वाली तीन प्रमुख बाजरा फसलों (Millet Crops) में ज्वार (Sorghum), बाजरा (Pearl Millet) और रागी (Finger Millet) शामिल हैं।

इसके साथ ही भारत में जैव-आनुवंशिक तौर पर विविध और देशज किस्मों के रूप में छोटे बाजरे की विभिन्न किस्मों जैसे- कोदो (Kodo), कुटकी (Kutki), चेन्ना (Chenna) और सानवा (Sanwa) को प्रचुर मात्रा में उगाया जाता है।

भारत में बाजरा उत्पादक प्रमुख राज्यों में राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात और हरियाणा शामिल है।

बाजरे की उपज को बढ़ावा देने की आवश्यकता

क्लाइमेट रेज़िलिएंट क्रॉप: बाजरे की फसल प्रतिकूल जलवायु, कीटों एवं बीमारियों के लिये अधिक प्रतिरोधी है, अत: यह बदलते वैश्विक जलवायु परिवर्तनों में भुखमरी से निपटने हेतु एक स्थायी खाद्य स्रोत साबित हो सकती है।

इसके अलावा इस फसल की सिंचाई के लिये अधिक जल की आवश्यकता नहीं होती है जिस कारण यह जलवायु परिवर्तन एवं लचीली कृषि-खाद्य प्रणालियों के निर्माण के लिये एक स्थायी रणनीति बनाने में सहायक है।

पोषण सुरक्षा: बाजरे में आहार युक्त फाइबर (Dietary Fibre) भरपूर मात्रा में विद्यमान होता है, इस पोषक अनाज (बाजरे) में लोहा, फोलेट (Folate), कैल्शियम, ज़स्ता, मैग्नीशियम, फास्फोरस, तांबा, विटामिन एवं एंटीऑक्सिडेंट सहित अन्य कई पोषक तत्त्व प्रचुर मात्रा में होते हैं।

ये पोषक तत्त्व न केवल बच्चों के स्वस्थ विकास के लिये महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि वयस्कों में हृदय रोग और मधुमेह के जोखिम को कम करने में भी सहायक होते हैं।

ग्लूटेन फ्री (Gluten Free) एवं ग्लाइसेमिक इंडेक्स (Glycemic Index) की कमी से युक्त बाजरा डायबिटिक/मधुमेह के पीड़ित व्यक्तियों के लिये एक उचित खाद्य पदार्थ है, साथ ही यह हृदय संबंधी बीमारियों और पोषण संबंधी दिमागी बीमारियों से निपटने में मदद कर सकता है।

आर्थिक सुरक्षा: बाजरे को सूखे, कम उपजाऊ, पहाड़ी, आदिवासी और वर्षा आश्रित क्षेत्रों में उगाया जा सकता है।

इसके अलावा बाजरा मिट्टी की पोषकता के लिये भी अच्छा होता है तथा इसकी फसल तैयार होने में लगने वाली समयावधि एवं फसल लागत दोनों ही कम है।

इन विशेषताओं के साथ बाजरे के उत्पादन के लिये कम निवेश की आवश्यकता होती है और इस प्रकार यह किसानों के लिये एक स्थायी आय स्रोत साबित हो सकता है।

बाजरे का नियंत्रित उत्पादन

हरित क्रांति: हरित क्रांति के समय खाद्य सुरक्षा के लिये गेहूँ और चावल जैसी अधिक उपज वाली किस्मों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

इस नीति का एक अनपेक्षित परिणाम यह सामने आया कि बाजरे के उत्पादन में धीरे-धीरे गिरावट आने लगी।

इसके अलावा गेहूँ और चावल पर न्यूनतम समर्थन मूल्य के माध्यम से प्रदान की जाने वाली लागत प्रोत्साहन राशि ने भी बाजरे के उत्पादन को हतोत्साहित किया।

प्रसंस्कृत खाद्य की मांग में वृद्धि: इन सब के साथ-साथ भारत में अल्ट्रा-प्रोसेस्ड और रेडी-टू-ईट उत्पादों के लिये उपभोक्ता मांग में उछाल देखा गया जिनमें सोडियम, चीनी, ट्रांस-वसा और यहाँ तक कि कुछ कार्सिनोजन (Carcinogens- कैंसर उत्पन्न करने वाले तत्त्व) की उच्च मात्रा विद्यमान होती है।

प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के गहन विपणन के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों जैसे- प्रसंस्कृत चावल व गेहूँ की मांग में भी वृद्धि होती जा रही है।

दोहरा दवाब: माताओं एवं बच्चों में सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की कमी के साथ-साथ मधुमेह एवं मोटापे जैसी बीमारियाँ उत्पन्न होने के कारण एक प्रकार का दोहरा दवाब उत्पन्न हो गया है।

भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम

न्यूनतम समर्थन मूल्य (Minimum Support Price-MSP) में वृद्धि: भारत सरकार द्वारा बाजरे के MSP में बढ़ोत्तरी की गई है, जिससे किसान बाजरा उत्पादन के लिये प्रोत्साहित होंगे।

इसके अलावा बाजरे की उपज के लिये एक स्थिर बाज़ार प्रदान करने के लिये भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक वितरण प्रणाली में बाजरे को भी शामिल किया गया है।

इनपुट सहायता (Input Support): बाजरे के उत्पादन के लिये भारत सरकार द्वारा किसानों को बीज किट (Seed Kits) और इनपुट सहायता के रूप में किसान उत्पादक संगठनों (Farmer Producer Organisations) के माध्यम से मूल्य श्रृंखला का निर्माण और बाजरे के लिये बाज़ार क्षमता को विकसित करने में मदद की जा रही है।

एकीकृत दृष्टिकोण: केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा कृषि और पोषण के एकीकृत दृष्टिकोण पर कार्य किया जा रहा है जिसके तहत पोषक तत्त्व-उद्यानों (Nutri-gardens) की स्थापना करके फसल विविधता और आहार विविधता के बीच अंतर संबद्धता पर शोध को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अलावा पोषक तत्त्वों से युक्त अनाज के प्रति उपभोक्ता मांग में वृद्धि के लिये लोगों के दृष्टिकोण/व्यवहार को परिवर्तित करने से संबंधित एक अभियान का संचालन किया जा रहा है।

आगे की राह

पूर्व धारणा में बदलाव: बाजरे से संबंधित खपत एवं इसके व्यापार को लेकर जुड़ी सामान्य अवधारणा को परिवर्तित करने के साथ-साथ पोषक तत्त्वों से भरपूर अनाज के रूप में बाजरे को पुनः एक ब्रांड के तौर पर प्रस्तुत किये जाने की आवश्यकता है।

इसके अलावा नागरिक समाज (Civil Society) पोषक युक्त खाद्य पदार्थों को चुनने की दिशा में छोटे-छोटे अभियानों के माध्यम से जन-कल्याण की शुरुआत कर सकते हैं, जो पर्यावरण के लिये हितकर होने के साथ ही राष्ट्र के किसानों

की आर्थिक समृद्धि में भी सहायक हो सकते हैं।

गेहूँ और चावल की तर्ज पर बाजरे के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य: बाजरे के उत्पादन एवं उपभोग को बढ़ावा देने के लिये भारत सरकार गेहूँ और चावल की तर्ज पर बाजरे की फसल के लिये भी पायलट आधार पर न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान करने का प्रयास कर सकती है।

मिशन मोड पहल: भारत सरकार किसानों को भारत के 127 कृषि जलवायु क्षेत्रों (Agro-Climatic Zones) के लिये उनके स्थानीय फसल पैटर्न को संरेखित करने हेतु प्रोत्साहित कर सकती है और स्थानीय स्थलाकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों को ध्यान में रखते हुए बाजरे की खेती को बढ़ावा दे सकती है।

अंतर-मंत्रालयी दृष्टिकोण: बाजरे को पुनः एक ब्रांड के रूप में स्थापित करने के लिये एक बहु-मंत्रालयी नीति ढाँचे (Multi-Ministerial Policy Framework) के निर्माण की आवश्यकता है जिसका उद्देश्य एक आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना है, साथ ही आत्मनिर्भर भारत और सतत् विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये इसका वैश्विक स्तर पर आह्वान किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

जैसा कि भारत सरकार कुपोषण मुक्त भारत और किसानों की आय दोगुना करने के लिये अपने एजेंडे को प्राप्त करने के लिये प्रयासरत है, वहीं पोषक तत्त्वों से युक्त अनाजों (बाजरे) के उत्पादन एवं खपत को बढ़ावा देना सही दिशा में एक नीतिगत बदलाव होगा।

क्वांटम कंप्यूटर: भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम

डॉ. राकेश कुमार साहू
महानिदेशक (आर एंड एम) का कार्यालय

प्रौद्योगिकी की दुनिया में विकास हमेशा से नए और उन्नत तकनीकी उपायों की तलाश में रही है। आज के विज्ञान और तकनीक के दौर में, क्वांटम कंप्यूटिंग एक नई और उत्कृष्ट दिशा को दर्शाता है जिसने तकनीकी उत्कृष्टता की सीमाएँ नये स्तर पर बढ़ा दी है। यह विशेष प्रकार के कंप्यूटर है जो क्वांटम मैकेनिक्स के सिद्धांतों पर आधारित हैं, जो सामान्य कंप्यूटरों की तुलना में कई गुना तेज़ और शक्तिशाली हैं।

क्वांटम कंप्यूटिंग के बारे में सोचते समय, हमें क्लासिकल कंप्यूटिंग के साथ तुलना करने की आवश्यकता है। वर्तमान में हम कंप्यूटर बाइट के रूप में डेटा को प्रोसेस करते हैं, जिसमें हर बाइट को 0 या 1 में प्रकाशित किया जाता है, जिसे बाइनरी सिस्टम कहा जाता है। इसका मतलब है कि क्लासिकल कंप्यूटर एक ही समय पर केवल एक निश्चित मात्रा में डेटा को प्रोसेस कर सकत है।

इसके बदले, क्वांटम कंप्यूटर उन्हें "क्वांटम बिट" या "क्वबिट" के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो क्लासिकल बिट की तुलना में बहुत अधिक स्थितियों में हो सकते हैं। क्वबिट एक विशेष गुणधर्म क्वांटम मैकेनिक्स के अनुसार एक निश्चित स्थिति में हो सकते हैं, जो क्लासिकल बिट की तरह 0 या 1 में नहीं होते हैं, बल्कि वे एक विशेष स्थिति का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जिसे "सुपरपोजिशन" कहा जाता है। इसके अलावा, क्वबिट एक प्रकार की "अंतरालितता" भी प्रदान कर सकते हैं, जिसका मतलब है कि एक क्वबिट एक ही समय में कई गणनाओं को साथ कर सकते हैं।

नए प्रकार के गुणधर्म क्वांटम कंप्यूटिंग को क्लासिकल कंप्यूटिंग से अलग बनाते हैं और उन्हें विशेष तरीके से समस्याओं का समाधान करने की क्षमता प्रदान करते हैं। जैसे कि विशेष तरीके से डिज़ाइन किए गए क्वांटम एल्गोरिदम्स के माध्यम से, क्वांटम कंप्यूटर संख्या तत्वों के विशिष्ट क्षेत्रों में गणनाओं को बेहद तेज़ी से कर सकते हैं, जैसे कि बिग डेटा विश्लेषण, राष्ट्रीय सुरक्षा और नई दवाओं के अनुसंधान में।

क्वांटम कंप्यूटिंग के क्षेत्र में अभी भी अनगिनत चुनौतियों हैं, जैसे कि क्वबिट्स की स्थिति को स्थिर रखने की कठिनाइयाँ और उन्हें वाणिज्यिक रूप से उपयोगी और स्थिर बनाने की तकनीकों का विकास। हालांकि, जैसे-जैसे तकनीक और विज्ञान में वृद्धि होगी, क्वांटम कंप्यूटिंग का वह दिन दूर नहीं जब यह विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति लाएगा और हमारे तकनीकी दृष्टिकोण को नए उँचाईयों तक पहुँचाएगा।

एआई और चैट जी पी टी: मानवता और प्रौद्योगिकी का अद्भुत मिश्रण

शिवम चौधरी
महानिदेशक (आर एंड एम) का कार्यालय

आधुनिक युग में, वाणी और भाषा मानवता की महत्वपूर्ण धरोहर हैं जो उसे अन्य प्राणियों से अलग करती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों ने मानवता को न केवल उनकी योग्यता की नई सीमाओं तक पहुँचाया है, बल्कि नये द्वार भी खोले हैं जो उनकी सोच की गहराइयों को छूने का अवसर प्रदान कर रहा है। इसी श्रेणी में, 'एआई और चैट जी पी टी' नामक प्रौद्योगिकियाँ महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं जो मानव-मशीन संवाद की नई दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर रही हैं।

- **एआई: मानव की सोच की नकल–** 'एआई' यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी प्रौद्योगिकी है जिसके द्वारा मानव के मानसिक कार्यों की नकल की जा सकती है। यह विशेष रूप से उन कार्यों के लिए महत्वपूर्ण है जिन्हें मानव बुद्धिमत्ता की अवस्था में काबू में लाना मुश्किल होता है, जैसे कि विषैली डेटा विश्लेषण और भविष्य का पूर्वानुमान। 'एआई' के अंतर्गत अनुभव, ज्ञान और सीखने की क्षमता समाहित की जाती हैं, जिससे वह मानव सोच की छवि को नकल कर सकती है।
- **चैट जी पी टी: वाक्यांशों की विद्या–** 'चैट जी पी टी' एक प्रकार का एआई है जिसे व्यक्तिगत संवाद की सुविधा प्रदान करने के लिए तैयार किया गया है। इसकी बुद्धिमत्ता की नींव भाषा की समझ में है और यह वाक्यांशों को सजीव और संवादात्मक रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम है। इसका मूल उद्देश्य बातचीत को स्वाभाविक बनाना है, जिससे लोग आसानी से एआई के साथ संवाद कर सकें और विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श कर सकें।
- **चैट जी पी टी की विशेषताएँ और उपयोग–** चैट जी पी टी एक शक्तिशाली प्रौद्योगिकी है जिसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है। यह संवादात्मक बॉट्स के रूप में वेबसाइटों पर प्रदान किया जा रहा है ताकि उपयोगकर्ताओं के सवालों का त्वरित उत्तर मिल सके। इसका उपयोग शिक्षा, सहायता, विचार-विमर्श, साहित्यिक सृजनात्मकता और अन्य क्षेत्रों में भी हो रहा है।
- **एआई और चैट जी पी टी का भविष्य–** यह स्पष्ट है कि एआई और चैट जी पी टी की ताकत हमारे संवाद के तरीकों को परिवर्तित कर रही है। इन प्रौद्योगिकियों के निरंतर विकास से हमारे संवाद कौशल में सुधार हो रहा है और हम और भी सामान्य तरीकों से मशीनों से संवाद कर सकेंगे। इसके साथ ही उनके उपयोग क्षेत्र भी विस्तार हो रहे हैं और यह आने वाले समय में और भी सरल और समृद्ध संवाद का माध्यम बन सकता है।

एआई और चैट जी पी टी की प्रौद्योगिकी ने मानव-मशीन संवाद में नए द्वार खोले हैं। इन प्रौद्योगिकियों की सहायता से हम न केवल विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति कर सकते हैं, बल्कि हमारे संवाद कौशल को भी मजबूती दे सकते हैं। आने वाले समय में, इन प्रौद्योगिकियों का और भी विस्तार होने की आशा है, जिससे हम और भी गहरे और समृद्ध संवाद में माहिर हो सकेंगे।

भारत में समकालीन राजनीतिक प्रणाली: एक जटिल लोकतांत्रिक ढांचा

राजकुमार
महानिदेशक (आर एंड एम) का कार्यालय

भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र, एक समकालीन राजनीतिक प्रणाली का बोध कराता है जिसमें उसकी विविध जनसंख्या, ऐतिहासिक धरोहर और जटिल सामाजिक संरचना का प्रतिबिम्ब है। 1947 में ब्रिटिश साम्राज्यवाद से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, भारत ने लोकतांत्रिक सिद्धांतों को अपनाया, जिसका उद्देश्य राजनीतिक भागीदारी, प्रतिनिधित्व और जवाबदेही सुनिश्चित करना है। भारत की समकालीन राजनीतिक प्रणाली संस्थानों, पार्टियों और प्रक्रियाओं का एक गतिशील मिश्रण है जो राष्ट्र के शासन-प्रबंधन को आकार देते हैं। भारत की समकालीन राजनीतिक प्रणाली के हृदय में उसका संविधान है, एक अत्यंत सावधानीपूर्वक तैयार किया दस्तावेज जिसमें देश की शासन-व्यवस्था का ढांचा तैयार किया गया है। संविधान में समानता, न्याय और स्वतंत्रता के सिद्धांतों को अंकित किया गया है, साथ ही यह पारिषदिक लोकतंत्र की व्यवस्था का प्रावधान भी है। राजनीतिक प्रणाली की विशेषता को बनाए रखने के लिए, इसके निष्पादन, विधायिका और न्यायिक शाखाओं के बीच शक्तियों का विभाजन किया गया है, जो एक प्रणाली में संतुलन की व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक है।भारत की समकालीन राजनीतिक प्रणाली के मूल में भारतीय संसद है, जिसमें लोकसभा (निम्न सदन) और राज्यसभा (उच्च सदन) शामिल है और यह शासन व्यवस्था की विधायिका शाखा है। लोकसभा के सदस्य सीधे जनता द्वारा चुने जाते हैं, जबकि राज्यसभा राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करती है। संसद को कानून बनाने, नीति गठन करने और कार्यपालिका की निगरानी करने की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत की राजनीतिक प्रणाली की कार्यपालिका शाखा का प्रधान राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री होता है। राष्ट्रपति देश के प्रधान होते हैं, जबकि प्रधानमंत्री सरकार के प्रधान होते हैं। राष्ट्रपति की भूमिका संवैधानिक होती है, जबकि प्रधानमंत्री निर्णय लेने और प्रशासन चलाने में महत्वपूर्ण शक्तियों का अधिकार रखते हैं। प्रधानमंत्री मंत्रिमंडल नीतियों को लागू करने और प्रशासन की कार्यप्रणाली को चलाने के लिए जिम्मेदार हैं। भारत की राजनीतिक प्रणाली की शक्ति राजनीतिक पार्टियां हैं, जो लोगों की विविध रुचियों और आकांक्षाओं को पूरा करती है। देश में कई राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पार्टियाँ हैं, जो शक्ति के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी (भा.ज.पा.) और स्थानीय पार्टियाँ जैसे ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस और द्रविड़ मुन्नेत्र काजागम प्रमुख है। समाज की विविधता के कारण राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर गठबंधन अक्सर बनते रहते हैं।

चुनाव भारतीय लोकतंत्र का मूल स्तंभ हैं, जो नागरिकों को उनके मताधिकार प्रयोग करने का अवसर प्रदान करता है। राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तरों पर नियमित चुनाव प्रतिनिधिता और भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। भारतीय चुनाव आयोग एक स्वतंत्र संवैधानिक प्राधिकृत, चुनावों के आयोजन की निगरानी करता है जो न्यायपूर्णता, पारदर्शिता और ईमानदारी सुनिश्चित करता है। भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीय असमानता जैसे मुद्दे देश की राजनीति के महत्वपूर्ण कार्य हैं।हाल के वर्षों में, प्रौद्योगिकी में हुई उन्नति से राजनीतिक संवाद और नागरिक संगठन में भारी परिवर्तन हुआ है।

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ने राजनीतिक चर्चा के लिए मंच दिया है, जिससे नागरिक अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं और नेताओं को जवाबदेह बनाते हैं। हालांकि, इस डिजिटल प्रसारण में भ्रम और विभाजक विचारधाराओं के प्रसार के संबंध में चुनौतियाँ भी हैं। संक्षिप्त में, भारत की समकालीन राजनीतिक प्रणाली एक गतिशील और जटिल व्यवस्था है जिसमें संस्थान, पार्टियाँ और प्रक्रियाएँ हैं जो देश की विविधता और आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करती हैं। स्वतंत्रता के बाद से संविधान में दिए गए लोकतांत्रिक सिद्धांतों की प्रतिबद्धता ही उसकी प्रगति का मूल है। जैसे-जैसे भारत विकसित होगा, चुनौतियों का समाधान करना और अवसरों का स्वागत कर उसके लोकतंत्रिक ढांचा को मजबूत कर नागरिकों के लिए एक समृद्ध भविष्य सुनिश्चित करना आसान एवं सुगम हो जाएगा।

तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन पुणे, में डीआरडीओ की सहभागिता की सचित्र झलकियां

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 14 एवं 15 सितंबर 2023 को पुणे, महाराष्ट्र में हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डीआरडीओ की पुस्तक **'अतुल्य कलाम'** का **माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा जी** के कर कमलों से विमोचन किया गया। साथ ही डीआरडीओ की प्रयोगशाला केयर, बेंगलुरु की पत्रिका **'सुविज्ञ'** को राजभाषा कीर्ति (द्वितीय स्थान) पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिसमें डीआरडीओ के **डॉ. शैलेंद्र वी गडे,** महानिदेशक (एसीई) **डॉ. रविंद्र सिंह,** उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, **डॉ. ऋतुपर्ण,** निदेशक, केयर, बेंगलुरु एवं **श्री सुजीत कुमार मेहता,** सहायक निदेशक (रा.भा.) शामिल हुए।

"आज़ादी के अमृत महोत्सव वर्ष में हम सब हिंदी प्रेमियों को यह संकल्प लेना चाहिए कि जब आज़ादी के 100 वर्ष पूरे हों, तब तक राजभाषा और स्थानीय भाषाओं का दबदबा इतना बुलंद हो कि किसी भी विदेशी भाषा का सहयोग न लेना पड़े।"

— अमित शाह (गृह एवं सहकारिता मंत्री) —

साभार: राजभाषा भारती

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन मुख्यालय
डी आर डी ओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली-110011